कुन्दकुन्द-शब्द कोश

प्रेरक

आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज

संकलन

डा. उदयचन्द जैन

प्रोफेसर : सुखाडिया विश्वविद्यालय

उदयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक

श्री दिग. जैन साहित्य-संस्कृति संरक्षण समिति

डी. ३०२, विवेक विहार, दिल्ली - ९५

II,

प्राप्तिस्थल
श्री शिखर चन्द जैन
श्री दिग जैन साहित्य-सस्कृति सरक्षण समिति
डी. ३०२, विवेक विहार
दिल्ली - ९५

कुन्दकुन्द-शब्द कोश

डा उदयचन्द जैन

प्रथम सस्करण - महावीर जयन्ती वी नि स २५१७
मूल्य - पाँच रूपये मात्र (लागत मूल्य से ५ रूपये कम)
मुद्रक - प्रकाश आफसेट प्रिटर्स, फोन ३२७८३५८

प्रकाशकीय

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य मे ललितपुर की प्रथम वाचना के समय समागत विद्वानो से हुए विचार विनिमय के निष्कर्ष रूप से जैन साहित्य एव सस्कृति के सरक्षण/सवर्धन के उद्देश्य को प्रामुख्य कर श्री दिग जैन साहित्य-सस्कृति सरक्षण समिति का गठन हुआ था।

गठन के समय ही प्रस्ताव आया कि वर्तमान मे दिगम्बर जैन साहित्य के अग्रगण्य आचार्य कुन्दकुन्द के समय निर्धारण को लेकर साहित्य जगत् मे मन-माने ताने बाने बुने जा रहे हैं तथा कई प्रकार का असद् प्रलाप भी मुखरित हो रहा है। अत इस दिशा मे ही सर्वप्रथम कार्य किया जाना नितान्त आवश्यक है। हमे अपने सद्प्रयासो से उसे पुन स्थापित करना चाहिए।

इस समस्या पर गहराई से विचार करते हुए ही भारतवर्ष तथा विदेशो के जैन एवं जैनेतर जनमानस को आचार्य कुन्दकुन्द और उनके लोकोपकारी साहित्य से परिचय कराते हुए मन-माने वागूजालो पर प्रश्न चिन्ह अकित करने के लिए समिति ने "आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दी महोत्सव" सम्पूर्ण देश के अनेक भागो मे मनाने तथा मनाने की प्रेरणा देने का निर्णय किया तथा इसके आरम्भ करने की उद्घोषणा ११, १२ और १३ जुलाई ८७ को थूबोन जी मे एक स्तरीय आयोजन के साथ की।

प्रसन्नता है कि जैन समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने इसमे सराहनीय योगदान कर इसे सफल बनाया जिसके ही फलस्वरूप अब देश के आबालवृद्ध को जानकारी हो सकी कि आचार्य कुन्दकुन्द को इस भारत वसुन्धरा को पवित्र किये हुए दो हजार वर्ष हो गये हैं। इस सन्दर्भ को प्रमाणित रूप से विद्वज्जगत के समक्ष रखने के लिए समिति ने डा ए एन उपाध्ये जी द्वारा लिखित प्रवचनसार की प्रस्तावना का हिन्दी रूपान्तरण कराकर प्रस्तुत किया। इस दौरान आचार्य कुन्दकुन्द से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ एव जानकारिया प्रकाशित हुई जो कि स्वागतेय हैं।

कुन्दकुन्द साहित्य के अध्येताओ व जिज्ञासुओ ने उनके शब्दकोश की महती आवश्यकता महसूस की, जो कार्य डा उदयचन्द जी द्वारा अथक परिश्रम के साथ सम्पन्न किया गया उनका प्रयास श्लाघनीय है। किन्तु इसमे अभी काफी सशोधन सवर्द्धन के स्थान रिक्त है जो कि आचार्य कुन्दकुन्द साहित्य के मनीषियो एव चिन्तको के सहयोग के साथ ही यथासमय पूर्णता को प्राप्त कर सकेगे। मुझे जानकारी है कि अभी तक वर्तमान का कोई भी कोश प्रथम प्रयास मे ही पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सका उसके परिमार्जन/परिवर्द्धन के लिए पर्याप्त समय और सस्करण अपेक्षित हुए हैं। इसी प्रकार इस प्रस्तुत कोश को भी प्रौढ़ता प्राप्त करने के लिए मनीषियो एव अध्येताओ का सहयोग वाछनीय होगा। हम आशा करेगे कि इस दिशा मे आपका श्रम हमारे उत्साहवर्धन के योग्य होगा।

प्रस्तुत कोश के सकलन मे आचार्य श्री विद्यासागर जी की प्रेरणा का पावन-योग मिला है, अत समिति एव सकलनकर्ता उनकी तपोपूत कराजलि मे इस ग्रन्थ को समर्पित करते हुए उन परम निर्ग्रन्थ के प्रति विनम्र भक्ति-भाव व्यक्त करते हैं साथ ही इस कार्य के सहयोगी महानुभावो के प्रति सहृदय आभार ज्ञापित करते हैं।

इस शब्दकोश के प्रकाशन के लिए श्री सुमत प्रसाद जैन (सी–२०९) और श्रीमति सरोजनी जैन (धर्मपत्नी श्री मोती लाल जैन) (बी–२५७) विवेक विहार दिल्ली द्वारा पूरा कागज प्रदान करके हमे प्रोत्साहित किया है। अत हम उनके हृदय से आभारी हैं।

आशा है विद्वत्समाज एव जिज्ञासु समुदाय इस प्रयास का योग्य लाभ लेगा।

मैसूर — राकेश जैन

१४ ३ ८९ — मत्री

प्राथमिकी

आगम साहित्य की परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्द विरचित सिद्धान्तग्रन्थों का महत्वपूर्ण स्थान है। जितनी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ आचार्य कुन्दकुन्द का नाम प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ मे लिया जाता है उतना ही आगम साहित्य, सिद्धान्त ग्रन्थों मे पचास्तिकाय, समयसार, प्रवचनसार, नियमसार एव अष्टपाहुड आदि को सर्वोपरि मानकर उनके पठन-पाठन एवं स्वाध्याय की परम्परा उच्च स्थान को प्राप्त करती जा रही है। अत' सिद्धान्त ग्रन्थों के साथ वर्षो की पूर्व परम्परा इसके साथ जुड़ी है। इसकी भाषा आर्ष है तथा प्राचीन भी है। भाषाविदो ने जिसे शौरसेनी सज्ञा दी है। इस शौरसेनी प्राकृतो का अध्ययन करते समय जब विचार किया तो इससे सम्बन्धित सर्व प्रथम व्याकरण लिखने का निश्चय किया गया और शौरसेनी प्राकृत विद्वज्जगत के सामने आई।

शब्द कोश की शुरूआत इससे पूर्व हो चुकी थी, परन्तु कुछ कार्य शेष था इसलिए यह शीघ्र सामने नहीं आ सका। शौरसेनी शब्द कोश की विशाल रूपरेखा हमारे सामने थी। सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैन विद्या एव प्राकृत विभाग के अध्यक्ष ने इसे सीमित दायरे मे समेटने का प्रस्ताव रखा। इसी दृष्टि का विधिवत् रूप से आचार्य श्री विद्यासागर जी से जबलपुर मे परामर्श लिया गया और इसे अन्तिम रूप दिया गया।

इस शब्दकोश मे निम्न विधि अपनाई गई है '—

१ सर्वप्रथम मूलशब्द दिए गए तत्पश्चात् उन शब्दो का लिंग और सस्कृत को [ ] कोष्ठक मे दिया गया।

२ कोष्ठक के बाद उस शब्द का अर्थ एव सन्दर्भ ग्रन्थ की पंक्ति सहित दिया गया है।

३ सन्दर्भ ग्रन्थ एव उसकी पक्ति के अतिरिक्त उस शब्द का व्याकरणात्मक मूल्याकंन भी प्रस्तुत किया है।

४ यथा स्थान कुन्दकुन्द के ग्रन्थो के पारिभाषिक शब्द भी दिये गये हैं।

५ मूल शब्द के साथ जुड़ने वाले शब्द उसी शब्द के साथ देकर उसका अर्थ प्रस्तुत किया गया है।

६ जहा तक सभव हो सका वहा व्याकरण सम्बन्धी नियम भी दिये गए हैं।

प्रस्तुत कोश के निर्माण मे 'पाइय-सद्द-महण्णव' तथा सस्कृत शब्द कोश आदि कोश ग्रन्थो, आचार्य कुन्दकुन्द के समस्त ग्रन्थ, उनके टीकाकार, हिन्दी अर्थ आदि के प्रस्तुत करने वालो से इसके शब्द चयन किये गये हैं। मूलरूप मे शब्द चयन का आधार बिन्दु कुन्दकुन्द भारती रहा है। अत मैं उन सभी महानुभावो का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जो इन ग्रन्थो से सम्बन्धित हैं।

इस ग्रन्थ के प्रेरक आचार्य श्री विघासागर जी के चरणो मे शत-शत नमन है जिनकी महान् प्रेरणा का फल यह कोश ग्रन्थ है। भाई श्री डा प्रेमसुमन जी जैन, उदयपुर का सक्रिय सहयोग एव परामर्श ही उत्साहवर्धन मे सदैव सहायक रहा है। अत मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

हमारे पूज्य परम श्रद्धेय डॉ दरबारीलाल जी कोठिया, बीना, ब्र राकेश जैन, जबलपुर, पूज्य काका प सुखानन्द जैन बम्हौरी को विस्मृत नहीं किया जा सकता जिन्होंने सदैव उत्साहित किया। मेरी पत्नी श्रीमती माया जैन एव मेरे बच्चे सदा सहयोगी रहे हैं।

कोश का प्रकाशन श्री दिग जैन साहित्य सस्कृति सरक्षण समिति के द्वारा हो रहा है अत उसका भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ। जिन्होंने इसे सुन्दर रूप मे प्रस्तुत किया। सधन्यवाद

उदयचन्द जैन

अ.	अव्यय
अ भू	अनियमित भूतकाल
अक	अकर्मक
आ.भ.	आचार्यभक्ति
आ.भ अ	आचार्यभक्तिअचलिका
आ/वि प्र ए	आज्ञा/विध्यर्थक प्रथमपुरुष एकवचन
आ/वि प्र.ब	आज्ञा/विध्यर्थक प्रथमपुरुष बहुवचन
आ/वि म ए	आज्ञा/विध्यर्थक मध्यमपुरुष एकवचन
आ/वि म ब	आज्ञा/विध्यर्थक मध्यमपुरुष बहुवचन
आ/वि उ ए	आज्ञा/विध्यर्थक उत्तमपुरुष एकवचन
आ/वि उ ब	आज्ञा/विध्यर्थक उत्तमपुरुष बहुवचन
क प्र	कर्मणि प्रयोग
क्रि वि	क्रिया विशेषण
च ए	चतुर्थी एकवचन
च ब	चतुर्थी बहुवचन
च/ष ए	चतुर्थी/षष्ठी एकवचन
च/ष ब	चतुर्थी/षष्ठी बहुवचन
चा पा	चारित्रपाहुड
चा भ	चारित्रभक्ति
चै भ	चैत्यभक्ति
चै भ अ	

तृ ए	तृतीया एकवचन
तृ ब	तृतीया बहुवचन
ती भ	तीर्थभक्ति
ती भ अ	तीर्थभक्तिअचलिका
त्रि	त्रिलिग
द पा	दर्शनपाहुड
द्वा	द्वादशानुप्रेक्षा
द्वि ए	द्वितीया एकवचन
द्वि.ब	द्वितीया बहुवचन
न	नपुसकलिग
न भ	नन्दीश्वरभक्ति
नि	नियमसार
नि भ	निर्वाणभक्ति
नि भ अ	निर्वाणभक्तिअचलिका
प ए	पचमी एकवचन
प ब	पचमी बहुवचन
पु	पुर्लिग
पु/न	पुर्लिग/नपुसकलिग
प	पचास्तिकाय
प ज वृ	पचास्तिकाय जयसेनवृत्ति
प्र ए	प्रथमा एकवचन

प्र ब	प्रथमा बहुवचन
प्र	प्रवचनसार
प्र ज वृ	प्रवचसार जयसेनवृत्ति
प्र ज्ञा	प्रवचनसार ज्ञानाधिकार
प्र चा	प्रवचनसार चारित्राधिकार
प्रे	प्रेरणार्थक
बो पा	बोधपाहुड
भवि प्र ए.	भविष्यत्काल प्रथमपुरुष एकवचन
भवि प्र ब	भविष्यत्काल प्रथमपुरुष बहुवचन
भवि म ए	भविष्यत्काल मध्यमपुरुष एकवचन
भवि म ब.	भविष्यत्काल मध्यमपुरुष बहुवचन
भवि उ ए	भविष्यत्काल उत्तमपुरुष एकवचन
भवि उ ब.	भविष्यत्काल उत्तममपुरुष बहुवचन
भू	भूतकाल
मो.पा	मोक्षपाहुड
यो.भ	योगिभक्ति
लि.पा	लिगपाहुड
व प्र ए	वर्तमानकाल प्रथमपुरुष एकवचन
व प्र ब	वर्तमानकाल प्रथमपुरुष बहुवचन
व म ए	वर्तमानकाल मध्यमपुरुष एकवचन
व म ब	वर्तमानकाल मध्यमपुरुष बहुवचन

व उ ए	वर्तमानकाल उत्तमपुरुष एकवचन
व उ ब	वर्तमानकाल उत्तमपुरुष बहुवचन
वि	विशेषण
वि/आ	विधि/आज्ञार्थक
वि कृ	विध्यर्थ कृदन्त
शी पा	शीलपाहुड
श्रु भ	श्रुतभक्ति
ष ए	षष्ठी एकवचन
ष ब	षष्ठी बहुवचन
स	समयसार
स ब	सप्तमी बहुवचन
स ज वृ	समयसार जयसेनवृत्ति
स भ	समाधिभक्ति
सू पा	सूत्रपाहुड
स कृ	सम्बन्ध कृदन्त
स्त्री	स्त्रीलिंग
हे प्रा व्या	हेम प्राकृत व्याकरण
हे कृ	हेत्वर्थ कृदन्त

अ

अ [अ] 1. और, तथा। (भा ५२) पढिओ अभव्वसेणो। 2 रहित। (स १४,१११, प्रव ज्ञे ७१) अविसेसमसजुत्त। (स १४) 3 नहीं, निषेध, प्रतिषेध। (निय १४२, स. १६७, पचा. १६३, भा १०४) ण वसो अवसो। (निय १४२) 4 अभाव। (भा १०१, स २३२) जो हवइ असमूढो। (स २३२)

अइ अ [अति] 1 बहुत। (निय २१,२४) अइथूल-थूल- थूल। (निय २१) 2 अतिशय, उत्कर्ष। (मो २४) अइसोहण जो एण। (मो २४) **-थूल** वि [स्थूल] अधिक मोटा। (निय २२) **-सुहुम** वि [सूक्ष्म] अधिक सूक्ष्म। (निय २४) अइसुहुमा इदि पर्ल्वेति। **-सोहण** न [शोधन] अतिशय शुद्धि, विशिष्टशुद्धि। (मो २४) अइसोहण जो एण।

अइरेण अ [अचिरेण] शीघ्र, जल्दी। (द ६,चा ४०, भा ७९) पावइ अचिरेण सुह। (चा. ४३)

अइसय पु [अतिशय] सर्वश्रेष्ठ, अति-उत्तम, आधिक्य, प्रगुखता, उत्कृष्टता, अत्यधिक, बहुत बड़ा। (प्रव १३, द २९, बो ३१) अइसयमादसमुत्थ। (प्रव १३) **-गुण** पु न [गुण] सर्वश्रेष्ठ गुण, उत्कृष्टगुण, प्रमुख गुण। (बो ३१) चउतीस अइसयगुणा। (बो ३१) **-वत** वि [वान्] उत्तमतायुक्त, श्रेष्ठतासहित। (बो ३८) अइसयवत सुपरिमलामो य। (बो ३८) अइसय (द्वि ए प्रव १३) अइसएहिं (तृ ब द २९) (हे भिसो हि हिं हिं-३/७)

अग न [अङ्ग] आचाराङ्ग आदि आगम ग्रन्थ विशेष। (पचा १६०) -पुव्वगद वि [पूर्वगत] अङ्ग और पूर्वधारी। (पचा १६०) धम्मादीसद्दहण, सम्मत्त णाणमगपुव्वगद। (पचा १६०)

अजलि पु स्त्री [अञ्जली] हाथसपुट, करबद्ध। (प्रव चा ६२) -करण वि [करण] हाथ जोडने वाला, विनययुक्त, विनम्र। (व चा ६२) अजलिकरण पणम। (प्रव चा ६२)

अत वि [अन्त्य] अन्तिम, ऊपर, चरम। (पचा २८) उड्ढ ोग अतमधिगता। (पचा २८)

अत पु [अन्त] 1 सबसे छोटा, अन्तिम भाग, अन्तिम हिस्सा। (पचा ७७) अतो त वियाण परमाणु। (पचा ७७) 2 चरम सीमा, अन्तिमबिन्दु, प्रान्तभाग। (पचा ९४) 3 हद। (पचा १, ९१) आयास अतवदिरित्त । (पचा ९१) -अतीदगुण पु न [अतीतगुण] अनन्तगुण। (पचा १) अतातीदगुणाण। (पचा १) -परिवुड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] अन्त की वृद्धि, सीमावृद्धि, प्रान्तभाग की वृद्धि। (पचा ९४) लोगस्स य अतपरिवुड्ढी। (पचा ९४)। -वदिरित्त वि [व्यतिरिक्त] अन्त से रहित, अनन्त। (पचा ९१) आयास अतवदिरित्त। (पचा ९१)

अकत्ता वि [अकर्त्ता] अकर्ता, नहीं करने वाला। (स ११२) तम्हा जीवोऽकत्ता।

अकर सक [अ-कृ] नहीं करना। (स २४६) अकरतो (व कृ) अकरतो उवओगे।

अकारय वि [अ-कारक] अकारक, नहीं करने वाला, अकर्त्ता। (स ३२०)

अकिण्ण वि [अकीर्ण] नहीं खुदा हुआ, व्याप्त। (द्वा ५६)

अकिंचण्ह वि [अकिञ्चन्य] आकिञ्चन्य, मुनिधर्म का एक भेद। (द्वा ७०) तव-चागमकिंचण्ह।

अक्कंत वि [आक्रान्त] छूटा हुआ, परास्त, अभिभूत, ग्रसित। (द्वा ३८) ससार दुहअक्कतो।

अक्किरिया स्त्री [अक्रिया] अक्रिया, अव्यापार, अप्रयत्न। (भा १३६)

अक्ख पु न [अक्ष] इन्द्रिय, पाशा, आत्मा। (प्रव २२,५६,५७, प्रव ज्ञे १०६, नियं २३, मो ५) **-अतीद** वि [अतीत] इन्द्रियरहित। (प्रव २२) **-विसय** पु [विषय] इन्द्रियविषय, इन्द्रियजन्य, इन्द्रियगोचर। (निय २३) अक्खा (प्र ब) अक्खाणि (प्र ब) अक्खाण (च /ष ब) अक्खाण ते अक्खा। (प्रव ५६)

अक्खय वि [अक्षय] नाशरहित, जिसका कभी नाश न हो, अविनाशी। (प्रव ज्ञे १०३, नियं १७६, द ३४, चा ४)

अकज्ज वि [अकार्य] नहीं करने योग्य, व्यर्थ, उत्पन्न नहीं हुआ। (पंचा ८४, भा ५५,१११)

अकद वि [अकृत] नही किया गया, नही बनाया गया, अरचित। (पचा ६६) अकदा परेहिं दिट्ठा।

अकुव्व स [अकुर्व] नहीं करना, नहीं बनाना। (स ९३, १०४' अकुव्वतो (व कृ)

अखिल वि [अखिल] पूर्ण, परिपूर्ण, समस्त। (पचा ९०) ज देदि विवरमखिल।

अगणि पु [अग्नि] अग्नि। (पचा ११०,१४६) झाणमओ जायए अगणी। (प्र ब)

अगरहा स्त्री [अगर्हा] अनिन्दा, अघृणा। (स ३०७) आचार्य कुन्दकुन्द ने गरहा को विषकुम्भ और अगरहा को अमृतकुम्भ के भेदों में गिनाया हैं। अणियत्तीयअणिदागरहा सोही अमयकुभो।

अगध पु [अगन्ध] गन्धरहित। (पचा १२७, स ४९, निय ४६, भा ६४)

अगाढ वि [अगाढ] अगाढ, अनाश्रित। (द्वा ६१) चलमलिनमगाढ। (द्वा ६१) -त्त वि [अगाढत्व] अगाढता, आश्रय से रहित होता हुआ, प्रचण्डता से रहित। (निय ५२) चलमलिनमगाढत्त।

अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ। (प्रव चा.५०) अगारी धम्मो सो सावयाण से।

अगुरु/अगुरुग वि [अगुरु] अतिलघु, छोटा। (पचा २४,३१,८४) -लहुग वि [लघुक] षड्गुणी-हानिवृद्धिरूप, अगुरुलघुगुण सयुक्त। अगुरुलहुगेहिं सया। (पचा ८ ‍)

अग्घ सक [अर्घ] पूजना, आद‍ करना, सम्मान करना। (द ३३) अग्घेदि (व प्र ए) अग्घेदि सुरासुरे लोए। (द ३३)

अचक्खु पु न [अचक्षुष्] नेत्र से अतिरिक्त इन्द्रिय और मन। (पचा ४२, निय १४) चक्खू अचक्खू ओही। (निय १४) -जुद

वि [युत] नेत्र से रहित अवलम्बन। (पंचा ४२) अचक्खुजुदवि य ओहिणा सहिय

अचल वि [अचल] निश्चल, दृढ़, स्थायी। (प्रव. ज्ञे १००, निय १७७, बो १२) णिच्च अचल अणालंबं। (निय. १७७)

अचरित्त न [अचरित्र] आचरणविहीन, सयमरहित, व्रतरहित। (स १६३) अचरित्तो होदि णायव्वो। (स १६३)

अचित्त वि [अचित्त] जीवरहित, अचेतन। (स. २२०, २२१, २३९, २४३, २० मो १७) आदसहावादण्णं, सच्चित्ताचित्तमिस्सियं हवदि (मो १७)

अचिरेण अ [अचिरेण] जल्दी, शीघ्र, थोडा। (स. १८९, प्रव ८८) लहइ अचिरेण अप्पाणमेव। (स १८९)

अचेदण वि [अचेतन] चैतन्यरहित, निर्जीव। (पचा १२४, स ६८, १११, ३२८ प्रव ज्ञे.३५) एदे अचेदणा खलु। (स १११) -त्त वि [त्व] अचेतनता। (पचा १२४) तेसि अचेदणत्त।

अचेल न [अचेल] वस्त्ररहित, वस्त्रत्याग, मुनियों का एक गुण। (प्रव चा ८) लोचावस्सकमचेलमण्हाण। (प्रव चा ८)

अचोक्ख वि [दे] मलिन, अशुद्ध, अपवित्र। (द्वा ४३) भरियमचोक्ख देह। (द्वा ४३)

अचोरिय न [अचौर्य] अचौर्य, चोरीरहित, लूटरहित, शील का एक गुण, व्रत का एक भेद। (शी १९) अचोरिय बंभचेरसंतोसे। (शी १९)

अच्चत वि [अत्यन्त] अत्याधिक, आजीवन, हमेशा, लगातार,

अन्तरहित, वहुल। (प्रव १२, प्रव चा ७१) अगिंघुदो भगइ अच्चत। (प्रव १२)-फलसमिद्ध वि [फलसमृद्ध] अत्यन्त फल से युक्त, अतिशय फल की समृद्धि वाला। (प्रव.चा ७१) अच्चतफलसमिद्ध। (प्रव चा,७१)

अच्चेदण/अच्चेयण वि [अचेतन] चैतन्यरहित, निर्जीव, चेतनाहीन। (मो ९,५८)

अच्छ सक [आस्] रहना। (मो ४७)

अच्छेज्ज वि [अच्छेद्य] छेदन करने के अयोग्य, अखण्डित। (निय १७६) अक्खयमविणासमच्छेय। (निय १७६)

अच्छेअ पु [अच्छेद] रिक्त, अपूरित, विनाशरहित, अन्तरहित। (भा २३) तो वि ण तिण्हच्छेओ।

अजघा अ [अयथा] जैसे को तैसा नही, अन्यथा, विपरीत। (प्रव.८४, प्रव चा ७२) -गहण न [ग्रहण] जैसे को तैसा ग्रहण नही, अन्यथाग्रहण। (प्रव ८५) -गहिदत्थ वि [ग्रहीतार्थ] अन्य का अन्य विदित होना। (प्रव चा ७१) -चारविजुत्त वि [आचारवियुक्त] मिथ्या आचरण से रहित। (प्रव चा.७२) अजधाचारविजुत्तो। (प्रव चा ७२)

अजर वि [अजर] मुक्तावस्था, मुक्तिपथ, मोक्षसुख, वुढ़ापारहित, जीर्णतारहित। (भा १६१) सिवमजरामरलिगमणोवमुत्तम परमविमलमतुल। (भा १६१)

अजाद वि [अजात] अनुत्पन्न, उत्पत्तिरहित। (प्रव ३९,४१) जदि पच्चक्खमजाद। (प्रव ३९)

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, ज्ञानरहित। (स.१५४) अजाणता (व.कृ स १५४)

अजीव पु [अजीव] अचेतन, जड, निर्जीव। (चा.२९,पचा १०८) -द वि [ता] अजीवपन, जड़ता, निर्जीवता, अचेतनता। -दव्व पु न [द्रव्य] अजीवद्रव्य। (चा २९) सजीवदव्वे अजीवदव्वे य। (चा २९)

अजुद पु न [अयुत] दशहजार की संख्या, अनादि, एक ही। (पचा ५०) अजुदसिद्धो य। -सिद्ध पु [सिद्ध] अनादिसिद्ध। (पचा ५०) अजुदासिद्धित्ति णिद्दिट्ठा।

अज्ज अ [अद्य] आज। (मो.७७) अज्ज वि तिरयणसुद्धा।

अज्ज सक [अर्ज] कमाना, उपार्जन करना, पैदा करना। अज्जयदि (व प्र ए द्वा ३०) अत्थ अज्जयदि पावबुद्धीए। (द्वा ३०)

अज्जीव पु [अजीव] अजीव, जडपदार्थ, निर्जीव, चेतनाशून्य। (पचा १२३,१२५,स ८८) अभिगच्छदु अज्जीव। (पचा १२३)

अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता, ऋजुता, सरलपरिणाम, धर्म का एक लक्षण। (निय. ११५, चा १२) अज्जवेण (तृ ए निय ११५) लक्खिज्जइ अज्जवेहिं भावेहिं। (चा १२) अज्जवेहिं (तृ.ब चा १२) -धम्म पु न [धर्म] आर्जव धर्म। (द्वा.७३)

अज्जिया स्त्री [आर्यिका] आर्यिका, साध्वी। (सू २२) अज्जिय वि एकवत्था।

अज्झप्प न [अध्यात्म] आत्मसम्बन्धी, आत्मविषयक। (स ५२) -ट्ठाण न [स्थान] आत्मसम्बन्धी स्थान। (स ५२) णो,

अज्झप्पट्ठाणा। (स ५२)

अज्झयण पु न [अध्ययन] अभ्यास, अध्ययन, पढ़ना। (प्रव चा ५६, नियं १२४,भा ८९) अज्झयणमोणपहुदी। (निय १२४)

अज्झवस सक [अध्यव+सो] विचार करना, चिंतन करना, समझना। (मो ८) अज्झवसदि (व प्र ए) अज्झवसदि मूढदिट्ठीओ। (मो ८)

अज्झवसाण न [अध्यवसान] चिंतन, विचार, आत्मपरिणाम, आत्म-स्वभाव। (पचा ३४, स ४८) अज्झवसाणादि अण्णभावाण। (स ४८) **-णिमित्त** न [निमित्त] चिंतन के फलस्वरूप, चिंतन के कारण, विचार के निमित्त। (स २६७) अज्झवसाण (द्वि ए स ३९) अज्झवसाणाणि (द्वि ब स १९०) अज्झवसाणेण (तृ ए स २६५) अज्झवसाणेसु (स ब स ४०)

अज्झवसिद वि [अध्यवसित] अध्यवसाय, जिसका चिंतन किया गया। (स २६०,२६२) सत्ते ज एवमज्झवसिद ते। (स २६१) अज्झवसिदेण (तृ ए स २६२)

अज्झसिय वि [अध्युषित] डुबाया हुआ। (प्रव ३०) दुद्धज्झसिय जहा सभासाए। (प्रव ३०)

अज्झा सक [अधि+इ] अध्ययन करना, पढ़ना। (स ३१७) अज्जाइदूण (स कृ स ३१७) सुट्ठुवि अज्झाइदूण सत्थाणि।

अज्झावय पु [अध्यापक] उपाध्याय। (प्रव ४) **-वग्ग** पु [वर्ग] उपाध्याय वर्ग, सजातीयसमूह। (प्रव ४) अज्झावयवग्गाण (च ब प्रव ४)

अट्ट वि [आर्त] पीड़ित, दुःखित, ध्यान का एक भेद। (निय. १२९,१८०, भा ७६, लि ५) -रुद्द न [रौद्र] आर्तरौद्र। (निय १८०, भा ७६) अट्टरुद्दाणि (निय १८०)

अठिद वि [अस्थित] स्थिति का अभाव। (स १५२)

अट्ठ त्रि [अष्ट] आठ, संख्या विशेष। (पचा.२४,स.४५, भा ११९) ववगददोगघअट्ठफासो य। (पंचा २४) -कम्मबंध पु न [कर्मबन्ध] आठ प्रकार का कर्मबन्ध। (निय.७२) णट्ठट्ठकम्मबधा। (निय ७२) -गुण पुं न [गुण] आठ गुण। (निय ४७) अट्ठगुणालकिया जेण। -महागुण-समण्णिय वि [महागुणसमन्वित] आठ महागुणों से युक्त। (निय ७२) - वियप्प न [विकल्प] आठ विकल्प। (पचा.१४९, स १८२)-विह पु स्त्री [विध] आठ प्रकार। (स ४५) अट्ठविहं पि य कम्म।

अट्ठ पु न [अर्थ] वस्तु, पदार्थ। (पचा १०८, प्रव ८५,८६)

अट्ठारह त्रि [अष्टादश] अठारह। (भा.१५१,मो ९०) -दोसवज्जिअ वि [दोषवर्जित] अठारह दोषों से रहित। (मो ९०) अट्ठारहदोसवज्जिए देवे। (मो ९०)

अट्ठि पु [अस्थि] हड्डी। (भा ४२)

अण अ [अन] निषेधवाचक अव्यय। (प्रव ज्ञे १०६)

अणत पु [अनन्त] अनन्त, अन्तरहित, सख्या विशेष। (पचा २८,२९, निय ३५) -जम्मतर पु [जन्मान्तर] अनन्त जन्मों में। (भा १८) -पदेस पु [प्रदेश] अनन्तप्रदेश। (निय. ३५)-भवसायर पु [भव-सागर]अनन्तभवसागर। -संसार

पु [ससार] अनन्तससार। (भा ७) -ससारिअ वि [सासारिक] अनन्तससारी। (भा ५०) अणतससारिओ जाओ। (भा ५०)

अणक्ख पु [अनक्ष] इन्द्रिय ज्ञान से रहित। (प्रव ज्ञे १०६) ज्ञादि अणक्खो पर सोक्ख (प्रव ज्ञे १०६)

अणगार वि [अनगार] भिक्षुक, मुनि, साधु, गृहत्यागी। (स ४११, प्रव ज्ञे ६५,चा ५१,७५) पेच्छदि सिद्धे तधेव अणगारे। (प्रव ज्ञे ६५)

अणज्ज वि [अनार्य] म्लेच्छ, दुष्ट। (स ८)-भासा स्त्री [भाषा] अनार्यभाषा। अणज्जभास (द्वि ए स ८)

अणण्ण वि [अनन्य] अभिन्न, अपृथग्भूत। (पचा १२, स ११३, प्रव ज्ञे २१) -त्त वि [त्व] अनन्यत्व, एकरूपता, प्रदेशभेद रहित, एकभाव। (पचा ४५,४६) -परिणाम वि [परिणाम] अभिन्नपरिणाम। (स १६४, मो ५०) तस्सेव अणण्णपरिणामा। (स १६४) -भाव पु [भाव] अभिन्नभाव । -भूद वि [भूत] अभिन्नभूत, एकमेक, प्रदेशों से जुदा नहीं। (पचा १२, प्रव ज्ञे २१) -मअ वि [मय] अन्य वस्तुरूप नहीं। (स १८९) मइय वि [मय]अभिन्नरूप। (पचा ४) -मण पु न [मनस्] पर द्रव्य से चित्त हटाना। (पचा १५८) -विह वि [विध] अन्य रूप, अन्य प्रकार। (मो ५१)

अणण्णमण्ण स [अनन्यमन्य] अन्यत्-अनन्यत्, और-और नहीं, दूसरा नहीं (पचा ९१)

अणण्णमय वि [अनन्यमय] अभेदरूप। (पचा १६२)

अणण्णय वि [अनन्यक] अन्यपने से रहित। (स १४)

अणप्पय पु [अनात्मक] आत्मा से परे, आत्म-अनभिज्ञ। (स.२०२)

अणप्पवस पु न [अनात्मवश] पराधीन, परवश। (भा ११२,२१)

अणय पु [अनय] अनीति, अन्याय। (भा २६)

अणल पु [अनल] अग्नि। -काइय वि [कायिक] अग्निकायिक, अग्निकाय सम्बन्धी। (पचा १११)

अणवकास पु न [अनवकाश] अवकाश न देना, स्थान देने में असमर्थ। (पचा ८०)

अणवर/अणवरय वि [अनवरत] सतत्, निरन्तर। (द.२९, निय ११३,मो ३)

अणाइ वि [अनादि] आदि रहित। (पचा ५३, स.८९, भा ७,१४, ११२) -काल पु [काल] अनादिकाल। (भा ७,१४,१०२,११२) -णिहण पु न [निधन] अनादि अनत। अणाइणिहण (प्र ए भा ११४)

अणाणि वि [अज्ञानिन्] अज्ञानी। (स १२६,१३१)

अणागय वि [अनागत] आगामी। (स २१५, निय ९५) अणागयसुहमसुहवारण किच्चा।

अणागार पु [अनागार] अनागार, मुनि, साधु। (प्रव ज्ञे १०२)

अणादिणिधण पु न [अनादिनिधन] अनादि-अनन्त। (पचा १३०) अणादिणिधणो सणिधणो वा।

अणायार वि [अनाचार] आचरणरहित, गृहीत नियमों का

जानबूझकर उल्लघन करना। (निय ८५) मोत्तूण अणायार आयारे जो दु कुणदि थिरभाव।

अणावण्ण वि [अनापन्न] अवस्थित, अव्याप्त। (पचा ३१, ३२) केचित्तु अणावण्णा।

अणारिहद वि [अनार्हत] अर्हत् मत को न मानने वाले, अर्हत् मत से परे। (स ३४७,३४८) मिच्छादिट्ठी अणारिहदो।

अणालब वि [अनालम्ब] पर के आलम्बन से रहित, पर-पदार्थों के आलबन से रहित। (प्रव १००,निय १७७) णिच्च अचल अणालब। (निय १७७)

अणासव पु [अनास्रव] आस्रव से रहित,आस्रव का अभाव, कर्मास्रव से रहित। (प्रव चा ४५) अणासवा सासवा सेसा।(प्रव चा ४५)

अणाहार पु [अनाहार] उपवास, अनाहार, आहार ग्रहण करते हुए भी निराहार। (प्रव चा २७) अण्ण भिक्खमणेसणमध ते समणा अणाहारा।

अणिगूह वि [अनिगूह्य] अपनी शक्ति को न छिपाता हुआ। (प्रव चा २८) अणिगूह अप्पणो सत्ति।

अणिच्छ वि [अनिच्छ] इच्छा रहित (स २१०,२१३) अपरिग्गहो अणिच्छो।

अणिधण पु न [अनिधन] अन्तरहित। (पचा ४२)

अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, अनिष्ट, अहितकर। (प्रव ६१) णट्ठमणिट्ठ सव्व। (प्रव ६१)

अणिद्दिट्ठ वि [अनिर्दिष्ट] आकार रहित, जिसका आकार कहने में नही आता, निराकार। (पचा.१२७, स.४९, निय ४६, भा ६४) जीवमणिद्दिट्ठसंठाण। (पचा १२७) -सठाण वि [सस्थान] आकार रहित सस्थान। (पचा १२७, स. ४९, प्रव चा ८०)

अणियद वि [अनियत] अप्रतिवद्ध, पर-द्रव्य मे रत, अनियमितता। (पचा १५५) -गुणपज्जय पु [गुणपर्यय] पर द्रव्य की गुण एव पर्याय में रत। अणियदगुणपज्जओध परसमओ। (पंचा १५५)

अणियत्ति वि [अनिवृत्ति] निवृत्त नहीं होने वाला। (स.३०७)

अणिल पु [अनिल] हवा, वायु, पवन,। (पचा १११,११२) पचास्तिकाय में अणिल शब्द का प्रयोग वायुकाय से सम्बन्धित है।

अणिंदा स्त्री [अनिन्दा] निन्दा रहित। (स.३०७) अणियत्तीय अणिदा। (स ३०७)

अणिंदिअ/अणिदिय वि [अनिन्द्रिय] इन्द्रिय रहित, अतीन्द्रिय। (पचा.२७, निय १७७, मो.६) पचास्तिकाय की गाथा १५४ मे अणिदिय का अर्थ निर्मल भी स्पष्ट होता है। अत्थित्तमणिदियं भणिय। (पचा १५४)

अणु वि [अणु] थोडा, स्वल्प, छोटा, परमाणु। (निय.२०) अणुखध वियप्पेण। (निय २०)

अणुकंप/अणुकपय वि [अनुकम्प] दया, भक्तिभाव, भक्ति। प्रवचनसार चारित्राधिकार की गाथा ५१ में भक्तिभाव के रूप में अर्थ की स्पष्टता अधिक प्रतीत होती है। अणुकंपयोवयार।

(प्रव चा ५१)

अणुकपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा, कृपा। (पचा १३७) जो भूखे, प्यासे, दु खित एव दु खित मन वाले प्राणियों को दयापूर्वक अपनाता है, उसके अनुकम्पा होती है। तिसिद बुभुक्खिद वा दुहिद दट्ठूण जो हु दुहिदमणो। पडिवज्जदि त किवया तस्सेसा होदि अणुकपा।। -ससिद वि [सश्रित]अनुकपा के आश्रित। (पचा १३५) अनुकपाससिदो य परिणामो (पचा १३५) अणुकपाए(तृ ए चा ११) स्त्रीलिग शब्दों के तृतीया एकवचन से लेकर सप्तमी एक वचन तक में अ, इ एव ए प्रत्यय लगता है। कुन्दकुन्द के ग्रन्थों में प्राय ए प्रत्यय की बहुलता है।

अणुगमण न [अनुगमन] अनुसरण, अनुवर्तन, पीछे-पीछे चलना, गुरुओं के अनुकूल चलना। (पचा १३६, प्रव चा ४७) अणुगमण पि गुरूण। (पचा १३६)

अणुगहिद वि [अनुगृहीत] आभारी, दयायुक्त। (प्रव चा ३) पडिच्छम चेदि अणुगहिदो। (प्रव चा ३)

अणुचर सक [अनु+चर] 1 सेवा करना, अनुसरण करना। अणुचरदि (व प्र ए स १७) अणुचरति (व प्र ब प्रव ज्ञे ५९)अणुचरिदव्वो (वि कृ स १८) 2 पु [अनुचर] सेवक, नौकर, अनुगमन करने वाला।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट। (द ३६, शी २८) णिव्वाणमणुत्तर पत्ता। (द ३६)

अणुदिणु न [अनुदिनु अपभ्रश] प्रतिदिन हमेशा, नित्य। (भा

९२,१२०) भावहि अणुदिणु। (भा.१२०)

अणुपरिणाम वि [अणुपरिणाम] अणुमात्र परिणमन करने वाला। (प्रव ज्ञे ७३) अणुपरिणामा समा व विसमा वा।

अणुपेहण न [अनुप्रेक्षण] भावना,चितन,विचार। (द्वा.१) अणुपेहणं वोच्छे।

अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] बघा हुआ, सम्बद्ध। (पंचा. २०) भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा। (पचा.२०)

अणुभव सक [अनु+भू] अनुभव करना, जानना, समझना, कर्मफल का भोगना। अणुभवति (व.प्र.ब.प्रव.२०)

अणुभाग पु [अणुभाग]कर्मफल, प्रभाव, माहात्म्य, शक्ति, सामर्थ, वन्ध का एक भेद। (पचा ७३,स.२९०, नियं.९८) अणुभागप्पदेसबंधेहिं। (पचा ७३) -ट्ठाण पुं न [स्थान] अनुभाग स्थिति। (निय.४०) णो अणुभागट्ठाणा। (निय ४०)

अणुभाय पु [अनुभाग] कर्मफल, दृढ़सकल्प। (स.५२) णेव य अणुभायठाणाणि।

अणुभावग वि [अनुभावक] अनुभव कराने वाला, द्योतक, अनुभावगत, बोघक। (स.४०)

अणुमण वि [अनुमत] अनुमोदित, सम्मत, अनुमति। (चा.२२) चारित्रपाहुड में अणुमण शब्द का प्रयोग अनुमति-त्यागव्रत के लिए आया है। यह व्रत ग्यारह प्रतिमाओं में दशवीं प्रतिमाधारी देशविरतश्रावक का एक भेद है। अणुमणमुद्दिट्ठदेसविरदो य। (चा.२२)

अणुमत्त न [अणुमात्र] किंचित् भी। (पचा १६७) जस्स हिदयेणुमत्त। (पचा १६७)

अणुमत्ता वि [अनुमत]अनुमति देने वाला। (प्रव ज्ञे ६८, निय ७७) अणुमत्ता णेव कत्तीण।

अणुमहत वि [अणुमहान्त] छोटे-बड़े, मूर्तिक-अमूर्तिक, बहुप्रदेशी (पचा ४) अणण्णमइया अणुमहता।

अणुमण्ण एक [अनु+मन्] अनुमति देना, अनुमोदन करना, प्रसन्न होना, प्रशसा करना। अणुमण्णदि (प्रव ६५) किरियासु णाणुमण्णदि।

अणुमोदण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति। (निय ६३) कदकारिदाणुमोदणरहिद।

अणुमोदणा स्त्री [अनुमोदना]अनुमति, सम्मति। (द १३) पाव अणुमोदणाण।

अणुरत्त वि [अनुरक्त] अनुरागप्राप्त। (मो ५२)

अणुवेक्खा स्त्री [अनुप्रेक्षा] भावना, चितन, विचार। अणुवेक्खाओ (प्र ब द्वा ८७) अणुवेक्ख (द्वि ए द्वा ८७)भावेज्ज अणुवेक्ख। (द्वा ८७)

अणुहव सक [अनु+भू] अनुभव करना। (पचा १६३, प्रव ज्ञे ४३, ७१,७२) सो तेण सोक्खमणुहवदि। (पचा १६३)

अणेग/अणेय वि [अनेक] बहुत, एक से अधिक। (स ७६,७७,प्रव ज्ञे ३२, निय ११७, भा १४,१६) पुग्गलकम्म अणेयविह। (स ७६)-कम्म पु [कर्म] अनेक कर्म। - **विध/विह**

वि [विध] अनेक प्रकार। (स.८४,१७९,प्रव ज्ञे.३२) -जम्मंतर न [जन्मान्तर] अनेक जन्मों तक। (भा.३२) -वित्थरविसेस वि [विस्तारविशेष] अनेक प्रकार के विस्तार वाला। (स.२८३) -वार वि [वार] अनेक बार। अणेयवाराओ (द्वि व.गा.१४,१६)

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव, एषणारहित। (प्रव चा ३७) अणेसण (द्वि ए)

अणोवम वि [अनुपम] उपमा रहित, अनुपम। (प्रव १३, निय १७७, चा ४३, भा १६१, मो ३,१८) विसयातीद अणोवममणंत। (प्रव १३)

अण्ण स [अन्य] दूसरा, अन्य, भिन्न, पर, और भी, पृथक्, अलग। (पचा ४४,स ४८, प्रव ज्ञे २०, भा ४६) ण जह अण्णो कहं होदि। (प्रव ज्ञे २०)-णिरावेक्ख वि [निरापेक्ष] अन्य की अपेक्षा से रहित। (निय २८) अण्णणिरावेक्खो जो -दविय पु न [द्रव्य] अन्य द्रव्य। (पचा ८८, स ३७२, प्रव.ज्ञे.६२) अण्णदविएण अण्णदवियस्स। (स ३७२) -भाव पु [भाव] अन्यभाव, परभाव। अण्णभावाण (ष ब स ४८) -वस वि [वश] परवश, पराधीन। (निय १४१,१४४,१४५) सुहभावे सो हवेइ अण्णवसो। (निय १४४) -त्त वि [त्व]भेदरूप, पृथक्ता,भेदभाव। (पचा ४६,९६, स १७१, प्रव ज्ञे १४) अण्णत्तं णाणगुणो। (स.१७१) -मण्ण वि [अन्य] परस्पर, आपस में, (पचा.७,४८) अत्थतरिदो दु अण्णमण्णस्स। (पचा४८) -हा अ [था] अन्य रूप, अन्य प्रकार, विपरीतरीति, विभावरूप।

(प्रव ज्ञे ६१) सठाणादीहिं अण्णहा जादा। (प्रव ज्ञे ६१)

अण्णाण न [अज्ञान] अज्ञान, मिथ्याज्ञान, झूठा ज्ञान। (पचा१६५, स ८८,८९, नियं १२, भा ६५, चा १५, मो २८) समयसार गाथा१२९ में **अण्णाणो** का पुलिग प्रथमा एक वचन में भी प्रयोग हुआ है। उवओगो अण्णाण। (स ८८) अण्णाणमयो जीवो (स ९२) **-तमोच्छण्ण** वि [तमोच्छन्न]अज्ञानरूपी अन्धकार से आच्छादित। (स १८५) अण्णाणतमोच्छण्णों । (स १८५) **-द** वि [ता] अज्ञानता । (स २२१,२२३) तइया अण्णाणद गच्छे। (स २२३) **-णाणमूढ** वि [ज्ञानमूढ] अज्ञानरूपी ज्ञान मे मुग्ध, मिथ्याज्ञान और सम्यग्ज्ञान के विषय में मूढ। (चा १०) **अण्णाणणाणमूढा**। (चा १०) **-णासण** वि [नाशन] अज्ञानता को नाश करने वाला। (भा ६५) **-मय** वि [मय] अज्ञान युक्त। (स १३१) **-मलोच्छण्ण** वि [मलोच्छन्न] अज्ञानरूपी मल से आच्छादित, मिथ्या ज्ञान से ढँका हुआ। (स १५८) अण्णाणमलोच्छण्ण। (स १५८) **-मोहदोस** पु [मोह-दोष] अज्ञान एव मोहरूपी दोष। अण्णाणमोहदोसेहिं (तृ ब चा १७) **-मोहमग्ग** पु [मोहमार्ग] अज्ञानरूपी मोहमार्ग। अण्णाणमोहमग्गे। (स ए चा १३) अण्णाणादो (प ए) अण्णाणस्स (ष ए स १३२)

अण्णोण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, एक दूसरे। (पचा ६५, स ३१३, प्रव २८) अण्णोण्णपच्चया हवे। (स ३१३)-**अवगाह** पु [अवगाह] परस्पर में अवगाहन, एक दूसरे को अवकाश, परस्परप्रदेशानुप्रवेश। (प्रव ज्ञे ८५) अण्णोण्ण अवगाहो (प्रव ज्ञे

८५) **-णिमित्त** न [निमित्त] एक दूसरे के निमित्त। अण्णोण्णणिमित्तेण (तृ ए स ८१) **-आगाहमवगाढ** वि [अवगाह-अवगाढ] परस्पर एक क्षेत्र अवगाहन करके अतिशय गाढ़े भरे हुये। (पचा ६५) गच्छति कम्मभाव अण्णोण्णागाहमवगाढा। (पचा ६५)

अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] अज्ञानयुक्त, ज्ञानरहित, मिथ्याज्ञानी। (स १८५,२२९, स ज वृ १५३, प्रव चा ३८,४३, भा १३७) भावपाहुड में **अण्णाणी** शब्द का प्रयोग षष्ठी एकवचन के रूप में हुआ है। सत्तट्ठी अण्णाणी। (हे स्यम्-जस-शसा लुक् ४/३४४, षष्ठ्या ४/३४५) अण्णाणी प्रथमा एक वचन का रूप है, प्रथमा में प्रत्यय लोप होकर ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है। अण्णाणिओ प्र ब स १२७) अण्णाणमओ भावो, अण्णाणिओ कुणदि तेण कम्माणि।

अतच्च न [अतत्व] अतत्त्व, सारहीन, असत्य। (स १३२) जीवाण अतच्चउवलद्धी। (स १३२)

अतिहि पु [अतिथि] पाहुन, अतिथि, पात्र, अभ्यागत, शिक्षाव्रत का एक भेद। (चा २६) तइय च अतिहिपुज्ज। (चा २६) **-पुज्जा** स्त्री [पूजा] अतिथि पूजा। तइय च अतिहिपुज्ज। (चा २६)

अतीद वि [अतीत] परे। (भा ६३, प्रव २९)

अतुल वि [अतुल] अनुपम। (भा ९२) भावहि अणुदिणु अतुल। (भा ९२)

अत्त पु [आत्मन्] 1 आत्मा, जीव चेतन। (पचा ६५ स ८३)

जाण अत्ता दु अत्ताण। (स ८३) -भाव पु [भाव] आत्मभाव। (स ८६) जम्हा दु अत्तभाव। (स ८६) 2 पु [आत्मन्] अपना। (स ९४,९५) -मज्झ वि [मध्य] अपने आप ही मध्य। (निय २६) 3 वि [आर्त] आर्तध्यान, पीड़ित, दु खित। (पचा १४०) इदियवसदा य अत्तरुद्दाणि। 4 वि [आप्त] वीतरागी, सर्वज्ञ, केवलज्ञानी। (निय ५) अत्तागमतच्चाण, सद्दहणादो हवेइ सम्मत्त।

अत्ताण पु [आत्मन्] अपने आप। (स ८३) अत्ताण (द्वि ए स ८३) जाण अत्ता दु अत्ताण।

अत्तावण वि [आतापन] आतापनयोग। (भा ४४) अत्तावणेण आदो, बाहुबली कित्तिय काल।

अत्थ अक [स्था] बैठना, ठहरना। अत्थेइ (व प्र ए बो ५५)

अत्थ पु न [अर्थ] 1 पदार्थ, वस्तु, अर्थ, जिन्स। (स ४१५,प्रव ५९) अत्थतच्चदो णाऊ। (स ४१५) 2 पु न [अर्थ] धन, द्रव्य। -अत्थी वि [अर्थिन्] धनार्थी, धन चाहने वाला। (स १७) अत्थत्थीओ पयत्तेण। (स १७) -अतगद वि [अन्तगत] पदार्थ के अन्त को प्राप्त। णाण अत्थतगद। (प्रव ६१) -अंतरभूद वि [अन्तर्भूत] पदार्थ में गर्भित। (प्रव ज्ञे ५२,६२) तमत्थ अत्थतरभूदमत्थीदो। (प्रव ज्ञे ५२) -अतरिद वि [अन्तरित] पदार्थ से सर्वथा विभिन्न, सर्वथा प्रकार भेद। (पचा ४८,४९) अत्थतरिदो दु णाणदो णाणी। (पचा ४८) -जाद वि [जात] पदार्थ को प्राप्त, वस्तु से उत्पन्न। (प्रव १८)

सव्वस्स अत्थजादस्स।

अत्थि अ [अस्ति] 1. सत्त्व सूचक अव्यय। (पंचा.३४, स.३८, प्रव.५३)णवि अत्थि मज्झ किंचिवि। (पंचा.३८) **-काइय/काय** वि [कायिक/काय] अस्तिकायिक, कायवन्त, प्रदेशों से सहित, बहुप्रदेशी। (पचा.५,६, निय.३४) ते होंति अत्थिकाया। (पचा५) **-सहाव** पुं [स्वभाव] अस्तिस्वभाव। (पंचा ५) जेंसि अत्थिसहाओ। 2 अक [अस्ति] होना। अत्थि (व.प्र.ए.) सति (व.प्र.ब)

अत्थित्त न [अस्तित्व] विद्यमानता, अस्तिभाव। (पचा १५४, निय १८१, प्रव.ज्ञे.६०) अत्थित्तम्हि य णियदा।

अदंतवण वि [अदन्तधावन] अदन्तधावन, दांत साफ नही करना, मुनियों का एक मूलगुण। (प्रव चा ८)

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ, अणुव्रत का एक भेद, चोरी। (स २६३,चा २४,३०,लिं.१४) मोसे अदत्तथूले य। (चा.२४) **-दाण** वि [दान]बिना दी गई वस्तु का ग्रहण। (लि१४)**-विरइ** वि [विरति] बिना दी गई वस्तु का त्याग, अणुव्रत या महाव्रत का एक भेद। (चा ३०) असच्चविरई अदत्तविरई।

अदिंदिअ/अदिंदिय वि [अतीन्द्रिय] अतीन्द्रिय, इन्द्रिय रहित। (प्रव.१८,२०,५३,५४) जम्हा अदिंदियत्त। (प्रव.२०) **-त्त** वि [त्व] इन्द्रियरहितपना, अतीन्द्रियता। (प्रव २०)

अदिक्कंत वि [अतिक्रान्त] रहित, परे, छूटा हुआ। पाणित्तमदिक्कंता। (पंचा.३९) ससारमदिक्कतो (द्वा.३८)

अदिसय वि [अतिशय] अतिशय, चमत्कारपूर्ण, आश्चर्यजनक। (निय ७१)

अदिस्समाण व कृ [अदृश्यमान] नहीं दिखाई देता हुआ।

अदीद वि [अतीत] परे। (पचा ३५) वचिगोयरमदीदा। (पचा ३५)

अद्ध पु न [अर्ध] आधा, एक का आधा। अद्ध भणति देसोत्ति (पचा ७५) -**अद्ध** पु न [अर्ध] आधे का आधा, चौथाई भाग। अद्धद्ध च पदेसो। (पचा ७५)

अध अ [अथ] अब, इसके बाद, इसके पश्चात्। (पचा ३७,३८) सस्सधमध उच्छेद। (पचा ३७)

अधम्म पु [अधर्म] पाप, अनीति, अनाचार। (स २११) अपरिग्गहो अधम्मस्स, जाणगो तेण सो होदि। (स २११)

अधम्म पु [अधर्म] द्रव्य का एक भेद, अधर्म। जो जीव और पुद्गलों के ठहराने में सहायक होता है, वह अधर्मद्रव्य है। यह बहुप्रदेशी होने से अस्तिकाय है। ठिदिकिरियाजुत्ताण, कारणभूद तु पुढवीव। (पचा ८६,निय ३०) -**च्छि** पु [अस्ति] अधर्मास्तिकाय। (स ज वृ २११)

अधवा अ [अथवा] अथवा, या, और । (पचा ४४) दव्वाणतियमधवा। (पचा ४४)

अधारणा स्त्री [अधारणा] जो लाभदायक न हो, अधारणा। (स ३०७) इसे अमृतकुम्भ के आठ भेदों में गिनाया है। अप्परिहारो अधारणा चेव। (स ३०७)

अदिसय वि [अतिशय] अतिशय, चमत्कारपूर्ण, आश्चर्यजनक। (निय ७१)

अदिस्समाण व कृ [अदृश्यमान] नहीं दिखाई देता हुआ।

अदीद वि [अतीत] परे। (पचा ३५) वचिगोयरमदीदा। (पचा ३५)

अद्ध पु न [अर्ध] आधा, एक का आधा। अद्ध भणति देसोत्ति (पचा ७५) -**अद्ध** पु न [अर्ध] आधे का आधा, चौथाई भाग। अद्धद्ध च पदेसो। (पचा ७५)

अध अ [अथ] अब, इसके बाद, इसके पश्चात्। (पचा ३७,३८) सस्सधमध उच्छेद। (पचा ३७)

अधम्म पु [अधर्म] पाप, अनीति, अनाचार। (स २११) अपरिग्गहो अधम्मस्स, जाणगो तेण सो होदि। (स २११)

अधम्म पु [अधर्म] द्रव्य का एक भेद, अधर्म। जो जीव और पुद्गलों के ठहराने में सहायक होता है, वह अधर्मद्रव्य है। यह बहुप्रदेशी होने से अस्तिकाय है। ठिदिकिरियाजुत्ताण, कारणभूद तु पुढवीव। (पचा ८६,निय ३०) -**च्छि** पु [अस्ति] अधर्मास्तिकाय। (स ज वृ २११)

अधवा अ [अथवा] अथवा, या, और । (पचा ४४) दव्वाणतियमधवा। (पचा ४४)

अधारणा स्त्री [अधारणा] जो लाभदायक न हो, अधारणा। (स ३०७) इसे अमृतकुम्भ के आठ भेदों में गिनाया है। अप्परिहारो अधारणा चेव। (स ३०७)

दोनों वचनों के तीनों पुरुषों में ज्जा,ज्ज प्रत्यय भी होते हैं)
अभवियसत्तो दु जो अधीएज्ज। (स २७४)

अधुव वि [अध्रुव] अस्थिर, अविनश्वर, एक भावना का नाम। (स ७४) जीवणि-बद्धा एए अधुव। (स ७४)

अपच्चखाण/अपच्चक्खाण न [अप्रत्याख्यान] परित्याग न करने की प्रतिज्ञा, अत्याग। (स २८३,२८५) अपच्चखाण तहेव विण्णेय। (स २८३)

अपडिक्कमण/अपडिकमण न [अप्रतिक्रमण] अनिवृत्ति, अशुभव्यापार में प्रवृत्ति, दुष्कृत के प्रति पश्चात्ताप नहीं होना। (स २८३-२८५) अपडिक्कमण दुविह (स २८४)

अपत्त न [अपात्र] 1 अपात्र, जो योग्य न हो। (द्वा १८) जो सम्यग्दर्शन रूपी रत्न से रहित है, वह अपात्र है।
सम्मत्तरयणरहिओ, अपत्तमिदि सपरिक्खेज्जो। 2 वि [अप्राप्त] प्राप्त नहीं हुआ। (स ३८२) बुद्धि सिवमपत्तो। (स ३८२)

अपत्थणिज्ज [अप्रार्थनीय] प्रार्थना से रहित, अनिन्दनीय। (प्रव चा २३) अपत्थणिज्ज असजदजणेहिं। (प्रव चा २३)

अपद वि [अपद] पदरहित, द्रव्य। अपदे (द्वि ब स २०३) अपदे मोत्तूण गिण्ह तह णियद।

अपदेस पु [अप्रदेश] प्रदेशरहित, अपरिमाण विशेष, असयुक्त। (स १५, प्रव ४१, प्रव. ज्ञे ४५,४६) अपदेससुत्तमज्झ, पस्सदि जिणसासण सव्वं।

अपमत्त वि [अप्रमत्त] प्रमादरहित, सावधान, अप्रमत्त नामक गुणस्थान। (निय. १५८) अपमत्तपहुदिठाण, पडिवज्ज य केवली जादा। (निय. १५८)

अपरम वि [अपरम] अपरमभाव, अनुत्कृष्ट। (स.१२) अपरमेट्ठिदा भावे। (स.१२)

अपरिग्गह वि [अपरिग्रह] धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित, व्रत विशेष, महाव्रत का भेद।(स. २१०-२१३) **-त्तण** वि [त्व] अपरिग्रहत्व। (स २६४) **-समणुण्ण** वि [समनोज्ञ]मनोज्ञ और अमनोज्ञ परिग्रह त्याग। अपरिग्गहसमणुण्णेसु। (चा. ३६)।

अपरिच्चत्त वि [अपरित्यक्त] नहीं छोड़े हुए,परित्याग से रहित। अपरिच्चत्त-सहावेण। (प्रव ज्ञे.३)

अपरिणम सक [अपरि+णम्] परिणमन नहीं करना। अपरिणमतम्हि (व.कृ.स.ए.) अपरिणमतीसु (व कृ.स ब.)

अपादग पु [अपादक] पाव रहित, बिना पैर का, गिंडौला, एक जन्तु विशेष। (पचा ११४) सिप्पी अपादगा य किमी।

अपार वि [अपार] पार रहित, अन्त रहित, अनन्त। (प्रव.७७) हिंडदि घोरमपार। (प्रव.७७)

अपुज्ज् सक [अपूजय्] पूजा के योग्य नहीं, अपूजित, अपूज्य। (भा १४२) सवओ लोयअपुज्जो। (भा.१४२)

अपुणब्भव पु [अपुनर्भव] उत्पत्ति रहित, मुक्ति, जन्म-मृत्यु से रहित। (प्रव.चा.२४, चा ४५) **-कामिण** वि [कामिन्] मोक्षाभिलाषी। (प्रव चा. २४)अपुणब्भवकामिणोध। **-कारण** न

[कारण] मोक्ष हेतु, मोक्ष का निमित्त। (प्रव ज्ञे ६)

अपुणब्भाव पु [अपुनर्भाव] मोक्ष प्राप्ति। (प्रव चा ५६) ण लहदि अपुणब्भाव।

अपुधब्भूद वि [अपृथग्भूत] एक क्षेत्र अवगाही, प्रदेश भेद रहित। (पचा ५०,९६) अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य। (पचा ५०)

अपुव्व वि [अपूर्व] अद्भुत, अद्वितीय। (भा १३२) भावि अपुव्व महासत्त।

अपोह पु [अपोह] युक्ति देना, तर्क प्रस्तुत करना, तर्क शक्ति द्वारा शका निवारण । अपोहाविवरीयभासण। (चा ३३)

अप्प स [अल्प] अल्प, थोडा। (सू १८,१९) अप्पं बहुय च हवइ लिगस्स। **-गाह** पु [ग्राह्य] अल्पग्रहण। (सू २७) गाहेण अप्पगाहा। (सू २७) **-बहुय** वि [बहुक] अल्पबहुत्व। (सू १८,१९) जइ लेइ अप्पबहुय। (सू १८) **-लेवी** वि [लेपी] अल्पलिप्त। (प्रव चा ३१) **-सार** पु न [सार] अल्पसार। (भा १३०) णरसुरसुक्खाण अप्पसाराण। (भा १३०)

अप्प पु [आत्मन्] आत्मा, जीव, चेतन, निज। (स २९,५३, निय १७०, पंचा १४०, मो ५, भा १३१) तुम कुणहि अप्पहिय। (भा १३१) **-पयास** पु [प्रयास] आत्मउद्यम, निज उद्यम, निज प्रयत्न। (निय १६५) णाण अप्पपयास। (निय १६५) **-प्पसंसिय** वि [प्रशसित] आत्मप्रशसित, आत्मश्लाघ्य। (निय ६२) अप्पप्पसंसिय वयण। (निय ६२) **-वस** पु [वश] आत्मवश, आत्माधीन। (निय १४६) अप्पवसो सो

होदि। -**वियप्प** पु [विकल्प] आत्मविकल्प, अपने में विकल्प। (स ९४,९५) अप्पवियप्प करेइ कोहो ह। (स ९४) अप्पवियप्प करेदि धम्माई। (स.९५) -**समभाव** पु [समभाव] आत्म समभाव। (मो ५०) सो हवइ अप्पसमभावो। (मो ५०) -**संकप्प** पु [संकल्प] आत्मसंकल्प, आत्मचिंतन। (मो ५) अंतरप्पा हु अप्पसकप्पो। -**सरूव** वि [स्वरूप] आत्म-स्वरूप, आत्म-सदृश। (नियं ११९,१६९) -**सहाव** पु [स्वभाव] आत्म-स्वभाव। (निय १४७) -**हिय** न [हित] आत्मरहित, आत्म-कल्याण। (भा १३१) तुम कुणहि अप्पहिय।

अप्पग/अप्पय पु [आत्मक] 1 जीव द्रव्य, आत्मा। (प्रव ७९,स १८६) सो अप्पग सुद्ध। 2 वि [आत्मक] स्वकीय, निजीय, अपना। (प्रव ८९) अप्पग (द्वि ए पचा १५८) अप्पणो (द्वि ब प्रव ९०) अप्पणा (तृ.ए स २५३) अप्पणो (च /ष ए स २९३, प्रव ७) इच्छदि जदि अप्पणो अप्पा। (प्रव.९०)।

अप्पट्ठपसाधग वि [आत्मार्थप्रसाधक] आत्मीक स्वभाव साधने वाला। (पचा १४५) अप्पट्ठपसाधणो हि अप्पाण। (पंचा.१४५)

अप्पडिकम्म वि [अप्रतिकर्मन्] संस्कार रहित,सम्हालने या सजाने की क्रिया रहित। (प्रव चा ५,स ज वृ ३०८) अप्पडिकम्म हवदि लिग। (प्रव.चा ५) -**त्त** वि [त्व] ममत्वभाव की क्रिया से रहित। (प्रव चा २४)

अप्पडिकुट्ठ वि [अप्रतिकुष्ट] अनिन्दित। (प्रव चा २३)

अप्पडिबद्ध वि [अप्रतिबद्ध] आकाक्षा रहित। (प्रव चा २६)

अप्पडिबुद्ध वि [अप्रतिबुद्ध] अज्ञानी, समझरहित। (स १९) अप्पडिबुद्धो हवदि ताव।

अप्पडिपुण्णोदर वि [अप्रतिपूर्णोदर] अपूर्णपेट। (प्रव चा २९) अप्पडिपुण्णोदर जधा लद्ध। (प्रव चा २९)

अप्पडिहददसण वि [अप्रतिहतदर्शन] यथार्थ वस्तु का अखण्डित सामान्यावलोकन। (पचा १५४) अप्पडिहददसण अणण्णमय। (पचा १५४)

अप्पडिहार वि [अप्रतिहार] अप्रतिहार। (स ज वृ ३०७)

अप्पप्पयासया स्त्री [आत्मप्रकाशिका] आत्मप्रकाशिका। (निय १६१) अप्पप्पयासया चेव। (निय १६१)

अप्पमत्त वि [अप्रमत्त] अप्रमाद युक्त। (स ६,भा ९४) ण होदि अप्पमत्तो। (स ६)

अप्परिणामि वि [अपरिणामिन्] परिणमन नहीं करने वाला। (स ११६,१२१) अप्परिणामी तदा होदि। (स ११६)

अप्पा पु [आत्मन्] आत्मा, जीव, चेतन। (पचा १४७, स १०२, निय ४३) अप्पा (प्र ए स १०२) अप्पाण (द्वि ए पचा १६२, स ९,प्रव ३३) अप्पादो (पं ए पचा १५९)अप्पा सु (स ब चा ४३) णाण अप्पा सव्व। (स १०)

अप्पाणभाव पु [आत्मन्भाव] आत्मभाव, निजस्वभाव। (स ९६) अप्पाणभावेण (तृ ए स ९६)

अप्पाणमअ वि [आत्मन्मय] आत्ममय, अपने आप मय,

निजरूपमय। अप्पाणमओ जीवो। (स ९२) (हे पुष्यन आणो राजवच्च ३/५६) इस सूत्र से अप्प में आण आदेश विकल्प से होता है। अत. अप्प या अप्पाण इन दोनों शब्दों के रूप अकारान्त पुलिङ्ग की तरह चलेंगे।

अप्पिला वि [दि] तुच्छ, अनादरणीय। (शी १७) दुस्सीला अप्पिला लोए।

अफल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक। (प्रव ज्ञे २४, प्रव चा ७२) अफले चिर ण जीवदि। (प्रव चा ७२) किरिया हि णात्थि अफला, धम्मो जदि णिप्फलो परमो। (प्रव ज्ञे.२४)

अबंध/अबंधण वि [अबन्ध] अबन्ध, बधयुक्त नहीं। (स १७०, निय १७२)

अबंभ न [अब्रह्म] मैथुन। (भा ९८) **-चारी** वि [चारिन्] अब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य से रहित। (स ३३७) **-चेर** वि [चर्य] अब्रह्मचर्य। (स २६३) **-विरइ** वि [विरति] मैथुन से विरत। (चा ३०)

अबंभु न [अब्रह्म, अपभ्रंश] मैथुन, कुशील। (लि ७)अबभु लिगिरूवेण।

अबद्ध वि [अबद्ध] नही बधे हुए, बधनरहित। कम्म बद्धमबद्ध। (स १४२) **-पुट्ठ** वि [स्पृष्ट] नहीं बधे हुए स्पर्शित। (स १५, १४१) अबद्धपुट्ठ हवइ कम्म। (स.१४१)

अब्भंतर न [अभ्यतर] भीतर, अन्तरग। (भा.३,४३,४९) गथ अब्भतर धीर। (भा.४३) डहिओ अब्भतरेण दोसेण। (भा ४९)

-गधजुत्त वि [गधयुक्त] अभ्यतर गध से युक्त। -लिग न [लिङ्ग] आभ्यन्तर लिङ्ग, आभ्यतरचिन्ह। (भा १११) अब्भतरलिग सुद्धिमावण्णो।

अब्भितर न [अभ्यन्तर] अन्तरग। (भा ७०) **-भाव** पु [भाव] अन्तरग भाव। (भा ७०) अब्भितर-भावदोसपरिसुद्धो।

अब्भुट्ठाण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खडा होना, सम्मान में खड़ा होना। (प्रव चा ४७) अब्भुट्ठाणाणुगमणपडिवत्ती।

अब्भुट्ठिद वि [अभ्युत्थित] उद्यत, सावधान, सद्भाव। (प्रव ९२) अब्भुट्ठिदो महप्पा। (निय १५२) समणो अब्भुट्ठिणो होदि।

अब्भुट्ठेय वि [अभ्युत्थेय] सम्मान के लिए खडे होने योग्य। (प्रव चा ६३) अब्भुट्ठेयसमणा।

अब्भुदय पु [अभ्युदय] स्वर्ग, वैभव, उन्नति, उदय। (भा १२७) **-परंपरा** स्त्री [परम्परा] स्वर्ग की परपरा, उन्नति की परपरा अब्भुदयपरपराइ सोक्खाइ।

अब्भुवसक [अभ्युप] अगीकार करना। (स ४०४)

अभत्ति वि [अभक्ति] भक्ति नहीं करने वाला। (निय १८५) अभत्ति मा कुणह जिणमग्गे। (निय १८५)

अभयदाण न [अभयदान] जीवनदान, अभय देना। (भा १३५) जीवाणमभयदाण। (भा १३५)

अभवियसत्त पु [अभव्यसत्त्व] अभव्यप्राणी। (स २७४) अभवियसत्तो दु जो अधीएज्ज।

अभव्व पु [अभव्य] अभव्य, मुक्ति जाने के अयोग्य, जो

भव-भवान्तरों में भी मुक्त नहीं हो। (पचा.१२०, स २७३, प्रव ६२, भा १३८) अभव्वो (प्र ए.स ३१७) अभव्वा (प्र.ब प्रव.६२) अभव्व (द्वि ए पचा.३७) -जीव पुं [जीव] अभव्व जीव। (भा १३८) मिच्छत्तछण्णदिट्ठी, दुद्धीए दुम्मएहिं दोसेहिं। धम्म जिणपण्णत्त अभव्वजीवो ण रोचेदि। -सत्त पुं [सत्त्व] अभव्यजीव, त्रैकालिक आत्मीक भाव की प्रतीति से रहित। (पचा.१६३) अभव्वसत्तो ण सद्दहदि।

अभाव पु [अभाव] अभाव, निषेध, असत्ता, अविद्यमानता, असित्वरहित, कर्मो का निरोध। (पचा ३५, स.१७८, प्रव ज्ञे :५,१६) जो खलु तस्स अभावो। (प्रव ज्ञे १५) कम्मस्साभावेण य। (पचा १५१)

अभिदुद वि [अभिद्रुत] दु खी होता हुआ, कष्ट पाता हुआ। (प्रव.१२)

अभिगच्छ सक [अभि गम्] प्राप्त करना, अनुभव करना, सनझना। (पचा १२३,स ९,प्रव ९०) अभिगच्छदु (वि /आ.प्र ए पचा १२३) अभिगच्छइ (व प्र ए स ९)जो हि सुएणभिगच्छइ। अभिगम्म (स कृ पचा १२३)

अभिगद वि [अभिगत] रुचि लिए हुए, ज्ञात। (पंचा १७०,स १३) भूदत्थेणाभिगदा। (प्र ब स १३)

अभिणंदण वि [अभिनदन] प्रशसा, स्तुति, सम्म न, एक तीर्थंकर क नाम। (ती भ ३)

अभिणिवेस पु [अभिनिवेश] अभिप्राय, आग्रह। (निय.५१)

विवरीयाभिणिवेसविवज्जियसद्दहणमेव सम्मत्त।

अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, वदनीय, पूजित। (ती भ ६)

अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, तिरस्कृत, पराजित, अपना-सा कर। (प्रव ३०, प्रव ज्ञे २५) रदणमिह इदणील, दुद्धज्झसिय जहा सभासाए। अभिभूय त पि दुद्ध, वट्टदि तह णाणमत्थेसु।

अभिरद वि [अभिरत] तल्लीन, अभिरत अनुरक्त।

अभिवद सक [अभि+वद्] प्रणामकरना, नमस्कार करना। अभिवदिऊण (स कृ पचा १०५)

अभूदत्थ वि [अभूतार्थ] असत्यार्थ। (स ११) ववहारोऽभूयत्थो, देसिदो दु सुद्धणयो।

अभूदपुव्व वि [अभूतपूर्व] किसी काल में समाप्त नहीं होने वाला, पहले कभी न होने वाला।(पचा २०) तेसिमभाव किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो। (पचा २०)

अमग्गय वि [अमार्गक] अमार्ग, कुमार्ग, मिथ्यामार्ग। (सू १) एक्को वि मोक्खमग्गो, सेसा य अमग्गया सव्वे। अमग्गय (प्र ब सू १०)

अमणुण्ण वि [अमनोज्ञ] अमनोज्ञ, असुन्दर, कुरूप। (चा २९) अमणुण्णे य मणुण्णे, सजीवदव्वे अजीवदव्वे य।(चा २९)

अमय पु [अमृत] 1 मुक्ति, मोक्ष। (स ३०७) -**कुभ** पु [कुम्भ] अमृतकलश। (स ३०७) 2 वि [अमय] विकार रहित,अकृत्रिम,स्वभावसिद्ध। (पचा २२) अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स।

अमर पुं [अमर] देव। (प्रव.ज्ञे.२०, भा. ७५) खेयरअमरणराणं। (भा.१०८) अमरो (प्र ए.प्रव.ज्ञे.२०) अगराण (ष.व.द.२५) अमराणवदियाणं।

अमाण वि[अमान] 1 अज्ञानपूर्ण, ज्ञानहीन। सिसुकाले य अमाणे। (भा.४१) 2. वि [अमान] प्रमाणरहित, मर्यादारहित। 3. वि [अमान] मान रहित, सम्मान-अपमान में समान।

अमिअ वे [अमित] मर्यादा रहित, अनन्त, असंख्य, परिमाण रहित सो चेव हवदि लोओ तत्तो अमिओ अलोओ खं। (पंचा ३)

अमिदउ [अमृत] अमृत। (द.१७) -भूद वि [भूत] अमृतरूप, अमृतुल्य। जिणवयणमोसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूद। (द१७)

अमुत्त वि [अमूर्त्त] रूपरहित, निराकार। (पंचा.९९, स ४०५ प्र०४१, नियः १८१, भा.१४७) सेसं हवदि अमुत्तं। (पंचा.९९) अमुत्तो (प्र. ए. पंचा.२४) अमुत्ता (प्र. ब. प्रव. ज्ञे.३९) अमुत्तं (द्वि ए पचा.९९) अमुत्ताण (ष.ब.प्रव.ज्ञे ३९)

अमूढ वि [अमूढ़] अमुग्ध, ज्ञानयुक्त। (स.२३२, चा.९) -दिट्ठी स्त्री [दृष्टि] सम्यग्दर्शन, सम्यग्दृष्टि। (स.२३२) जो हवइ असम्मूढो, चेदा सद्दिट्ठी सव्वभावेसु। सो खलु अमूढदिट्ठी सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो। (स २३२)

अमेय वि [अमेय] सीमा रहित, अमित, अपरिमित। (चा ४) एए तिण्णि वि भावा, हवंति जीवस्स अक्खयामेया।

अमोह वि [अमोह] मोह रहित, निर्मोह, मोह का अभाव।

(चा १२) जीवो आराहतो, जिणसम्मत्त अमोहेण।

अयदाचार वि [अयताचार] प्रयत्नपूर्वक आचरण नहीं, अयत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति करने वाला। (प्रव चा १७,१८) अयदाचारो समणो। (प्र ए प्रव चा १८) अयदाचारस्स णिच्छिद हिंसा (ष ए प्रव चा १७)

अयाण वि [अज्ञ] अज्ञानी, अजान, नहीं जानने वाला, अभिज्ञ। अप्पाणमयाणता (व कृ स ३९) (हे न्त-मणौ ३/१८०)

अरद वि [अरत] अनासक्त, रत नहीं होने वाला। दव्वुभोगे अरदो। (स १९६)

अरदि स्त्री [अरति] अरति, रति नही होना, नोकषाय का एक भेद। (स १९६) **-भाव** पु [भाव] अरतिभाव। जह मज्ज पिवमाणो, अरदिभावेण मज्जदि ण पुरिसो। (स १९६)

अरय पु [अरक] धुरी, पहिये के बीच भाग का काष्ठ। (शी २) **-घरट्ट** पु [घरट्ट दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा (शी २६) ससारो भमिदव्व अरयघरट्ट व भूदेहिं।

अरस पु [अरस] रस सहित, नीरस। (पचा १२७, स ४९) धम्मत्थिकायमरस। (पचा ८३), अरसमरूवगगध। (स ४९)

अरहत पु [अर्हन्त्] जिन भगवान्,जिसने चार घातिया कर्मो को नष्ट कर दिया है। (पचा १६६, प्रव ४,१४, शी ४०)अरहते माणुसे खेत्ते। (प्रव ३) अरहते (द्वि ब) यहाँ चतुर्थी के योग में द्वितीया का प्रयोग है। अरहताण (च ब प्रव ४) किच्चा अरहताण, सिद्धाण तह णमो गणहराण। अज्झावयवग्गाण,

साहूण चेव सव्वेसिं।।(प्रव.४) अरहत (द्वि.ए प्रव ८०) अरहता (प्र ब ८२)

अरि पु [अरि] शत्रु, रिपु। (शी २०) सीलं तवो विसुद्ध,दसणसुद्धी य णाणसुद्धीय । सील विसयाण अरी, सीलं मोक्खस्स सोवाण।।

अरिह पु [अर्हस्] सर्वज्ञ, वीतरागी, केवलज्ञानी, जिनदेव, अरहत। (स ४०९) ण उ होदि मोक्खमग्गो, लिग जं देहणिमग्मा अरिहा।

अरुव वि [अरूप] रूप सहित, आकार शून्य, अमूर्त। (पचा.१२७ स ४९) अरसमरूवमगंधं। (स ४९)

अरूह पु [अर्हस्] सर्वज्ञ, अरहन्त। (शी ३२) -पय पु न [पद] अर्हत्पद, अर्हत् स्थान, अर्हन्त के कारण। जाए विसयविरत्तो सो गमयदि णरयवेयण पउर। ता लहेदि अरूहपय, भणिय जिण-वड्ढमाणेण।। (शी.३२)

अल्लिय वि [आलीन] युक्त। (निय ४७) भवमल्लियजीवा तारिसा होंति। (निय ४७)

अवगय वि [अपगत] विनष्ट, नाशरहित। (स ३०४) - राध पु [राध] अपराध से रहित। शुद्ध आत्मा की सिद्धि या साधन को राध कहते है, जिसके यह नही है, वह सापराध है। सापराध पुरुष को बन्ध की शका सभव है। जिसके सिद्धि है, वह निरपराध है। निरपराध पुरुष निः शक हुआ अपने उपयोग में लीन होता है। ससिद्धिराध सिद्ध, साधियमाराधिय च एयट्ठ अवगयराधो जो खलु चेया सो होइ अवराधो।। (स.३०४)

अवगहण न [अव+गाहन] अवगाहन, स्थान, जगह, गहराई, आत्मा का एक विशेष गुण। (निय ३०) अवगहण आयास, जीवादी-सव्वदव्वाण। (निय ३०)

अवगास पु [अवकाश] स्थान, जगह। आगास अवगास। (पचा ९२)

अवगाह पु [अवगाह] अवगाहन, जगह देने का कारण। (प्रव ज्ञे ४१) आगासस्सवगाहो।

अवच्छण्ण वि [अवच्छन्न] आच्छादित, ढँका हुआ। (स १६०)

अवणिद वि [अपनित] कम करना, दूर । (स.२४२) सव्वम्हि अवणिदे सते। (स २४२)

अवणीय वि [अपनीत] दूर किया गया, कम किया गया। (निय १८४) अवणीय पूरयतु।

अवण्ण वि [अवर्ण] वर्ण रहित, रग रहित। (पचा ८३, स १३७,

अवत्तव्व वि [अवक्तव्य] अनिर्वचनीय, किसी प्रकार से गोचर नहीं, सप्तभङ्गी का चौथा भेद। अत्थि त्ति य णत्थि त्ति य, हवदि अवत्तव्वमिदि पुणो दव्व। (प्रव ज्ञे २३)

अवमाण पु न [अपमान] अवज्ञा, तिरस्कार। (निय ३९) णो खलु सहावठाणा, णो माण-वमाणभावठाणा वा। (निय ३९)

अवमिच्चु पु [अपमृत्यु] अकालमरण, अकारणमरण, आकस्मिकमरण। अवमिच्चु-महादुक्ख तिव्व पत्तो सि त मित्त। (भा २७)

अवर वि [अपर] 1 अन्य, दूसरा। (पचा १०१,स ४०, भा ९६) अवरे पणवीसभावणा भावि। (भा ९६) 2 सि [अपर] जघन्य,

सबसे कम। 3 वि [अपर] जिससे अच्छा अन्य नहीं। -सावय पुं [श्रावक] उत्कृष्ट श्रावक। (सू.२१) दुइयं च उत्तलिंगं उक्किट्टं अवरसावयाण च।

अवरट्ठिया स्त्री [दि] आर्यिका। (द.१८) अवरट्ठियाण तइयं।

अवराह पु [अपराध] अपराध। थेयाई अवराहे कुव्वदि। (स.३०१) अवराहे (द्वि ब.स.३०२)

अवरूवरुइ वि [अपरूपरुचि] दूसरे के प्रति ईर्ष्या। (लिं १३)

अवलंबिय वि [अवलम्बित] लटकता हुआ। (बो ५०)

अवलोग सक [अव+लोक्] अवलोकन करना, देखना। (निय.६१) अवलोगंतो (व कृ.निय ६१)

अवलोयभोयण न [अवलोकभोजन] आलोकित भोजन, अहिंसाव्रत की एक भावना का नाम। (चा.३२) वयगुत्ती मणगुत्ती, इरियासमिदी सुदाणणिक्खेवो। अवलोयभोयणाए अहिंसए भावणा होंति।। (चा.३२)

अववद् सक [अप+वद्] निंदा करना। (प्रव.चा ६५) अववदि सासणत्थं, समण दिट्ठा पदोसदो जो हि।

अवस वि [अवश] अपराधीन, स्वतन्त्र। (निय.१४२,१४३)

अवसत्त वि [अवसक्त] लीन, तन्मय। (प्रव.चा ७३)

अवसप्पिणी स्त्री [अवसर्पिणी] अवसर्पिणी काल विशेष, दशकोडाकोडि सागरोपम-परिमित काल, जिसमें सभी पदार्थों के गुणत्व/गुणवत्ता में क्रमश हानि होती है। (द्द २७)

अवसाण वि [अवसान] पृथक्, अविभागी अश। (निय २५) खधाण अवसाणो।

अवसेस पु [अवशेष] अवशिष्ट, बाकी, बचा हुआ। (सू १३, स २९७,२९९) अवसेसा जे भावा ते मज्झ परे त्ति णादव्वा। (स २९७) आलबण च मे आदा अवसेसाइ वोसरे। (भा ५७) अवसेसाइ (द्वि ब) अवसेसे (द्वि ब भा १) अवसेस (द्वि ए निय ९९)

अविट्ठ वि [अविष्ट] प्रवेशित, घुसता हुआ। (प्रव २९) ण पविट्ठो णाविट्ठो। (प्रव २९)

अवितत्थ वि [अवितार्थ] यथार्थरूप, सत्यार्थ, वस्तुस्वरूपात्मक पदार्थ। (मो १७) अवितत्थ सव्वदरसीहिं। (मो १७)

अविदिद वि [अविदित] अज्ञात, नहीं जाना हुआ। (प्रव चा ५७, मो १०) अविदिदपरमत्थेसु। (प्रव चा ५७) **-त्थ** वि [अर्थ] पदार्थ के स्वरूप को न जानने वाला। (स ३२४) अविदिदत्थमप्पाण। (मो १०)

अविभागी न [अविभागिन्]अविभागी,जिसका दूसरा हिस्सा न किया जा सके। एक्को अविभागी मुत्तिभवो। (पचा ७७)

अविभत्त वि [अविभक्त] प्रदेश भेद से रहित, जुदे-जुदे नहीं। (पचा ४५,८७) अविभत्ता लोयमेत्ता य (पचा ८७)

अवियडीकरण वि [अविकृतीकरण] अविकृतीकरण, जैसा का तैसा, विकृत नहीं होने देना। (निय १०८) नियमसार में आलोयण (आलोचन), आलुछण (आलुञ्छन), अवियडीकरण

(अविकृतीकरण) और भावसुद्धि नाम से आलोचना के चार भेद किये है। जो माध्यस्थ भावना मय हो कर्म से भिन्न तथा निर्मल गुणों के निवास स्वरूप आत्मा का चिंतन करता है, वह भावना अविकृतीकरण है। कम्मादो अप्पाण, भिण्ण भावेइ विमलगुणणिलय। मज्झत्थभावणाए, वियडीकरणं त्ति विण्णेय।। (निय १११)

अवियत्थ वि [अवितार्थ] यथार्थ, सम्यक्, सही। (मो.४१) अवियत्थ सव्वदरसीहिं।

अवियप्प वि [अविकल्प] भेद रहित, सशयादि रहित। (पचा १५९, मो.४२) अवियप्पं कम्मरहिएण। (मो ४२)

अवियार वि [अविकार] 1 विकार रहित, परिवर्तन रहित। (भा ११०) 2 वि [अविचार] विचार रहित, विकल्प रहित।

अविरइ/अविरदि स्त्री [अविरति] पापकर्मो से अनिवृत्ति, दुष्कर्मों में प्रवृत्ति। (स ८७,८८)

अविरमण वि [अविरमण] अविरति। (स १६४) मिच्छत्त अविरमण।

अविरय वि [अविरत] अविच्छिन्न, निरन्तर, पापकर्मो से निवृत्ति रहित। अविरयभावो य जोगो य (स १९०)

अविरुढ वि [अविरुढ] अतिदृढ नही। (पंचा १०७)

अविरुद्ध वि [अविरुद्ध]अविरूद्ध, ठीक, अनुकूल, अविपरीत। (पचा ५४) अण्णोण्ण विरुद्धमविरुद्ध। (पचा ५४)

अविवरीद वि [अविपरीत] यथार्थ, विपरीत से रहित। (स.१८३)

एय तु अविवरीद। (स०१८३)

अविसुद्ध वि [अविशुद्ध] विशुद्धि रहित, अपवित्र। अविसुद्ध य चित्ते (प्रव चा २०)

अविसेस वि [अविशेष] सामान्य, विशेषता रहित। (स १४) अविसेसमसजुत्त।

अवेदअ/ अवेदय वि [अवेदक] अभोक्ता, भोगने में असमर्थ। (स ३१८,३२०)

अव्वत्त वि [अव्यक्त] अप्रकट, अस्पष्ट, अनुचरित, गुह्य। (पचा १२७, भा ६४, स.४९)

अव्वत्तव्व वि [अवक्तव्य] अकथनीय, अनिर्वचनीय। (पचा १४)

अव्वदिरित्त वि [अव्यतिरिक्त] जुदा नही, अपृथक्। (पचा १३, स ४०३)

अव्वाबाध/अव्वावाह वि [अव्याबाध] बाधा रहित, अखण्डित। (पचा २९,निय १७७, मो ३)

अव्वुच्छिण्ण वि [अव्युच्छिन्न] बाधा रहित, खण्डरहित, निरन्तर। (प्रव.१३) अव्युच्छिण्ण च सुह।

अवि/अपि अ [अपि] भी, निश्चय, और भी। (पचा ३६) सव्वावि हवदि मिच्छा। (स २६)

अविचल वि [अविचल] अविचल, दृढ, मुक्तरूप। जो पढइ सुणइ भावइ, सो पावइ अविचल ठाण। (भा १६४)

अविजाणतो व कृ [अविजानन्] नहीं जानता हुआ। (प्रव.चा ३३) अविजाणतो अत्थे। (प्रव चा ३३)

अविणय पु [अविनय] अविनय, विनयरहित। (भा.१०४) -**णर** पुं [नर] अविनयी मनुष्य। अविणयणरा सुविहिय, तत्तो मुत्ति ण पावति। (भा १०४)

अविणास वि [अविनाश] अविनाशी, नाश रहित, शाश्वत। (निय ४८,१७६) असरीरा अविणासा। (निय.४८)

अविण्णाण न [अविज्ञान] भिन्नज्ञान। मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानों से रहित होना अविज्ञान है। यदि मोक्ष में जीव का सद्भाव नहीं माना जाए तो उसमें आठ भाव संभव नहीं होंगे। 1 शाश्वत 2 उच्छेद 3 भव्य 4.अभव्य 5.शून्य 6 अशून्य 7 विज्ञान और 8 अविज्ञान। सस्सधमध उच्छेद, भव्वमभव्व च सुण्णमिदर च विण्णाणमविण्णाण,ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे।। (पचा ३७)

अस सक [अश्] भोजन करना। असिआ (अ भू भा ४१) असिऊण (स कृ भा. १०३) असिऊण माणगव्व। (भा १०३)

असंकंत वि [असक्रान्त] सक्रान्त नहीं होने वाला। सो अण्णमसकतो, कह त परिणामए दव्व। (स १०३)

असंखदेस वि [असख्यदेश] परिमाण रहित प्रदेश, असख्यात प्रदेश घम्माधम्मस्स पुणो, जीवस्स असखदेसा हु। (निय ३५)

असंखाद वि [असख्यात] असख्यात, गिनती करने में असमर्थ, जिसकी गिनती न की जा सके। (पंचा.३१,प्रव ज्ञे ४३) देसेहिं असखादा। (पचा ३१)

असंखादियपदेस वि [असख्यातिकप्रदेश] असख्यातप्रदेश। (पचा ८३) पिहुलमसखादियपदेस।

असखिज्जगुण वि [असख्येयगुण] असख्यातगुण। (चा २०) सखिज्जमसखिज्जगुण। (चा २०)

असखिज्जपदेस वि [असख्यातप्रदेश] असख्यातप्रदेश। (स ३४२) अप्पा णिच्चो असखिज्जपदेसो। (स ३४२)

असखेज्ज वि [असख्येय] असख्यात, परिगणनारहित। (निय ३५) सखेज्जासखेज्जाणतपदेसा हवति मुत्तस्स। (निय ३५)

असजद वि [असयत] असयमी, सयमरहित। (प्रव चा ३६,द २६)असजद्दो हवदि किध समणो। (प्रव चा ३६)असजद ण वदे। (द २६)

असजम वि [असयम] असयम, सयमरहित। (स ३१४, प्रव चा २१, भा ११७) उदओ असजमस्स दु, ज जीवाण हवेदि अविरमण। (स १३३)

असजुत्त वि [असयुक्त] सयोगरहित। (स १४) अविसेसमसजुत्त।

असदेह वि [असदेह] सदेहरहित। (प्रव ज्ञे १०५) झादि किमट्ठ असदेहो। (प्रव ज्ञे १०५)

असभूद वि [असभूत] विकल्परहित। (स २२) एयत्तु असभूद। (स २२)।

असमूढ वि [असम्मूढ] ज्ञानी, प्रबुद्ध, प्रतिबुद्ध। (स २२) भूदत्थ जाणतो ण करेदि दु त असमूढो। (स २२)

असक्क वि [अशक्य] असमर्थ, कमजोर, अबल। (स ८, प्रव ४०) परमत्थुवएसणमसक्क। (स ८)

असच्च न [असत्य] झूठ, असत्य, मृषा। **-विरइ** स्त्री [विरति]

असत्य का त्याग, असत्य पाप से निवृत्ति। असच्चविरई (प्र. ए चा ३०) चारित्रपाहुड में पंचमहाव्रत में असच्चविरई को दूसरे स्थान पर गिनाया है। हिंसाविरइ अहिंसा,असच्चविरई अदत्त-विरई य। तुरिय अबभविरई, पचम संगम्मि विरई य।।

असण न [अशन] भोजन, आहार। (स. २१२, भा. ४०)

असद वि [असत्] अविद्यमान, अभाव। (पचा १९)

असद्द वि [अशब्द] शब्द रहित। (पचा ७७, ७८, भा. ६५) सो णेओ परमाणू परिणामगुणो सयमसद्दो।

असद्दहण वि [अश्रद्धान] अश्रद्धान, विश्वासरहित, प्रतीति का अभाव। (स १३२)

असब्धुव [असत्ध्रुव] सत् की नित्यता से रहित। (प्रव. ज्ञे. १३)

असब्भूय वि [असद्भूत] असद्भूत, वर्तमान में अविद्यमान रूप। (प्रव. ३८) ते होंति असब्भूया, पज्जाया णाणपच्चक्खा।

असप्पलाव पु [असत्प्रलाप] व्यर्थ प्रलाप, निष्प्रयोजन प्रलाप, व्यर्थ की बहुत बकवाद। सीलसहस्सट्ठार चउरासी गुणगणाण लक्खाइ। भावहि अणुदिणु णिहिल असप्पलावेण कि बहुणा।। (भा १३०)

असरण पुं न [अशरण] शरण रहित, अनुप्रेक्षाओं का दूसरा भेद, संरक्षण रहित। जीवणिबद्धा एए अधुव अणिच्चा तहा असरणा य। (स.७४) असरणा (प्र. ब) मणिमतोसहरक्खा, हयगयरहओ य सयलविज्जाओ। जीवाण ण हि सरण तिसु लोए मरणसमयम्हि।। (द्वा ७)

असरीर पु न [अशरीर] शरीर रहित, सिद्ध का एक गुण। (निय ४८) असरीरा अविणासा, अणिदिया णिम्मला विसुद्धप्पा।
असह वि [असह] असहिष्णु, सहन न करना। असहता (व कृ प्रव ६३) असहता त दुक्ख, रमति विसएसु रम्मेसु।
असहणीय वि [असहनीय] न सहने योग्य, अत्यन्त कठोर। (भा ९)
असहाय वि [असहाय] सहायता बिना, सहायता रहित, सहायता से निरपेक्ष। (निय १११ १३६) -गुण पु न [गुण] असहायगुण, स्वापेक्ष गुणों से युक्त। (निय १३६)
असार वि [असार] सार रहित, सारहीन, निस्सार। (भा ११०) -ससार वि [ससार] असार-ससार। (भा ११०) उत्तमबोहिणिमित्त असारससार मुणिऊण।
असियसय पु न [अशीतिशत्] एक सौ अस्सी। (भा १३६) मिथ्यादृष्टियों के ३६३ भेदों में क्रियावादियों के एक सौ अस्सी भेद गिनाये गये है। असियसयकिरियावाई। (भा १३६)
असीदि पु न [अशीति] अस्सी, द्वीन्द्रियादि जीवों के भवों का जो वर्णन किया गया है, उसमें द्वीन्द्रियों के ८० भव गिनाये हैं। वियलिदिए असीदी। (भा २९)
असुइ/असुचि वि [अशुचि] अपवित्र, मलिन। (भा ४१, द्वा ४५) -त्त वि [त्व] अशुचिता, अपवित्रता। (स ७२, द्वा २) -मज्झ न [मध्य] अपवित्रस्थान। असुइमज्झम्मि। (स ए) असुइमज्झम्मि लोलिओ सि तुम। (भा ४१)
असुत्त न [असूत्र] 1 ज्ञानरहित, आगमरहित। (सू ३) 2

डोरारहित, धागा रहित। सूत्रपाहुड में सूत्र (आगम) ज्ञाता को निपुण और संसार को नाश करने वाला कहा है। जो इससे रहित होता है वह सूत्र (धागा) रहित सुई की तरह ससार में खो जाता है। सुत्तम्मि जाणमाणो, भवस्स भवणासणं च सो कुणदि। सूई जहा असुत्ता, णासदि सुत्ते तहा णो वि।। (सू.३)

असुद्ध वि [अशुद्ध] अशुद्ध, अपवित्र, विभावमय। जाणतो दु असुद्ध, असुद्धमेवप्पय लहइ। (स.१८६) परिणामम्मि असुद्धे (स ए भा ४) असुद्धा (प्र.ब.भा.६७)-**भाव** पु [भाव] अशुद्धभाव, अशुद्ध परिणाम। मच्छो वि सालिसिक्थो, असुद्धभावो गओ महाणरय। (भा ८८)

असुभ न [अशुभ] अशुभ, अप्रशस्त। -**उवओगरहित** वि [उपयोगरहित] अशुभोपयोग से रहित। (प्रव चा ६०)

असुर पुं [असुर] देवजाति विशेष, भवनवासी देवों का एक भेद। एस सुरासुरमणुसिदवदिद। (प्रव.१) मणुआसुरामरिंदा। (प्रव. ६३)

असुह न [अशुभ] अशुभ, पाप कर्म, नामकर्म का एक भेद। (पचा. १४२, स. १०२, प्रव. ९, नियं १४३, भा. १६) किध सो सुहो वा असुहो। (प्रव ७२) -**उदय** पु [उदय] अशुभोदय, अशुभोत्पत्ति। असुहोदयेण आदा कुणरो तिरियो भवीय णेरइयो। (प्रव १२) असुह रागेण कुणदि जदि भाव। (पचा. १५६) -**भाव** पु [भाव] अशुभ भाव, अशुभपरिणति। वट्टदि जो सो समणो, अण्णवसो होदि असुहभावेण। (निय. १४३) -**लेस्सा** स्त्री [लेश्या]

अशुभ लेश्या, अशुभ आत्मा का परिणाम विशेष। मिच्छत्त तह कसाया, असजम-जोगेहिं असुहलेस्सेहिं। (भा १७) यहा लेस्सेहिं में अकारान्त पुलिग एव नपुसकलिग की तरह तृतीया एकवचन में प्रयोग हुआ है। क्योंकि असुह नपुसकलिग है, इसलिए नपुसकलिग की तरह प्रयोग हुआ है।

असुही वि [अशुचि] अशुचि, घृणित, घृणा योग्य। असुहीवीहत्थेहिं। (भा १७)

असेव वि [असेव] सेवा करने में अयोग्य, सेवन नही करने वाला। सेवतो वि ण सेवइ असेवमाणो वि सेवगो कोइ।(स १९७) असेवमाणो (व कृ)

असेस वि [अशेष] नि शेष, सभी, समस्त। (प्रव २९, निय ५, भा १०८) पाव खवइ असेस। (भा १०८)

असोहण वि [अशोभन] अशुभ, अप्रशस्त। सोहणमसोहण वा कायव्वो विरदिभावो वा। (स ३१४)

असोहि स्त्री [अशोधि] अशुद्धि, अपवित्र। (स ३०७) गरहासोही अमयकुभो।

अस्सिद वि [आश्रित] आश्रयप्राप्त। भूयत्थमस्सिदो खलु, सम्मादिट्ठी हवइ जीवो। (स ११)

अह अ [अथ] अब, बाद, अथवा, और। अह सयमेव हि परिणमदि। (स ११९)

अहक त्रि [अस्मद्] मै। (स १९) अहमिदि अहक च कम्मणोकम्म।

अहमिंद पु [अहमेन्द्र] देव जाति का स्वामी, इन्द्र, अहमेन्द्र। (द्वा.५)

अहयं त्रि [अस्मद्] मै। (मो.८१)

अहं त्रि [अस्मद्] मै। अह (प्र ए स.२०,३८)

अहव अ [अथवा] अथवा, या, वा, और। (स.२०९) (है. व्याव्ययोत्खातादावदात १/६७)

अहिअ वि [अधिक] बहुत, अत्यन्त। (स. ३४२, ३४३)

अहिद वि [अहित] अहितकर, दु खदायक। (पचा.१२२,१२५)

-भीरुत्त वि [भीरुत्व] दु खदायक कार्य से भय। (पचा.१२५)

अहिद्दुद वि [अभिद्रुत] पीडित, सताया हुआ। (प्रव. ६३)

अहिलस सक [अभि+लष्] चाहना, इच्छा करना। (स.३३६)

अहिलासि वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला, इच्छुक। (स ३३६)

अहो अ [अहो] हे, विस्मय, आश्चर्य। (प्रव ५१)

अहो अक [अ-भू] नही होना। अहोज्जमाणो (व कृ प्रव.ज्ञे.२१)

आ

आइ पु [आदि] प्रथम, पहला। (निय ७, भा १३) पच्चक्खाई परे त्ति णादूण। (स ३४)

आइच्च पु [आदित्य] सूर्य, रवि। आइच्चेहिं (तृ. ब ती भ. ८) आइच्चेहिं अहियपयासत्ता।

आइय पु [आदिक] आदि, आरम्भ। कदप्पमाइयाओ। (भा १३) आइयाओ (प ब भा १३)

आउ/आउग न [आयुष्] आयु, जीवनकाल। जीव शक्ति के

निरूपण में आयु को जीव का प्राण माना जाता है। बलमिंदियमा: उस्सासो। (पचा ३०, स. २४८, २५२, भा २५, प्रव ज्ञे ५४, निय १७५) आउगपाणेण होंति दह पाणा। (बो ३४) आउस्स (ष ए निय १७५) -क्खय पु [क्षय] आयु का क्षय। (स २४८, २४९)

आउल वि [आकुल] व्याकुल, दु खित। जे वि के वि दव्वसमणा, इदियसुहमाउला ण छिंदति। (भा १२१)

आउस/आउस्स पु [आयुष्] आयु। (पचा ११९) आउसे च ते वि खलु। (पचा ११९)

आउह न [आयुध] शस्त्र,हथियार। कुलिसाउहचक्कधरा। (प्रव ७३)

आकुचण न [आकुञ्चन] सकोच, पापकर्मो में एक। आकुचण तह पसारणादीया। (निय ६८)

आगतुअ वि [आगन्तुक] आये हुये। (भा ११)

आगद वि [आगत] आया हुआ, उत्पन्न। (प्रव ज्ञे ८४) पेच्छदि जाणदि आगद विसय। (प्रव ज्ञे ८४)

आगम पु [आगम] शास्त्र, सिद्धात। (प्रव ज्ञे ६, प्रव चा ३२) आगमदो (प ए) इसमें स्वतत्र रूप से दो प्रत्यय भी होता है। सिद्ध तध आगमदो। (प्रव ज्ञे ६) -कुसल वि [कुशल] आगमप्रवीण सिद्धान्तप्रवीण, शास्त्र निपुण। परमात्मा से निकले हुए पूर्वापर दोषों से रहित वचन आगम है। तस्स मुहग्गदवयण, पुव्वावरदोसविरहिय सुद्ध। आगममिदि परिकहिय, तेण दु

कहिया हवंति तच्चत्था। (निय. ८) -चक्खु पुं न [चक्षुष्] आगमरूपी नेत्र। आगमचक्खू साहू। (प्रव. चा. ३४) -चेट्ठा स्त्री [चेष्टा] आगम के विषय में प्रयत्न, आगमज्ञान का आचरण। आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा। (प्रव.चा.३२) -पुव्व पुं न [पूर्व] आगमपूर्वक। आगमपुव्वा दिट्ठी, ण भवदि जस्सेह संजमो तस्स। (प्रव चा ३६) -हीण वि [हीन] आगम से हीन, आगम से अपूर्ण। आगमहीणो समणो, णेवप्पाणं परं वियाणादि। (प्रव. चा. ३३)

आगाढ वि [आगाढ] प्रबल, अत्यन्त। (पंचा.६७) अण्णोण्णागाढगहणपडिबद्धा। -गहणपडिबद्ध वि [ग्रहण-प्रतिबद्ध] अत्यन्त सघन मिलाप से बन्ध अवस्था को प्राप्त। (पचा.६७)

आगास/आयास पुं न [आकाश] आकाश, द्रव्य का एक भेद। (पंचा. ९७, प्रव. ज्ञे. ४१, ४३) जो जीव एवं पुद्गलों को निरंतर स्थान देता है वह आकाश है। सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पुग्गलाणं च। ज देदि विवरमखिलं तं लोए हवदि आयासं। (पंचा.९०)

आजुत्त वि [आयुक्त] लगाना, संयुक्त करना। आजुत्तो तं तवसा। (प्रव. चा. २८)

आणपाण/आणप्पाण पुं [आनप्राण] श्वासोच्छ्वास। (बो. ३३, ३४) आणपाणभासा य। (बो.३३)

आणा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश, कथन। पयडदि लिंगं जिणाणाए। (भा ७३) आणाए (तृ. ए. भा. ७३)

आतव पु न [आतप] आतप, गर्मी, नाम कर्म का एक भेद।

(निय २३) छायातवमादीया। (निय २३)

आतावण पु न [आतापन] आतापन, योग का एक नाम जिसमें गर्मी में गर्मी को अग्रसर कर व सर्दी में सर्दी को अग्रसर कर ध्यान किया जाता है।

आद पु [आत्मन्] आत्मा, जीव, चेतन। (स ८५, प्रव ८, मो ५५) ज कुणदि भावमादा। (स १२६) **आद** का प्रथमा एकवचन में आदा रूप बनता है। आदम्हि (स ए स २०३) **-अत्थ** पु न [अर्थ] आत्मार्थ, आत्मा के प्रयोजन हेतु। (बो ३) **-पधाण** वि [प्रधान] आत्मप्रधान, आत्मा की विशेषता, आत्मा की मुख्यता। (प्रव चा ६४) **-वियप्प** वि [विकल्प] आत्मविकल्प। आदवियप्प करेदि समूढो। (स २२) **-सहाव** पु [स्वभाव] आत्मस्वभाव। आदसहाव अयाणतो। (स १८५) **-समुत्थ** वि [समुत्थ] आत्मा से उत्पन्न।(प्रव १३) अइसयमादसमुत्थ।

आदद वि [आतत] व्याप्त, फैलाया हुआ, विस्तारित। (प्रव ज्ञे ४४) धम्माधम्मेहि आददो लोगो।

आदाण पु न [आदान] ग्रहण, स्वीकार, आदान, एक समिति का नाम। (चा ३७) सा आदाण चेव णिक्खेवो। (चा ३७)

आदा सक [आ+दा]ग्रहण करना, स्वीकार करना। आदाय (स कृ प्रव चा ७) आदाय त पि गुरुणा।

आदावण न [आतापन] आतप को सहन करना, आदान समिति। आदावण-णिक्खेवणसमिदी। (निय ६४)

आदि पु [आदि] प्रथम, प्रमुख, प्रधान, पहले। (स ४८)

पडिकमणादिं करेज्ज झाणमय। -परिहीण वि [परिहीन] आदि-अश से रहित, जघन्य अंश से रहित। (प्रव.ज्ञे.७३) सगगो दुराधिगा जदि बज्झति हि आदिपरिहीणा।

आदिच्च पु [आदित्य] सूर्य, दिनकर। (प्रव. ६८) सयमेव जधादिच्चो तेजो उण्हो य देवदा णभसि।

आदिट्ठ वि [आदिष्ट] कथित, उपदेशित। (प्रव ज्ञे.२३) तदुभयमादिट्ठमण्ण वा।

आदिय सक [आ+दा] ग्रहण करना, स्वीकारना। आदियदि (व प्र ए मो ४८) णादियदि णव कम्म णिद्दिट्ठ जिणवरिंदेहिं। आदीयदे (प्रे प्र ए प्रव ज्ञे ९४) आदीयदे कदाई, विमुच्चदे कम्मधूलीहिं।

आदीणि वि [आदीनि] अन्य। (स २७०)

आदेस पु [आदेश] व्यवहार, नियम, उपदेश, निर्देश, कथन। (स ४७) एसो बलसमुदयस्स आदेसो। (स ४७) -मत्तमुत्त वि [मात्रमूर्त] आदेश मात्र से मूर्त, कथन मात्र से मूर्त। (पचा ७८) आदेसमत्तमुत्तो। (पचा ७८) -वस पु न [वश] सामर्थवश, विवक्षावश। दव्व खु सत्तभग, आदेसवसेण सभवदि। (पचा १४)

आधाकम्म पु [अध कर्म] निन्द्यकर्म। आधाकम्मम्मि रया। (मो ७९, स २८६, २८७)

आपिच्छ सक [आ+पृच्छ्] पूछना, आज्ञा लेना, सम्मति लेना। (प्रव चा २)

आभिणि न [आभिनि] पाच इन्द्रिय और मन से होने वाला ज्ञान,

मतिज्ञान। (पचा ४१) आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि। (पचा ४१)

आम पु [दि] कच्चा, अपक्व, अग्निसस्कार से रहित। पक्केसु अ आमेसु। (प्रव चा ज वृ २७)

आयत्तण वि [आत्मत्व] आत्मत्व, आत्मपना, आत्मस्वरूप। (बो ५८) -गुण पु न [गुण] आत्मत्व गुण। (बो ५८) एव आयत्तणगुणपज्जत्ता। (बो ५८)

आयदण न [आयतन] आश्रयस्थान, शरण। (बो ५,भा.१३२) पचमहव्वयधारा, आयदण महरिसी भणिय। (बो ६)

आयण्ण सक [आ+कर्णय्] सुनना। आयण्णिऊण (स कृ भा १३७) आयण्णिऊण जिणधम्म।

आयरिय पु [आचार्य] आचार्य। पचाचारसमग्गा, पचिदियदतिदप्पणिद्दलणा। धीरा गुणगभीरा, आयरिया एरिसा होंति। (निय ७३) जो पचाचारों से परिपूर्ण, पचेन्द्रिय रूपी हस्ती को चूर करने वाले, धीर, वीर गुणों में गभीर है, वे आचार्य है। आचार्यो को पचपरमेष्ठियों में लिया गया है। अरुहा सिद्धायरिया, उज्झाया साहू पचपरमेट्ठी। (मो १०४) -परपर पु न [परम्पर] आचार्य परम्परा, आचार्यों की अवच्छिन्न धारा। सुत्तम्मि ज सुदिट्ठ, आइरियपरपरेण मग्गेण। (सू २) -परपरागद वि [परम्परागत] आचार्य परम्परा से आया हुआ। एसा आयरियपरपरागदा एरिसी दु सुई। (स ३३७)

आयरिय वि [आचरित] आचरण किया जाना। (चा ३१)

आयार पु [आचार] आचरण, अङ्ग ग्रन्थों में से पहला ग्रन्थ। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, और वीर्य से पाच आचार है। णाणदसणचरित्ततववीरियायार। (प्रव चा २) आयारादिणाण। (स २७६) **-विणयहीण** वि [विनयहीन] आचार एव विनय से रहित। (लि १८) आयारविणयहीणो। (लि १८)

आरंभ पु [आरम्भ] जीवहिंसा की क्रिया, वध, पापकर्म। तस्सारभणियत्तणपरिणामो। (निय ५६) जो सजमेसु सहिओ, आरभपरिग्गहेसु विरओ। (सू ११) देशविरत श्रावक के भेदों में आरम्भत्याग का भी कथन है। (चा. २२)

आराधय वि [आराधक] पूजा करने वाला, उपासना करने वाला। (शी १४)

आराधिय वि [आराधित] पूजित, अर्चित। (स ३०४)

आराह/आराहअ वि [आराधक] पूजा करने वाला। रयणत्तयमाराह, जीवो आराहओ मुणेयव्वो। आराहणाविहाण तस्स फल केवलं णाणं। (मो ३४)

आराह सक [आ+राधय्] सेवा करना, भक्ति करना। रयणत्तय पि जोई, आराहइ जो हु जिणवरमएण। (मो. ३६) आराहतो (व कृ चा. १२, १९)

आराहण न [आराधन] प्राप्ति। (चा २)

आराहणा स्त्री [आराधना] सेवा, भक्ति, मुक्तिपथ में अग्रसर। (भा ९९, स ३०५, निय ८४) आराहणए णिच्च। (स ३०५)

आरुह सक [आ+रुह्] ऊपर स्थित होना। सिलकट्ठे भूमितले, सव्वे

आरुहइ सव्वत्थ। (बो ५५)

आरूढ वि [आरूढ] स्थित, चढ़कर। (स २३६, बो २८) विज्जारहमारूढो। (स २३६)

आरोग्ग न [आरोग्य] निरोगता। आरोग्ग जोव्वण बल तेज। (द्वा ४)

आलय पु न [आलय] घर, मकान। (बो ४२)

आलंबण न [आलम्बन] आश्रय, आधार। आलंबण च मे आदा, अवसेस च वोसरे। (निय ९९, भा ५७) **-भाव** पु [भाव] आलम्बनभाव। अप्पसरूवालंबणभावेण। (निय ११९)

आलविद वि [आलपित] कथित, उपदिष्ट। जह राया ववहारा दोसगुणुप्पादगो त्ति आलविदो। (स १०८)

आलुंचण वि [आलुञ्चन] आलुञ्चन। (निय १०८)

आलोच सक [आ+लोच्] आलोचना करना। आलोचेउ। (हि कृ ती भ ८) आलोचित्ता (स कृ प्रव चा १२) आलोचेयदि (व प्र ए स ३८६) आसेज्जालोचित्ता। (प्रव चा १२)

आलोयण न [आलोचन] कृतकर्मों का प्रायश्चित, विचार, चिंतन। जो दोष को छोड़ता है और आत्मा का अनुभव करता है, वह आलोचना है। त दोस जो चेयदि, सो खलु आलोयण चेया। (स ३८५) **-पुव्विया** स्त्री [पूर्विका] आलोचनापूर्वक। जायदि जदि तस्स पुणो, आलोयणपुव्विया किरिया। (प्रव चा ११)

आवण्ण वि [आपन्न] प्राप्त, आश्रित। (पचा ३१, स १३९, निय १४०, भा १११) सियलोग सव्वमावण्णा। (पचा ३१)

आवरण न [आवरण] आच्छादित करने वाला, तिरोहित करने वाला। (प्रव १५) विगदावरणतरायमोहरओ। (प्रव १५)

आवरिय वि [आवृत] आच्छादित, ढका हुआ।चरियावरिया (मो.७३)

आवलि स्त्री [आवलि] समयविशेष, एक सूक्ष्म कालपरिमाण, व्यवहार काल का एक भेद। असख्यात समय की एक आवलि होती है। (निय ३१) समयावलिभेदेण दु दुवियप्प अहव होइ तिवियप्प। (निय.३१)

आवसध पु [आवसथ] घर, विश्राम करने का स्थान, विश्रामस्थल, आश्रयस्थान। (प्रव. चा १५) आवसधे वा पुणो विहारे वा। (प्रव चा १५)

आवस्सय वि [आवश्यक] नित्यकर्म, अनुष्ठान, आवश्यक कर्म। (प्रव चा ८) मुनियों के अट्ठाईस मूलगुणों में छह आवश्यक होते है।

आवास/आवासय वि [आवश्यक] आवश्यककर्म, जो परपदार्थो के भाव को छोड़कर निर्मल स्वभाव युक्त आत्मा को ध्याता है, वह आत्मवश है और उसके कर्म को आवश्यक कहा जाता है। परिचत्ता परभाव, अप्पाण झादि णिम्मलसहाव। अप्पवसो सो होदि हु, तस्स दु कम्म भणति आवास।। (निय १४६)

आवास पु [आवास] निवास स्थान, गृह, निलय। बहुदोसाणावासो। (भा १५४) गिरिसरिदरिकदराइ आवासो। (भा ८९) पर्वत, नदी, गुहा और खोह आदि निवास स्थान है।

आस अक [आस्] बैठना, स्थित होना, प्राप्त होना। आसेज्ज (व प्र ए) आसेज्ज (वि प्र ए प्रव चा १२) आसिज्ज (वि प्र ए प्रव चा २) आसेज्जालोचित्ता। (प्रव चा १२)

आसण न [आसन] स्थान, जगह, जिस पर बैठा जाए। (बो ४५,द्दा ३) आसणाइ (प्र ब) (हे जस्शस् इँ-इ-णय सप्राग्दीर्घा ३/२६) हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइ। (बो ४५)

आसत्त वि [आसक्त] तल्लीन, तत्पर। (भा १६) मेहुणसण्णासत्तो, भमिओ सि भवण्णवे भीमे। (भा ९८)

आसम पु [आश्रम] मुख्यस्थान, आधार, मुख्यध्येय। प्रवचनसार में कहा है-पचपरमेष्ठी के स्वरूप को ध्याने वाले को 'दर्शन, ज्ञान प्रधान आश्रम की प्राप्ति होती है। तेसि विसुद्ध-दसणणाणपहाणासम समासेज्ज। (प्रव ५)

आसय पु [आश्रय] आधार, अवलम्बन। (चा ४४) सम्मत्तसजमासयदुण्ह। (चा ४४)

आसय [आशय] मन, चित्त, हृदय, अभिप्राय, बुद्धि। आसयविसुद्धी। (प्रव चा २०) -**विसुद्धी** वि [विशुद्धि] चित्त की निर्मलता। ण हि णिरवेक्खो चाओ, ण हवदि भिक्खुस्स आसयविसुद्धी। (प्रव चा २०)

आसव अक [आ+स्रु] धीरे-धीरे झरना, टपकना। आसवदि जेण पुण्ण, पाव वा अप्पणोघभावेण। (पचा १५७)

आसव पु [आस्रव] कर्मो का प्रवेश द्वार, कर्मबन्ध। पावस्स य आसव कुणदि। (पचा १३९) आसवाण (ष ब स ७१) -**णिरोह** वि

[निरोध] आस्रव के प्रवेश द्वार का रुकना। (स १६६,१९१, मो ३०) णत्थि आसवबंधो, सम्मादिट्ठिस्स आसवणिरोहो। (स १६६) -भाव पु [भाव] आस्रवभाव। (पचा १५०, स १९१) -बंध पु न [बन्ध] आस्रव-बन्ध। (स १६६) -हेदु पु [हेतु] आस्रव का कारण। (मो ५५) आसवहेदू य तहा। (मो ५५)

आसा स्त्री [आशा] आशा, उम्मीद। (बो.४८) आसाए (ष ए निय १०४) आसाए वोसरित्ता, ण समाहि पडिवज्जए।

आसि अक [अस्] होना। आसि (भू प्र ए स २१)

आहार पु [आहार] भोजन। (स १७९, भा ४५) देहाहारादिचत्तवावारो।

आहारअ/आहारय वि [आहारक] शरीर विशेष, आहार से सहित। (स ४०५) अत्ता जस्सामुत्तो, ण हु सो आहारओ हवइ एव। आहारो खलु मुत्तो जम्हा मे पुग्गलमओ उ।। (स ४०५)

इ

इंद पु [इन्द्र] इन्द्र, देवताओं का राजा। (पचा १, प्रव १) -णील पु न [नील] इद्रनीलमणिविशेष, नीलम, रत्नविशेष। रदणमिह इंदणील, दुद्धज्झसियं जहा सभासाए। अभिभूय तं पि दुद्धं, वट्टदि तह णाणमत्थेसु। (प्रव ३०२) -त्त वि [त्व] इन्द्रत्व, राजत्व। अज्ज वि तिरयणसुद्धा, अप्पा झाएवि लहहि इंदत्तं। (मो ७७)

इदिय पु न [इन्द्रिय] इन्द्रिय, शरीर के अवयव।(पचा १४१, स १९३, प्रव ७०, निय २७) ण हि इदियाणि जीवा, काया पुण छप्पयार पण्णत्ता। (पचा १२१) इदियाणि (प्र ब) जो इदिए जिणत्ता। (स ३१) इदिए (द्वि ब) -गेज्झ पु [ग्राह्य] इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य। जे खलु इदियगेज्झा। (पचा ९९) मुत्ता इदियगेज्झा पोग्गलदव्वप्पगा अणेगविधा।(प्रव ज्ञे ३९) -चक्खु पु न [चक्षुष्] इन्द्रिय रूपी नेत्र। आगमचक्खू साहू, इदियचक्खूणि सव्वभूदाणि। (प्रव चा ३७) -दार न [द्वार] इन्द्रियद्वार, इन्द्रियमार्ग। बहिरत्थे फुरियमणो, इदियदारेण णियसरूवचुओ। (मो ८) -पाण पु न [प्राण] इन्द्रियप्राण। स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण को इन्द्रिय प्राण माना जाता है। इदियपाणो (प्रव ज्ञे ५४) -बल पु न [बल] इन्द्रियबल, इन्द्रियों की सामर्थ। (भा १३१) -रहिद वि [रहित] इन्द्रियरहित। पावदि इदियरहिद, अव्वावाह सुहमणत। (पचा १५१) -रोध पु [रोध] इन्द्रियरोध, इन्द्रियों की रुकावट, इन्द्रियों को अधीन करना, इन्द्रिय निग्रह। वदसमिदिंदियरोधो। (प्रव चा ८) -वसदा पु न [वशता] इन्द्रियों के अधीन। (पचा १४०) -सुह न [सुख] इन्द्रियसुख। जे के वि दव्वसमणा, इदिय सुह-आउला ण छिदति। (भा १२१) -सेणा स्त्री [सेना] इन्द्रियरूपी सेना। भजसु इदियसेण। (भा ९०) सेण (द्वि ए) दीर्घान्त शब्दों में अनुस्वार लगने से दीर्घस्वर का ह्रस्वस्वर हो जाता है। (हे ह्रस्वो मि। ३/३६)

इंदु पु [इन्दु] चन्द्र, चन्द्रमा। (भा १५९)
इंधण न [ईन्धन] ईन्धन, लकड़ी, काष्ठ। कम्मिंधणाण डहण सो झाएदि अप्पय सुद्ध। (मो २६)
इक्क स [एक] एकमात्र, एक। ववहारणओ भासदि, जीवो देहो य हवदि खलु इक्को। (स २७) वुज्झदि उवओग एव अहमिक्को। (स २७)जाणगभावो हु अहमिक्को। (स.१९९)
इगतीस वि [एकत्रिशत्] इकतीस। (द्वा.४१)
इच्छ सक [इष्] इच्छा करना,चाहना। इच्छदि (व.प्र.ए.स ४१४) इच्छति (व प्र व.पंचा ४५) जो इच्छदि णिस्सरिदु,ससार-महण्णवस्स रुदस्स। (मो २६)
इच्छा स्त्री [इच्छा] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा। (सू २७) -विरअ वि [विरत] इच्छा से रहित। इच्छाविरओ य अण्णम्हि। (स १८७)
इच्छिय वि [इच्छित] अभिलषित। (स ३३६, मो ३९)
इच्छी स्त्री [स्त्री] स्त्री, नारी। सती दु णिरुवभोज्जा, बाला इच्छी जहेव पुरिसस्स। (स.१७४) इच्छीण (ष.ब.प्रव ४४) -रूव पुं [रूप] स्त्री की आकृति, स्त्री का आकार। दट्ठूण इच्छिरूवं। (निय ५९) प्राकृत में समासान्त पद होने पर परस्पर में दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है। इच्छीरूव के स्थान पर इच्छिरूव हो गया। (हि. दीर्घह्रस्वौ मिथौ वृत्तौ। १/४)
इच्छु पु [इक्षु] ईख, गन्ना। (भा ७१) दोसावासो इच्छुफुल्लसमो। (भा ७१)
इण्हिं अ [इदानीम्] इस समय। (भा.११९) डहिऊण इण्हिं

पयडामि। (भा ११९)

इट्ठ न [इष्ट] इष्ट, स्वाभ्युपगत, लक्ष्य। णट्ठमणिट्ठ सव्व, इट्ठ पुण ज तु त लद्ध। (प्रव ६१) पय्या इट्ठे विसए। (प्रव ६५) -दर वि [तर] अतिप्रिय। (प्रव चा ३) कुलरूववयोविसिट्ठमिट्ठदर। -दरिसि वि [दर्शिन्] इष्ट को देखने वाला। विसएसु मोहिदाण, कहिय मग्ग पि इट्ठदरिसीण। (शी १३) दरिसीण (ष ब) षष्ठी बहुवचन में ण और ण प्रत्ययों का विधान है।

इड्ढि स्त्री [ऋद्धि] वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति। (भा १२९,१५) इड्ढिमतुल विउव्विय। (भा १२९) पुलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग इकारान्त शब्दों के प्रथमा एकवचन में शब्द के अन्तिम इ को दीर्घ हो जाता है। इड्ढी (प्र ए) इड्ढि (द्वि ए)

इति अ [इति] इस प्रकार। (पचा ७४)

इत्थी स्त्री [स्त्री] देखो इच्छी। (सू २२,२४)

इदर वि [इतर] अन्य, दूसरा। (स १९३, निय १३७,१३८, प्रव ५४, पचा १७) देवो हवेदि इदरो वा। (पचा १७)

इदाणि अ [इदानीम्] इस समय,अब,अभी।सा इदाणि कत्ता। (प्र। ज्ञे ९४)

इदि अ [इति] इस प्रकार, ऐसा, इस तरह। (पचा ५४, निय ३) भणिदं खलु सारमिदि वयण।(निय ३)

इम स [इदम्] यह। इद भी क्वचित् मिलता है। (पचा १६४, स २१,२०५) (हे इदम इमः ३/७२) द्वितीया विभक्ति के एक वचन में इम का इण रूप भी होता है। (हे अमेणम् ३/७८)

अप्पाणमिण तु केवल सुद्ध। (स.१७) इणमण्णं जीवादो। (स.२८) नपुसकलिङ्ग के प्रथमा एव द्वितीया एकवचन में इणमो होता है। (हे क्लीवे स्यमेदमिणमो च।३/७९) इम का इयं (पंचा.२) में हुआ है।

इय अ [इति] इसलिए, इस प्रकार, इस हेतु। (स.२९०, चा.४२, बो ४, भा २७) इयकम्मबधाणं । (स. २९०) इय णाउं गुणदोम। (चा ४२)

इयर वि [इतर] अन्य, दूसरा। (निय ११) सण्णाणिदरवियप्पे। (निय ११) इयरेहिं (तृ ब.मो २५) इयरम्मि (स.ए मो.१६)

इरिया स्त्री [ईर्या] गमन, गति। (चा ३७) -वह पु [पथ]ईर्यापथ। -समिदि स्त्री [समिति] ईर्यासमिति। (चा ३२) ईर्या में सयुक्त व्यञ्जन से पूर्व इ का आगम होने पर इरिया बन गया।

इव अ [इव] तरह, सादृश्य, तुल्य। ठिदिकिरियाजुत्ताण कारणभूद तु पुढवीव। (पचा ८६) करेंति सुहिदा इवाभिरदा। (प्रव ७३)

इसि पु [ऋषि] मुनि, श्रमण, साधु। तं सुयकेवलिमिसिणो, भणति लोयप्पदीवयरा। (प्रव ७३) इसिणो (प्र व.)

इह अ [इह] ऐसा, इस प्रकार, यहाँ, इस तरह। (स ९८, प्रव १०,३०, बो ४, भा ३१) रदणमिह इदणील। (प्रव ३०)

ई

ईसर पु [ईश्वर] भगवान्, परमेश्वर, प्रभु।

ईसर न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुता, सम्पन्नता। उत्तमज्झिमगेहे, दारिद्दे

ईसरे णिरावेक्खा। (बो ४७)

ईसरिय न [ऐश्वर्य] ईश्वरत्व, ईश्वरपन। (प्रव ज वृ ३८) सोक्ख तहेव ईसरिय।

ईसा स्त्री [ईर्षा] ईर्ष्या, द्रोह, मन-मुटाव। ईसा विसादभावो, असुहमण त्ति य जिणा वेंति। (द्वा ५१) **-भाव** पु [भाव] ईर्ष्या भाव। ईसाभावेण पुणो, केई णिदति सुदर मग्ग। (निय १८५)

ईह सक [ईह्] इच्छा करना, चाहना, विचार करना। चारित्तसमारूढो, अप्पासु पर ण ईहए णाणी। (चा ४३) ईहए (व प्र ए) पालिह भाव-विसुद्धो पूयालाह ण ईहतो। (भा ११३) ईहतो (व कृ)

ईहा स्त्री [ईहा] विचार, ऊहापोह, विमर्श, जिज्ञासा। जाणतो पस्सतो, ईहा पुव्व ण होइ केवलिणो। (निय १७२) **-पुव्व** वि [पूर्व] ईहापूर्वक। ईहापुव्व वयण। (निय १७४) ईहापुव्वेहिं जे विजाणति। (प्रव ४०) ईहापुव्वेहिं (तृ ब) **-रहिय** वि [रहित] ईहा से रहित। (निय १७४) अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, ये चार इन्द्रिय जन्य ज्ञान है। अवग्रह, ईहा आदि से हुआ ज्ञान परोक्ष होता है।

उ

उअ [तु] और, कि, तथा, परन्तु, अथवा। (स १८०,१८३,१८४, ३२७,३४४,३५१,३५५) अणज्जभासा विणा उ गाहेउ। (स ८)

उग्गह पु [अवग्रह] इन्द्रियों द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान, अवग्रह। रहिद तु उग्गहादिहि। (प्रव ५९)

उग्गह सक [उद्+ग्रह्] प्राप्त करना, ग्रहण करना। ते तेहिं उग्गहदि। (पंचा १३४)

उग्गाह सक [अव+गाह] अवगाहन करना। उग्गाहेण बहुसो, परिभमिदो खेत्तससारे। (द्वा २६)

उच्च सक [वद्] कहना, कथन करना, बोलना। (स.४७, निय.७,२९,८४-८९) ववहारेण दु उच्चदि। (स ४७)

उच्चार पु [उच्चार] मलोत्सर्ग, विष्ठा। उच्चारादिच्चागो। (निय ६५)

उच्चारण न [उच्चारण] कथन। वयणोच्चारणकिरियं। (निय १२२)

उच्छाह पु [उत्साह] उत्साह, उद्यम, शक्ति, सामर्थ्य, पराक्रम। उच्छाहभावणा। (चा १३,१४)

उच्छेद पु [उच्छेद] नाश, उन्मूलन। सस्सधमध उच्छेद। (पचा ३७) शाश्वत्, उच्छेद, भव्य, अभव्य, शून्य, अशून्य, विज्ञान, और आविज्ञान, इन आठ विकल्पों का सद्भाव होने पर ही आत्मा का सद्भाव माना गया है।

उज्झ सक [उज्झ्] त्याग करना, छोडना। भावविमुत्तो मुत्तो, ण य मुत्तो बधवाइ मित्तेण। इय भाविऊण उज्झसु, गथ अब्मतर धीर।। (भा ४३) उज्झसु (वि /आ म ए)

उज्जद वि [उद्यत] प्रयत्नशील, उद्यमी। वेज्जावच्चत्थुज्जदो

समणो।(प्रव चा ५०)

उज्जाण न [उद्यान] बगीचा, आराम, उद्यान। (बो ४१) उज्जाणे तह मसाणवासे वा।

उज्जोययर वि [उद्योतकर] प्रकाशवान्, चमकवाले। (ती भ २)

उज्झिय वि [उज्झित] 1 परित्यक्त, फैंका हुआ, विमुक्त। (भा २०, गहि उज्झियाइ मुणिवरकलेवराइ तुमे अणेयाइ। (भा २४) सव्वे वि पुग्गला खलु एगे भुत्तुज्झिया हु जीवेण। (द्वा २५) 2 रहित। उज्झियकाल तु अत्थिकायत्ति। (प्रव ज्ञे.ज वृ ४४)

उडु त्रि [ऋतु] ऋतु। (द्वा ४१) उडुआदितेसट्ठी। (द्वा ४१)

उड्ढ न [ऊर्ध्व] ऊपर, ऊँचा। (पचा ९२,स ३३४)

उण्ह पु [उष्ण] आतप, गर्मी। (प्रव ६८)

उत्त वि [उक्त] कथित, कही गई, अभिहित। सुत्ते ववहारदो उत्ता। (स ६७) जे णिच्चमचेदणा उत्ता। (स ६८) उत्ता मग्गेण सावि सजुत्ता। (सू २५) -लिग वि [लिङ्ग] उक्त लिङ्ग, कथित लिग। दुइय च उत्तलिग। (सू २१) ग्यारहप्रतिमाधारी को सूचित किया गया है।

उत्तम वि [उत्तम] श्रेष्ठ, परम, उत्कृष्ट। (स २०६, भा.१६१, बो ४७) उत्तम अट्ठ आदा। (निय ९२) -अट्ठ वि [अर्थ] उत्तमार्थ, उत्तमता के अर्थ युक्त। उत्तमअट्ठस्स पडिकमण। (निय ९२) -देव पु [दिव] उत्तम देव, भगवान्, अरिहन्त। उत्तमदेवो ?वइ अरहो। (बो ३३) -पत्त न [पात्र] उत्तमपात्र।

उत्तमपत्त भणिय, सम्मत्तगुणेण मजु.' माहू। (द्वा १७) -बोहि स्त्री [बोधि] उत्तमबोधि, सद्धर्म का ज्ञान। उत्तमबोहिणिमित्तं (भा.११०)

उत्तर वि [उत्तर] श्रेष्ठ, मुख्य। -गुण पु न [गुण] उत्तरगुण, विशुद्ध भावों से युक्त मुनि के गुण।बाहिरसयणत्तावण, तरुमूलाईणि उत्तरगुणाणि। पालिह भावविसुद्धो, पूयालाह ण ईहतो।। (भा.११३)

उत्तरय वि [उत्तरक] मुख्य, प्रधान। उत्तरयम्मि (स ए.भा १४२) उत्तरय में य स्वार्थिक प्रत्यय है। जिसके आने से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। सवओ लोयअपुज्जो, लोउत्तरयम्मि चलसवओ। यहा तृतीया के स्थान पर सप्तमी का प्रयोग हुआ है।

उत्तारिय वि [उत्तारिय] पार पहुचाया हुआ, बाहर निकला हुआ। विसयमयरहरपडिया, भविया उत्तारिया जेहिं। (भा.१५६)

उत्तावण वि [उत्तापन] तपाया गया। खणणुत्तावण। (भा १०)

उत्थर सक [उत्+स्तृ] आक्रमण करना, आच्छादन करना। उत्थरइ (व प्र ए.भा.१३)

उदअ पु [उदय] अभ्युदय, उत्पत्ति, आविर्भाव, उन्नयन, उत्कर्ष, वृद्धि। अण्णाणस्स दु उदओ। (स १३२)

उदग पु न [उदक] जल, पानी। पुढवी य उदगमगणी। (पंचा ११०)

उदधि पुं [उदधि] समुद्र, सागर। (शी.२८)

उदय देखो, उदअ। उदयादु (प ए प्रव ज्ञे ६१) कम्मेण विणा उदय।

(पचा ५८) **-ठाण** पु न [स्थान] उदयस्थान, उदयस्थिति। (स ५३, निय ४०) जीवस्स ण उदयठाणा वा।

-यर वि [कर] उदय करने वाला, अभ्युदय करने वाला। (बो २४) उदययरो भव्वजीवाणं (बो २४) **-विवाग** पु [विपाक] उदय-परिणाम, सुख-दु खादि भोगरूप कर्मफल का परिणाम। उदय-विवागो विविहो। (स १९८) **-संभव** पु [सभव] उदय की सभावना। पुग्गलकम्मुदयसभवा जम्हा। (स १११)

उदिण्ण वि [उदीर्ण] उत्पन्न हुए, प्रकट हुए। ज सुहमसुहमुदिण्ण। (पचा १४७) **-तण्हा** स्त्री [तृष्णा] उत्पन्न हुई तृष्णा, उत्पन्न इच्छा। (प्रव ७५) ते पुण उदिण्णतण्हा, दुहिदा तण्हादि विसय-सोक्खाणि। (प्रव ७५)

उदिद वि [उदित] उदय में आए हुए, उदयागत। णाणी पुण कम्मफल जाणदि उदिद ण वेदेदि। (स ३१७)

उदु त्रि [ऋतु] ऋतु। (पचा २५) मासोदुअयण। (पचा २५)

उद्दस पु [उद्दस] डॉस-मच्छर, खटमल, मधुमक्खी। (पचा ११६) उद्दसमसयमक्खिय।

उद्दिट्ठ वि [उद्दिष्ट] 1 कथित, प्रतिपादित, उपदेशित। आदा णाणपमाण, णाण णेयप्पमाणमुद्दिट्ठ। (प्रव २३) अप्पडिकम्मत्तिमुद्दिट्ठा। (प्रव चा २४) 2 उद्देश्य, निमित्त, देशविरतश्रावक के ग्यारह व्रतों में उद्दिष्टत्याग एक व्रत। (चा २२) उद्दिट्ठदेसविरदो य।

उद्देसिय वि [औद्देशिक] लक्ष्य, अभिप्राय। आधाकम्म उद्देसिय।

(स २८७) सजमचरण उद्देसिय सयल। (चा २७)

उद्ध न [ऊर्ध्व] ऊर्ध्व, ऊपर। उद्धद्धमज्झलोए। (मो ८१)

उद्धर वि [उद्धुर] प्रचण्ड, अत्यधिक, प्रबल। (भा १५५) दुज्जयपबलबलुद्धर। (भा १५५)

उद्धुद वि [उद्धूत] नष्ट किया हुआ, पवन से उडाया गया। उद्धुददुस्सील सीलवतो वि। (द १६)

उपहद वि [उपहत] नष्ट होना, अभाव होना, क्षय होना। पावोपहदिभावो, सेवदि य अबभु लिगिरूपेण। (लि ७)

उप्पज्ज अक [उत्+पद्] उत्पन्न होना। णवि परिणमदि ण गिण्हदि, उप्पज्जदि णेव परदव्वपज्जाए। (स ७६) उप्पज्जदे (स २१७) उप्पज्जदि (व.प्र ए स ७६-७९) उप्पज्जइ (व प्र ए स ३०८) उप्पज्जति (व प्र.ब स ३११) उप्पज्जते (व प्र ब स ३७२) तम्हा उ सव्वदव्वा उप्पज्जते सहावेण। (स ३७२) उप्पज्जत (व कृ भा १३४)

उप्पड सक [उत्+पत्] उडना, उछलना। उप्पडदि (व प्र ए लि १५)

उप्पण्ण वि [उत्पन्न] उत्पन्न, अद्भूत, पैदा हुआ। (पचा १८,स ३१०, प्रव ज्ञे ४७) ण कुदोचि वि उप्पण्णो। (स ३१०) -**उदयभोगी** वि [उदयभोगी] उत्पन्न उदय का उपभोग करने वाला। (स २१५) उप्पण्णोदयभोगी। (स २१५)

उप्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पन्न, उद्भूत, पैदा हुआ, उपजा। (पचा १८)

उप्पल न [उत्पल] कमल, पद्म। (शी १)
उप्पाडिद वि [उत्पाटित] उखाड़े हुए, लौच किये गये। (प्रव चा ५)
उप्पाद पु [उत्पाद] उत्पत्ति,प्रादुर्भाव।जीवस्स णत्थि उप्पादो। (पचा १९) उप्पादो य विणासो, विज्जदि सव्वस्स अत्थजादस्स। (प्रव १९)
उप्पाय सक [उत्+पादय्] उत्पन्न करना। उप्पादेदि (व प्र ए पचा ३६, स १०७) उप्पादेदि ण किंचि वि।
उप्पादग वि [उत्पादक] उत्पन्न करने वाला।सद्दो उप्पादगो णियदो। (पचा ७९) जोगुवओगा उप्पादगा। (स १००)
उब्भव पु [उद्भव] उत्पत्ति, उद्भव, उत्पन्न होना। अपदेसो परमाणू तेण पदेसुब्भवो भणिदो। (प्रव ज्ञे ४५)
उब्भसण वि [ऊर्ध्व+आशन] खडे होते हुए। णाणम्मि करणसुद्धे, उब्भसणे दसण होई। (द १४)
उब्भाम पु [उद्भ्राम] सचार, परिभ्रमण। धरिदु जस्स ण सक्क, चित्तुब्भाम विणा दु अप्पाण। (पचा १६८)
उभय स [उभय] युगल, दो, दोनों। पज्जाएण दु केण वि, तदुभयमादिमण्ण वा। (प्रव ज्ञे २३ पचा ९९, स १०४) -त्त वि [त्व] दोनों की अपेक्षा, उभयपने से। (पचा १७) उभयत्त जीवभावो, ण णस्सदि ण जायदे अण्णो। (पचा १७)
उम्मग्ग पु [उन्मार्ग] मिथ्यापथ, कुमार्ग, विपरीत मार्ग। उम्मग्ग गच्छत। (स २३४) उम्मग्ग परिचत्ता, जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभाव। (निय ८६) -पर वि [पर] उन्मार्ग में रत, मिथ्यामार्ग

में तत्पर। उग्गो उम्मग्गपरो, उवओगो जस्स सो असुहो (प्रव.ज्ञे ६६) -य वि [क] उन्मार्गक, विपरीत मार्ग पर चलने वाला। (सू २३) सेसा उम्मग्गया सव्वे। (सू. २३)

उम्मुक्क वि [उन्मुक्त] विमुक्त, रहित। (भा ९३) सीस उम्मुक्का। (भा. ९३)

उयर न [उदर] पेट, कुक्षि, उदर। उयरे वसिओ सि चिर, णव-दस-मासेहिं पत्तेहिं। (भा ३९) -अग्गिसंजुत्त [अग्निसंयुक्त] उदराग्नि से युक्त। मंसवसारुहिरादि, भावे उयरग्गिसजुत्तो। (स १७९)

उवइट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादन। (द २, भा ६, मो.७) दसणमूलो धम्मो, उवइट्ठो जिणवरेहि सिस्साण। (द २)

उवउत्त/उवजुत्त वि [उपयुक्त] न्यायसगत, युक्तियुक्त। उवजुत्तो सत्तभगसब्भावो। (पचा ७२)

उवएस पु [उपदेश] उपदेश, शिक्षा, कथन, प्रतिपादन। ववहारस्स दरीसणमुवएसो वण्णिदो जिणवरेहिं। (स.४६) उवएसो (प्र ए.स ४६) उवएस (द्वि ए नियं १०९)

उवओग पु [उपयोग] ध्यान, ज्ञान, चैतन्यधारा। (पंचा.१६, स. ८९, १००, प्रव. १५, नियं १०) उवओगो अण्णाण। (स ८८) उवओगो (प्र ए स.९०, नियं १०) उवओगा (प्र. व स १००) उवओगो/उवओए (द्वि व स.१८१) उवओगस्स (ष ए स ९४,९५) उवओगम्हि (स. ए स १८२) -अप्पग पु [आत्मक] उपयोगात्मक, उपयोगस्वरूप आत्मा। अह दे अण्णो

कोहो, अण्णुवओगप्पगो हवदि चेदा। (स ११५) -गुणाधिग वि [गुणाधिक] उपयोग के गुणों से अधिक। उवओगगुणाधिगो। (स ५७) -मय वि [मय] उपयोगमय। जीवो उवओगमयो। (निय १०) -लक्खण पु न [लक्षण] उपयोग के लक्षण, कारण। (स २४) सव्वण्हु णाणदिट्ठो जीवो उवओगलक्खणो णिच्च। (स २४) -विसेसिद वि [विशेषित] उपयोग से निरूपित, जानने रूप परिणामों से कथित। जीवो त्ति हवदि चेदा, उवओगविसेसदो पहू कत्ता। (पचा २७) -सुप्पा पु [शुद्धात्मन्] उपयोग से विशुद्ध आत्मा। भाव उवओग-सुद्धप्पा। (स १८३) आचार्य कुन्दकुन्द ने उपयोग का

लक्षण इस प्रकार प्रतिपादित किया है। उवओगो णाणदसण भणिदो। (प्रव ज्ञे ६३) उपयोग को ज्ञान एव दर्शन के अतिरिक्त जीव/आत्मा के परिणामों की अपेक्षा शुभ,अशुभ और शुद्ध रूप में भी प्रतिपादित किया गया है। उवओगो जदि हि सुहो, पुण्ण जीवस्स सचय जादि।असुहो वा तध्र पाव, तेसिमभावे ण चयमत्थि। (प्रव ज्ञे ६४) जीवो य साणुकपो उवओगो सो सुहो तस्स।।(६५)विसयकसाओ गाढो,दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठ-गोट्ठिजुदो। उग्गो उम्मग्गपरो उवओगो जस्स सो असुहो।। (६६) विशुद्ध आत्मा के उपयोग को णाणप्पगमप्पगं ज्ञानात्मस्वरूप कहा है।

उवकुण सक[उप+कृग्]उपकार करना। (हे कृगे कुण ४/६५) उवकुणदि जो वि णिच्च।(प्रव चा ४९)

उवगद वि [उपगत] पास आया हुआ, ज्ञात, जाना गया। णिव्वाणमुवगदो वि। (स.६४)

उवगूहण न [उवगूहन] प्रच्छन्न, गुप्त, सम्यग्दृष्टि का एक अङ्ग। जो सिद्धभक्तिजुत्तो, उवगूहणगो दु सव्वधम्माण। सो उवगूहणकारी, सम्मादिट्ठी गुणेयव्वो। (स २३३) उवगूहण रक्खणाए य(चा ११)-ग वि [क] सम्यग्दृष्टि,उपगूहन अङ्गधारी। (स २३३)

उवघाद पु [उपघात] विनाश, विराधन। सच्चित्ताच्चित्ताण करेइ दव्वाणमविघाद। (स २३८, २४३)

उवज्झाय पु [उपाध्याय] उपाध्याय, अध्यापक, पचपरमेष्ठी मे चतुर्थ परमेष्ठी की सज्ञा। रयणत्तयसजुत्ता, जिणकहियपयत्थदेसयासूरा। णिक्कखभाव सहिया, उवज्झाया एरिसा होंति।। (निय.७४)

उवट्ठिद वि [उपस्थित] उपस्थित, मौजूदगी, प्राप्त। (प्रव चा ७,शा ५७)

उवदिट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित। णिम्ममत्तिगुवदिट्ठो। (निय ९९)

उवदिस सक [उप+दिश्] उपदेश देना, समझना। ववहारेणुवदिस्सदि। (स ७)

उवदिसद वि [उप+दिशत्] उपदेश दने वाला। उवदिसदा खलु धम्म। (प्रव ज्ञे.५)

उवदेस पु [उपदेश] व्याख्यान, प्ररूपण, प्रवचन, कथन।

एएणुवदेसेण य।(स २८३) उवदेसेण (तृ ए स २८३) उवदेसे (प्र ब प्रव ७१) उवदेसो (प्र ए प्रव ८७)

उवधि पु [उपाधि] माया, कपट, शरीररूप परिग्रह। (प्रव चा ३१) आहारे व विहारे, देस काल सम खम उवधि। (प्रव चा ३१)

उवभुज सक [उप-भुज्] भोगना। (प्रव ज्ञे ५६) उवभुजते (व प्र ब स १९४)

उवभोग पु [उपभोग] जिसका बार-बार भोग किया जाता है, उपभोग।उपभोगमिदिएहिं। (स १९३) **-णिमित्त** न [निमित्त] उपभोग के कारण। बधुवभोगणिमित्ते। (स २१७)

उवभोज्ज वि [उपभोग्य] भोगने योग्य, उपभोग्य, भोगे जाते हुए। उवभोज्जमिदिएहि।(पचा ८२) उवभोज्जे (प्र ब स १७४) उवभोज्जा (प्र ब स १७५)

उवयरण न [उपकरण] साधन, कारण, निमित्त, उपकारी। उवयरणे जिणमग्गे। (प्रव चा २५)

उवया सक [उप+या] प्राप्त होना,समीप में जाना।मरण-मुवयादि। (स १९५) दोसमुवयादि। (प्रव चा ४४) उवयादि (व प्र ए)

उवयार पु [उपकार] 1 भलाई, हित, कल्याण। अणुकपयोवयार। (प्रव चा ५१) 2 पु [उपचार] चिकित्सा, शुश्रूषा, लक्षणा, शब्दशक्ति विशेष। भण्णदि उवयारमत्तेण। (स १०५)

उवरद वि [उपरत] विरत, निवृत्त, रहित। उवरदपावो पुरिसो।

(प्रव चा ५९)

उवरिट्ठाण न [उपरिस्थान] ऊर्ध्वस्थान, ऊँचा स्थान। जम्हा उवरिट्ठाण, सिद्धाण जिणवरेहिं पण्णत्त। (पचा ९३)

उवरिल्लय वि [उपरित] उपरिम, ऊपरीभाग। (द्वा.२८) भाव अर्थ में इल्ल और उल्ल प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

उवलभ पु [उपलम्भ] लाभ, प्राप्ति। एयत्तस्सुवलभो। (स ४)

उवलंब्भ सक [उप+लभ्] प्राप्त करना, जानना। उवलब्भत (व कृ स २०३)

उवलद्ध वि [उपलब्ध] उपलब्ध, प्राप्त,विज्ञात, ग्रहण किया हुआ। (प्रव ८१, मो १, द.१५) उवलद्ध तेहिं कह।

उवलद्धि स्त्री [उपलब्धि] प्राप्ति, उपलब्धि। (स १३२) सम्मत्तादो णाण, णाणादो सव्वभावउवलद्धी। (द १५)

उववज्ज अक [उप+पद्] उत्पन्न होना। उववज्जिऊण। (स कृ भा २७)

उववास पु न [उपवास] उपवास, व्रत विशेष, इन्द्रिय सयम के लिए एक उपाय, अनाहार। (प्रव ६९) उववासादिसु रत्तो। (प्रव ६९)

उवसत वि [उपशान्त] क्रोधादि भाव से रहित, नीचे दबा हुआ। उवसतखीणमोहो। (पचा ७०)

उवसपय सक [उप+सपद्] प्राप्त होना। उवसपयामि सम्म, जत्तो णिव्वाणसपत्ती। (प्रव ५)

उवसग्ग पु [उपसर्ग] उपद्रव, उपसर्ग, व्यवधान, बाधा। णवि इदिय

उवसग्गा। (नियं १७९) उवमग्गपरीसहेहिंतो। (भा ९५)

उवसप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] काल विशेष। (द्वा २७)

उवसम पु [उपशम] इन्द्रिय निग्रह, क्रोधादि का अभाव, शान्तपरिणाम। कम्मेण विणा उदय, जीवस्स ण विज्जदे उवसम वा। (पचा ५६, ५८, स ३८२) उवसमदमखमजुत्ता (बो ५१)

उवसमण पु न [उपशमन] औपशमिक भाव, आत्मिक प्रयत्न विशेष। ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा। (निय ४१)

उवहस सक [उप+हस्] हसी करना, उपहास करना। (लि. ३)

उवहाण न [उपधान] उपधान, आश्रय। (लि.८)

उवहि पु स्त्री [उपधि] परिग्रह, कर्मपरिणाम। (प्रव चा ७३)

उवाअ पु [उपाय] हेतु, साधन। जुत्ति त्ति उवाअ त्ति य। (निय १४२) अतोवाएण चयहि बहिरप्पा। (मो ४)

उवादेय वि.[उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य। हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा। (निय ३८) सगदव्वमुवादेय। (निय ५०)

उवासेय वि [उपासेय] सेवन करने योग्य। (प्रव चा ६३)

उवे सक [उप+इ] प्राप्त करना। पडिए ण पुणोदयमुवेई। (स १६८)

उव्वह सक [उद्+वह] धारण करना, ऊपर उठाना। सम्मत्तमुव्वहतो झाणरओ होइ जोई सो। (मो ५२) उव्वहतो (व कृ)

उव्वेग पु [उद्वेग] व्याकुलता, शोक, अठारह दोषों में अतिम दोष विम्हयणिद्दाजणुव्वेगो। (निय ६)

उसह पु [ऋषभ] प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव। (निय १४०, ती भ ३) उसहादिजिणवरिंदा। (निय १४०)

उस्सास पु [उच्छ्वास] श्वास, जीवन का एक प्राण। सो जीवो पाणा पुण, बलमिंदियमाऊ उस्सासो। (पचा ३०) उस्सासाण (ष ब भा २५) -मेत्त न [मात्र] एक उच्छ्वास मात्र। त पाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उस्सासमेत्तेण। (प्रव चा ३८)

उहय स [उभय] दो, दोनों। (स ४२, पचा १४)

ए

ए अ [ए] इस तरह। (निय ११५) जयदि खु ए चहुविहकसाए। (निय ११५)

ए सक [आ+इ] प्राप्त करना, आना। ण य एइ विणिग्गहिउं। (स ३७५-३८१) एदि (व प्र ए प्रव ७८) हरिहरतुल्लो वि णरो, सग्ग गच्छेइ एइ भवकोडी। (सू ८)

ए अ स [एतत्] यह। एए सव्वे भावा। (स ४४) एए (प्र ब चा ४) एएण (तृ. ए स ८२, २८३ सू १६, भा ८७) एएहि/एएहिं (तृ ब स ५७,७९,चा १२) एएसु (स ब स ९०) एएसु य उवओगो (स ९०)

एइंदिय पु न [एकेन्द्रिय] एकेन्द्रिय, जाति नामकर्म का एक भेद, जिसके उदय से एकेन्द्रियों मे जन्म होता है। (पचा १११, ११२)

एक स [एक] एक, अकेला। एको चेव महप्पा। (पचा ७१) एकस्स

दु परिणामो (स १३८, १४०) एकम्मि चेव समए। (प्रव ज्ञे १०)

एक्क स [एक] एक, अकेला। एक्क खलु त भत्त।(प्रव चा २९) -अट्ठ पु [अर्थ] एकरूप,एक पदार्थ।(पचा ३४,स २७) -काय पु [काय] एक शरीर। सव्वत्थ अत्थि जीवो, ण य एक्को एक्ककाय एक्कट्ठो।(पचा ३४)-ठाण न [स्थान] एकस्थान, एक जगह।दिण्णण्ण एक्कठाणम्मि।(सू १७)-एक्क स [एक] एक-एक, प्रत्येक। (भा ३७) -मेत्त स [मात्र] एकमात्र, केवल एक। (स २०४) त होदि एक्कमेत्तपद। (स २०४)

एग स [एक] अकेला, एक। (पचा ११२,स २०३,प्रव ज्ञे ७२ भा ५९ द १८) एग जिणस्स रूव। (द १८) एगो य मरदि जीवो, एगो य जीवदि सय। एगस्स जादि मरण, एगो सिज्झदि णीरयो।। (निय १०१) -अत पु [अन्त] एकान्त,तत्त्व,प्रमेय,विशेष। एगतेण हि देहो। (प्रव ६६) -त्त वि [त्व] 1 एकत्व, एकरूप, पहले जैसा। एगत्तप्पसाधग होदि। (पचा ४९) 2 एकत्व, एक भावना का नाम। (द्वा २) अद्धुवमसरणमेगत्त। एक्को करेदि कम्म एक्को हिंडदि य दीहससारे। एक्को जायदि मरदि य तस्स फल भुजदे एक्को।। (द्वा १४)

एगागी वि [एकाकी] अकेला, असहाय। केई मज्झ ण अहयमेगागी। (मो ८१)

एतदट्ठ वि [एतदर्थ] इस प्रयोजन हेतु। (पचा १०४)

एत्तो अ [इत] इससे,यहा से। (स ५४, २५०) णाणी एत्तो दु विवरीदो।

एद स [एतत्] यह। (स २७०, प्रव ८५) एदे जीवणिकाया। (पचा ११२) जीवो चेव हि एदे। (स.६२) एदे (प्र.ब.स. ६२) एदाणि (प्र ब प्रव.८५) एदम्हि (स.ए.स.२०६) एदेण (तृ. ए. स १७६) एतत् का प्रथमा एकवचन में एस/एसो रूप बनते हैं। (पचा १००, स. ५९, १५५) स्त्रीलिङ्ग में एसा (स.१९)एदेसिं (च/ष ब निय. १७) एदेसि वित्थार।

एमेव अ [एवमेव] इस तरह, ऐसा ही, इसी प्रकार। पज्जएसु एमेव णायव्वो। (स.३६५) एमेव य ववहारो। (स.४८)

एय स [एक] एक, अकेला। (निय.२७, पंचा.८१) एयरसवण्णगंध। (पंचा ८१) -अग्ग पु [अग्र] एकाग्र, स्थिर। (प्रव चा ३२)-अट्ठ पु [अर्थ] एकार्थ, एकार्थवाची। (स.३०४) -अंत पु [अन्त] एकान्त, एक पक्ष। (स.३४५, द्वा.४८) अण्णो व णेयंतो। (स.३४६). -अंतिय न [अन्तिक] ऐकान्तिक, मिथ्यात्मक। (प्रव ५९) सुह त्ति एयंतिय भणिदं। (प्रव.५९) -त्त वि [त्व] एकत्व, एक भाव। (पचा.९६, ८.३) -पदेस पुं [प्रदेश] एक प्रदेश, एक हिस्सा। (निय ३६)

एयत्तु अ [दि] इतने। (स २२) एयत्तु असंभूद। (स.२२)

एयारस त्रि [एकादश] ग्यारह। (द्वा.६८)

एरिस वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का। (निय.७१, स.७५, बो ९,४४,५२) जिणमग्गे एरिसा पडिमा। (बो.९) -गुण पुं न [गुण] ऐसे गुण, इस प्रकार के गुण। एरिसगुणेहिं सव्वं। (बो.३८)

एरिसी वि [ईदृशी] ऐसी, इस तरह की। एरिसी दु सुई। (स.३३६)

एव अ [एव] ही, तरह, समान। जइया स एव सखो। (स २२२) यहा एव समानता के अर्थ में प्रयोग हुआ है। तस्सेव पज्जाया। (पचा ११) में ही अर्थ में है।

एव अ [एवम्] इस तरह, तथा, क्योंकि। एव सदो विणासो। (पचा १९) सो आहारओ हवइ एव। (स ४०५, निय १०६, चा ६) -विह वि [विध] इस प्रकार, इस विधि से। (स ४३, प्रव ज्ञे १९) एवविहा बहुविहा। (स ४३)

एसण न [एषण] अन्वेषण, ग्रहण, अचौर्यव्रत की एक भावना, प्राप्ति। (चा ३४) एसणसुद्धिसउत्त। (चा ३४) -सुद्धि स्त्री [शुद्धि] अन्वेषण शुद्धि, आहारशुद्धि, एक भावना। (चा ३४)

एसणा स्त्री [एषणा] एक समिति का नाम, जिसमें निर्दोष आहार आदि क्रियाओं को किया जाता है। (निय ६३) कदकारिदाणुमोदणरहिद तह पासुग पसत्थ च। दिण्ण परेण भत्त, समभुत्ती एसणासमिदी।। (निय ६३)

एहिअ/एहिग वि [ऐहिक] इस लोक सम्बन्धी, इस जन्म सम्बन्धी। (प्रव चा ६९) जदि एहिगेहि कम्मेहिं। (प्रव चा ६९)

एहे वि [ईदृक् अपभ्रश] इसमें, इसके जैसा। एहे गुणगणजुत्तो। (बो ३५)

ओ

ओगाढ वि [अवगाढ] व्याप्त, भरा हुआ, गहरा। (पचा ६४) ओगाढगाढणिचिदो, पोग्गलकाएहिं सव्वदो लोगो। (प्रव ज्ञे ७६, पचा ६४)

ओगास पु [अवकाश] जगह, स्थान। अण्णोण्णं पविसंता, दिंता ओगासमण्णमण्णस्स। (पंचा.७)

ओगिण्ह सक [अव+ग्रह्] लेना, ग्रहण करना, जानना। (प्रव.५५) ओगिण्हित्ता जोग्गं, जाणदि वा तण्ण जाणादि। (प्रव.५५) ओगिण्हित्ता (स.कृ)

ओग्गह पु [अवग्रह] इन्द्रियजन्य ज्ञान, सामान्य ज्ञान। (प्रव.२१) अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा ये चार सामान्य इन्द्रिय द्वारा होने वाले ज्ञान हैं। सो णेव ते विजाणदि, ओग्गहपुव्वाहिं किरियाहिं। (प्रव.२१)

ओच्छण्ण वि [अवच्छन्न] आच्छादित, ढँका हुआ। (प्रव.८३) खुब्भदि तेणोच्छण्णो, पप्पा राग व दोस वा। (प्रव ८३) मसविलित्त तएण ओच्छण्णं। (द्वा.४३)

ओदइय/ओदयिग पु न [औदयिक] औदयिक भाव, कर्मविपाक। (प्रव.४५) पुण्णफला अरहंता, तेसिं किरिया पुणो हि ओदयिगा। (प्रव ४५) ओदइयभावठाणा। (निय ४१)

ओधि पु स्त्री [अवधि] 1 रूपी पदार्थो का अतीन्द्रिय ज्ञान, अवधिज्ञान। (पचा.४१) आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि। (पचा ४१) 2.सीमा, मर्यादा, परिमाण।

ओरालिय न [औदारिक]औदारिक शरीर विशेष। (प्रव.ज्ञे. ७९, बो.३८) औदारिक, वैक्रियिक, तैजस, आहारक और कार्मण ये पाच शरीर पुद्गल द्रव्यात्मक है।' ओरालिओ य देहो। (प्रव ज्ञे.७९)

ओसह न [ओषध] दवा, औषधि। (द्वा ८, द १७) जिणवयणमोसहमिण। (द १७)

ओहि पु स्त्री [अवधि] रूपी पदार्थों का अतीन्द्रिय ज्ञान, अवधिज्ञान, दर्शन का एक भेद। (पंचा ४२, स २०४, प्रव चा ३४, निय १२,१४) देवा य ओहिचक्खू। (प्रव चा ३४)

क

कख सक [काङ्क्ष्] चाहना, इच्छा करना। (स २१६) त जाणगो दु णाणी, उभय पि ण कखइ कया वि।(स २१६)

कखा स्त्री [काङ्क्षा] आकाक्षा, इच्छा, अभिलाषा। कखामणागयस्स (स २१५) जो दु ण करेदि कख, कम्मफलेसु तह सव्वधम्मेसु। (स २३०)

कचण न [काञ्चन] सोना, स्वर्ण। (शी ९) जह कचण विसुद्ध, धम्मइय खडियलवणलेवेण। (शी ९)

कड पु न [काण्ड]1 बाण,सर।(बो २०) जह ण वि लहदि हु लक्ख रहिओ कडस्स वेज्झयविहीणो। (बो २०) 2 न [काण्ड] पर्व, सन्धिस्थल, गाठ।

कति स्त्री [कान्ति] कान्ति, तेज, शोभा, सौन्दर्य। रूवसिरिगव्विदाण, जुव्वणलावण्णकतिकलिदाण। (शी १५)

कद पु [कद] कन्द, जमीन में पैदा होने वाले। (भा १०३)

कदप्प पु [कदर्प] काम सम्बन्धी चेष्टा, उत्तेजनात्मक प्रवृत्ति। कदप्पमाइयाओ। (भा १३, लि १२)

कक्कस वि [कर्कश] कठोर, प्रचण्ड, कर्कश। पेसुण्णहासकक्कस।
(निय ६२)

कक्ख पु [कक्ष] काख, हाथों का सन्धिस्थल।(सू.२४) थणतरे
णाहिकक्खदेसेसु। (सू २४)

कज्ज वि [कार्य] 1 करने योग्य, कर्म। (निय.३) णियमेण य तं
कज्ज त णियम णाणदंसणचरित्त। (निय.३) 2. न [कार्य] कार्य,
प्रयोजन, उद्देश्य। (निय २५) -परमाणु पुं [परमाणु]
कार्यपरमाणु। खधाण अवसाणो, णादव्वो कज्जपरमाणू।
(निंय २५)

कट्ठ न [काष्ठ] 1. काठ, लकड़ी। (बो ५५) सिलकट्ठे भूमितले।
(बो ५५) 2 न [कष्ट] दु.ख, पीड़ा, व्यथा। (लि २२) पालेहि
कट्ठसहिय। (लि.२२)

कडय पु न [कटक] कगन, कडा। (स.१३०) अगयमया भावादो,
जह जायते तु कडयादी। (स.१३०) जह कडयादीहि दु।
(स ३०८) कडयादीहिं (तृ ब)

कडुय पु [कटुक] कडुवा, तिक्त। महुरं कडुय वहुविहमवेयओ तेण
सो होई। (स ३१८) णिट्ठुरकडुय सहति सप्पुरिसा। (भा.१०७)

कणअ/कणग/कणय न [कनक] सोना, स्वर्ण। (स १८४, २१८,
१३०, बो ४६) णो लिप्पदि रएण दु, कद्दममज्झे जहा कणय।
(स २१८) कणयभाव ण त परिच्चइ। (स १८४)

कत्ता वि [कर्त्ता] कर्त्ता, करने वाला, निर्माता, सम्पादक। (स.६१,
१२६, भा १४७, निय ७७-८१, स. ज वृ ९१) ज कुणदि

भावमादा,कत्ता सो होदि तस्स भावस्स। (स ज वृ ९१) कत्ता भोत्ता आदा, पोग्गलकम्मस्स होदि ववहारा। (निय १८) कत्तार (द्वि ए)

कत्ति वि [कर्तृ] करने वाला, सम्पादक। अणुमता णेव कत्तीण। (निय ७७) कत्तीण (प ब)

कद वि [कृत] किया हुआ, वनाया हुआ। (स २७, १०५, निय ६३, भा १३३) जीवेण कद कम्म। (स १०५) जोधेहिं कदे जुद्धे, राएण कद ति जपदे लोगो। (स १०६)

कद्दअ अक [दि] नष्ट करना, क्षय करना। पेच्छतो कद्दए कालो। (द्वा १०)

कद्दम पु [कर्दम] कीचड,रज।(स २१८,२१९)कद्दममज्झे जहा लोह। (स २१९)

कमडल पु न [कमण्डल] साधुओं का लकड़ी या मिट्टी का पात्र। (निय ६४) पोत्थइ कमडलाइ।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमलिनी। (भा १५३) जह सलिलेण ण लिप्पइ कमलिणिपत्त सहावपयडीए। (भा १५३)

कम्म पु न [कर्मन्] कर्म,जीव के द्वारा ग्रहण किया गया अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गलपरिणाम। (पचा ५८, स १९, निय १०६, भा १०७, मो ५६, बो ११) जो कम्मजादमइओ। (मो ५६) -अट्ठ वि [अष्ट] 1 अष्टकर्म, आठकर्म।(बो ११,५२) ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु,नाम, गोत्र और अन्तराय। 2 पु [अर्थ] कर्म के लिए, कर्म के हेतु। -उदय पु

[उदय] कर्म-उदय, कर्म का फल। ता कम्मोदयहेदूहिं, विणा जीवस्स परिणामो। (स १३८) -उवदेस वि [उपदेश] कर्म का व्याख्यान। (स २) -उवाहि पु स्त्री [उपाधि] कर्मजनित विशेषण। (निय १५)-कलक पु [कलङ्क] कर्मदोष,कर्मरूपीपाप।(भा ५) -क्खय वि [क्षय] कर्मक्षय, कर्मरहित। (भा ८४, सू १२, बो १५, स.१५६) -गंठि पु स्त्री [ग्रन्थि] कर्मग्रन्थि, कर्मरूप परिग्रह, कर्म की गाठ। आदेहि कम्मगठी। (शी २७) -गुण पु न [गुण] कर्मगुण। (स ८१) -ज वि [ज] कर्मजनित। (निय १८) -जाद वि [जात] कर्मजन्य, कर्म से उत्पन्न। (मो ५६) जो कम्मजादमइओ। (मो ५६) -त्त वि [त्व] कर्मत्व, कर्मपना। (स ९१) कम्मत्त परिणमदे। -पयडि स्त्री [प्रकृति] कर्मस्वभाव, कर्मप्रकृति। एमेव कम्मपयडी। (स १४९) कम्मपयडी णियद। (भा ५४) -परिणाम पु [परिणाम] कर्म परिणाम। (स १३९) -परि मोक्ख पु [परिमोक्ष] कर्म से पूर्णमुक्त।(स २०५) -फल न [फल] कर्मफल। (स २३०) सव्वे खलु कम्मफल थावरकाया तसा हि कज्जजुद। (पचा.३९) -बंध पु [बन्ध] कर्मसयोग, कर्मपुद्गलों का जीव के साथ दूध-पानी की तरह मिलना। (स २२९) -बीय न [बीज] कर्मबीज। (भा १२५) जह बीयम्मि य दड्ढे, णवि रोहइ अकुरो य महीवीढे। तह कम्मबीजदड्ढे, भवकुरो भावसवणाण।। -भाव पु [भाव] कर्मभाव। जीवस्स कम्मभावे। (स १६८) उवओगप्पओग बधते कम्मभावेण। (स १७३) -मज्झगद वि [मध्यगत] कर्मो के मध्यगत, कर्मो के बीच।

(स २१९) **-मल** पु न [मल] कर्ममल। (भा ७४,१०६) **-मही** स्त्री [मही] कर्मभूमि।(निय १६)कम्ममहीरुहमूलच्छेद-समत्थो।(निय ११०)**-रय** पु न [रजस्] कर्मरज, कर्मधूलि। कम्मरएण णिएण वच्छण्णो। (स १६०) लिप्पदि कम्मरएण दु, कद्दममज्झे जहा लोह । (स २१९) **-वग्गण** पु न [वर्गणा] कर्मवर्गणा। सुहुमा हवंति खधा, पावोग्गा कम्मवग्गणस्स पुणो। (निय २४) वग्गणा शब्द का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में ही होता है। (देखो - पाइयसद्दमहण्णव पृ ७३७) परन्तु नियमसार में यह प्रयोग पुलिङ्ग में हुआ है। **-विणासण** वि [विनाशन] कर्मों का नाश करने वाला। (निय १४१) कम्मविणासणजोगो। (निय १४१) **-विमुक्क** वि [विमुक्त] कर्मरहित। कम्मविमुक्को अप्पा, गच्छदि लोयग्गपज्जत। (निय १८२) अप्पो वि य परमप्पो, कम्मविमुक्को य होइ फुड। (भा १५०) **-विवाग** पु [विपाक] कर्म परिणाम, सुख-दुखदि भोगरूप कर्मफल। उदय कम्मविवाग। (स २००) **-सरीर** न [शरीर] कर्मशरीर। (स १६९) कम्मसरीरेण दु ते बद्धा सव्वे वि णाणिस्स।। (स १६९) कम्मो (प्र ए स २२५, २२७) कम्म (प्र ए स २५४) कम्म च ण देसि तुम। कम्माणि (द्वि ब स ३११) कम्माइ (द्वि ब स ३१९) कम्मेण (तृ ए मो १) कम्मणा (तृ ए स ३६७) जीवा वज्झति कम्मणा जदि हि। कम्मेहि/कम्मेहिं (तृ ब स ३३२) कम्मेहि दु अण्णाणी, किज्जदि णाणी तहेव कम्मेहिं। कम्मस्स (च/ष ए स ७५) कम्मणो (ष ए निय १०६) कम्मस्स य परिणाम, णोकम्मस्स य

तहेव परिणाम।कम्मादो(प ए निय १११)कम्माण| कम्माण (च |ष ब)कम्माण कारगो होदि।(स ९२)कम्मम्हि(स ए स १०४)दव्वगुणस्स य आदा, ण कुणदि पुग्गलमयम्हि कम्मम्हि। कम्मे (स ए स १८२) अट्ठवियप्पे कम्मे। (स १८२)

कय वि [कृत] किया हुआ। (स २८७, भा १०६) कह ते मरण कय तेहिं। (स २४८) -त्थ वि [अर्थ] कृतकृत्य, कृतार्थ। (शी २७) त छिदति कयत्था। (शी २७)

कयलि स्त्री [कदलि] केला का तना, केला। (स २३८, २४३) तालीतलकयलिवसपिंडीओ। (स २४३)

कयाइ/कयावि अ [कदापि] कभी भी। (स २१६, ३०२) उभय पि ण कखइ कयावि। (स २१६)

कर सक [कृ] करना, बनाना। (स १००, १११, निय १०३) ते जदि करति कम्म। (स १११) अप्पवियप्प करेइ कोहो ह। (स ९४) करिंतो (व कृ स ९२) अप्पाण वि य पर करिंतो सो (स ९२) करमाणो (व कृ लि ६,९) करमाणो लिगरूवेण। करेज्ज (वि प्र ए निय १५४)पडिकमणादिं करेज्ज झाणमय। करिज्ज (वि प्र ए स ९९) करिज्ज णियमेण तम्मओ होदि।

कर पु [कर] हाथ, हस्त। (भा ७५) करजलिमालाहिं। (भा ७५)

करण न [करण] क्रिया, कार्य, इन्द्रिय, साधन, प्रयोजन, निमित्त। (स ९८, निय ११३, द १४, भा ९०) करणाणि य कम्माणि। (स ९८) तस्स णाणाविहेंहि करणेहिं। (स २३९) मा जणरजकरण। (भा ९०) - [illegible]

वदसमिदिसीलसजमपरिणामो करणणिग्गहो भावो। (निय ११३) -भूद वि [भूत] करणस्वरूप, साधनरूप। (स ६६) एदेहिं य णिव्वत्ता जीवट्ठाणाउ करणभूदाहिं। -सुद्ध वि [शुद्ध] करण से निर्दोष, कार्यों से निर्दोष, इन्द्रियों के कारणों से पवित्र। णाणम्मि करणसुद्धे, उब्भसणे दसण होई। (द १४)

करुण वि [करुण] दयाभाव, कृपा, करुणा। करुणभावसजुत्ता। (भा १५८)

कल वि [कल] शरीर, सम्बन्ध, कोलाहल, कलह। (मो ६) -चत्त वि [त्यक्त] शरीर के सम्बन्ध से रहित। (मो ६)

कलि पु [कलि] युग विशेष, कलयुग। कलिकलुसपावरहिया। (द ६)

कलुस वि [कलुष] मलीनता, कालिमा। (द ६) कलिकलुसपावरहिया। (द ६) -उवओग पु [उपयोग] मलिन उपयोग। जो दु कलुसोवओगो। (स १३३)

कलुसिअ वि [कलुषित] कालिमायुक्त, पापयुक्त। (भा ४४) देहादिचत्तसगो, माणकसाएणकलुसिओ धीर। (भा ४४)

कलेवर न [कलेवर] शरीर, देह। गहि उज्झियाइ मुणिवर, कलेवराइ तुमे अणेयाइ। (भा २४)

कल्लाण पु न [कल्याण] हित, सुख,निर्वाण, मोक्ष। (भा १३५, १००, द ३३) कल्लाणसुहणिमित्त परपरा तिविहसुद्धीए। (भा १३५) -परपरा स्त्री [परपरा] कल्याण की परम्परा, विधि पूर्वक कल्याण। कल्लाणपरपरया कहत्ति जीवा विसुद्धसम्मत्त। (द ३३)

कवाड पुं न [कपाट] किवाड, द्वार, दरवाजा। (द्वा. ६१) वज्जिय सम्मत्तदिढकवाडेण। (द्वा ६१)

कसाअ/कसाय पु [कषाय] कषाय,क्रोध,मान,माया और लोभ ये चार कषायें हैं। आत्मा को जो कसे, दुःख दे, वह कषाय है। सव्वे कसाय मोत्तु।(भा.२७) णाहं कोहो माणो, ण चेव माया ण होमि लोहो ह। (निय. ८१) **-उदय** पु [उदय] कषाय का उदय। (स. १३३)**-कम्म** पु न [कर्मन्] कषाय कर्म।(स २८१) **-णाण** न [ज्ञान] कषाय ज्ञान। (बो.३२) **-दढमुद्दा** स्त्री [दृढमुद्रा] कषाय की दृढ मुद्रा। (बो १८) **-भाव** पुं [भाव] कषाय भाव। ण य रायदोसमोह, कुव्वदि णाणी कसायभाव वा। (स २८०) **-मल** पु न [मल] कषायमल, कषायरूपी पाप। (बो.१) **-विसअ** पु [विषय] कषाय विषय,कषाय से उत्पन्न भोग, कषाय के कारण। तह भावेण ण लिप्पदि, कसायविसएहिं सप्पुरिसो। (भा.१५३)

कह/कह अ [कथम्] कैसे, किस तरह, क्यों, किसलिए। (निय १३४, स २४९,सू २४) ते कह हवति जीवा। (स.६८) ताहिं कह भण्णदे जीवो। (स ६६)

कह सक [कथय्] कहना, बोलना। कहयति (व प्र ब.निय.१४५) कहति जीवा विसुद्धसम्मत्त। (द ३३) कहता (व.कृ द ९) तस्स य दोसकहता।

कहा स्त्री [कथा] कथा, वार्ता,। (स ३, निय.६७) आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में कथा के तीन भेद किये है-काम,भोग और बन्ध। सव्वस्स वि काम-भोग-बधकहा। (स.४) नियमसार में

स्त्रीकथा, राजकथा, चोरकथा, और भक्त कथा (भोजन कथा) ये चार भेद किये है। थी-राज-चोर-भत्तकहादिवयणस्स पावहेउस्स। (निय ६७)

कहिय वि [कथित] उपदेशित, प्रतिपादित, कथित। (निय १३९, बो ६०, मो १८) परिचत्ता जोण्हकहियतच्चेसु। (निय १३९) सुद्ध जिणेहि कहिय। (मो १८)

का सक [कृ] करना। काहिदि/काहदि (भवि प्र ए मो ९९, निय १२४) काउ/कादु (हे कृ स २२०) सक्कदि काउ जीवो। (निय ११९) काऊण (स कृ निय १४०, लि १, १३, द १) काऊण णमुक्कार। (द १) कायव्वो/कायव्व (वि कृ निय ११३, भा ९६, सू ७, लि २) खेडे वि ण कायव्व। (सू ७) अणवरय चेव कायव्वो। (निय ११३)

काउस्सग्ग पु [कायोत्सर्ग] शरीर के प्रति ममत्व भाव रहित। (निय ७०)

काम पु [काम] इच्छा, अभिलाषा, वासना, चार पुरुषार्थो में एक, इन्द्रिय अनुराग। (स ४, भा १६३) अत्थो धम्मो य काममोक्खो य। (भा १६३)

काअ/काय पु [काय] 1 शरीर, देह। 2 प्रदेश, समूह, राशि। (स २४०, निय ६८, बो ३८) भणिओ सुहुमो काओ। (सू २४) **-कलेस** पु [क्लेश] शरीर की पीड़ा, शारीरिक दुख। कायकिलेसो। (निय १२४) **-गुत्ति** स्त्री [गुप्ति] काय की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना, शरीर की प्रवृत्तिमात्र को रोकना।

बघणछेदणमारणआकुंचण तह पसारणादीया। कायकिरियाणियत्ती, णिद्दिट्ठा कायगुत्ति त्ति। (निय ६८) -चेट्ठा स्त्री [चेष्टा] शारीरिक चेष्टा, शरीर की क्रिया। ण कायचेट्ठाहिं सेसाहिं। (स २४०,२४५) -त्त वि [त्व] प्रदेशत्व। कालस्स ण कायत्त। (निय ३६) - विसय पु [विषय] शारीरिक कामभोग, शरीर की वासना, शरीर की इच्छा, स्पर्शनेन्द्रिय के विलास। ण य एइ विणिग्गहिउ, कायविसयमागय फास। (स ३७९)

कारइद/कारयिद वि [कारयित] करवाया गया, कराने वाला। कत्ता ण हि कारइदा। (निय ७७-८१)

कारक/कारग वि [कारक] करने वाला, कर्त्ता। (स.२८०,२८३,२८४) अण्णाणमओ जीवो कम्माण कारगो होदि। (स ९२)

कारण न [कारण] हेतु, निमित्त, प्रयोजन। (स १६५,निय २५, भा ८७) एएण कारणेण दु।(भा ८७)-णिमित्त न [निमित्त] कारण विशेष। (द २९) कम्मक्खय कारणणिमित्तो। (द २९) -भूद वि [भूत] कारणभूत, प्रयोजनभूत। भावो कारणभूदो (भा २,६६)

काल पु [काल] समय, अवसर, द्रव्य का एक भेद। (स २८८, पचा २४, भा १०) पत्तो सि अणतय काल। (भा १०) कालस्स ण कायत्त, एयपदेसो हवे जम्हा। (निय ३६) काल द्रव्य के दो भेद है- निश्चयकाल और व्यवहार काल। निश्चयकाल में उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल आते है। व्यवहारकाल समय,अवलि या भूत,

भविष्यत् और वर्तमान के भेद रूप है। (निय ३१) समय, निमेष, काष्ठा, कला, नाड़ी, दिन, रात, मास, ऋतु, अयन और वर्ष यह सब व्यवहार काल है। समयो णिमिसो कट्ठा, कला य णाडी तदो दिवारत्ती। मासोदुअयणसवच्छरो त्ति कालो परायत्तो। (पचा २५) -अट्ठ पु न [अर्थ] कालार्थ, काल विशेष, काल में स्थित। (भा ३५) परिणामणामकालट्ठ। (भा ३५)

कालायस न [कालायस] लोहे की बेडी। (स १४६) सोवण्णियम्हि णियल, बधदि कालायस च जह पुरिस। (स १४६)

कालिज्जय न [कालेय] यकृत, जिगर, हृदय का मासपिण्ड, कलेजा। (भा ३९)

कालिया स्त्री [कालिका] मेघ समूह, बादल। रागादि कालिया तह विभाओ। (स ज वृ २१९)

कालुस्स न [कालुष्य] मलिनता, कलुषपन, कलुषता। कालुस्समोहसण्णा। (निय ६६)

कि सक [कृ] करना। किज्जदि/किज्जइ (स ३३२, ३३४) किच्चा (स कृ निय ८३, प्रव ४)

कि/कि स [किम्] कौन, क्या, क्यों। ता कि करोमि तुम। (स २६७, भा ५)

किचि/किचिवि अ [किञ्चित्/किञ्चिदपि] कुछ भी, कोई, थोड़ा। (स ३८, भा १०३, पचा ५९) उप्पादेदि ण किचिवि। (स ३१०) जम्हा सत्थ ण याणए किचि। (स ३९०)

किणर पु [किन्नर] व्यन्तर देवों का एक समूह। (भा १२९) किणर-

किंपुरिसअमरखयरेहिं। (भा १२९)

किंपुरिस पु [किंपुरुष] व्यन्तर देवों का एक भेद। (भा १२९)

किंते अ [किंते] जो कि, यत.। (भा ६९)

किं बहुणा अ [किं बहुना] बहुत क्या। (निय ११७)

किं वा अ [किं वा] और क्या ? किं वा बहुएहिं लाविएहिं। (भा ३८)

किण्णग वि [कृष्णक] कालापन, कालिमायुक्त, कृष्णपन। (स.२२०) सखस्स सेदभावो, ण वि सक्कदि किण्णगो काउ। (स.२२०)

किण्ह पु [कृष्ण] काला, श्याम। (स २२२) -भाव पु [भाव] कृष्णभाव, कालापन, कालास्वभाव। गच्छेज्ज किण्हभावं। (स २२२)

कित्त सक [कीर्त्तय्] स्तुति करना, गुणगान करना। कित्तिस्से (भवि उ.ए ती भ २)

कित्तिय वि [कीर्तित] स्तुत्य, प्रशासित। (ती भ ७)

कित्तिय/कित्तिया अ [कियन्त] कितने। (भा.३७,४४) अत्तावणेण आदो, बाहुबली कित्तिय काल। (भा ४४)

किमि पु [कृमि] कीट, कीड़ा, द्वीन्द्रिय जीव विशेष, पित्त, मूत्र, रुधिर आदि के जीव। (भा ३९) -जाल न [जाल] कीटसमूह। (भा ३९) -सकुल न [सकुल] कीट समूह से भरा हुआ, कीड़ो से व्याप्त। किमिसकुलेहिं भरिय। (द्वा ४३)

किर अ [किल] निश्चय ही। एएणच्छेण किर। (स ३३८)

किरण पु न [किरण] रश्मि, प्रभा। माणिक्ककिरणविप्फुरिओ।

(भा १४४)

किरिया स्त्री [क्रिया] क्रिया, व्यापार, प्रयत्न। कायकिरियाणियत्ती। (निय ६८,७०) **-वाइ** पु [वादिन्] क्रियावादी। (भा १३६) असियसयकिरियावाई।

किवया स्त्री [कृपया] कृपा, दया, अनुकम्पा। (प्रव चा ज वृ ६८, पचा १३७)

किसि स्त्री [कृषि] खेती, कृषि। (लि ९) **-कम्म** पु न [कर्मन्] कृषिकर्म, खेती। (लि ९)

किह अ [कथम्] कैसे, क्यों। (स १४५, निय १३८) किह त होदि सुसील। (स १४५)

कीर सक [कृ] करना, कीरइ/कीरए (प्रे व प्र ए स २६३, भा ४८, द २२) कीरइ अज्झवसाण। (स २६३) कि कीरइ दव्वलिगेण। (भा ४८) बाहिरगथस्स कीरए चाओ। (भा ३)

कु सक [कृ] करना। कुज्जा (वि /आ निय १४८) णाऊण धुव कुज्जा। (मो ६०) कुज्जा अप्पे सभावणा। (मो ७१) (हि वर्तमानापञ्चमीशतृषु वा ३/१५८, ज्जा-ज्जे ३/१५९)

कु अ [कु] कुत्सित, निर्दोष, मिथ्या। (चा १३) **-णय** न [नय] कुनय, मिथ्यानय। (भा १४०) कुणयकुसत्थेहिं मोहिओ जीवो। (भा १४०) **-तित्थ** वि [तीर्थ] कुतीर्थ, मिथ्यातीर्थ। (द्वा ३२) **-दसण** न [दर्शन] मिथ्यादर्शन। कुदसणे सद्धा। (चा १३) **-दाण** पु न [दान] कुदान, खोटा दान। कुद्दाणविरहरहिया। (बो ४५) **-देव** पु [दिव] कुदेव,खोटेदेव,राग-द्वेष-मोह से सहितदेव,

वीतरागता से रहित देव। (भा ८) कुदेवगणुवाइए। (भा ८)
-देवत्त वि [देवत्व] कुदेवत्व, कुदेवापना, कुदेवों की पर्याय, भवनत्रिक देवत्व। होऊण कुदेवत्त, पत्तोसि अणेयवावारो। (भा १६)-धम्म पु [धर्मन्]कुधर्म,खोटाधर्म।(द्वा ३२) -मद न [मद] कुमद। (शी १४) -मरण न [मरण] कुमरण, खोटामरण। (भा ३२) -लिग न [लिङ्ग] कुलिङ्ग, मिथ्यालिङ्ग।(द्वा ३२) -सत्थ न [शास्त्र] मिथ्याशास्त्र। कुणयकुसत्थेहिं मोहिओ जीवो। (भा १४०) -सुद न [श्रुत] कुश्रुत, मिथ्याश्रुत। (शी १४)

कुछा स्त्री [दि] घृणा। (प्रव चा ज वृ २५)

कुच्छिद/कुच्छिय वि [कुत्सित] निंदित, गर्हित, घृणित। (स १४८, १४९, भा १३९) कुच्छियतव कुव्वतो,कुच्छियगइभायण होई। (भा १३९)

कुठार न [कुठार] कुल्हाडी, कुठार। छिंदति भावसमणा, झाणकुठारेहिं भवरुक्ख। (भा १२१)

कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढ़ा। (द्वा ७३) मोत्तूण कुडिलभाव। (द्वा ७३)

कुण सक [कृ] करना, बनाना। (स ७२, निय ८५,सू ३, भा ५) कुणदि/कुणइ (व प्र ए) कुणादि (व प्र ए स ज वृ ८६) कुणति (व प्र ब.मो ७८)कुण(वि /आ म ए भा १०५) कुणसु (वि म ए मो ९६) कुणहि (वि म ए भा १३१) कुणह (वि म ब.निय १८५) कुणिज्ज (वि म ए भा ४८) कुणतो (व कृ भा १३९) (हे कृगे कुण ४/६५)

कुणिम पु न [दि] शव, मृतक। (भा ४२) कुणिमदुग्गध। (भा ४२)

कुदोच्चिवि अ [कुतश्चित् अपि] किसी से भी।

कुर सक [कृ] करना। कुरु (वि म ए भा १३२) कुरु दयपरिहरमुणिवर।

कुल पु न [कुल] कुल, वश, जाति। (निय ४२,५६,द २७) ण वि य कुलो ण वि य जाइसजुत्तो। (द २७)

कुव्व सक [कृ] करना। (स ८१,३०१, निय १५२, चा १३) कुव्वइ/कुव्वदि (व.प्र ए स ३०१,३४९) कुव्वए (व प्र ए स २१५) कुव्वति (व प्र ब स ८६) कुव्वतो (व कृ प्र ए निय १५२) कुव्वता (व कृ प्र ब स १५३) सीलाणि तहा तव च कुव्वता। (स १५३) कुव्वतस्स (व कृ ष ए स २३९, २४४) उवघाद कुव्वतस्स। कुव्वताण (व कृ ष ब स ३२३) णिच्च कुव्वताण, सदेवमणुयासुरे लोए। (स ३२३) वर्तमानकाल कृदन्त के न्त एव माण प्रत्यय होने पर किसी भी क्रिया के तीनों लिङ्गो के दोनों वचनों में सातों विभक्तियों में रूप बनते है। कर्ता, कर्म आदि के अनुसार इनका प्रयोग होता है।

कुसमयमूढ वि [कुसमयमूढ] मिथ्यामत में मुग्ध। (शी २६)

कुसल वि [कुशल] निपुण, चतुर, दक्ष। तवसीलमतकुसला, खिवति विसय विस व खल। (शी २४)

कुसील न [कुशील] सयम रहित, चारित्र रहित, ब्रह्मचर्य रहित। कम्ममसुह कुसील। (स १४५) -सग पु न [सङ्ग] कुशील के प्रति

आसक्ति, कुशीलसपर्क। कुसीलसगं ण कुणदि विकहाओ। (बो ५६) -ससग्ग पु न [ससर्ग] कुशील सम्बन्ध। (स.१४७) कुसीलससग्गरायेण। (स १४७)

केइ/केई अ [कोऽपि] कुछ भी, कोई भी। (स ६१, निय.१८५) जीवस्स णत्थि केई। (स.५३) ण दु केई णिच्छयणयस्स। (स ५६)

केइ अ [किंचित्] कुछ भी। (निय ९७) परभाव णेव गेण्हए केइ। (निय ९७)

केणवि अ [केनापि] कोई भी, किसी के साथ। वेर मज्झं ण केणवि (निय १०४) मा वज्झेज्ज केण वि। (स ३०१)

केरिस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का। (शी ४०)

केवल वि [केवल] अद्वितीय, अनुपम, शुद्ध, ज्ञान, विशेष, अकेला (स ९,निय ९६) ज केवलि त्ति णाण। (प्रव ६०) -णाण न [ज्ञान] केवलज्ञान, समस्त पदार्थों एव उनके समस्त परिणमन को युगपत् देखने वाला ज्ञान।विज्जदि केवलणाण। (निय १८१) -णाणी वि [ज्ञानिन्] केवलज्ञानवाला,सर्वज्ञ।केवलणाणी जाणदि पस्सदि णियमेण अप्पाणं। (निय.१५९,१७२) -दसण न [दर्शन] केवलदर्शन,पूर्णबोध।(निय ९६)-दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] केवल दर्शन। (निय १८१) -भाव पु [भाव] केवलभाव, केवलज्ञानरूप भाव (बो ३९) -वीरिय पु न [वीर्य] केवलशक्ति, केवलज्ञानरूपी शक्ति। (निय.१८१) -सत्ति स्त्री [शक्ति] केवलज्ञानरूपी शक्ति (निय ९६) -सोक्ख न [सौख्य] केवलज्ञानरूपी सुख। (निय.१८१) केवलसोक्ख च केवल विरिय। (निय १८१)

व . वि [केवलिन्] केवलज्ञानी, सर्वज्ञ, चराचर को जानने वाला। (स २९, निय १२५, द २२) परमट्ठो खुल समओ, सुद्धो जो केवली मुणी णाणी। (स १५१) ववहारणएण केवली भगव। (स १५९) -गुण पु न [गुण] केवली का गुण, केवलज्ञान। केवलिगुणे थुणदि जो। (स २९) -जिण पु [जिन] केवलिभगवान्। केवलिजिणेहि भणिय। (द २२) -सासण न [शासन] केवलिशासन। (निय १२५) केवलिणो (ष ए निय्र १७२, स २९)

के वि अ [केऽपि/किञ्चित्अपि] कुछ भी, कोई भी। जे के वि दव्वसवणा। (भा १२१)

केस पु [केश] केश, बाल। (भा २०) केसणहरणालट्ठी। (भा २०)

केसव पु [केशव] अर्धचक्रवर्ती, नारायण, केशव। (भा १६०)

केहिंचिदु अ [कैश्चित्तु] कितनी ही। (स ३४५, ३४६)

को स [किम्] कौन। को णाम भणिज्ज बुहो। (स २०७) को (प्र ए)

कोइ/को अ [कोऽपि] कोई भी। (स ५८, निय १६६, प्रव ज्ञे २७) जह कोइ भणइ एव। (निय १६६)

कोडि स्त्री [कोटि] करोड,सख्या विशेष। (भा ४) जो कोडिए ण जिप्पइ। (मो २२) कोडिए (ष ए) स्त्रीलिङ्ग सम्बन्धी ए प्रत्यय लगने पर दीर्घ हो जाता है। (हे टाङस्ङेरदादिदेद्वा तु ङसे ३/२९) परन्तु यहा दीर्घ न होकर हृस्व ही रह गया। अपभ्रश में ए प्रत्यय लगने पर दीर्घ का हृस्व, हृस्व का हृस्व, हृस्व का दीर्घ और

दीर्घ का दीर्घ होता है। (हि. स्यादौ दीर्घहृस्वौ ४/३३०)

कोध पु [क्रोध] क्रोध। (स.८७) कोधादीया इमे भावा। (स.८७)

कोमल वि [कोमल] मृदु, सुकुमार, कोमल। (शी.१) कोमलस्समप्पाय। (शी.१)

को वि अ [कोऽपि] कोई भी। (स.३६, भा.२०, द.९) णत्थि मम को वि मोहो। (स.६६)

कोस पु [क्रोश] कोस, पृथ्वीतल का मापक एक प्रमाण। (मो.२१) सो कि कोसद्ध पि हु।(मो.२१)

कोह पु [क्रोध] क्रोध, गुस्सा, कोप। (स ११५,१८१, निय ११४, चा ३३, भा १०९) कोहे कोहा चेव हि। (स.१८१) -उवजुत्त वि [उपयुक्त] क्रोध सहित। (स.१२५) कोहुवजुत्तो कोहो। (स १२५)-त्त वि [त्व] क्रोधत्व, क्रोध करने वाला। (स.१२३) पुग्गलकम्म कोहो, जीव परिणामएदि कोहत्त। (स.१२३) -भाव पु [भाव] क्रोधभाव। (स १२४) कोहभावेण एस दे बुद्धी। (स १२४)

ख

ख न [ख] 1.आकाश, गगन। (पंचा ३, भा १४५) - मंडल न [मण्डल] आकाशमण्डल, आकाश क्षेत्र। जह तारयाण सहिय, ससहरविंब खमंडले विमले। (भा १४५) -चर वि [चर] खचर, विद्याधर, आकाश में गमन करने वाले। (पचा.११७) 2. इन्द्रिय, साधन।

पु [क्षय] विनाश, कर्मनाश, कर्म का अभाव। (पचा ५८) -उवसमिय पु [औपशमिक] क्षय और उपशम, कर्मो का नाश एव उपशम, क्षायोपशमिक अवस्था विशेष। खइय खओवसिमिय, तम्हा भाव तु कम्मकद। (पचा ५८) खएण (तृ ए पचा ५६, निय १७५)

खइअ/खइग/खइय पु [क्षायिक] क्षय, विनाश, कर्मो के नाश से उत्पन्न भाव। (पचा ५८) णो खइयभावठाणा। (निय ४१)-भाव पु [भाव] क्षायिकभाव। (निय ४१) णो खइयभावठाणा। (निय ४१)

ख सक [ख्या] कहना। खति (चा ३७) खति जिणा पचसमिदीओ। (चा ३७)

खड पु न [खण्ड] टुकडा, हिस्सा, भाग। (शी २५) वट्टेसु य खडेसु। (शी २५)

खड सक [खण्ड्य] तोडना, खण्डित करना, विच्छेद करना। सस्स खडेदि तह य वसुह पि। (लि १६) -दूसयर वि [दूष्यकर] खण्डित करने एव दोष लगाने वाला। (मो ५६)

खध पु [स्कन्ध] स्कन्ध, पुद्गलपिण्ड। (पचा ९८, प्रव ज्ञे ७५, निय २०) सव्वेसि खधाण। (पचा ७७) पुद्गल द्रव्य के चार भेद कहे गये है-स्कन्ध, स्कन्धदेश, स्कन्धप्रदेश और परमाणु। खधा य खधदेसा, खधपदेसा य होंति परमाणू। (पचा ७४) परमाणुओं से मिलकर बने हुए पिण्ड को स्कन्ध कहते है। खध सयलसमत्थ। (पचा ७५) खधा हु छप्पयारा। (निय २०) स्कन्ध के छह भेद

किये गये हैं-अइथूलथूलथूलं थूलसुहुमं च सुहुमथूल च। सुहुमं च सुहुमसुहुम इदि धरादिय होदि छब्भेदं।। (निय.२१) -अतरिद वि [अन्तरित] स्कन्ध में व्यवहित, स्कन्ध में समाहित। खंधतरिद दव्व। (पचा ८१) -णिव्वत्ति वि [निर्वृत्ति] स्कन्धों की परिणति, स्कन्धों की रचना। (पचा ६६) वहुप्पयारेहिं खंधणिव्वत्ती। (पचा ६६) -देस पु [दिश] स्कन्ध का भाग,एक स्कन्ध का आधा। (पचा ७४) प्पदेस पु [प्रदेश] स्कन्ध प्रदेश,स्कन्ध के आधे भाग का भी आधा।(पचा ७४)-प्पभव वि[प्रभव]स्कन्ध से उत्पन्न होने वाला।(पचा.७९)सद्दो खधप्पभवो।(पचा.७९)-सरूव वि [स्वरूप] स्कन्ध स्वरूप। (निय २८) खंधसरूवेण पुणो परिणामो। (निय २८)

खभ पु [स्तम्भ] खभा, स्तम्भ। (भा १५८) ते सव्वदुरियखंभ, हणति चारित्तखग्गेण। (भा.१५८)

खण सक [खन्] खोदना। खणदि (व.प्र.ए लि.१५) खणति (व प्र ब भा १५२) ते जम्मवेलिमूल खणंति वरभावसत्थेण। (भा १५२)

खण पु [क्षण] बहुत थोड़ा समय, क्षणभर मात्र। (प्रव. ज्ञे. २७) -भग वि [भङ्ग] क्षण में नष्ट होने वाला, समय-समय में नष्ट हुआ। (प्रव ज्ञे २७) खणभगसमुब्भे जणे कोई। (प्रव ज्ञे.२७) -भगुर वि [भङ्गुर] प्रति समय नष्ट होने वाला। कालो खणभगुरो णियदो। (पचा.१००)

खणण न [खनन] खोदा जाना। (भा १०) खणणुत्तावण।

[illegible] स्त्री [क्षणरुचि] बिजली, उल्का, विद्युत्। (द्वा ५) खणरुइघणसोहमिव थिर ण हवे। (द्वा ५)

खम सक [क्षम्] क्षमा करना, सहना। खमेहिं तिविहेण सयल-जीवाण। (भा १०९)

खम वि [क्षम] सहन शक्ति, क्षमा, क्रोध का न आना। (प्रव चा ३१)

खमा स्त्री [क्षमा] क्षमा, क्रोध का अभाव, धर्म का एक लक्षण। (निय ११५, प्रव चा ३१, भा १५५, १०९, बो ५१) खमदमखग्गेण विप्फुरतेण। (भा १५५) कोह खमया। (निय ११५) -गुण पु न [गुण] क्षमा गुण। इस णाऊण खमागुण। (भा १०९) -सलिल न [सलिल] क्षमारूपी जल। वरखमसलिलेण सिचेह। (भा १०९) धर्म के दश भेदों मे क्षमा का पहला नाम है। (द्वा ७०) कोहुप्पत्तिस्स पुणो, बहिरग जदि हवेदि सक्खाद। ण कुणदि किंचिवि कोहो, तस्स खमा होदि धम्मो त्ति।। (द्वा ७०) खमाय (तृ ए भा १०८) खमेहि (वि /आ म ए भा १०९)

खय पु [क्षय] विनाश, नष्ट होना। (स ७३, निय ११४) सव्वे एए खय णेमि। (स ७३) -करण न [करण] क्षय का आश्रय, क्षपणाविधि। खयकरण सव्वदुक्खाण। (द १७) -हेउ पु [हेतु] क्षय का कारण। पायच्छित्त जाणह, अणेयकम्माण खयहेऊ। (निय ११७)

खयर पु स्त्री [खचर] विद्याधर, आकाश मे चलने वाले।

खयरामरमणुयकरजलि। (भा ७५, १२९)

खरिस पु [खरिस] आमास। (भा. ३९, ४२)

खलु अ [खलु] ही, निश्चय ही। (प्रव ७, स १८१)

खव सक [क्षपय्] नाश करना, फेंकना। सो खवेदि देहुब्भव दुक्ख। (प्रव ७८) खवइ/खवदि (व प्र ए सू.६) खवेदि (व.प्र ए प्रव ज्ञे १०२) खवयत (व कृ प्रव ४२) खविऊण /सं कृ. द ३६) खवीय (स कृ प्रव.ज्ञे १०३)

खवण न [क्षपण] उपवास, अनाहार। भत्ते वा खवणे वा। (प्रव चा. १५)

खाइअ/खाइग/खाइय पु [क्षायिक] षय से उत्पन्न, विनाश से पैदा हुआ। परिणमदि णेयमट्ठ णादा जदि णेव खाइग तस्स। (प्रव ४२)

खिज्ज अक [खिद्] क्षय होना, नष्ट होना, थक जाना, खिन्न होना। (भा २५) आहारुस्सासाण णिरोहणा खिज्जए आऊ। (भा २५)

खित्त वि [क्षिप्त] डाली हुई, फैकी हुई। (पचा. ३३) खित्त खीरे पभासयदि खीर। (पचा ३३)

खिदि स्त्री [क्षिति] भूमि, पृथ्वी। खिदिसयणमदतयण। (प्रव चा ८, भा ८१) -सयण न [शयन] पृथ्वी पर सोना, पृथ्वी की शय्या, साधुओं का एक मूलगुण। खिदिसयण दुविहसजम भिक्खू। (भा ८१)

खिप्प वि [क्षिप्र] शीघ्र, जल्दी, वेग से। (द्वा ५८, पचा २६) णत्थि चिर वा खिप्प । (पचा २६)

खिब्बिस न [किल्विष] अपवित्र, अपराध, पाप, बीमारी।

खिब्बिसभरिय। (भा ४२)

खीण वि [क्षीण] नष्ट हुए, क्षय को प्राप्त हुए। (पचा ११९, स ३३) खीणो मोहो हविज्ज साहुस्स। (स ३३) **-मोह** पु [मोह] मोहरहित, मोहनीय कर्म से रहित। (स ३३) तइया हु खीणमोहो। (स ३३)

खीय अक [क्षि] नाश को प्राप्त होना, क्षय होना। (प्रव ८६) खीयदि मोहोवचयो। (प्रव ८६) तेसि दुक्खाणि खीयति। (प्रव ज वृ २२) खीयदि (व.प्र ए) खीयति (व प्र ब)

खीर न [क्षीर] दुग्ध, दूध। (पचा ३३, बो १४) जह पउमरायरयण खित्त खीरे पभासयदि खीर। (पचा ३३)

खु अ [खलु] यथार्थ मे, निश्चय ही, पादपूर्ति अव्यय। (पचा १४, स १५७, निय ११५, भा ५८) दव्व खु सत्तभग। (पचा १४)

खुद्द वि [क्षुद्र] तुच्छ, अधम, क्षुद्र, जघन्य। खुद्दभवतो मुहुत्तस्स। (भा २९)

खुब्भ अक [क्षुभ्] क्षुभित होना, घबड़ाना, डरना। (प्रव ८३) खुब्भदि तेणोच्छण्णो, पय्या राग वा दोस वा। (प्रव ८३)

खेड न [खेल] खेल। (सू ७) खेडे वि ण कायव्व। (सू ७)

खेत्त पु न [क्षेत्र] खेत, जमीन, स्थान, प्रदेश, क्षेत्र। (प्रव ३, प्रव चा २२) अरहते माणुसे खेत्ते। (प्रव ३)

खेद पु [खेद] दु ख, राग, द्वेष, मोह। (प्रव ६०) खेदो तस्स ण भणिदो, जम्हा घादी खय जादा। (प्रव ६०) सेद खेदमदो रइ। (निय ६)

खेयर [खेचर] विद्याधर। (भा. १०८)

(भा १०८)

खेल पु [श्लेष्मन्] कफ, थूक। (बो ३६)

(बो ३६)

खोह पु [क्षोभ] रञ्ज, राग-द्वेष, संवेग, उत्तेजना, (पचा १३८) जीवस्स कुणदि खोहं। (पंचा.१३८)

विहीणो। (प्रव ७)

ग

गअ वि [गत] प्राप्त हुआ। (भा ८८, सू.४) [illegible] महाणरय। (भा ८८)

गइ स्त्री [गति] जीव की अवस्था। नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव की अवस्था। (भा ८, बो ३२) गइ-इंदिए च काए। (बो.३२)

गइंद पु [गजेन्द्र] ऐरावत हाथी, श्रेष्ठ हाथी। (द्वा.१०) [illegible] चाउरंगबल। (द्वा १०)

गथ पु [ग्रन्थ] 1 शास्त्र, सूत्र, आगम। २.गांठ, परिग्रह, अन्तरङ्गासक्ति। सव्वेसिं गथाणं। (निय.६०) [illegible] (भा ४४) -गाहीय वि [ग्रहीत] परिग्रह को ग्रहण करने वाले। (मो ७९) -चाय न [त्याग] परिग्रह त्याग। (द.१४)

गथिय वि [ग्रथित] गूथा गया, निर्मित किया गया। (सू.१, भा ९२) अरहतभासियत्थ गणहरदेवेहिं गथियं सम्मं। (सू.१)

,, पु [गन्ध] गन्ध, सुवास, महक। (पचा २४, स ३७७, प्रव ५६, नियं २७, चा ३६) रूव रस च गंध। (पचा ११६)

गच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना, प्राप्त होना। (पचा ९, स ३८२, सू ८) दवियदि गच्छदि ताइ। (पचा ९) गच्छदि। (व प्र ए पचा ९, सू ९) गच्छेइ (व प्र ए सू ८) गच्छति (व प्र ब पचा ६) गच्छदु (वि /आ प्र ए स २०९) गच्छे (वि /आ म ए स २२३) गच्छेज्ज (वि /आ उ ए स २०८) गच्छत (व कृ स २३४) उम्मग्ग गच्छत। (स २३४)

गण पु [गण] समूह, समुदाय। (पचा १६६) -धर/हर पु [धर] गणधर, जिनदेव का प्रधान शिष्य, आचार्य। किच्चा अरहताण, सिद्धाण तह णमो गणहराण। (प्रव ४) प्रवचनसार की इस गाथा मे जो गणहर शब्द आया है, वह आचार्य विशेष का वाचक है। गणहरदेवेहिं गथिय सम्म। (सू १) यहॉ आया हुआ गणहर शब्द गणधर वाचक है।

गणि पु [गणिन्] आचार्य, श्रमण सघ का नायक, साधु सघ का प्रमुख। (प्रव चा ३) समण गणि गुणड्ढ। (प्रव चा ३)

गद वि [गत] प्राप्त हुआ, गया हुआ। (पचा ६५, प्रव २६) तत्थ गदा पोग्गला सभावेहिं। (पचा ६५)

गदि देखो गइ। (पचा १९, १२९) -णाम पु न [नामन्] गति नामकर्म। (पचा १९, ११९) तावदिओ जीवाण, देवो माणुसो त्ति गदिणामो। (पचा १९)

गद्दह पु [गर्दभ] गधा, खर। सुणहाण गद्दहाण। (शी २९)

गब्भ पु [गर्भ] गर्भ, उदर, कुक्षि, पेट, उत्पत्ति स्थान, जन्मस्थान। (पचा.११३) -त्थ वि [स्थ] गर्भ मे स्थित।(पचा ११३) -वसहि स्त्री [वसति] गर्भ के आवास, गर्भ के स्थान। (भा १७) कलिमलबहुला हि गब्भवसहीहि। (भा.१७)-हर न [गृह] गर्भघर, गर्भगृह, घर का भीतरी भाग। (भा.१२२) जह दीवो गब्भहरे। (भा.१२२)

गम सक [गम्] जाना, गमन करना। (शी.३२) सो गमयदि णरयवेयणं पउर। (शी ३२)

गमण न [गमन] गमन, गति। (पचा.८८, प्रव ज्ञे.४१, निय १८३) गमणं जाणेहि जाव धम्मत्थी। (निय १८३) -अणुग्गहयर वि [अनुग्रहकर] गमन मे उपकारक। (पंचा ८५) गमणाणुग्गहयर हवदि लोए। (पंचा ८५) -ठिदि स्त्री [स्थिति] गमनस्थिति, गमन की मर्यादा। जादो अलोगलोगो, तेसि सब्भावदो गमणठिदी। (पचा ८७) -णिमित्त पुं [निमित्त] गमन मे कारण। गमणणिमित्त धम्म। (निय.३०) -हेदु पु [हेतु] गमन मे कारण, गमन मे सहकारी। जदि हवदि गमणहेदू। (पंचा.९४)

गमय वि [गमक] बोधक, व्याख्याता। (बो.६१) -गुरु पु [गुरु] व्याख्याकारों मे प्रमुख। (बो ६१) गमयगुरु भयवओ जयउ। (बो ६१)

गरह सक [गर्ह्] निंदा करना, घृणा करना। त गरहि गुरुसयासे। (भा १०६) गरहि (वि./आ.म.ए.भा १०६)

गरहा स्त्री [गर्हा] निंदा, घृणा, दोष प्रकट करना। णिंदा

गरहासोही। (स ३०६)

गरहिअ वि [गर्हित] निंदित, घृणित, निंदनीय। सो गरहिउ जिणवयणे। (सू १९) गरहिउ (अप प्र ए)

गरुय वि [गुरुक] गुरु, बडा, भारी। (सू ९) गरुयभारो य। (सू ९)

गलिय वि [गलित] गला हुआ, पतित, नष्ट हुआ। लबियहत्थो गलियवत्थो। (भा ४)

गव्व पु [गर्व] अहकार, घमण्ड। (भा १०३) असिऊण माणगव्व। (भा १०३)

गव्विद वि [गर्वित] अभिमानी, घमण्डी। जे णाणगव्विदा होऊण। (शी १०)

गस सक [ग्रस्] निगलना, आहार ग्रहण करना। (भा २२) गसिउ असुद्धभावेण। गसिउ (हे कृ भा २२)

गसिअ/गसिय वि [ग्रसित] भक्षित, खाया हुआ। गसियाइ पोग्गलाइ। (भा २२)

गह सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना, प्राप्त करना। (भा ७, २४) गहि (वि /आ म ए) गहिऊण (स कृ मो ८६)

गहण न [ग्रहण] ग्रहण करने वाला। (पचा १४८, प्रव चा २२, निय ६४) जोगणिमित्त गहण। (पचा १४८) -भाव पु [भाव] ग्रहण भाव। जो मुचदि गहणभाव। (निय ५८)

गहिय वि [गृहीत] स्वीकृत,विदित,ज्ञात।अन्वेयण वि गहिय। (मो ९) ते गहिया मोक्खमग्गम्मि। (मो ८०,८२)

गा/गाअ सक [गै] गाना। गायदि (व प्र ए लि ४) णच्चदि गायदि

वाव।

गाम पु [ग्राम] ग्राम, गाव, नगर, पुर। (निय ५८, स ३२५) गामे वा णयरे वा। (निय ५८)

गारव पु न [गौरव] महत्त्व, प्रभाव, आदर, महान्, अहकार। ये गारव करति य, सम्मत्तविवज्जिया होति। (द.२७)

गाह सक [गाह्] अनुभव करना, अभ्यास करना, प्राप्त करना। (स ८, पंचा.१३४, लि २२) जो मुयदि रागदोसे सो गाहदि दुक्खपरिमोक्ख। (पचा १०३) अणज्जभास विणा उ गाहेउ। (म ८) गाहेदु (हे कृ स.८)

गिण्ह सक [ग्रह्] ग्रहण करना, प्राप्त करना। (स ७७, सू १८) गिण्हदि/गिण्हइ/गिण्हए (व प्र ए स ७६, ३५१, ४०७) गिण्ह (वि /आ म ए.स २०३) त गिण्ह णियदमेद। (स २०५)

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति। (भा १०२) गिद्धीदप्पेणधी पभुत्तूण। (भा १०२)

गिरि पु [गिरि] पहाड, पर्वत। (भा २१, बो ४१) -गुह/गुहा स्त्री [गुफा] गिरिगुफा। (बो ४१) -सिहर पु [शिखर] पर्वत का शिखर, पर्वत का ऊपरी भाग। (बो ४१) गिरिगुह गिरिसिहरे। (बो ४१)

गिलाण वि [ग्लान] अशक्त, असमर्थ, रोगपीडित। (प्रव चा ५३) बालो वा वुड्ढो वा समभिहदो वा पुणो गिलाणो वा। (प्रव चा ३०)

गिह न [गृह] मकान, घर। (स ४०८, बो ४४) गिहगथमोहमुक्का। (बो ४४)

गिहि पु [गृहिन्] गृही, ससारी, गृहस्थ। (स ४१०) पाखडी गिहिमयाणि लिगाणि। (स ४१०)

गिहिद वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ। सव्वत्थ गिहिदपिण्डा। (बो ४७)

गुभी स्त्री [दि] क्षुद्र कीट विशेष, कुम्भी, तीन इन्द्रिय जीव। जूंगागुभीमक्कडपिपीलियाविच्छियादिया कीडा। (पचा ११५)

गुड पुं [गुड] गुड, मीठा, मधुर रस। (स ३१७, भा १३७) गुडदुद्ध पि पिबता। (भा १३७)

गुण पु न [गुण] गुण, स्वभाव, धर्म, पर्याय। (पचा १०, स १०८ प्रव १० नियं ३३, भा १५, बो २७) **-अतर** न [अन्तर] गुणों के मध्य, गुणों के बीच। (प्रव ज्ञे १२) **-गभीर** वि [गम्भीर] गुणों मे गभीर। धीरा गुणगभीरा। (निय ७३) **-गण** पु [गण] गुण समूह। चउरासी गुणगणाण लक्खाइ। (भा १२०) **-चित्त** न [चित्त] चेतना, ज्ञानगुण। अणतणाणाइ गुणचित्त। (भा ११९) **-ठाण/ट्ठाण** न [स्थान] गुणस्थान।(स ५५,बो ३०,निय ७८) गुणट्ठाणा य अत्थि जीवस्स। (स ५५) **-इढ** [ढ्य] गुणी, गुणाढ्य, गुणों से परिपूर्ण। समण गणि गुणड्ढ। (प्रव चा ३) **-त्त** वि [त्व] गुणों वाला, गुणीपना। (प्रव ८०) **-दोस** पु [दोष] गुण और दोष। भावो कारणभूदो, गुणदोसाण जिणा विंति। (भा २, चा ४२) **-पज्जत्त** वि [पर्याप्त] गुणों से परिपूर्ण। (बो ५८) आयत्तणपुणपज्जत्ता। (बो ५८) **-पज्जय** पु [पर्यय] गुण और पर्याय। गुणपज्जएसु भावा। (पचा १५) **-रयण** न [रत्न]गुणरूपी

रत्न। सारं गुणरयणाणं। (भा.१४६) -वंत वि [वन्त] गुणवान्। (प्रव. ज्ञे.३) -व्वय न [व्रत] गुणव्रत। (चा.२५) -वादी वि [वादिन्] गुणवादी। (द.२३) -विसुद्ध वि [विशुद्ध] गुणों में विशुद्ध।(चा ८)-वित्थर पुं [विस्तार] गुणों का विस्तार। (शी ३६) -सण्णिद वि [सन्नित] गुणयुक्त। (स.११२) -समिद्ध वि [समृद्ध] गुणों से समृद्ध। (बो.३३) -हीण वि [हीन] गुणों से हीन। (द २७) को वंदमि गुणहीणो। (द २७) गुणो (प्र.ए. प्रव ज्ञे १५,१६) गुणा (प्र.ब.प्रव ज्ञे.४२) गुणं (द्वि.ए.बो.२८) गुणेहि/गुणेहिं (तृ.ब.भा.१५४, प्रव.चा.७०) गुणदो/गुणादो (प ए प्रव ज्ञे १२)

गुत्त न [गोत्र] 1 गोत्र, कर्मो का एक भेद। (द.३४) तह उत्तगेण गुत्तेण। (द ३४) 2 वि [गुप्त],प्रच्छन्न, छिपा हुआ, गुप्त गुप्ति विशेष। (मो ५३, प्रव. चा.३८) गुत्तो खवेइ अंतोमुहुत्तेण। (मो ५३)

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] प्रवृत्ति का निरोध, मन-वचन और काय की चेष्टाओं को रोकना। तिहिं गुत्तिहिं जो स सजदो होई। (सू.२०) गुत्तीओ (द्वि.ब.स २७३)

गुरव पु [गुरु] धर्माचार्य, पचपरमेष्ठी। झाएहि पंच वि गुरवे। (भा १२३) गुरवे (द्वि ब.भा.१२३)

गुरु पु [गुरु], गुरु, भारी, अध्यापक, धर्मोपदेशक। (प्रव चा.२, भा ९१) -पसाअ पुं [प्रसाद] गुरु की प्रसन्नता, गुरुकृपा। जो झायव्वो णिच्च, पाऊण गुरुपसाएण। (भा ६४) -भार पू [भार]

गुरुत्व, गुरुभार, बहुत भारी भार। (मो २१) लेवि गुरुभार। -भेय पु न [भेद] बड़ा भेद,बड़ा अन्तर।पडिवालताण गुरुभेय। (मो २५) -यर वि [तर] गुरुतर, अत्यन्तभारी। (भा २६) गुरुयरपव्वय। (भा २६) -वयण न [वचन] गुरुवचन, गुरुवाणी। गुरुवयण पि य विणओ।(प्रव चा २५)गुरुणा(तृ ए प्रव चा ७) गुरूण (ष ब पचा १३६,भा ९१) अणुगमण पि गुरूण। (पचा १३६)

गूढ वि [गूढ] प्रच्छन्न, छिपा हुआ। गूढे रहिए परोपरोहेण। (निय ६५)

गेज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण योग्य। णेव इदिए गेज्झ। (निय २६)

गेण्ह सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना। गेण्हदि णेव ण मुचदि। (प्रव.३२) गेण्हदे (व प्र ए निय ९७) गेण्हति (व प्र ब प्रव ५६) गेण्हदु (वि /आ प्र ए प्रव चा २३)

गेवेज्ज न [ग्रैवेयक] ग्रैवेयक, देवों का विमान। (द्वा २८) जाव दु उवरिल्लया दु गेवेज्जा। (द्वा २८)

गेह न [गृह] घर, मकान, गृह। उत्तममज्झिमगेहे। (बो ४७)

गो स्त्री [गो] गाय। (शी २९) गोपसुमहिलाण। (शी २९) -खीर न [क्षीर] गाय का दूध। गोखीरखघधवल। (बो ३७)

गोसीर न [गोशीर्ष] चन्दन। (भा ८२) वज्ज जह तरुगणाण गोसीर। (भा ८२)

घ

घट पुं [घट] घड़ा, कलश। जीवो ण करेदि घड। (स १००) करेदि घडपडरथाणि दव्वाणि। (स.९८)

घण वि [घन] 1. अतिशय, अधिक, अत्यन्त घोर। (निय.७१, द्वा.५) घणघाइकम्मरहिया। (निय.७१) 2.पु [घन] बादल, मेघ। (द्वा.५)-सोहा स्त्री [शोभा] मेघ की अत्यधिक दीप्ति। घणसोहमिव थिर ण हवे। (द्वा.५)

घर न [गृह] गृह, घर, मकान। (हे. गृहस्य घरोपतौ २/१४४) गृह को घर आदेश हो जाता है। -त्थ [स्थ] गृहस्थ। समणाणं वा पुणो घरत्थाण। (प्रव. चा ५४)

घाइ वि [घातिन्] घाति, नाश किये जाने वाले, क्षय करने योग्य। (प्रव.७१) घोदघाइकम्ममल। (प्रव १) चउक्क वि [चतुष्क] घाति चतुष्क।(भा १४९) णट्ठे घाइचउक्के। (भा.१४९) ज्ञानावरण,दर्शनावरण,मोहनीय और अन्तराय,इन चार की घातिया सज्ञा है।

घाण पु न [घ्राण] नाक, नासिका, नासा। (स ३७७) -विसय पु [विषय] घ्राण का विषय, सुगन्ध-दुर्गन्ध। (स ३७७) घाणविसयमागयं गंध। (स ३७७)

घाद सक [घातय्] विनाश करवाना, नष्ट करवाना, क्षय कराना। तम्हा कि घादयदे। (स.३६६, ३६८)

घाद पुं [घात] प्रहार, घात, विनाश, क्षय। णाणस्स दसणस्स य, भणिओ घादो तहा चरित्तस्स। (स.३६९)

घादि देखो घाइ। (प्रव ६०) -कम्म पु न [कर्मन्] घातिया कर्म। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार घातिया कर्म है। पक्खीणघादिकम्मो। (प्रव १९)

घि सक [ग्रह] ग्रहण करना। (स ४०६) घित्तु (हे कृ) घित्तव्वो (वि कृ स २९६) पण्णाए घित्तव्वो। (स २९९)

घिप्प सक [ग्रह] ग्रहण करना, लेना। (स २९६) कह सो घिप्पदि अप्पा। (स २९६)

घिय न [घृत]घी, घृत। (बो १४) खीर स घियमय चावि। (बो १४)

घे सक [ग्रह्] ग्रहण करना,लेना,धारण करना।सुद्धो अप्पा य घेत्तव्वो। (स २९५) घेत्तव्वो (वि कृ स २९६) घेत्तूण (स कृ मो ७८,लि ३)

घोर वि [घोर] भयकर, भयानक। हिंडदि घोरमपार। (प्रव ७७) घोर चरियचरित्त। (सू २५)

घोस सक [घोषय्] घोषणा करना , रटना, घोखना, याद करना। तुसमास घोसतो। (भा ५३) घोसतो (व कृ)

च

च अ [च] और, तथा, फिर, पुन , ऐसा, अथवा, क्योंकि, पादपूर्ति। (पचा १०८, स २९२, २९३, ३९२, प्रव १३, प्रव ज्ञे ३८, निय २१, भा २) अण्ण च वसिट्ठमुणी । (भा ४६) णाणी णाण च सदा। (पचा ४८)

चइ सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। (नियं ९१, भा. ६०, चा ४५) लहु चउगइं चइऊण। (भा.६०) चइऊण (स कृ नियं.९१, भा.७३) चइऊणं (सं.कृ नियं.१५७) भुजेइ चइत्तु परतत्ति। (नियं.१५७)

चइय न [चैत्य] प्रतिमा, देव, चैत्य। (भा.९१)

चउ वि [चतुर्] चार, सख्या विशेष। (नियं.२३, भा.२३, द.१८, चा ४५) -क्क वि [ष्क] चार प्रकार। पावदि आराहणाचउक्कं। (भा ९९) -गइ स्त्री [गति] चतुर्गति, चार गतियाँ। लहु चउगइ चइऊण। (चा.४५, भा.६०, नियं ४२) -णाण न [ज्ञान] चार ज्ञान। (मो ६०) -ण्णिकाय न [निकाय] चार निकाय, चार समूह। (पंचा ११८) -तीस वि [त्रिशत्] चौतीस। (बो.३१, द ३५) चउतीस अइसयगुणा। (बो.३१) -त्थ न [थ] चतुर्थ, चौथा। (भा ११४, चा.२६) -दस त्रि [दशन्] चौदह, चतुर्दश। (भा ९७,बो ६१)चउदसगुणठाण---।(भा ९७)-दसम [दशम] चौदहवा। (बो.३५) -भेद/ब्भेद पु न [भेद] चार भेद,चार प्रकार।(नियं १२,१७)सण्णाण चउभेद।(नियं.१२) तेरिच्छा सुरगणा चउब्भेदा।(नियं १७)-मुह पु [मुख] चतुर्मुख, ब्रह्मा, विधाता। कर्मो से विमुक्त आत्मा चतुर्मुख (ब्रह्मा) आदि के रूपों को प्राप्त होती है। सव्वण्हू विण्हू चउमुहो बुद्धो। (भा १५०) -विह/व्विह वि [विध] चार प्रकार। (नियं. १०८, भा १६) सेवहि चउविहलिग। (भा.१११) -वीस स्त्री न [विंशति] चौबीस। पंचिदिय चउवीस। (भा २९) -सट्ठि स्त्री [षष्टि]

चौसठ। (द २९)

चउण वि [च्यवन] च्युत, नीचे आना। (बो २७)

चउर वि [चतुर्] चार। चउरो चिट्ठहि आदे। (मो १०५) चउरो भण्णति बधकत्तारो। (स १०९) -असी स्त्री [अशीति] चौरासी। (भा १२०) चउरासीलक्खजोणिमज्झम्मि। (भा ४७, १३४)

चकम वि [चक्रम] इधर उधर घूमना। (प्रव चा १३)

चकमण न [चक्रमण] परिभ्रमण। (पचा ७१)

चद पु [चन्द्र] चन्द्र, चन्द्रमा। (भा १४३) -प्पह पु [प्रभ] चन्द्रप्रभ, आठवें तीर्थंकर का नाम। (ती भ ४)

चक्क न [चक्र] चक्र, अस्त्रविशेष। -धर/हर पु [धर] चक्रधर, चक्रवर्ती। कुलिसाउहचक्कधरा। (प्रव ७३) चक्कहररायलच्छी। (भा ७५) -ईस पु [ईश] चक्रेश, चक्रवर्ती। चक्केसस्स ण सरण। (द्वा १०)

चक्खु पु न [चक्षुष्] नेत्र, आँख, दर्शन का एक भेद। (स ३७६, प्रव २९, निय १४) चक्खू अचक्खू ओही। -जुद वि [युत] नेत्रों सहित, नेत्रों का आलम्बन। दसणमवि चक्खुजुद। (पचा ४२) -विसय पु [विषय] चक्षु के विषय। चक्खूविसयमागय रूव। (स ३७६)

चडक्क पु न [दि] वचन की मार,चपेट,कठोर।दुज्जणवयण-चडक्क। (भा १०७)

चत्त वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त। वोसट्ठचत्तदेहा। (द ३६) चत्ता (स कृ निय ८८, प्रव ७९) चत्ता दि अगुत्तिभाव।

(निय ८८) चत्ता (अ भू मो. ७८, ७९) ते चत्ता मोक्खमग्गम्मि।

चत्तारि वि [चतुर्] चार। जो चत्तारि वि पाए। (स.२२९, भा.११, चा.२३)

चदु वि [चतुर्] चार। चदुचकमणो भणिदो। (पचा ७१) -कप्प पु [कल्प] चार कल्प। (द्वा.४१) ब्रह्म आदि चार कल्प। -क्क वि [ष्क] चतुष्क, चार प्रकार, चारों। पाणचदुक्कहि संबद्धो। (प्रव ज्ञे ५३)-ग्गदि स्त्री [गति] चार गतियाँ।चदुग्गदिणिवारणं। (पचा २) -गुण वि [गुण] चतुर्गुण, चार गुण। चदुगुणणिद्धेण। (प्रव ज्ञे.७४) -वियप्प वि [विकल्प] चार विकल्प। (स १७८, पचा.१४९) इदि ते चदुव्वियप्पा। (पचा ७४) -विह वि [विध] चार प्रकार। (स १७०, पचा ३०) चदुहिं (तृ ब पचा ३०)

चमर पु [चमर] चमर, चामर, जरी से निर्मित उपकरण विशेष, चँवर, प्रातिहार्य का एक भेद। (द २९) चउसट्ठिचमरसहिओ। (द २९)

चम्म न [चर्मन्] चमड़ा, खाल। (द्वा ४५) चम्ममयमणिच्चमचेयणं पडण।

चय सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। (स ३५, भा ९१, मो ४) परदव्वमिणति जाणिदु चयदि। (स ३५) चयसु (वि/आ म.ए भा.९१) चयहि (वि/आ म ए मो ४) चएवि (अप स. कृ मो २८)

चर सक [चर] गमन करना, आचरण करना, चलना, जाना।

(प्रव चा ३०, निय १४४, बो १०, भा ४, शी ५) चरिय चरः
सजोग्ग। (प्रव चा ३०) जो चरदि सजदो खलु। (निय १४४)
चरताण (व कृ द ५)

चरण पु न [चरण] आचरण, जीवन चर्या, चरित्र। (स १५५
प्रव चा २९, मो ५०, चा ४५, निय १४८, द ३१) चरण एसो ...
मोक्खपहो। (स १५५) चरणदो (प ए निय १४८) चरणाओ
(प ए द ३१)

चरमत पु [चरमान्त] सबसे अन्तिम। मिच्छादिट्ठी आदी, जाव
सजोगिस्स चरमत। (स ११०)

चरित्त न [चरित्र] चरित, आचरण। (स ७, प्रव २, निय ३,
सू २५, शी ५, मो ५७) णवि णाण णचरित्त। (स ७) -वंत वि
[वन्त] चरित्रवान्, आचरणसपन्न। अप्पा चरित्तवतो।
(मो ६४) -सुद्ध वि [शुद्ध] चारित्र से शुद्ध। णाण चरित्तसुद्ध।
(शी ६) -हीण वि [हीन] चारित्रहीन, चारित्ररहित। णाण
चरित्तहीण। (शी ५, मो ५७) चरित्ताणि (द्वि ब पंचा १६४)
चरित्तादो (प ए प्रव ६)

चरिय न [चरित] आचरण। (पचा १५९)

चरिया स्त्री [चर्या] आचरण, गमन, प्रवृत्ति, चर्या। चरिया
पमादबहुला। (पचा १३९) अपयत्ता वा चरिया। (प्रव चा १६)
-जुत्त वि [युक्त] चर्यायुक्त, आचरणयुक्त। सागारण-
गारचरियजुत्ताण। (प्रव चा ५१)

चल वि [चल] चचल, अस्थिर। चलमलिणमगाढत्तविवज्जिय।

(नियं ५२) दसणमुक्को य होइ चलसवओ। (भा १४२)

चहुविह वि [चतुर्विध] चार प्रकार। चहुविहकसाए। (निय ११५)

चाअ/चाग/चाय पु [त्याग] छोड़ना, परित्यक्त। बाहिचाओ विहलो। (प्रव चा २०, भा.३,८१ निय ६५)

चाउरंग वि [चतुरङ्ग] चार प्रकार की, चार अवयव वाली। हिंडदि चाउरग। (मो ६७) छडदि चाउरग। (मो. ६८) **-बल** न [बल] चतुरङ्गिणी सेना। (द्वा १०)

चादुर वि [चतुर्] चार, सख्या विशेष। **-गदि** स्त्री [गति] चतुर्गति। हिंडति चादुरगदिं। (शी ८) **वण्ण** पु [वर्ण] चार वर्ण। उवकुणदि जो वि णिच्च, चादुरव्वण्णस्स समणसघस्स। (प्रव चा ४९)

चारण पु [चारण] ऋद्धि, आकाश में गमन करने की शक्ति। चारणमुणिरिद्धिओ। (भा १६०)

चारित्त न [चारित्र]चारित्र,आचरण।(पचा १६२,स १६३, प्रव ७, चा.२) **-पडिणिबद्ध** वि [प्रतिनिबद्ध] चारित्र को रोकने वाला। चारित्तपडिणिबद्ध। (स १६३) **-भर** पु न [भर] भार, बोझ। चारित्तभर वहतस्स।(निय६०)चारित्र के दो भेद है- सम्यक्त्वाचरण चारित्र और सयमाचरण चारित्र। नि शकित, नि काक्षित आदि आठ गुणों से युक्त जो यथार्थ ज्ञान का आचरण करता है उसे सम्यक्त्वाचरण चारित्र कहते है तथा सयम का आचरण सयमाचरण चारित्र है। जिणणाणदिट्ठी सुद्ध, पढम सम्मत्तचरणचारित्त। विदिय सजमचरण, जिणणाणसदेसिय त

पि।। (चा ५)

चावि अ [च+अपि] और भी। (पचा ४२, स २१) अहमेद चावि पुव्वकालम्हि। (स २१)

चालीस स्त्री न [चत्वारिंशत्] चालीस। सट्ठी चालीसमेव जाणेह। (भा २९)

चि अ [चि] ही। (स १२०) कम्म चि य होदि पुग्गल दव्व। (स १२०)

चित सक [चितय्] याद करना, विचार करना, ध्यान करना, चिंतन करना। (स १८८, नियं ९८, भा १३०) चेदा चितेदि एयत्त। (स १८८) चितिज्जो (वि /आ म ए नियं ९८, द्वा २, ५८) चितिज्ज (वि /आ म ए स २३९) णिच्छयदो चितिज्ज। चितेइ (व प्र ए भा ११५) चितए (व प्र ए नियं ९६) सोह इदि चितए णाणी। चित/चितेहि (वि /आ म ए भा ४२, १०२) चितेह (वि /आ म ब भा २३) चिततो (व कृ भा १३०, स २९१)

चितणीय वि [चिन्तनीय] चिन्तन करने योग्य। (भा ११५) जाव ण चितेह चितणीयाइ। (भा ११५)

चिता स्त्री [चिन्ता] शोक, चिन्ता। (स ३०३, नियं ६, १८०) णवि चिता णेव अट्टरुद्दाणि। (नियं १८०)

चिट्ठ अक [स्था] स्थित होना, बैठना, ठहरना, रुकना। (पचा १४४, प्रव ज्ञे ८६) तवेहिं जो चिट्ठदे बहुविहेहिं। (पचा १४४)

चिट्ठा स्त्री [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण। (स ३२५, पचा १६०) जह

चिट्ठ कुव्वतो। (स.३५५) चिट्ठासु (स.ब स २४१)

चित्त न [चित्त] 1. हृदय, मन। (पचा.१३५, निय ११६,स २७१) चित्ते णत्थि कलुस्सं। (पंचा १३५) -पसाद पु [प्रसाद] चित्त की प्रसन्नता, चित्त की निर्मलता। चित्तपसादो य जस्स भावम्मि। (पचा.१३१) बुद्धि, व्यवसाय, अध्यवसान, मति, विज्ञान, चित्त भाव और परिणाम ये सब एकार्थवाची है। (स.२७१) 2. वि [चित्र] विचित्र, नाना प्रकार का। (प्रव ५१) सव्वत्थ संभव चित्त। (प्रव ५१)

चिय/च्चिय अ [एव] ही, निश्चयात्मक अव्यय। (स १३९, चा.६) जह जीवेण सहच्चिय। (स १३९)

चिर न [चिर] बहुत समय, देर। (स २८८) णत्थि चिर वा खिप्प। (पचा २६) -काल पु [काल] बहुत समय, अधिकसमय। चिरकालपडिवद्धो। (स २८८) -संचिय वि [सचित] बहुत समय से सचित, काफी समय से इकट्ठा किया हुआ। (भा १०९) चिरसचियकोहसिहिं। (भा १०९)

चुअ वि [च्युत] च्युत, एक जन्म से दूसरे जन्म को प्राप्त। (मो ८,७७)

चुक्क अक [भ्रश्] चूकना, रहना, छूट जाना। (बो.२२, स.५)

चुलसीदी वि [चतुरशीति] चौरासी।(भा १३६)

चूडामणि पु स्त्री [चूड़ामणि] सिरमोर, सिरताज, शिखर का ऊपरी हिस्सा। (भा ९३)

चेइ/चेइय पु न [चैत्य] प्रतिमा, देव। (भा ९१, बो.७८) चेइयबन्ध

मोक्ख। (बो ८) -हर न [गृह] चैत्यगृह, जिनालय, मन्दिर। चेइहर जिणमग्गो। (बो ८)

चेट्ठ अक [स्था] चेष्टा करना, प्रवृत्ति करना। तह चेट्ठतो दुही जीवो।(स ३५५) चेट्ठतो (व कृ)

चेद अक[चित्] अनुभव करना, जानना। त दोस जो चोददि। (स ३८५) चेदयदि जीवरासी। (पचा २८)

चेद पु [चेत्] आत्मा, जीव, चेतना। (पचा २७, स ११८)

चेदग वि [चेतक] 1 चेतक, चैतन्य। 2 पु [चेतक] अनुभव करने वाला, जानने वाला, ज्ञाता। (पचा ६८) जीवो चेदगभावेण कम्मफल। (पचा ६८)

चेदण पु [चेतन] चैतन्य, जीव, चेतना, आत्मा। (पचा १६, प्रव ज्ञे ३१, निय ३७) जीवगुणा चेदणा य उवओगो। (पचा १६) -अप्पग वि [आत्मक] चैतन्यमय, चैतन्यस्वरूप, चेतनात्मक। जीवा ससारत्था, णिव्वादा चेदणप्पगा दुविहा। (पचा १०९) -गुण पु न [गुण] चैतन्गुण।(निय ३७)-भाव पु [भाव] चैतन्यभाव। चेदणभावो जीवो। (निय ३७)

चेदणा स्त्री [चेतना] चेतना, उपयोग। (प्रव ज्ञे ३१) परिणमदि चेदणाए, आदा पुण चेदणा तिधाभिमदा। (प्रव ज्ञे ३१) चेदणाए (तृ ए) -गुण पु न [गुण] चेतना गुण। (पचा १२७, निय ४६, स ४९) चेदणागुणमसद्द। (पचा १२७)

चेदय न [चेतक] चेतक,ज्ञानी,चैतन्य।अप्पाण चेदयाइ अण्ण च। (बो ७)

चेदि अ [च+इति] तथा, और,ऐसा। (स २५७,२५८)

चेदि/चेदिय पु न [चैत्य] प्रतिमा, मूर्ति। अरहतसिद्धचेदिय। (पचा १६६) -हर न [गृह] चैत्यगृह, चैत्यालय। णाणमय जाण चेदिहर। (बो ७)

चेयणा स्त्री [चेतना] चेतना,जीव। (भा ६४)-गुण पु न [गुण] चेतना गुण। अव्वत्त चेयणागुणमसद्द। (भा ६४) -भाव पु [भाव] चेतनाभाव, चैतन्यभाव। अत्थि धुव चेयणाभावो। (बो १६) -सहिअ वि [सहित] चेतना सहित। णाणसहाओ य चेयणासहिओ। (भा ६२)

चेल न [चेल] वस्त्र, कपडा। पचविहचेलचाय। (भा ८१) चेलेण य परिगहिया। (सू १३) -खंड पु न [खण्ड] वस्त्रखण्ड, वस्त्र का टुकडा। गेण्हदि व चेलखड। (प्रव चा ज वृ २०)

चेव अ [च+एव] ही, पादपूर्ति अव्यय। (पचा ७५, स.६,प्रव ४,चा ८) सो चेव हवदि लोओ। (पचा ४) णाणमओ चेव जायदे भावो। (स १२८)

चो वि [चतुर्] चार, सख्या विशेष। (द ३२) चोण्ह वि समाजोगे। चोण्ह (च /ष ब) (हे सख्याया आमो ण्ह ण्ह ३/१२३)

चोक्ख वि [दे], चोखा, शुद्ध, पवित्र, साफ। चोक्खो हवेइ अप्पा। (द्वा ४६)

चोर पु [चोर] चोर,तस्कर। चोरो त्ति जणम्मि वियरतो। (स.३०१, लि १०)

छ

छ त्रि [षष्] छह सख्याविशेष। (पचा ७६, स ३२१, निय २१) -क्क वि [ष्क] छह प्रकार। (द्वा ४१) -क्काय न [काय] छहकाय, छह प्रकार के जीव। (बो २,५९,पचा ११०,१११) छक्कायसुहकर। (बो २) पृथिवीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय ये छह भेद है। -जीव पु [जीव] छह जीव। (स २७६,भा १३२) -ण्णवदि वि [नवति] छियानवें। (भा ३७) एक्केक्कंगुलिवाही, छण्णवदी होंति जाणमणुयाण। -त्तीस स्त्री न [त्रिशत्] छत्तीस। छत्तीस तिण्णिसया। (भा २८) -द्दव्व पु न [द्रव्य] छह द्रव्य। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। एदे छद्दव्वाणि। (निय ३४) -द्दस त्रि [दश] सोलह। (भा ७९) -प्पयार पु [प्रकार] छह प्रकार। ते होंति छप्पयारा। (पचा ७६) खधा हु छप्पयारा। (निय २०) स्कन्ध के छह भेद है। (देखो-खघ) -ब्भेय पु न [भेद] छह प्रकार। (निय २१) -व्विह वि [विध] छह प्रकार। (स ३२१) छस्सु (स ब.प्रव चा १८)

छड्ड सक [छर्दय्/मुच्] छोड़ना, त्याग करना। (प्रव चा १९, सू १४, मो ६८) सुत्तठिओ जो हु छडए कम्म। (सू १४) छडति (व.प्र ब मो ६८) छड्डिऊण (स कृ मो ७)

छड्डिय वि [मुक्त] छोड़ा हुआ। इदि समणा छड्डिया सव्व। (प्रव चा १९)

छंद पु न [छन्दस्] छन्द, वृत्त। वायरण.छदवइसेसिय। (शी १६)

छत्त न [छत्र] छत्र, छाता, आतपत्र। (बो ४५)

छद्दि स्त्री [दि] वमन, उल्टी। (भा ४०) छद्दिखरिसाणगज्झे। (भा ४०)

छदुमत्थ वि [छद्मस्थ] असर्वज्ञ, सम्पूर्ण ज्ञान से रहित, अज्ञानी। (प्रव चा ५६)

छल न [छल] कपट, माया, छल। चुक्किज्ज छल ण घेत्तव्व। (स ५)

छह वि [षष्] छह। (बो ५३) छहसहणणेसु भणियणिग्गया। (बो ५३) -दव्व पु न [द्रव्य] छहद्रव्य। (द १९) छहदव्वणवपयत्था। (द १९)

छादाल स्त्री [षट्चत्वारिंशत्] छयालीस। (भा १०१) छादालदोसदूसिय। (भा १०१)

छाया स्त्री [छाया] छाया, छाँव। (निय २३, मो २५) छायातवट्ठियाण। (मो.२५)

छिद सक [छिद्] छेदना, खण्ड-खण्ड करना, काटना, विभक्त करना।(भा १२१,लि १६) छिददि य भिददि य तहा। (स.२३८) छित्तूण (स कृ मो ९८)

छिज्ज सक [छिद] छेदना, खण्डित करना, काटना। (स २०९, २९४) छिज्जदु वा भिज्जदु वा। (स २०९) छिज्जदु (वि /आ प्र ए) छिज्जति (व प्र ए स.२९५)

छिद्द न [छिद्र] छेद, दरार, कटाव, विवर, गड्ढा। (पचा.१४१) पावासव छिद्द। (पचा १४१)

छिण्ण वि [छिन्न] खण्डित, कटे हुए, छिन्न-भिन्न। (भा २०) छिण्णा णाणत्तमावण्णा। (स २९४)

छुधा/छुह/छुहा स्त्री [क्षुध्] छुधा, भूख। (प्रव चा ५२) रोगेण वा छुधाए। (प्रव चा ५२) छुहतण्हभीरु। (निय ६) ण य तिण्हा णेव छुहा। (निय १७९)

छेद पु [छेदय्]छिन्न करना, तोडना, काटना। (वि कृ स २९५)

छेद पु [छेद] छेद, नाश, नष्ट। (प्रव चा ११) छेदो समणस्स कायचेट्ठम्मि। (प्रव चा ११) **-उवट्ठावग** न [उपस्थापक] सयम के छेद का फिर स्थापन करने वाला, सयम विशेष। (प्रव चा ९) समणो छेदोवट्ठावगो होदि। (प्रव चा ९) **-विहीण** वि [विहीन] छेद विहीन, भङ्ग रहित। छेदविहूणो भवीय सामण्णे। (प्रव चा १३)

छेदण वि [छेदन] छेदन करने वाला, काटने वाला, तोड़ने वाला, छिन्नभिन्न करने वाला। (निय ६८) बधणछेदणमारण। (निय ६८)

छेदणअ न [छेदनक] छैनी। पण्णाछेदणएण उ, छिण्णा णाणत्तमावण्णा। (स २९४)

ज

ज स [यत्] जो। ज (प्र ए चा ३) जो (प्र ए चा ३९) जत्तो (प ए प्रव ५) जत्थ (स ए भा ३३) जो वावीसपरीसहसहति। (सू १२)

जइ अ [यदि] 1 यदि, जो। (स २८९, २९०, सू १८, भा ४) जइ दसणेण सुद्धा। (सू २५) 2 पु [यति] मुनि, इन्द्रियविजयी। (चा २७, भा ५) **-धम्म** पु न [धर्म] यतिधर्म। सुद्ध सजमचरण

जइधम्म णिक्कल वोच्छे। (चा.२७)

जइआ/जइया अ [यदा] जो, जितने, जिस प्रकार, जिस समय। (स १८३,२२२) जइया उ होदि जीवस्स।

ज अ [यत्] जो, क्योंकि, जो कुछ, परन्तु, जैसे।(पचा ८२,९०, स १४५,१७२,२६०, बो ४) कम्मं ज पुव्वकय। (स ३८३)

जगम वि [जङ्गम] चलने वाला, एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करने वाला। (बो १२) जगमेण रूवेण। (बो १२) -देह न [देह] जङ्गम शरीर, चलता-फिरता शरीर। सपरा जगमदेहा। (बो ९)

जत न [यन्त्र] यन्त्र, शिल्पकर्म। जंतेण दिव्वमाणो। (लि १०)

जप सक [जल्प्] बोलना, कहना, जह को वि णरो जपदि। (स ३२५) राएण कदति जंपदे लोगो। (स.१०६) जपिऊण (स कृ भा १६३) जपेमि (व प्र ए मो २९)

जग न [जगत्] ससार। (प्रव २९) अक्खातीदो जगमसेस। जगदि (स.ए प्रव २६) सव्वे वि य तग्गया जगदि अट्ठा।

जग्ग अक [जागृ] जागना, नींद से उठना, सचेत होना। (गो.३१) जो सुत्तो ववहारे, सो जोई जग्गए सकज्जम्मि। (गो ३१) जग्गाविज्जइ (प्रे व.प्र ए) कम्मेहिं सुवाविज्जइ, जग्गाविज्जइ तहेव कम्मेहिं। (स.३३३)

जठर न [जठर] पेट, उदर। (भा ४०) जठरे वसिओ सि जणणीए। (भा ४०)

जण पुं [जन] 1 मनुष्य, आदमी। चोरो त्ति जणम्हि वियरतो।

(स ३०१) जणेहिं (तृ ब.प्रव चा २३) मा जणरजणकरण। (भा ९०) -वद पु [पद] जनपद, नगर। 2 जन्म। जणुव्वेगो। (निय ६)

जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना। जणयति विसयतण्ह। (प्रव ७४) जणयति (व प्र ए) जणेदि (व.प्र ए निय १२८)

जणण न [जनन] उत्पत्ति। (निय १७८) मुच्छादिजणणरहिद। (प्रव चा २३)

जणणी स्त्री [जननी] माता, जननी। (भा १७,१९,४०) जणणीए (ष ए भा ४०) जणणीण (ष ब भा १७)

जद वि [यत] यत्नाचार, उपयोगमय प्रवृत्ति। (प्रव चा १८)

जदा अ [यदा] जब, जिस समय। (पचा १४३, प्रव ९) कोघो व जदा माणो। (पचा १३८)

जदि अ [यदि] 1 देखो जइ। (पचा ९२, स ८५, प्रव ६९) -वि अ [अपि] लेकिन, किन्तु, यद्यपि। कुव्वदु लेवो जदिवि अप्प। (प्रव चा ५१) 2 पु [यति] देखो जइ। (स १५६, प्रव ज्ञे ९७) जदीण (ष ब प्रव ज्ञे ९७)

जध/जधा अ [यथा] जैसे, जिस तरह, जिस प्रकार। (प्रव ६८) -जाद वि [जात] यथाजात, वास्तविकरूप में उत्पन्न। जधजादरूवजाद। (प्रव चा ५) -त्थपद वि [अर्थपद] यथावस्थित पदार्थ। जधत्थपदणिच्छदोपसतप्पा। (प्रव चा ७२) -आदिच्च पु [आदित्य] जिस प्रकार सूर्य। सयमेव जधादिच्चो। (प्रव ६८)

जप्प पु [जल्प] वचनविस्तार, कथन। (निय ९५,१५०) जप्पेसु जो

ण वट्टइ। (निय १५०)

जम्म पु न [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति, उद्‌भव। (निय ४७, बो २९, भा २७) जम्मजरामरणपीडिओ। (भा.३४) -अंतर न [अतर] जन्मान्तर, दूसरे जन्म में। (भा ४) -वेलि स्त्री [वल्लि] जन्मवेल, जन्मरूपी लता। ते जम्मवेलिमूल। (भा १५२)

जम्हा अ [यस्मात्] क्योंकि, इसलिए, यत., चूंकि, जिस कारण। (पचा ९३,१३३, स ३३९,३४६, निय ३६) जम्हा तम्हा गच्छदु। (स २०९)

जय अक [जय] जयवन्त होना, पूजा को प्राप्त होना। सुदणाणि भद्दबाहू, गमयगुरू भयवओ जयउ। (बो ६१) जयउ (वि./आ.प्र ए)

जय पु [जय] जय, विजय, जीत। (मो ६३) जय च काऊण जिणवरमएण। (मो ६३)

जया अ [यदा] जब,जिस समय। जया विमुचदे चेदा। (स.३१५)

जर वि [जरत्] बूढ़ा,वृद्ध।(निय ४७,भा ६१,द १७) जरमरणवाहिहरणं। (द.१७)

जरा स्त्री [जरा] बुढ़ापा। (निय ६,४२)

जल न [जल] पानी, जल। (निय २२, भा २१, प्रव.ज्ञे.७५) -चर पु स्त्री [चर] जल में रहने वाले जीव। जलचरथलचरखचरा। (पचा.११७) -बुब्बुद वि [बुद्‌बुद] जल का बबूला। (द्वा.५)

जल अक [ज्वल्] जलना, दहना। मारुयवाहा विवज्जिओ जलइ। (भा १२२)

पु [ज्वलन] अग्नि, आग। हिमजलणसलिल। (भा २६)

जसु पु [दि] आहार। (लि २१) पुस्वलिघरि जसु भुजइ। (लि २१)

जह अ [यथा] जिस तरह, जैसे, जिस प्रकार। (पचा ३३, स ८, नियं ४८, द १०, सू १८) जह राया ववहारा। (स १०८)

जह सक [हा] त्यागना, छोड़ना। (प्रव ७९, ८१, चा १३, १४, स १८४, ४११) ण जहदि णाणी उ णाणित्त। (स १८४) जहित्तु (स कृ स ४११)

जहण्ण वि [जघन्य] निष्कृष्ट, हीन, जघन्य, अत्यन्त कम। जम्हा दु जहण्णादो। (स १७१) जहण्णादो (प ए) -पत्त पु [पात्र] जघन्यपात्र। (द्वा १८) -भाव पु [भाव] जघन्यभाव। दसणणाण-चरित्त, ज परिणमदे जहण्णभावेण। (स १७२)

जहा अ [यथा] देखो जह। (स २१८, प्रव ३०, सू ३) -कम न [क्रम] यथाक्रम, अनुक्रम, क्रम के अनुसार। जहाकम समासेण। (द १) -कमसो अ [क्रमश] यथाक्रम से, एक-एक करके। इय णायव्वा जहाकमसो। (बो ४) -खाद न [ख्यात] यथाख्यात, निर्दोषचरित्र, परिपूर्ण सयम। सखेवेण जहाखादा। (बो ५८) जोग्ग वि [योग्य] यथायोग्य, उसी के अनुसार, यथानुरूप। पविसति जहाजोग्ग। (प्रव ज्ञे ८६) -बल न [बल] यथाशक्ति। तम्हा जहाबल जोई। (मो ६२)

जहेव अ [यथैव] जैसे ही, समान। (स ५७, १७६) बाला इत्थी जहेव पुरिसस्स। (स १७४)

जा अ [यावत्] जबतक, जो। (पचा १३९, स १९, नियं ६९,

भा १३१) उत्थरइ जा ण जर ओ। (भा १३१)

जा सक [या] प्राप्त करना, जानना, जाना। तेहिं वि ण जाइ मोह। (भा १२९, मो २१) जाओ (अनि.भू.भा.३३,५०,५३) मोहो खलु जादि तस्स लय। (प्रव ८०)

जाइ स्त्री [जाति] जन्म, जाति, कुल, नामकर्म का एक भेद। जाइजरमरणरहिय। (निय १७६) देसकुलजाइसुद्धा।

जाण सक [ज्ञा] जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना। (स.२) त जाण परसमय। (स २) जाणइ/जाणदि (व प्र ए सू ५, भा.३१, स १४३, २०१) जाण (वि./आ म.ए स २१६, निय.४६, भा.२, चा १३, बो.७) जाणिज्जइ (वि प्र.ए सू १६) जाणिज्जह (विम ब भा ८७) जाणिऊण (स कृ सू.६, चा.४०) जाणतो (वकृ.स २९०) जाणादि (व.प्र ए प्रव ज्ञे ४९, ६५)

जाण वि [जानन्] जानता हुआ। (प्रव ५२)

जाणअ/जाणग वि [ज्ञायक] जानने वाला, ज्ञायक। (स ६,७, प्रव ३३, मो २९) जाणओ दु जो भावो। (स ६) जाणगो तेण सो होदि। (स २१०, २१३) -भाव पुं [भाव] ज्ञायक भाव। जाणगभावो णियदो। (स २१४)

जाणणा न [ज्ञान] जानना, जानकारी, बोध। (प्रव ३४) तज्जाणणा हि णाण, सुत्तस्स य जाणणा भणिया। (प्रव ३४)

जाणय वि [ज्ञायक] जानने वाला। जीवो दु जाणयो णाणी। (स ४०३) -सहाव [स्वभाव] ज्ञायक स्वभाव। अप्पाण मुणदि जाणयसहाव। (स २००)

वि [ज्ञानिन्] ज्ञाता, जानने वाला। (प्रव ज्ञे ८२, नियं ६९)

जाद वि [जात] उत्पन्न हुआ, पैदा। (पचा २९, प्रव १९, नियं १५८) जादो सय स चेदा। (पचा २९)

जाम अ [यावत्] जब तक। विसएसु णरो पवट्टए जाम। (मो ६६)

जाय अक [जन्] उत्पन्न होना, जन्म लेना। (पचा १७, स १९२, प्रव ज्ञे ७५) जायदि कम्मस्स वि णिरोहो। (स १९१) जायइ/जायदि (व प्र ए स १९२) जायदे (व प्र ए पचा १७) जायते (व प्र ब पचा १२९, स १३१, प्रव ज्ञे ७५)

जायणा स्त्री [याचना] याचना, प्रार्थना। गथग्गाहीय जायणसीला। (मो ७९)

जरिसया वि [यादृशक] जैसा, जिस तरह का। (पचा १३, नियं ४७) जीवो भाव करेदि जारिसय। (पचा ५७)

जाव/जाव अ [यावत्] जब तक, जो कि। (पचा १४१, स ६, प्रव ज्ञे ७२, भा ११५) जावत्तावत्तेहिं पिहिय। (पचा १४१ जाव अपडिक्कमण। (स २८५)

जिग्घ सक [घ्रा] सूघना, गन्ध लेना। ण त भणइ जिग्घ मति सो चेव। (स ३७७) जिग्घ (वि /आ म ए)

जिण पु [जिन] जिन, अर्हत्, केवलज्ञानी, सर्वज्ञ, जितेन्द्रिय। जो कर्ममल्लरहित, शरीर रहित, अतीन्द्रिय, केवलज्ञानयुक्त, विशुद्धात्मा, परमेष्ठी, परमजिन, शिवकर, शाश्वत् और सिद्ध है। मलरहिओ कलचत्तो अणिदिओ केवलो विसुद्धप्पा। परमेट्ठी

परमजिणो, सिवंकरो सासओ सिद्धो।। (मो ६) -**अवमद** वि [अवमत] जिनकथित। (स.८५) -**आणा** स्त्री [आज्ञा] जिनेन्द्र देव की आज्ञा। (भा.९१) -**इंद** पुं [इन्द्र] जिनेन्द्र। (प्रव. चा ४८) -**उवएस/उवदेस** पुं [उपदेश] जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादन, सर्वज्ञ का।(स १५०, नियं.१७, प्रव. १७, मो १३) एसो जिणोवदेसो।(स १५०)-**उत्तम** वि [उत्तम] जिनोत्तम, सर्वज्ञ। (पचा.३) -**कहिय** वि [कथित] सर्वज्ञ द्वारा कथित, सर्वज्ञ द्वारा प्रतिपादित। जिणकहियपरमसुत्ते। (निय.१५५) -**क्खाद** वि [ख्यात] जिनकथित, सर्वज्ञ कथित। (प्रव चा. ६४) -**णाण** न [ज्ञान]सर्वज्ञ का ज्ञान। जिणणाणदिट्ठिसुद्ध।(चा ५)-**दंसण** न [दर्शन] जिनदर्शन। जिणदसणमूलो। (द ११) -**देव** पु [दिव] जिनदेव, वीतराग प्रभु। (मो ३०) -**धम्म** पु न [धर्म] जिन धर्म। (भा ८२) -**पडिमा** स्त्री [प्रतिमा] जिन प्रतिमा, जिनमूर्ति। (बो ३) -**पण्णत्त** वि [प्रज्ञप्त] जिनदेव प्रतिपादित, कथित। (भा ६२, मो १०६) एव जिणपण्णत्त। (द.२१) -**भणिय** वि [भणित] सर्वज्ञकथित। (चा ६, सू ५) -**भत्ति** स्त्री [भक्ति] जिनेन्द्रभक्ति, जिनभक्ति। त कुण जिणभत्तिपर। (भा.१०५) -**भवण** न [भवन] जिनालय। (बो.४२) -**भावण** पुं [भावन] जिनचिंतन। जिणभावण भविओ धीरो। (भा.१२९) -**भावणा** स्त्री [भावना] जिनेन्द्र प्रणीत भावना, जिनेन्द्रकथित चिंतन। भावहि जिणभावणा जीवा। (भा.८) -**भासिद** वि [भाषित] जिनेन्द्र कथित। उवसतखीणमोहो,मग्ग जिणभासिदेण समुपगदो।

(पचा ७०) -**मग्ग** पु [मार्ग] जिनमार्ग, जिनेन्द्रदेव द्वारा प्रतिपादित आगमपथ। तम्हा जिणमग्गादो। (प्रव ९०) जिणमग्गादो (प ए)जिणमग्गे (स.ए निय १८५, बो २) जिण मग्गम्मि (स ए लि १३) -**मद/मय** न [मत] जिनमत, जिनसिद्धान्त। जिणमदम्मि (स.ए.प्रव.चा.१२) जिणमयवयणे। (भा १५९) -**मुद्दा** स्त्री [मुद्रा] जिनमुद्रा, जिनदेव की छवि। (बो ३) दृढ़ता से सयम धारण करना, सयममुद्रा, इन्द्रियों को विषयों से विमुख करना इन्द्रिय मुद्रा, कषायों के वशीभूत न होना कषायमुद्रा और ज्ञान स्वरूप मे स्थिर होना,ज्ञानमुद्रा है।इस प्रकार जिनमुद्राए कही गई है। (बो १८) -**लिग** न [लिङ्ग] जिनलिङ्ग, जिनदेव द्वारा प्रतिपादित मार्ग का अवलम्बन, सर्वज्ञ प्रणीत मार्ग का अनुसरण। जिणलिगेण वि पत्तो। (बो १४, भा ३४, ४९) -**वयण** न [वचन] जिनवचन, सर्वज्ञवाणी, वीतरागवाणी। (पचा ६१, भा ११७, सू १९) -**वर** पु [वर] जिनदेव, जिनवर, जिनों मे श्रेष्ठ। (पचा ५४,स ४६,प्रव ४३,निय ८९, भा १५२, द १) -**वरवसह** पु [वरवृषभ] प्रधान गणधर। (प्रव चा १) -**वरिंद** पु [वरेन्द्र] सर्वज्ञ।(प्रव चा २४,भा ७६,मो ७) -**वसह** पु [वृषभ] जिनश्रेष्ठ। (प्रव २६) -**बिंब** न [बिम्ब] जिनबिम्ब, जिनदेव का आकार,सर्वज्ञ का प्रतिरूप।(बो १५)-**सत्थ** पु न [शास्त्र] जिनागम। जिणसत्थादो अट्ठे। (प्रव ८६) अर्हन्त भगवान् द्वारा कथित, गणधरो के द्वारा अच्छी तरह रचित वचन, जिनागम या जिनशास्त्र है। अरहतभासियत्थ, गणधरदेवेहिं

गथिय सम्म। (सू १) जिनागम या जिनशास्त्र सर्वज्ञ के वे वचन है, जो परस्पर विरोध से रहित है, उनको जो श्रमण जीवादि तत्त्वों के मनन पूर्वक धारण करता है उसका उद्यमश्रेष्ठ है। (प्रव चा.३२-३७) -समय पु [समय] जिनशासन, जिनागम, जिनवचन। णिद्दिट्ठा जिणसमए। (निय ३४) -सम्म न [सम्यग्] जिनोपदिष्ट सम्यक्त्व। जिनेन्द्र भगवान् द्वारा प्रतिपादित तत्त्व के प्रति आठ अङ्ग सहित जो श्रद्धान है, वह जिनसम्यक्त्व है। (चा ८) -सम्मत्त न [सम्यक्त्व] जिनश्रद्धान। (चा ११,१४) -सासण न [शासन] जिनशासन, जिनागम, जिनवचन। रायादिदोसरहिओ, जिणसासणमोक्खमग्गुत्ति। (चा.३९) -सुत्त न [सूत्र] जिनसूत्र, जिनवचन। सम्मत्तस्स णिमित्त, जिणसुत्तं तस्स जाणया पुरिसा। (निय.५३) जिनसूत्र को जानता हुआ जीव ससार की उत्पत्ति के कारणों को नाश करता है। सुत्तम्मि जाणमाणो, भवस्स भवणासण च सो कुणदि। (सू ३) जिणा (प्र व स ३९०) जिणस्स (ष ए द १८) जिणाणं (प व पंचा.१)

जिण सक [जि] जीतंना, वश में करना। जे इंदिए जिणित्ता। (स ३१) जिणित्ता (स कृ स.३२)

जित्तिय अ [यावत्] जितने। (स ३३४) सुहासुह जित्तियं किंचि। (स ३३४)

जिद/जिय वि [जित] जीता हुआ,पराभूत करने वाला,जीतने वाला। -इदिय वि [इन्द्रिय] इन्द्रियों को जीतने वाला। (स.३१) त खुल जिदिंदिय। (स ३१) -कसाअ पु [कषाय] कषाय को

जीतने वाला, जितकषाय। पर्चेदियसवुडो जिदकसाओ। (प्रव चा ४०) वावीसपरीसहा जिदकसाया। (बो ४४) -भव पु [भव] ससार को जीतने वाला। णमो जिणाण जिदभवाण। (पचा १)-मोह पु [मोह]मोह को जीतने वाला। त जिदमोह साहु। (स ३२)

जिप्प सक [जि] जीत जाना। (मो २२) जो कोडिए ण जिप्पइ। (मो २२) जिप्पइ (व प्र ए)

जिव अक [जीव्] जीवनधारण करना, जीवित रहना। मरदु व जीवदु व जीवो। (प्रव चा १७) जीवदु (वि /आ प्र.ए)

जीव पु न [जीव] चेतना, आत्मा, प्राणी,। (पचा १२७, स १४६, प्रव ज्ञे ३५, चा ४, शी १९,लि ९,भा ८) जो प्राणों से जीवित है, वह जीव है। जीवो त्ति हवदि चेदा। (पचा २७) जो रस, रूप, गन्ध रहित है, अव्यक्त, चेतनागुण युक्त, शब्द रहित, जिसका किसी चिह्न अथवा इन्द्रिय से ग्रहण नहीं होता और जिसका आकार कहने में नहीं आता, वह जीव है। अरसमरूवमगध, अव्वत्त चेदणागुणमसद्द। जाण अलिगग्गहण, जीवमणिद्दिट्ठसठाण।। (स ४९, निय ४६, भा ६४) मोह से रहित जीव है।जीवो ववगदमोहो। (प्रव ८१) जो चार प्राणों से जीवित है वह जीव है। पाणेहिं चदुहिं जीवदि, जीवस्सदि जो हि जीविदो पुव्व। (प्रव ५५) जीव ज्ञान स्वभाव और चेतना सहित है। णाणसहाओ य चेदणासहिओ। (भा ६२) पचास्तिकाय में जीव के अनेक भेद किये गये है- चैतन्य गुण से युक्त होने से जीव एक

प्रकार का है। ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग के भेद से दो प्रकार का है। कर्मचेतना, कर्मफल चेतना और ज्ञान चेतना से युक्त या उत्पाद,व्यय एवं ध्रौव्यरूप होने से तीन प्रकार का है।चार गतियों में परिभ्रमण करने के कारण चार प्रकार का है। चारो दिशाओं एव ऊपर व नीचे गमन करने वाला होने से छह प्रकार का है। सप्तभङ्ग के कारण सात प्रकार का है।आठकर्मो के कारण आठ प्रकार का है।नव-पदार्थो रूप प्रवृत्ति होने के कारण नव प्रकार का है। पृथिवी, जल,तेज,वायु, साधारण वनस्पति, प्रत्येक वनस्पति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रिय इन दश भेदों से युक्त होने से दश प्रकार का है। (पचा ७१,७२) जीव का विवेचन मुक्त-ससारी, त्रस-स्थावर,गति,भव्य एव अभव्य की दृष्टि से भी किया गया है। (पचा १०९,१२४) जीवस्स चेदणदा। (पचा १२४) जीव का गुण चेतनता है। -काय पु [काय] जीव समूह, जीवराशि। (प्रव ४६) -गुण पु न [गुण] जीवगुण। जीवगुणा चेदणा य उवओगो। (पचा १६) चेतना और उपयोग के अतिरिक्त औपशमिकादि भाव भी जीव के गुण है। (पचा ५६) -घाद पु [घात] जीवघात, जीवों का विनाश। (लि.९) किसिकम्मवणिज्जजीवघाद। (लि ६) -ट्ठाण/ठाण न [स्थान] जीवस्थान। (स ५५, निय ७८, बो ३०) पज्जत्तीपाणजीवठाणेहिं। (बो ३०) -णिकाय पु [निकाय] जीव समूह । एदे जीवणिकाया। (पचा ११२,१२०, प्रव ज्ञे ९०) -णिबद्ध वि [निबद्ध] जीव के साथ बधे हुए। जीवणिबद्धा एए। (स ७४) -त्त वि [त्व] जीवत्त्व,

जीवपना। जीवत्त पुग्गलो पत्तो। (स ३५,६४) -दया स्त्री [दया]जीवदया, जीवो पर करुणा। (शी १९) जीवदया दमसच्च। (शी १९) -परिणाम पु [परिणाम] जीवस्वभाव। जीवपरिणामहेदु। (स ८०) -भाव पु [भाव] जीवभाव, जीवस्वभाव। (पचा १७,स १४०) सताणता य जीवभावादो। (पचा ५३) -मय पु [मय] जीवमय। (प्रव ज्ञे ३०) -राय पु [राजन्] जीवरूपी राजा। (स १८) एव हि जीवराया। -रासि पु स्त्री [राशि] जीवराशि, जीवसमूह। चेदयदि जीवरासी। (पचा ३८)-विमुक्क वि [विमुक्त] जीव रहित।जीवविमुक्को सवओ। (भा १४२) -संसिद वि [सश्रित] जीवाश्रित, जीवों से सहित। (पचा ११०) -सण्णा स्त्री [सज्ञा] जीवसज्ञा, जीव के शरीर रूप कारण। एकेन्द्रिय आदि कारण, सूक्ष्म-बादर आदि कारण।(स ६७)-समास पु [समास] जीवसमास,जीवों का सक्षेपीकरण। (भा ९७) -सरूव [स्वरूप] जीवस्वरूप, जीव का लक्षण। णाण जीवसरूव। (निय १७०) -सहाव पु [स्वभाव] जीवस्वभाव। (पचा ३५, भा ६३) जेसि जीवसहावो। (भा ६३) जीवो (प्र ए स १५०,पचा १२८)जीव(द्वि ए पचा १२७) जीवा (प्र ब पचा १०८, स २२८) जीवे (द्वि ब स १४१) जीवेण (तृ.ए निय ९०) जीवेहिं (तृ ब पचा ९०) जीवस्स (च /ष ए निय ४२) जीवाण/जीवाण (ष /च ब पचा १९, स २६५) जीवादो (प. ए स २८) जीवम्हि (स ए स १०५)

जीव अक [जीव्] जीना। (पचा ३०, स २५१, प्रव ज्ञे ५५)

आऊदएण जीवदि।(स २५२)जीवदि(व.प्र.ए.स.२५१, पचा ३०)जीवस्सदि (भवि. प्र.ए.पंचा.३०, प्रव.ज्ञे.५५)

जीव सक [जीव्] जीवित करना। जीवेमि (उ.ए.स.२५०) जीविज्जामि (भवि.उ.ए.स.२५०) जीवावेमि (प्रे उ ए.स २६१)

जीविद/जीविय न [जीवित] जीवन, जिन्दगी। (पंचा.३०, स.२५१, प्रव.चा ४१) कह णु ते जीवियं कहं तेहिं। (स.२५२)

जुंज सक [युज्] जोड़ना, सयुक्त करना, लगाना। अप्पाणं जुंजे मोक्खपहे। (स ४११) जुज (वि./आ.म.ए.) जो जुंजदि अप्पाणं। (निय १३९) जुजदि/जुंजदे (व.प्र.ए.निय.१३७, १३८,१३९)

जुगवं अ [युगपत्] एक ही साथ, एक ही समय में। (प्रव.४७,४९) अक्खाण ते अक्खा, जुगव ते णेव गेण्हंति। (प्रव.५६)

जुगुप्पा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, ग्लानि। जो ण करेदि जुगुप्पं। (स २३१)

जुज्ज सक [युज्] जोड़ना, मिलाना। ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे। (पचा ३७) तं णिच्छए ण जुज्जदि।(स.२९)

जुट्ठ वि [जुष्ट] सेवित, सेवा योग्य। जुट्ठं कदं व दत्तं। (प्रव.चा.५७)

जुत्त वि [युक्त] उचित, योग्य, संयुक्त। (पंचा.१५३, प्रव.७०, निय १४९) जुत्ता ते जीवगुणा। (पंचा.५६) -आहार पुं [आहार] योग्याहार, उचित आहार। जुत्ताहारविहारो। (प्रव.चा.२६)

जुत्ति स्त्री [युक्ति] उपाय, साधन, जुत्ति त्ति उवाअं त्ति य, णिरवयवो होदि णिज्जेत्ति। (निय.१४२)

जुद वि [युक्त] सयुक्त, सम्वद्ध, मिला हुआ। (पचा १४४, मो ४६) सवरजोगेहिं जुदो। (पचा.१४४)

जुद्ध न [युद्ध] लडाई, सग्राम। (स १०६, लि १०) जोधेहिं कदे जुद्धे। (स १०६)

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री। जुवईजणवेड्ढिओ। (भा ५१) जुवईजण समास पद है, जुवइ की हृस्व इ को ई हो गया है। (हे दीर्घहृस्वौ मिथौ वृत्तौ १/४)।

जुव्वण न [यौवन] तारुण्य, जवानी, युवावस्था। (शी १५) जुव्वणलावण्णकतिकलिदाण। (शी १२)

जूगा स्त्री [यूका] जूँ,शिर में रहने वाला कीड़ा विशेष।जूगा-गुभीमक्कण। (पचा ११५)

जूव न [यूप] जुआ, द्यूत। (लि ६) कलह वाद जूवा। (लि ६)

जे अ [ये] जो। जे जम्हि गुणो दव्वे। (स १०३)

जेट्ठ वि [ज्येष्ठ] प्रधान, प्रमुख, श्रेष्ठ। आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा। (प्रव चा ३२)

जेण अ [येन] लक्षण सूचक अव्यय। जेण दु एदे सव्वे। (स ५५, पचा १५७, प्रव ८)

जो अ [यत्] जव तक, जो। अवगयराधो जो खलु। (स ३०४) जीवस्सदि जो हु जीविदो पुव्व। (पचा ३०)

जो सक [दृश्] देखना, साक्षात्कार करना। ज जाणिऊण जोई, जोअत्थो जोइऊण अणवरय। (मो.३) जोइऊण (स कृ गो ३)

जोअ पु [जोग] मन, वचन, और शरीर की प्रवृत्ति। (मो.३) -त्थ

वि [अर्थ] योगार्थ, योग का प्रयोजन। (मो ३०)

जोइ पु [योगिन्] योगी, मुनि। (निय १५५, सू.६, चा.४०) जो मिथ्यात्व, अज्ञान, पाप और पुण्य को मन, वचन और कायरूप त्रियोग से छोडकर मौनव्रत को धारण करता है, वह योगी है। मिच्छत्त अण्णाण, पाव पुण्ण चएवि तिविहेण। मोणव्वए जोई, जोयत्थो जोयए अप्पा।। (मो २८) विस्तार के लिए देखें -मो ३-३६ एव ४१,४२,५२,६६,८४। जोइणो (प्र ब मो ७१)

जोग पु [योग] योग, चित्तनिरोध, इच्छा का रोकना। (पचा.१४८, स १९०, निय १३७) जो विपरीत भाव को छोड़कर सर्वज्ञकथित तत्त्वों में अपने आपको लगाता है, उसका वह अपना भाव योग है। (निय १३९) योग मन, वचन, और काय के व्यापार से होता है। जोगो मणवयणकायसभूदो। (पचा १४८) जोगो (प्र ए पंचा १४८, स.१९०) जोगे (द्वि ब भा ५८, निय १००) जोगेहिं (तृ ब.भा ११७) जोगेसु (स ब स २४६) -उदअ पु [उदय] योग का अभ्युदय। त जाण जोगउदअ। (स १३४) -णिमित्त न [निमित्त] योग का कारण। जोगणिमित्तं गहण। (पचा १४८) -परिकम्म पु न [परिकर्म] योगों का परिकर्म, योगों का परिणाम। (पंचा.१४६) -भत्तिजुत्त वि [भक्तियुक्त] योग की भक्ति से सयुक्त। (निय १३७) -वरभत्ति स्त्री [वरभक्ति] योग की श्रेष्ठ कल्पना, योग की एकाग्र श्रेष्ठवृत्ति। (निय १४०) -सुद्धि स्त्री [शुद्धि] योग की शुद्धि। मुच्छारभविजुत्त, जुत्त उवजोगजोगसुद्धीहिं। (प्रव चा ६)

जोग्ग वि [योग्य] योग्य, उचित। (प्रव ५५) ओगिण्हत्ता जोग्गं। (प्रव ५५,प्रव चा ज वृ २५)

जोड सक [योजय्] जोड़ना, मिलाना, सयुक्त करना। जो जोडदि विव्वाह। (लि ९)

जोणि स्त्री [योनि] उत्पत्ति स्थान, जीव की उत्पत्ति। (निय ४२,५६) कुलजोणिजीवमग्गण। (निय ५६)

जोण्ह वि [ज्योत्स्न] 1 आलोक युक्त, प्रकाश युक्त। 2 जिनदेव, जिनेन्द्रदेव। उवलद्ध जोण्हमुवदेस। (प्रव ८८)

जोघ पु [योघ] योद्धा, वीर। (स १०६)

जोय पु [योग] देखो जोइ, जोग। (स ५३, द १४, मो २८) -ट्ठाण न [स्थान] योगस्थान। जोयट्ठाणा ण बधठाणा। (स ५३)

जोय अक [द्युत्] प्रकाशित होना, चमकना, द्युतिमान होना। जोयत्थो जोयए अप्पा। (मो २८)

जोयण न [योजन] योजन, एक पैमाना, पथ नापने का पैमाना। (मो २१) -सय वि [शत] सौ योजन। (मो २१) विस्तार के लिए तिलोयपण्णत्ति दृष्टव्य है। जो जाइजोयणसय। (मो २१)

जोव्वण न [यौवन] युवावस्था, तारुण्य,जवानी। (द्वा ४) जोव्वण बल तेज। (द्वा ४)

झ

झड अक [शद्] झड़ना, गिरना, क्षय होना। (मो १) उवलद्ध जेण झडियकम्मेण। (मो १) झडिय (स कृ मो १)

झा सक [ध्यै] ध्यान करना, चितन करना। (पचा १४५, स १८८,

प्रव. ज्ञे ५९, नियं.८९, भा १२३, मो २०) झादि (व प्र ए नियं ८९, पचा १४५) झाए (व प्र.ए प्रव.ज्ञे. ६७) झाएइ (व.प्र ए नियं. १२१,मो २०)झाएदि (व प्र ए नियं १३३, लि ५) झायइ (व प्र ए नियं १२०, मो ८४) झायदि।

(व.प्र ए.स १८८,नियं ८३) झायति (व प्र ब मो.१९) झायतो (व कृ स.१८९,मो.४३) झायव्वो (वि.कृ मो.६३,६४) झाहि (वि /आ म ए स.४१२) झायहि (वि /आ म.ए भा १२३) झाइज्जइ (कर्म व प्र ए मो ४)झाइज्जइ परमप्पा। (मो ७) झाएवि (अप स कृ. मो ७७)

झाण पु न [ध्यान] ध्यान, चितन, विचार। (पचा १५२, नियं १२९, प्रव. चा ५६, भा १२१) आत्मस्वरूप के अवलम्बनमय भाव से जीव समस्त विकल्पों का निराकरण करने मे समर्थ होता है इसलिये ध्यान ही सब कुछ है। अप्पसरूवालवणभावेण दु सव्वभावपरिहार।सक्कदि काउ जीवो, तम्हा झाण हवे सव्व। (नियं ११९) ध्यान मे शुद्धात्मा का ध्यान श्रेष्ठ है। झाणे झाएइ सुद्धप्पाण। (मो २०) जो आत्मध्यान करता है। उसे नियम से निर्वाण प्राप्त होता है। अप्पाण जो झायदि, तस्स दु णियम हवे णियमा। (नियं १२०)ध्यान के चार भेद है-आर्त्तध्यान,रौद्रध्यान,धर्मध्यान और शुक्लध्यान। इन चार ध्यानों मे आर्तध्यान और रौद्रध्यान श्रेयस्कर नहीं है मात्र धर्मध्यान और शुक्लध्यान ही रत्नत्रय के कारण है। (नियं ८९)मोक्षपाहुड ७६ मे धर्मध्यान के विषय कहा गया है-भरत क्षेत्र मे द षम नामक

पञ्चमकाल मे मुनि के धर्मध्यान होता है, यह धर्मध्यान आत्मस्वभाव मे स्थित साधु के होता है। भरहे दुस्समकाले, धम्मज्झाण हवेइ साहुस्स। त अप्पसहावठिदे, ण हु मण्णइ सो वि अण्णाणी। आज भी त्रिरत्न से शुद्ध आत्मा का ध्यान करके मनुष्य इन्द्र और लौकान्तिक देव के पद को प्राप्त होते है, वहा से च्युत होकर मनुष्य जन्म पाकर निर्वाण को प्राप्त होते है। (मो ७७) -त्थ वि [स्थ] ध्यानस्थ,ध्यान मे लीन।अप्पा झाएइ झाणत्थो। (मो २७) -जुत्त वि [युक्त] ध्यान मे लीन। सज्झायझाणजुत्ता। (बो ४३)-जोअ पु [योग] ध्यान योग,ध्यान की चेष्टा,सग्ग तवेण सव्वो,वि पावए तहि वि झाणजोएण । (मो २३) -णिलीण वि [निलीन] ध्यान मे तल्लीन, ध्यानमग्न। झाणणिलीणो साहू। (निय ९३)-पईव पु [प्रदीप]ध्यानरूपी दीपक,ध्यानमय ज्योति। झाणपईवो वि पज्जलइ।(भा १२२)-मअ/मय वि [मय] ध्यानयुक्त, ध्यान स्वरूपी। (पचा १४६, निय १५४) -रअ/रय वि [रत] ध्यान मे लीन,ध्यान मे तत्पर। जो देव और गुरु का भक्त,साधर्मी और सयमी जीवों का अनुरागी तथा सम्यक्त्व को धारण करता है,वह ध्यानरत कहलाता है। देवगुरुम्मि य भत्तो, साहम्मि यं सजदेसु अणुरत्तो। सम्मत्तमुव्वहतो, झाणरओ होइ जोई सो।। (मो ५२,८२) -विहीण वि [विहीन] ध्यान रहित, ध्यान से च्युत। झाणविहीणो समणो। (निय १५१)

झादा वि [ध्याता] ध्यान करने वाला, ध्याता। जो ध्यान मे अपने शुद्ध आत्मा का चितन करता है वह ध्याता है। इदि जो झायदि

झाणे, सो अप्पाण हवदि झादा। (प्रव ज्ञे ९९)

ठ

ठव सक [स्थापय्] स्थापन करना,स्थापित करना।ठवेदि (व प्र.ए. स २३४) ठविऊण (स कृ नियं १३६) ठविऊण य कुणदि णिव्वुदीभंत्ती।

ठवण न [स्थापन] स्थापन, सस्थापन, पूजा का एक भेद, निक्षेप का एक भेद। णामे ठवणे हि य। (बो २७)

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, ठहरना, रहना। ठाइ (व. प्र ए. निय. १२५, १२६) ठादि (द.१४) ठाही (भू प्र ए स. ४१५) अत्थे ठाही चेया। भूतार्थ के सी,ही,हीअ प्रत्यय है, जो तीनों पुरुषों के दोनों वचनों मे समान रूप से प्रयुक्त होते है। ये प्रत्यय दीर्घान्त णी,हो, ठा आदि क्रियाओं मे लगते है। ठाइदूण (स कृ स. २३७)

ठाण पु न [स्थान] स्थान, स्थिति, पद, कारण, जगह, आश्रय। (पचा ८९,प्रव ४४,स ५२,नियं १५८,भा ११५) **-कारण** न [कारण] स्थिति मे कारण, स्थान देने मे कारण। आगास ठाणकारण तेसिं। (पचा ९४) **-कारणदा** [कारणत्व] स्थिति हेतुत्व, स्थिति मे कारणपना। गुणो पुणो ठाणकारणदा। (प्रव ज्ञे ४१) ठाण (प्र ए पचा.८९) ठाणाणि (प्र.व स.५२) ठाणे (स ए सू १४) ठाणम्मि (स ए स २३७)

ठावणा स्त्री [स्थापना] प्रतिकृति,चित्र,आकार,न्यास का एक भेद ठावणपचविहेहिं।(बो ३०)ठावण यह स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एकवचन

का रूप है। अपभ्रंश मे दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है।

ठिद/ठिय/ट्ठिद/ट्ठिय वि [स्थित] अवस्थित, स्थित हुआ। (स २६७, प्रव ज्ञे २,निय ९२,भा ४०,बो १२,सू १४) दसणणाणम्हि ठिदो।(स १८७) जे दु अपरमे ट्ठिदा भावे। (स १२)

ठिदि स्त्री [स्थिति] स्थिति, स्थान, कारण, नियम, बन्ध का एक भेद। (पचा ७३, स २३४, निय ३०, प्रव १७) **-करण** न [करण] स्थितीकरण, सम्यक्त्व के आठ अङ्गों मे से एक अङ्ग। (चा ७)जो जीव उन्मार्ग मे जाते हुए अपने आत्मा को रोककर समीचीन मार्ग मे स्थापित करता है वह स्थितीकरण युक्त होता है।(स २३४)**-किरियाजुत्त** वि [क्रियायुक्त] ठहरने की क्रिया से युक्त। (पचा ८६) **-बधट्ठाण** न [बन्धस्थान] स्थितिबन्धस्थान। (स ५४, निय ४०) **-भोयणमेगभत्त** पु न [भोजनमेकभक्त] खड़े-खड़े एक बार भोजन करना, साधुओं का एक मूलगुण। (प्रव चा ८)

ड

डह सक [दह्] जलाना, दग्ध करना। (भा १३१, ११९ शी ३४) डहइ (व.प्र ए भा १३१) डहति (व प्र ब शी ३४) डहिऊण ' (स कृ भा ११९)

डहण न [दहन] जलना, भस्म होना। (मो २६)

डहिअ वि [दहित] जला हुआ, भस्म, भस्मीभूत। (भा ४९)

डाह पु [दाह] 1 जलन, तपन, गर्मी (भा ९३, १२४) 2 पु [डाह] जलन, ईर्ष्या।

ढ

ढिल्ल वि [दे] ढीला, शिथिल। (सू.२६)

ढुरुढुल्लिअ वि [दे] भ्रमणशील, घूमता हुआ। (भा.३६,४५)

ण

णअ [न] नहीं, मत, निषेधार्थक, अव्यय। (पचा.७,स.२८०,नियं.३६, भा २, द २, प्रव चा ६) ण दु एस मज्झभावो। (स.१९९) ण पविट्ठो णाविट्ठो। (प्रव २९)

णं अ [ण] वास्तव मे, निश्चय से। (चा २०)

णओसय पु न [नपुसक] नपुसक, क्लीब। (नियं.४५)

णग्ग वि [नग्न] वस्त्र रहित, अचेलक, निर्ग्रन्थ। (सू २३, भा.५४) णग्गो विमोक्खमग्गो। (सू २३) भावेण होइ णग्गो। (भा.५४) -त्तण वि [त्व] नग्नत्व, नग्नपना। (भा ५५) णग्गत्तण अकज्जं। -रूव पु [रूप] नग्न आकृति। (भा ७१)

णच्च अक [नृत्] नृत्य करना, नाचना। णच्चदि गायदि। (लि ४)

णच्चा स कृ [ज्ञात्वा] जानकर। (नियं.९४)

णज्ज सक [ज्ञा] जानना, ज्ञान करना। दुक्खे णज्जइ अप्पा। (मो ६५)

णट्ठ वि [नष्ट] नष्ट, नाश को प्राप्त, रहित। (पचा १७, प्रव ३८, नियं ७२, बो ५२, भा.१४९) मणुसत्तणेण णट्ठो। (पचा १७) -अट्ठ त्रि [अष्ट] अष्ट कर्म से रहित। णट्ठट्ठकम्मबधेण। (बो.२८) -चारित्त पु न [चारित्र] चारित्र रहित,चारित्र से च्युत।हवदि हि

सं णट्ठचारित्तो। (प्रव चा ६५) -मिच्छत पु न [मिथ्यात्व] मित्यात्व से रहित, विपरीत मान्यता से रहित। पणट्ठकम्मट्ठ णट्ठमिच्छत्ता। (बो.५२)

णड पु [नट] नर्तक,नट,जाति। -सवण पुं [श्रमण] नटश्रमण। जो धर्म से दूर रहता है, जो दोषों से युक्त है, ईख के पुष्प से समान निष्फल एव निर्गुण, नग्नरूप मे रहने वाला नट श्रमण है। (भा ७१)

णत्थि अ [नास्ति] अभावसूचक अव्यय, नहीं। (पचा ११, स ६१, प्रव १०, द ३)

णभ न [नभस्] आकाश, गगन। (प्रव ज्ञे ४५) णभसि (स ए प्रव ६८)

णम सक [नम्] नमन करना, प्रणाम करना, झुकना। (निय १, भा १, मो २) णमिऊण (स कृ निय १,भा १, मो २, द्वा १) णमति (व प्र ब भा १५२)

णमस सक [नमस्य्] नमन करना, नमस्कार करना। णमसित्ता। (स कृ प्रव चा ७)

णमसण न [नमस्यन] नमन, वदन। णमसणेहिं (तृ व प्रव चा ४७)

णमि पु [नमि] इक्कीसवे तीर्थकर,नमिनाथ। (ती भ ५)

णमुक्कार पु [नमस्कार] नमन, प्रणाम। काऊण णमुक्कार। (द १)

णमो अ [नमस्] नमन, प्रणाम। (पचा १, प्रव ४, भा १२८)

णमोकार पु [नमस्कार] नमन। (लि १)

णमोत्थु अ [नमोस्तु] नमन हो। (प्रव. ज्ञे. १०७)

णय पु [नय] नय, न्याय, नीति, युक्ति, पक्ष। (स १४२) दोण्ह वि णयाण भणिय।(स १४३) वस्तु के अनेक धर्मो मे से किसी एक मुख्य अश को ग्रहण करना नय है। आचार्य कुन्दकुन्द ने व्यवहारनय और निश्चयनय इन दो नयों का कथन किया है। प्रत्येक वस्तु को समझाने के लिए दोनों ही नयों को आधार बनाया जाता है। इनके सभी ग्रन्थों मे यही शैली है। इसके अतिरिक्त द्रव्यार्थिक एव पर्यायार्थिक नय द्वारा भी वस्तुतत्त्व को स्पष्ट किया है। (पचा ५-६) व्यवहारनय से ज्ञानी के चारित्र, दर्शन और ज्ञान है, किन्तु निश्चयनय से ज्ञान, चरित्र और दर्शन नहीं है, ज्ञानी ज्ञायक एव शुद्ध है। (स ७) व्यवहारनय को अभूतार्थ एव निश्चय नय को भूतार्थ कहा है। ववहारोऽभूयत्थो, भूयत्थो देसिदो दु सुद्धणओ। (स ११) निश्चयनय को शुद्धनय कहा है। जो नय आत्मा को बन्धनरहित, पर के स्पर्शरहित और अन्य पदार्थो के सयोग रहित अवलोकन करता है, वह शुद्धनय है। (स १४) आचाराङ्ग आदि शास्त्र ज्ञान है, जीवादि का श्रद्धान दर्शन है, छहकाय के जीव चारित्र है, यह कथन व्यवहारनय का है और आत्मा ज्ञान है, आत्मा दर्शन है और आत्मा चारित्र है, प्रत्याख्यान, सवर और योग है यह शुद्ध नय का कथन है। (स २७६, २७७) -पक्ख पु [पक्ष] नयपक्ष, न्यायशास्त्र में प्रसिद्ध एकपक्ष।(स १४२, १४३, १४४) जीव मे कर्मबधे हुए है या नहीं यह नयपक्ष है। इस पक्ष से रहित समयसार है। कम्म

बद्धमबद्धं,जीवे एव तु जाण णयपक्खं।पक्खातिक्कंतो पुण भण्णदि जो सो समयसारो।।(स १४२)-परिहीण वि [परिहीण] नय रहित। (स १८०)

णयण पु न [नयन] नेत्र, आख।वीर विसालणयण।(शी १) -णीर न [नीर] नेत्रों के आसू। रुण्णाण णयणणीरं।(भा १९)

णयर न [नगर] शहर, पुर, नगर। णयरम्मि वण्णिदे जह। (स ३०) णयरम्मि/णयरे (स ए स ३०)

णर पु [नर] मनुष्य, पुरुष। (पचा १६,स २४२,प्रव ७२,निय १५ भा १) णरो (प्र ए स २४२) णरस्स (च /ष ए द ३१)

णरय पु [नरक] नरक, नारकी, जीवों का स्थान, नरक गति विशेष। (भा ४९,लि ६)

णव त्रि [नव] नौ, सख्या विशेष। णव जय पयत्थाइं। (भा ९७) -रूणिहि वि [निधि] नौ निधियाँ। (द्वा १०) -णोकसायवग्ग वि [नोकषायवर्ग] नौ-नोकषायवर्ग, नोकषायों का समूह। (भा ९१) हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुसकवेद। -त्थ वि [अर्थ] नवार्थ, नौ पदार्थ। (पचा ७२) जीव, अजीव,आस्रव,बध,सवर,निर्जरा,मोक्ष,पुण्य और पाप। -पयत्थ पु [पदार्थ] नौ पदार्थ । (द १९) -विहबभ पु [विधब्रह्म] नवप्रकार का ब्रह्मचर्य। (भा ९८)

णव वि [नव] नवीन, नूतन, नया। णादियदि णव कम्मं। (मो ४८)

णव सक [नम] नमन करना, प्रणाम करना। णविएहिं त णविज्जइ। (मो १०३)णविज्जइ (व.प्र ए)कर्म और भाव मे ईअ और इज्ज

प्रत्यय होते है। (हे ई-इज्जीक्यस्य। ३/१६०)

णवरं अ [केवल] केवल, किन्तु,सिर्फ। जाणइ णवर तु समयपडिबद्धो। (स १४३)

णवरि/णवरिं अ [दि] केवल, मात्र, किन्तु। णवरि ववदेस। (स १४४) अवधगो जाणगो णवरिं। (स १६७)

णवि अ [दि] निषेधवाचक, अव्यय, विपरीतसूचक अव्यय,नहीं। णवि सो जाणदि। (स ५०,२०१)

णस/णस्स अक [नश्] नष्ट होना। लिग णसेदि लिगीण। (लि.३) ण णस्सदि ण जायदे अण्णो। (पचा.१७)

णह न [नख] नाखून। (भा २०)

णहु अ [न खलु] नहीं। (द.२७)

णा सक [ज्ञा] जानना, समझना। (पचा १६२, स १८, प्रव.२५, निय १६,चा ४२)णादि(व प्र ए पचा १६२,प्रव २५)णाऊण(स कृ भा ५५,चा ६,शी.३)णादूण/णादूण (स कृ.स ७२,३४) णायव्वो/णादव्वो (वि कृ.स.१२,२८५,बो ४०) णाउ/णादु (हे कृ प्रव.४०,स.१४९,चा ४२,भा.८८)

-णाग पु [नाग] सर्प। (स ज वृ २१९) -फलि स्त्री [फलि] लता विशेष, नागफणी। (स ज वृ २१९) णागफलीए मूल, णाइणि तीएण गब्भणाणेण। (स ज.वृ २१९)

णाण न [ज्ञान] ज्ञान, वोध, आत्मा का निज गुण। (पचा.१६४, स.२,प्रव २,निय.३,चा.३) -आवरण न [आवरण] ज्ञानावरण, ज्ञान को आच्छादन करने वाला कर्म। जे पुग्गलदव्वाण, परिणामा

होंति णाणआवरणा। (स १०१) **-गुण** पु न [गुण] ज्ञानगुण। णाणगुणादो पुणो वि परिणमदि। (स १७१) णाणगुणेण विहीणा। (स २०५) **-जुत्त** वि [युक्त] ज्ञान युक्त,ज्ञान सम्पन्न। (बो ६)ज चरइ णाणजुत्त। (चा ८) **-ट्ठिय** वि [स्थित] ज्ञान मे स्थित। अट्ठा णाणट्ठिया सव्वे। (प्रव ३५) **-इढ** वि [आढ्य] ज्ञानयुक्त, ज्ञानसहित। (प्रव चा ६३, १०६) **-पमाण/प्पमाण** न [प्रमाण] ज्ञान प्रमाण। आदा णाणपमाण। (प्रव २३) णाणप्पमाणमादा। (प्रव २४) **-प्पग/प्पाण** वि [आत्मक] ज्ञानात्मक, ज्ञानस्वरूप। (प्रव ज्ञे ६७, १००) **-मग्ग** पु न [मार्ग] ज्ञानपथ । (चा १४) **-मअ/मय** वि [मय] ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त। (स १३१, प्रव २६, मो १) **-विग्गह** पु [विग्रह] ज्ञानशरीरी। (मो १८) **-विजुत्त** वि [वियुक्त] ज्ञान से रहित। (मो ५९) **-सत्थ** न [शस्त्र] ज्ञानरूपी शस्त्र । लुणति मुणी णाणसत्थेहिं। (भा १५७)**-सलिल** न [सलिल] ज्ञानरूपी जल। पाऊण णाणसलिल। (भा ९३) **-सरूव** वि [स्वरूप] ज्ञानस्वरूप, ज्ञानात्मक। णाण णाणसरूव। (चा ३९) **-सहाअ/सहाव** पु [स्वभाव] ज्ञान स्वभाव। (स १६२, भा ६२) णाणसहाओ चेयणासहिओ। **-सुद्धि** स्त्री [शुद्धि] ज्ञान की शुद्धि, ज्ञान की निर्मलता, ज्ञान की निर्दोषता। (शी २०) णाण (प्र ए स ७) णाणाणि (प्र ब पचा ४३) णाण (द्वि ए पचा ४७) णाणेण (तृ ए द ३०)णाणे/णाणम्मि (स ए द ८, १४)णाणदो (प ए द १५)

णाणा अ [नाना] अनेक, पृथक्-पृथक्। (निय ९,प्रव ज्ञे २७)

-आवरण न [आवरण] कई प्रकार के आवरण, ज्ञान के आवरण। (पचा २०,स १६५,प्रव चा.५७) -कम्म पु न [कर्मन्] नाना कर्म, अनेक प्रकार के कर्म। (निय १५६)-गुण पु न [गुण] अनेक गुण। णाणागुणपज्जएण सजुत्त। (निय १६८) -जीव पुं [जीव] अनेक जीव। (निय १५६)-भूमि स्त्री [भूमि] अनेक प्रकार की भूमि। (प्रव. चा ५५) -विह वि [विध] अनेक प्रकार। णाणाविह हवे लद्धी। (निय १५६)

णाणी वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी, विशेषज्ञानी, केवलज्ञानी। (पचा ४८, स १७०, प्रव.२८) णाणी (प्र ए प्रव. २९) णाणी णाणसहावो। (प्रव.२९) णाणीहि (तृ. ब. पचा ४३) णाणिस्स (च/ष ए प्रव २८, स.१८०, निय १७३, पचा १५०) -त्त वि [त्व] ज्ञानीपन। ण जहदि णाणी उ णाणित्तं। (स १८४)

णाणिण वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी। धणिण जह णाणिण च दुविधेहिं। (पचा ४७) धणिण का प्रयोग धनी के लिए एव णाणिण का प्रयोग ज्ञानी के लिए हुआ है। यद्यपि नियमानुसार अन्त्य व्यञ्जन का लोप होकर णाणि रूप के प्रयोग की बहुलता है, परन्तु यह प्रयोग अन्त्य व्यञ्जन के लोप की प्रक्रिया से परे अन्त्यव्यञ्जन मे अ का आगम होकर बना है। आत्मन् के अप्पण की तरह ज्ञानिन् का णाणिण शब्द बना है।

णाद सक [ज्ञा/ज्ञात] जानना। (स ज वृ १८९) पस्सिदूण णादेदि

णाद वि [ज्ञात] विदित, जाना हुआ। (स ६, प्रव ५८)

णाम अ [नाम] 1.सभावना वोधक अव्यय। जह णाम को वि

पुरिसो। (स ३५, २८८) 2 वाक्यालङ्कार,पादपूर्ति।को णाम भणिज्ज बुहो।(स ३००)3 पु न [नाम] नाम,आख्या,अभिधान, सज्ञा।दीवायणु त्ति णामो।(भा.५०)-कम्म पु न [कर्मन्] नाम कर्म, आठ कर्मो मे एक भेद। (प्रव ज्ञे २६) नामकर्म के उदय से जीवों को मनुष्य,देव,नरक और तिर्यञ्च, इन चार पर्यायों मे जन्म लेना पड़ता है। (प्रव ज्ञे ६१) -समक्ख वि [समाख्य] नाम सज्ञा वाला। कम्म णामसमक्ख। (प्रव ज्ञे २५) -सजुद वि [सयुत] नाम से युक्त, नामधारी। णेरइय-तिरिय-मणुआ, देवा इदि णामसजुदा पयडी। (पचा ५५)

णाय पु [न्याय] 1 न्याय, नीति। -**सत्थ** पु [शास्त्र] न्यायशास्त्र, प्रमाणशास्त्र, नीतिशास्त्र। (शी १६) 2 वि [ज्ञात] जाना हुआ। (बो ६०, भा ४५) 3 न [ज्ञातृ] ज्ञातृ, वश का नाम।

णायग वि [ज्ञायक] 1 ज्ञानी, जानकार, प्रबुद्ध। (भा.१२३) 2 पु [नायक] स्वामी, मुखिया, प्रधान,नेता। (भा १२३)

णारय वि [नारक] नारकी, नरक मे उत्पन्न होने वाला, नरक सम्बन्धी। (पचा ११७,निय.१५,भा ६७) -**भाव** पु [भाव] नारकी भाव,नरक मे उत्पन्न होने का भाव, नारकी पर्याय। (निय ७७) णाह णारयभावो।

णारी स्त्री [नारी] नारी, स्त्री। (प्रव चा ज वृ २४)

णाली स्त्री [नालि] कालपरिमाणविशेष, घड़ी, बीस कला के बीतने का नाम। (पचा २५)

णास सक [नाशय्] नष्ट करना, नाश करना। णासइ (व प्र ए भा

५४) णासेदि (व.प्र ए.स. १५८-१५९) णासए (व प्र ए द.७) णासदि (व प्र ए.सू ३४)

णास पु [नाश] नाश, ध्वस, व्यय। भावस्स णत्थि णासो। (पचा १५)

णासण वि [नाशन] नाश करने वाला। (भा.१०७)

णाहग पु [नाशक] स्वामी, प्रधान, शरण्य। (द्वा.२२)

णाहि पु [नाभि] नाभि, केन्द्र। (सू.२४)

णि अ [नि] निश्चय, ही। मुणिवरवसहा णि इच्छति। (बो.४३)

णिंद सक [निन्द्] निन्दा करना, दूषित ठहराना। केई णिदति सुदर मग्ग। (निय १८५)

णिंद वि [निन्द्य] निन्दनीय, निन्दा योग्य। (प्रव चा ४१)

णिदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा। (स ३०६) णिदाए (स ए मो ७२)

णिंदिय वि [निन्दित] निन्दित, बुरा, निन्दनीय। (प्रव. चा ४७)

णिकाय पु [णिकाय] समूह, वर्ग, जाति। एदे जीवणिकाया। (पचा ११२)

णिक्कख वि [निष्काक्ष] आकाक्षा रहित, चाह रहित। (स २३०)

णिक्कंखिय वि [निष्काक्षित] न चाहने वाला, अभिलाषा रहित। (चा ७)

णिक्कल वि [निष्कल] कला रहित, शरीर रहित। (निय ४३) जइधम्म णिक्कल वोच्छे। (चा.२७)

णिक्कलुस वि [निष्कलुष] निर्दोष, पवित्र, मलरहित। (बो.४९)

णिक्कसाय वि [निष्कषाय] कषाय रहित। (निय १०५)

णिक्काम [निष्काम] अभिलाषा रहित, इच्छारहित, वासनारहित, विषयासक्ति से रहित। (निय ४४)

णिक्कोह वि [निष्क्रोध] क्रोध रहित, क्षमाशील, क्षमागुणवाला। (निय ४४)

णिक्खेव पु [निक्षेप] निक्षेप,न्यास।नाम,स्थापना,द्रव्य और भाव के भेद से निक्षेप के चार भेद हैं। (चा ३७)

णिगोद/णिगोय पु [निगोद] अनन्तजीवों का एक साधारण शरीर विशेष,निगोद पर्याय। (भा २८) **-वास** न [वास] निगोदवास, निगोद स्थान। इस निगोद पर्याय मे जीव ने अन्तर्मुहूर्त मे छयासठ हजार तीन सौ छत्तीस बार जन्म-मरण प्राप्त किया है। (भा २८)

णिग्गथ पु [निर्ग्रन्थ] सयत, मुनि,तपस्वी। (प्रव चा ६९, निय ४४, बो ५८) जो पाच महाव्रतों से युक्त तीन गुप्तियों से सहित सयमी है, वह निर्ग्रन्थ है तथा वही मोक्षमार्गस्वरूप है। पचमहव्वय जुत्तो,तिहिं गुत्तिहिं जो य सजदो होई।णिग्गथमोखमग्गो,सो होदि हु वदणिज्जो य। (सू २०) बोधपाहुड मे निर्ग्रन्थ शब्द को और अधिक स्पष्ट किया गया है-जो निर्दोष चारित्र का आचरण करता है जीवादिपदार्थों को ठीक-ठीक जानता है और शुद्ध सम्यक्त्वस्वरूप आत्मा को देखता है, वह निर्ग्रन्थ है। (बो १०)

णिग्गद वि [निर्गत] नि सृत, बाहर निकला हुआ। राया हु णिग्गदो त्ति य। (स ४७)

णिग्गह पु [निग्रह] निरोध, वश मे, अधीन।**-मण** पु न [मनस्] मन

का निग्रह। णिग्गहमणा परस्स। (स ३८२)

णिग्गहण वि [निग्रहण] निग्रह, दमन, नियन्त्रित। (निय ११४)

णिग्गहिद वि [निगृहीत] रोका गया, निग्रह किया गया, पराभूत, तिरस्कृत। इदियकसायसण्णा णिग्गहिदा जेहिं सुट्ठुमग्गम्मि। (पचा १४१)

णिग्गुण वि [निर्गुण] गुणहीन, गुणरहित। (भा ७१)

णिच्च न [नित्य] 1 नित्य, सदैव, हमेशा, निरतर। (स.३२३, पचा ७) णिच्च कुवताण। (स ३२३) 2 वि [नित्य] नित्य शाश्वत, अविनश्वर। णिच्चो णाणवकासो। (पचा८०) -काल पु [काल] निरन्तर, हमेशा। भत्तीराएण णिच्चकालम्मि। (भा १०५)

णिच्चय पुं [निश्चय] निश्चयनय, नय विशेष, द्रव्यार्थिकनय। जाणति णिच्चएण। (स.३२४) -णय पु [नय] निश्चयनय। णिच्चयणएण भणिदो। (पचा.१६१)

णिच्चयण्हू वि [निश्चयज्ञ] निश्चयस्वरूप को जानने वाले, निश्चय के ज्ञाता। णिच्छति णिच्च यण्हू। (पंचा.४५)

णिच्चसा अ [नित्यश] निरन्तर, सदैव, हमेशा। (निय १२९-१३३)

णिच्चिद वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत, असदिग्ध। (पचा १६२)

णिच्चेल वि [निश्चेल] वस्त्ररहित, निर्ग्रन्थ। णिच्चेलपाणिपत्तं। (सू १०)

णिच्छ अक [निश्च] मानना, निश्चयकरना, विचारना। (पचा ४५)

णिच्छअ/णिच्छय पु [निश्चय] नयविशेष, यथार्थ निर्णय का सूचक पक्ष। (स २१०, प्रव ९७, निय २९) **-अट्ठ** वि [अर्थ] निश्चय का विषय, निश्चय का प्रयोजन, निश्चय का विचार। मोत्तूण णिच्छयट्ठ। (स १५६) **-गद** वि [गत] निश्चय को प्राप्त हुआ, निर्णय को प्राप्त हुआ। (स ३) **-णय** पु [नय] निश्चयनय। णिच्छयणयस्स एव। (स ८३) णिच्छयदो (प ए निय ५५, स २३९) **-दण्हू** वि [तज्ञ] निश्चय को जानने वाले, निश्चय को समझने वाले। (स ६०) **-वाइ** वि [वादिन्] निश्चयवादी, निश्चय का कथन करने वाले। (स ४३) **-विदु** वि [विद्] निश्चय को जानने वाला, निश्चय का ज्ञाता, पण्डित। (स ३३, ९७) भण्णदि सो णिच्छयविदूहिं।

णिच्छिद वि [निश्चित] निर्णीत, निश्चित किया हुआ। (स ४८, प्रव चा ४) भणति जे णिच्छिदा साहू। (स ३१)

णिच्छित्ता वि [निश्चितत्व] निश्चितता। णिच्छित्ता आगमदो। (प्रव चा ३२)

णिज्ज अक [निर्+या] निकलना, ले जाना, चले जाना। (स २०९) णिज्जदु (वि /आ प्र ए स २०९) कम्मेहि य मिच्छत्त, णिज्जइ णिज्जइ असजम चेव। (स ३३३)

णिज्जण न [निर्जन] एकान्तस्थान, मनुष्य से रहित क्षेत्र। **-देस** पु [दिश] निर्जन प्रदेश, एकान्त स्थान। णिज्जणदेसेहि णिच्च अत्थेइ।

(बो ५५)

णिज्जर वि [निर्जर] कर्मक्षय,कर्मपरमाणुओं का आत्मा से पृथक् करना। (पचा.१०८, स १३) -णिमित्त न [निमित्त] निर्जरा के कारण। (स.१९३) -हेदु पु [हेतु]क्षय का कारण। (पचा.१५२) ज्ञान एव दर्शन से युक्त, अन्य द्रव्यों के संयोग से रहित, ध्यान स्वभाव सहित साधु के निर्जरा का कारण होता है। (पचा १५२)

णिज्जर सक [निर्+जृ] क्षय करना, नाश करना। णिज्जरमाणो (व कृ पचा १५३)

णिज्जरण न [निर्जरण] नाश, क्षय। कम्माण णिज्जरण। (पचा १४४) बधे हुए कर्मप्रदेशों का गलना, एक देश क्षय होना निर्जरा है। (द्वा ६६) बंधपदेसग्गलण णिज्जरणं। निर्जरा दो प्रकार की है-सविपाक (अपना उदयकाल आने पर कर्मो का स्वय पककर झड़ जाना) और अविपाक निर्जरा (तप आदि के द्वारा की जाने वाली)।

णिज्जावय वि [निर्यापक] गुरु के उपदेश को अङ्गीकार करने वाला, सयम के भङ्ग होने पर गुरु के द्वारा दिया गया प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला, सल्लेखना ग्रहण करने वाला। (प्रव.चा.१०)

णिज्जिय वि [निर्जित] जीता हुआ, पराभूत। (भा १५५)

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण। (निय १४२)

णिट्ठव सक [नि+स्थापय्] पूर्ण करना, नष्ट करना। (भा.१४८)

णिट्ठिद वि [निष्ठित] भरा हुआ, पूर्ण किया हुआ। (प्रव ज्ञे ५३) लोगो अट्ठेहिं णिट्ठिदो णिच्चो।

णिट्ठुर वि [निष्ठुर] कठिन, कठोर, परुष। (भा १०७)

णिण्णेह वि [नि स्नेह] स्नेह रहित, राग रहित। (बो ४९)

णित्थार सक [निर्+तारय्] पार उतारना, तारना। (प्रव चा ६०,
णित्थारयति लोग। (प्रव चा ६०)

णित्थारग वि [निस्तारक] तारने वाला, पार उतारने वाला। पुरिसा
णित्थारगा होंति। (प्रव चा ५८)

णिद्दंड वि [निर्दण्ड] दण्डरहित, अयोग, मन-वचन-काय की
प्रवृत्ति से रहित। (निय ४३)

णिद्दंद वि [निर्द्वन्द्व] कलह रहित, द्वैतपने से रहित।
(निय ४३,मो ८४)

णिद्दलण न [निर्दलन] चूर करना, विदारण, मर्दन। (निय ७३)

णिद्दा स्त्री [निद्रा] नींद,अठारह दोषों मे से एक,निद्रा। (बो ४६,
निय ६, १७९)

णिद्दिट्ठ वि [निर्दिष्ट] कथित, प्रतिपादित, निरूपित, दिखलाया
गया। (पचा ५०, स ४३, प्रव ७, निय ६४, भा १४७, द ११)

णिद्दोस वि [निर्दोष] दोष रहित, शुद्ध। (निय ४३, बो ४८)

णिद्ध वि [स्निग्ध] स्निग्ध युक्त, चिकना, राग सहित। णिद्धो वा
लुक्खो वा। (प्रव ज्ञे ७१, ७३) -त्तण वि [त्व] स्नेहपना।
णिद्धत्तण (द्वि ए प्रव ज्ञे ७२) णिद्धत्तणेण (तृ ए प्रव
ज्ञे ७४)

णिप्पण्ण वि [निष्पन्न] निर्मापित, बना हुआ, सिद्ध किया गया।
(पचा ५, ७६)

णिप्पवास वि [निष्प्रवास] प्रवास, दूर रहना। धम्मम्मि णिप्पवासो। (भा ७१)

णिप्फल वि [निष्फल] फल रहित, निरर्थक। (भा.७१, प्रव. ज्ञे.२४)

णिबद्ध वि [निबद्ध] प्रवृत्त, लीन। चरदि णिबद्धो णिच्च। (प्रव. चा १४) उवधिम्मि वा णिबद्धे। (प्रव.चा.१५)

णिब्भय वि [निर्भय] भय रहित, निडर। (निय.४३, स.२२८, बो ४९)

णिमज्ज अक [नि+मस्ज्] नहाना, मार्जन करना, डूब जाना। (द्वा ५८) जम्मसमुद्दे णिमज्जदे सिप्प। णिमज्जदे (व प्र ए.)

णिमित्त न [निमित्त] कारण,हेतु,साधन। तिलतुसमत्तणिमित्त। (बो.५४)

णिमिस पु [निमिष] नेत्र उन्मीलन, नेत्र सकोच। आख की पलक के खुलने का समय या असख्यात समय के वीतने प्रमाण काल को निमिष कहते हैं। (पचा २५)

णिम्मद वि [निर्मद] मदरहित, अहङ्कार रहित। (निय ४४)

णिम्मम वि [निर्मम] ममता रहित। (पचा १६९, निय.४३, बो ४८) -त्त /त्ति वि [त्व] ममतारहित। (निय ९९) ममत्ति परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो। (प्रव ज्ञे १०८)

णिम्मय वि [निर्मय] ममता रहित। (भा १०७)

णिम्मल वि [निर्मल] मल रहित, विशुद्ध, पवित्र। (चा.४१, भा ६०, निय ४८, बो.२६) -सहाव पु [स्वभाव] निर्मल स्वभाव

पवित्रभाव,विशुद्धपरिणाम। (गो ४५, निय १४६)

णिम्मह पु [निर्मथ] दुर्दम्य, विनाश। (भा ९३)

णिम्माण वि [निर्मान] मान रहित, मार्दव युक्त। (निय ४४, बो ४८)

णिम्मिविय वि [निर्मापित] निर्मित, रचित, वनाया हुआ। (बो १२)

णिम्मूढ वि [निर्मूढ] अज्ञानता रहित, ज्ञानयुक्त। (निय ४३)

णिम्मोह वि [निर्मोह] मोह रहित, आसक्ति रहित। (निय ७५, प्रव ९०, चा १६, बो १)

णिय वि [निज] स्वकीय, आत्मीय। -अप्प पु [आत्मन्] निजात्मा। (मो ६३) -कज्ज न [कार्य] अपना प्रयोजन, अपना कार्य। णियकज्ज साहए णिच्च। (निय १५५) -गुण पु न [गुण] निजगुण, आत्मा के गुण। [नि+वृत्] दूर रखना, पीछे हटाना, छुड़ाना। (स ३८३, ३८४)

णियत्त न [निवृत्त] निवृत्ति, त्याग, दूर, अलग। (सू २७) इच्छा जा हु णियत्ता, ताह णियत्ताइ सव्वदुक्खाइ।

णियत्ति स्त्री [निवृत्ति] त्याग। (निय ६७) अलीयादिणियत्तिवयण वा।

णियद वि [नियत] नियमबद्ध, नियमानुसारी, निश्चित। (पचा ४) अत्थित्तम्हि य णियदा। (पचा १००)

णियदय वि [नियतय] नियत, निश्चित। (प्रव ४४)

णियदिणा वि [नियतिन] नियमपूर्वक। उदयगदा कम्मस

जिणवरवसहेहिं णियदिणा भणिया। (प्रव.४३)
णियट्ठ वि [निकृष्ट] नीच, अधम। (लि २०)
णियम पु [नियम] प्रतिज्ञा, व्रत। (पचा १५०, स ३४, प्रव चा ५६, मो १४) -सार पु [सार] नियमसार, आत्मा का सार, व्रतों का सार। (निय १)
णियल पु [निगड] बेडी, साकल, श्रृखला। सोवण्णियम्हि णियल। (स १४६)
णिरंजण वि [निरञ्जन] निर्लेप, अञ्जन रहित, मल रहित। (स ९०, भ.१६२)
णिरंतर वि [निरन्तर] लगातार, हमेशा, सदा। (भा.९०)
णिरअ/णिरय वि [निरत] 1 तत्पर, उद्यत। (लि १६) 2.पु [नरक] नरक, नारकीजीव।
णिरत्थअ/णिरत्थय वि [निरर्थक] व्यर्थ, बेकार। (स २६६, शी १५भा ८९) णिरत्थया सा हु दे मिच्छा। (स २६६)
णिरद वि[निरत] तल्लीन। (प्रव ज्ञे.२)
णिरवयव वि [निरवयव] अवयव रहित, पूर्णता, सम्पूर्ण। (निय१४२)
णिरवसेस वि [निरवशेष] सम्पूर्ण, समस्त। धम्माइं करेई णिरवसेसाइ। (सू.१५)
णिरवेख वि [निरपेक्ष] अपेक्षारहित, लालसा रहित। (निय. ६०, प्रव चा २०,मो १२) जो देहे णिरवेक्खो। (मो.१२)
णिस्सल्ल वि [नि.शल्य] पीड़ा रहित, दु.ख रहित। (निय.८७)

णिरहकार वि [निरहकार] घमण्ड रहित, मृदुता, अहकार का अभाव। (बो ४८)

णिराउह वि [निरायुध] शस्त्रहीन, शान्तचित्त। (बो ५०)

णिरायार वि [निराकार] आकृति रहित, निर्दोष। (सू १९) परिगहरहिओ णिरायारो। (चा २१)

णिरालब वि [निरालम्ब] आश्रय रहित। (निय ४३)

णिरावेक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा रहित, नि स्पृह, इच्छारहित। पाच्च महाव्रतों से युक्त, पञ्चइन्द्रियों को वश मे करने वाला निरपेक्ष, नि स्पृह होता है। (बो ४३, ४७) व्रत एव सम्यक्त्व से विशुद्ध पञ्चेन्द्रियसयत इस लोक तथा परलोक सम्बधी भोग-परिभोग से नि स्पृह होता है। (बो २५) वयसम्मत्तविसुद्धे, पचेदियसजदे णिरावेक्खे। (बो २५)

णिरास वि [निराश] आशा रहित, तृष्णा रहित, उदासीन। (बो ४६) -**भाव** पु [भाव] निराशभाव। (बो ४९)

णिरुभ सक [नि+रुध्] निरोध करना, रोकना। णिरभित्ता (स कृ प्रव ज्ञे १०४)

णिरुच्च सक [निर्+वद्] कहना, बोलना। (द्वा ३९)

णिरुवम वि [निरुपम] उपमा रहित, असाधारण, अप्रमेय। (बो १२, २८)

णिरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप रहित, बन्ध रज से रहित। (प्रव चा १८) कमल व जले णिरुवलेवो।

णिरुवभोज्ज वि [निरुपभोग्य] भोग्य से रहित, आसक्ति रहित,

वासना रहित। (स.१७४, १७५)

णिरोध/णिरोह पु [निरोध] रुकावट, रोकना, बाधा। (पंचा १५०, स १९२, भा १०)

णिरोहण न [निरोधन] रुकावट। (भा २५)

णिलअ/णिलय पु [निलय] घर, स्थान, मकान। (बो ५०, भा.३३)

णिल्लोह वि [निर्लोभ] लोभरहित, शुचितायुक्त, पवित्र। (बो.४९)

णिवदिद वि [निपतित] नीचे गिरता हुआ,दृष्टिगत, गोचर हुआ। अत्थ अक्खणिवदिदं। (प्रव.४०)

णिवत्त [नि+वृत्] छोड़ना, लौटना, हटना। (स.७४, निय.५९) णिवत्तए/णिवत्तदे (व प्र ए)

णिवास पु [निवास] स्थान, रहना, जगह, निवास। (बो.५०) परकियणिलयणिवासा।

णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति], प्रत्यावर्तन, प्रवृत्ति का अभाव। (द्वा ७५)

णिव्वत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, रचित, अस्तित्वगुण को प्राप्त, मोक्ष अवस्था को प्राप्त। (स ६६, प्रव १०) णत्थि किरिया सहावणिव्वत्ता। (प्रव. ज्ञे.२४)

णिव्वा अक [निर्+वा] मुक्त होना। (प्रव. चा ३७)

णिव्वाण न [निर्वाण] मुक्ति, मोक्ष। (स ६४, निय २, प्रव ६, पचा १७०) -पुर न [पुर] मुक्तिधाम, मोक्षनगर। (पचा.७०) -सपत्ति स्त्री [सम्पत्ति] मुक्ति की प्राप्ति,मुक्तिरूपी वैभव। (प्रव ५) -सुह न [सुख] निर्वाणसुख, मोक्षसुख। (प्रव ११)

णिव्वाद वि [निर्वात] मुक्त, सिद्ध। (पचा.१०९) णिव्वादा

चेदणप्पगा दुविहा। (पचा १०९)

णिव्विअप्प वि [निर्विकल्प] सदेह रहित, सशय रहित। (निय १२१)

णिव्विदिगिंच्छ/णिव्विगिच्छ वि [निर्विचिकित्सित] आठ अङ्गों मे एक, निर्विचिकित्सित, घृणा रहित। जो जीव वस्तु के सभी धर्मों मे ग्लानि नहीं करता, उसे वास्तव मे निर्विचिकित्सित अङ्ग वाला कहा जाता है। (स २३१)

णिव्वियार वि [निर्विकार] विकार रहित, विशुद्ध। (बो ४९)

णिव्विस वि [निर्विष] विष रहित, विषहीन। (भा १३७) ण पण्णया णिव्विसा हुति। (स ३१७)

णिव्वुदि स्त्री [निर्वृत्ति] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति। (पचा १६९, स २०४, निय १३६) **-कम्म** पु [काम] मोक्ष का अभिलाषी। (पचा १६९) **-मग्ग** पु [मार्ग] मुक्तिपथ। णिव्वुदिमग्गो (निय १४१) **-सुह** न [सुख] मोक्षसुख। णिव्वुदिसुहमावण्णा। (स १४०)

णिव्वेद/णिव्वेय पु [निर्वेद] वैराग्य, मुक्ति की इच्छा, मोक्ष की ओर प्रवृत्ति। णिव्वेयसमावण्णो, णाणी कम्मप्फल वियाणेइ। (स ३१८) **-परम्परा** स्त्री [परम्परा] वैराग्य की परिपाटी। देवगुरूण भत्ता, णिव्वेयपरपरा विचितता। (मो ८२)

णिसा स्त्री [निशा] रात्रि, रात। **-यर** पु [कर] 1 चन्द्र, शशि। जिणमयगयणे णिसायरमुणिदो। (भा १५९) 2 पु [चर] राक्षस, चोर, तस्कर।

णिसेज्जा स्त्री [निषद्या] आसीन होना, बैठना, समवसरण मे आसीन होना। (प्रव.४४)

णिस्संक वि [नि शङ्क] शङ्का रहित। (स.२२९)

णिस्संकिय वि [नि.शङ्कित] शङ्कारहित, सम्यक्त्व का एक गुण। (चा ७)

णिस्सग वि [नि सङ्ग] 1 सङ्गरहित, बाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों प्रकार के परिग्रह या सङ्गति से रहित। मोक्षाभिलाषी निष्परिग्रह और ममत्व रहित होकर परमात्मस्वरूप मे लीन होता है। (पचा.१६९, बो ४८) 2 कषायादि से रहित।तं णिस्सग साहु। (स ज वृ १२५)

णिस्संसय वि [नि सशय] नि सदेह, सशयरहित। (स.३२६)

णिस्सल्ल वि [नि शल्य] शल्यरहित, जन्ममरण से रहित। (निय ४४)

णिस्सेस वि [नि शेष] समस्त, सम्पूर्ण। -दोसरहिअ वि [दोषरहित] समस्त दोषों से रहित, सिद्ध,मुक्त। (निय ७)

णिहण सक [नि+हन्] मारना, घात करना। नष्ट करना। (प्रव ८८) णिहणदि (व प्र ए प्रव ८८)।

णिहद वि [निहत] घात करने वाला, मारने वाला। (प्रव ९२) -घणघादिकम्म पु न [घनघातिकर्म] घातिया कर्मो को क्षय करने वाला। (प्रव ज्ञे १०५) -मोह पु [मोह] मोह का नाश करने वाला। (पचा १०४)

णिहार पु [निहार] निर्गम, शौच, उच्चार। आहारणिहारवज्जियं।

(बो ३६)

णिहि वि [निधि] भण्डार,खजाना। तह णाणी णाणणिहिं। (निय १५७)

णिहिल वि [निखिल] सम्पूर्ण, समस्त। (भा १२०)

णीर न [नीर] जल, पानी। (भा १९)

णीरय वि [नीरजस्] रज से रहित, कर्मफल से रहित सिद्ध, शुद्ध मुक्त, एगो सिज्झदि णीरयो। (निय १०१)

णीराग वि [नीराग] राग रहित, वीतराग। (निय ४३,४४)

णीरालब वि [निरालम्ब] आलम्बन रहित। (स २१४)

णु अ [नु] किन्तु। (स १२३) कह णु परिणामयदि कोहो।

णुय वि [नय] नमस्कृत, नमस्कार करने वाला। (भा ४५)

णे सक [नी] जाना, प्राप्त होना। णेदु (हि कृ स २२१) णेमि (व उ ए स ७३)

णेअ/णेय वि [ज्ञेय] जानने योग्य। (पचा ७८, प्रव ज्ञे ३८, निय ४८) -अंतगद वि [अन्तगत] जानने योग्य पदार्थों के अन्त को प्राप्त। (प्रव ज्ञे १०५) -भूद वि [भूत] ज्ञेयभूत, जानने योग्य होते हुए। (प्रव १५)

णेय वि [अनेक] अनेक प्रकार, कई। (स.८४) करेदि णेयविह।

णेरइय/णेरयिय वि [नैरयिक] नारकी, नरक सम्बन्धी, नरक मे उत्पन्न। (पचा ५५, स २६८, प्रव १२)

णेव अ [नैव] निषेध सूचक अव्यय, नहीं। (स ५२, प्रव २८) णेव य अणुभायठाणाणि। (स ५२)

णेह पु [स्नेह] 1. प्रेम, अनुराग। (स २४२) णेहे सव्वम्हि अवणिए सते। 2 चिकनाई, तैल। (स २३७) णेहभत्तो दु रेणुबहुलम्मि।

णो अ [नो] 1. नहीं, निषेध। (पचा ५२, स ५१) 2 वि [नव] नौ, सख्या विशेष।

ण्हा अक [स्ना] नहाना। ण्हाऊण (स कृ. बो २५)

ण्हाण न [स्नान] नहान, स्नान। (शी ३८, बो २५)

त

त स [तत्] वह। त (प्र ए) ज जाणइ त णाण। (स १४) त (द्वि ए सू १६) ते (प्र.ब.प्रव ३१) तेण (तृ ए.पचा १५७) सो तेण परिचत्तो। तेहिं (तृ ब पचा १६१) तस्स (च /ष ए स १२६, प्रव १७) ताण/ताण (च./ष ब भा १२८) तेसि/तेसि (च /ष.ब पचा.४५, नियं १३५, सू २४,२५) तम्हा (प ए.पचा.१६९) तासु (स ए नियं ५९) वाछाभाव णिवत्तए तासु। (नियं ५९)

तइय वि [तृतीय] तीन, सख्या विशेष। (द.१८, चा.२६)

तइलुक्कि न [त्रैलोक्य] तीन लोक। णिप्पण्ण जेहिं तइलुक्क। (पचा ५) ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक अधोलोक, ये तीन लोक है।

तइया अ [तदा] तो, तब, उसी समय। तइया सुक्कत्तण पजहे। (स.२२२) तइया अप्पेण दसण भिण्ण। (नियं १६३)

त अ [तत्] इसलिए, इस कारण। त पविसदि कम्मरय। (प्रव ज्ञे ९५) त णमसित्ता। (प्रव चा ७)

तक्क पु [तर्क] विचार। कि किचण त्ति तक्क। (प्रव.चा २४)

तक्काल क्रि वि [तत्काल] उसी समय। तक्काल तम्मयत्ति पण्णत्त। (प्रव ८)

तक्कालिय वि [तात्कालिक] उसी समय सम्बन्धी, वर्तमान, भूत एव भविष्यत् सबधी। ज तक्कालियमिदर। (प्रव ४७)

तच्च न [तत्त्व] सार, तत्त्व परमार्थ, यथार्थस्वरूप। केवलिगुणे थुणदि, जो सो तच्च केवलि थुणदि। (स २९) -ग्गहण न [ग्रहण] तत्त्वग्रहण। -तण्हु वि [तज्ज्ञ] वस्तु स्वरूप को जानने वाला। (पचा ४७, प्रव ज्ञे १०५) -रुइ स्त्री [रुचि] तत्त्वरुचि। तच्चरुई सम्मत्त। (मो ३८)

तण न [तृण] घास, तृण। (बो ४६)

तणू स्त्री [तनु] शरीर, काया। -उसग्ग पु [उत्सर्ग] शरीर त्याग, कायोत्सर्ग। निरन्तर आत्मा मे लीन हो, शरीर सम्बधी क्रियाओं से रहित होकर, वचन और मन के विकल्पों को रोकना कायोत्सर्ग है। (निय १२१) तणू+उसग्ग मे प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से स्वर से आगे स्वर होने पर शब्द के स्वर अर्थात् प्रारम्भ के शब्द के स्वर का लोप हो जाता है। (हि लुक् १/१०) -उत्सर्ग का उस्सग्ग प्राकृत रूप व्याकरण की दृष्टि से बनना चाहिए, परन्तु छन्द भङ्ग न हो, इसलिए ऐसा प्रयोग हुआ।

तण्हा स्त्री [तृष्णा] प्यास, पिपासा, बावीस परीषहों मे एक भेद। तण्हाए (तृ ए प्रव चा ५२) तण्हाहिं (तृ ब.प्रव ७५)

तत्तो अ [तत] उससे, उस कारण से। तत्तो अमिओ अलोओ ख। (पचा ३)

तत्थ अ [तत्र] वहां, उसमे। सिद्धा चिट्ठंति किध तत्थ। (पंचा.९२)
तदा अ [तदा] तब, उस समय। अप्परिणामी तदा होदि। (स.१२१)
तदिय वि [तृतीय] तीसरा। (भा.११४)
तदो अ [ततः] तब,तो,चूंकि। तदो दिवारत्ती। (पंचा.२५)
तध/तधा अ [तथा] तथा, और। तध सोक्खं सयमादा। (प्रव.६७) सिद्धो वि तधा णाणं। (प्रव.६८)
तम्मअ/तम्मय वि [तन्मय] उसी रूप, उसी प्रकार, तत्पर। (स.३४९-३५२, प्रव.८) जम्हा ण तम्मओ तेण। (स.९९) -त्त वि [त्व] उसी पर्यायरूप। (प्रव. ज्ञे.२२) तम्मयत्तादो (पं.ए.) पञ्चमी एकवचन मे दो प्रत्यय होता है और दो प्रत्यय होने पर पूर्व को दीर्घ हो जाता है।
तम्हा अ [तस्मात्] इसलिए, इसकारण। (स.२५७, २५८) तम्हा दु मारिदो दे। (स.२५७) तम्हा गुणपज्जया। (प्रव. ज्ञे.१२)
तय न [त्रय] तीन। (चा.२८) -गुत्ति स्त्री [गुप्ति] तीन गुप्तियां। मन, वचन, और काय को रोकना गुप्तियां है।
तर सक [तॄ] पार होना, तैरना। (पचा.१७२) भवियो भवसायरं तरदि।
तरण न [तरण] तिरना, पार होना। -हेदु न [हेतु] पार होने का कारण। संसारतरणहेदू, धम्मोत्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं। (भा.८५)
तरु पु [तरु] वृक्ष, पेड़। (भा.२१) -गण [गण] वृक्षसमूह। (भा.८२,लि.१६) वज्जं जह तरुगणाण गोसीरं। -रुहण न

[रोहण] वृक्ष पर आरोहण, वृक्ष पर चढ़ना। (भा २६) -हिट्ठ स्त्री [अधस्] वृक्ष के नीचे। (बो ४१)

तरुण वि [तरुण] युवक, जवान, तरुण। (स ७९)

तरुणी स्त्री [तरुणी] युवती, जवानस्त्री। (स १७४)

तल पु न [तल] तमालवृक्ष, ताड़ का पेड़। (स २३८)

तव पु न [तपस्] तप, तपस्या, तपश्चर्या। (पचा १७०, स १५२, प्रव १४, निय ५५, द २८) विषय और कषाय के विनिग्रह को करके ध्यान एव स्वाध्याय द्वारा आत्मा का चितन किया जाता है, वह तप है। विसयकसायविणिग्गहभाव, काऊण झाणसज्झाए। जो भावइ अप्पाण, तस्स तव होदि णियमेण।। (द्वा ७७) तप से सभी स्वर्ग प्राप्त होते है। सग्ग तवेण सव्वो वि । (मो २३) तप के बाह्य और अभ्यन्तर ये भेद किये गये है। इनके भी छह-छह भेद होते है। **-गुणजुत्त** वि [गुणयुक्त] तपगुण से युक्त। (शी ८) **-चरण/यरण** न [चरण] तपश्चरण,तपश्चर्या। (निय ५५,११८) तपश्चरण से अनन्तानन्त भवों के द्वारा उपार्जित शुभ-अशुभ कर्मसमूह नष्ट हो जाते है। (निय ११८) **-सामण्ण** पु [श्रामण्य] तपस्वी-श्रमण। वदमि तवसामण्णा। (द २८) तवेहिं (तृ ब स १४४) तवसा (तृ ए प्रव चा २८) तवहि (स ए पचा १६०)

तवोकम्म पु न [तप कर्म] तप कर्म, छह आवश्यक कर्मो मे एक भेद। (पचा १७२) जो कुणदि तवोकम्म।

तवोधण पु न [तपोधन] तपरूपी धन। जिणवयणगहिदसारा, विसयविरत्ता तवोधणा धीरा। (शी ३८)

तवोधिग वि [तपोधिक] तपश्चरण मे अधिक। सगिदकसायो तवोधिगो चावि। (प्रव.चा.६८)

तस पुं [त्रस] द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय जीव। (पचा ३९)

तस्संसग्ग वि [तत्संसर्ग] उसकी सगति। (स.१४९)

तस्सम वि [तत्सम] समान, सादृश्य। तस्सम समओ तदो परो पुव्वो। (प्रव.ज्ञे.४७)

तह/तहवि/तहा अ [तथा] उसी रूप, और,तथा,उसी प्रकार, यद्यपि, तो भी। (स.१८, २२१, २६४, निय.६८, प्रव.४, द.१०) तह कम्माणं वियाणाहि। (पचा ६६) तह वि य सच्चे दत्ते। (स.२६४) सव्वे भावा तहा होंति। (स.१३१)

ता अ [तत्] उससे,उस कारण से,तब,उस समय। (स.१४०, २६७) ता कम्मोदयहेदूहिं। (स.१३८) ता कि करोसि तुमं। (स.२६७)

ताम अ [तावत्] तब तक, वाक्यालङ्कार।

तारय पु [तारक] तारे, नक्षत्र। जह तारयाण चदो। (भा १४३)

तारा स्त्री [तारा] नक्षत्र, तारा। -आवलि स्त्री [आवलि] ताराओं की पङ्क्ति,ताराओ का समूह। तारावलिपरियरिओ। (भा.१५९) -यण वि [गण] तारागण, ताराओं के समूह। जह तारायणसहिय। (भा.१४५)

तारिय/तारिसअ/तारिसय वि,[तादृशक] वैसे ही, उसी प्रकार, उस तरह का। जीवो वि तारिसओ। (पचा.६२) जारिसया तारिसया।

(पचा ११३)

ताली स्त्री [ताली] ताड़ का वृक्ष, वृक्ष विशेष। (स २३८,२४३)

ताव/ताव अ [तावत्] तब तक, उतने समय तक। (स १९, २८५, निय ३६, भा १३१, लि ४) कुव्वइ आद ताव। (स २८५)

तावदि वि [तावत्] उतना। (प्रव ७०) भूदो तावदि काल।

तावदिअ वि [तावत्] उनमे, उतना। तावदिओ जीवाण। (पचा १९)

तावुद अ [तावत्] तब तक। अण्णाणी तावुद। (स ६९)

त्ति अ [इति] इस प्रकार, ऐसा। दुक्खिदसुहिदे करेमि सत्ते त्ति। (स २५३)

त्ति त्रि [त्रि] तीन, सख्या विशेष। (पचा १११) **-गुत्त** वि [गुप्त] तीन गुप्तिवाला। (प्रव चा ४०, निय १२५) **-गुणिद** वि [गुणित] तीन गुणा, तीन से गुणित। (प्रव ज्ञे ७४) **-जगवद** वि [जगवद] तीनों लोकों मे पूजित। सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, वीतरागी, अरहन्त तीनों लोकों मे पूजित होते है। तिजगवदा अरहता। (चा १) **-पयार** पु [प्रकार] तीन प्रकार। तिपियारो सो अप्पा। (मो ४) **-वग्ग** पु [वर्ग] तीन वर्ग, तीन समूह धर्म, अर्थ और काम। **-वियप्प** पु [विकल्प] तीन विकल्प, तीन प्रकार। अप्पाण तिवियप्प। (निय १२) **-विहसुद्धि** स्त्री [विधशुद्धि] तीन प्रकार की शुद्धि। मन, वचन और काय की शुद्धि। (भा १३५) परपरा तिविहसुद्धीए। (भा १३५)

तिण्हा स्त्री [तृष्णा] प्यास पिपासा, इच्छा। (निय १७९, भा २३)

तित्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, इच्छापूर्ति। (भा.२२)

तित्तिय वि [त्रि-त्रि] तीन-तीन का समूह।

तित्थ पु न [तीर्थ] 1. तीर्थ, तीर्थप्रवर्तक, सर्वज्ञवचन। (प्रव.१, बो २५) निर्मल, साम्यधर्म, सम्यक्त्व,संयम, तप और ज्ञान को जिन शासन मे तीर्थ कहा गया है। (बो.२६) -कर/यर पु न [कर] तीर्थङ्कर, सर्वज्ञ। (भा.७९) तीर्थङ्कर नामकर्म के उदय से जिसे समवसरणादि विभूति प्राप्त हो वह तीर्थङ्कर है। 2. न [तीर्थ] तट, घाट, नाव।

तिदिय वि [तृतीय] तीसरा। (निय.५८) -वद पु न [व्रत] तृतीयव्रत, तीसराव्रत, अचौर्यव्रत। जो ग्राम, नगर एव वन मे परकीय वस्तु को देखकर उसके ग्रहण के भाव को छोड़ता है, उसी के तीसरा अचौर्यव्रत होता है। (निय.५८) गामे वा णयरे वारण्णे वा, पेच्छिऊण परमत्थं। जो मुचदि गहणभावं, तदियवद होदि तस्सेव।। (निय.५८)

तिधा वि [त्रिधा] तीन प्रकार का। (प्रव.३६)

तिमिर न [तिमिर] अन्धकार, अंधेरा। (प्रव. ६७) -हर वि [हर] अज्ञान को हरण करने वाला। तिमिरहरा जइ दिट्ठी। (प्रव.६७)

तिय न [त्रिक] तीन का समुदाय। तियेह साहूण मोक्खमग्गम्मि। (स २३५) सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इत्यादि जैसे कोई भी तीन का समूह। -रण न [करण] तीन करण। मन-वचन और काय ये तीन करण है। तियरणसुद्धो अप्पं। (भा ११४) -लोय पुं [लोक] तीन लोक। ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक

और अधोलोक ये तीन लोक है। (भा ३३) तियलोयपमाणिओ सव्वो।

तिरिक्ख/तिरिय पु [तिर्यञ्च्] पशु-पक्षी आदि,तिर्यञ्च योनि। (पचा १६, भा ८)

तिरिच्छ पु [तिर्यञ्च्] पशु-पक्षी। तेण णरा तिरिच्छा। (प्रव ज वृ ९२)

तिरिय वि [तिर्यक्] वक्र, कुटिल, तिरछा, तिर्यक्। (स ३३४)

तिलतुसमित्त वि [तिलतुषमात्र] किंचित् भी,कुछ भी। (सू १८)

तिव्व वि [दे] तीव्र, कठिन। (स २८८, भा १२)

तिसा स्त्री [तृषा] प्यास, पिपासा। (भा ९३)

तिसट्ठि वि [त्रिषष्ठि] त्रेसठ, सख्याविशेष। (भा १४१)

तिसिद वि [तृषित] प्यासा, प्यासवाला। (पचा १३७) तिसिद बुभुक्खिद वा। (प्रव चा ज वृ २७)

तिहुअण/तिहुयण/तिहुवण न [त्रिभुवन] तीन लोक। (पचा १, प्रव ४८, चा ४१, भा २३) **-चूडामणि** पु स्त्री [चूडामणि] तीनों लोकों मे सिरमौर, तीनों लोकों मे श्रेष्ठ। तिहुवणचूडामणी सिद्धा। (चा ४१,भा ९३) **-भवणपदीव** पु [भवनप्रदीप] तीनों लोकों के घर (स्थान) के दीपक (प्रकाशस्तम्भ)। **-मज्झ** न [मध्य] तीनों लोकों के बीच। (भा २१) **-सलिल** न [सलिल] तीन लोक का जल। तिहुयणसलिल सयल पीय। (भा २३) **-सार** पु न [सार] त्रिलोक श्रेष्ठ, तीन लोक मे उत्तम। (भा ७८) पावइ तिहुवणसार।

तीद पु [अतीत] अतीत, भूतकाल। (निय.३१)

तु अ [तु] किन्तु,तो,उतना,और,ऐसा,कि,तथा,अथवा,या फिर ही पाद पूर्तिक अव्यय। (पंचा. २६, ८६, स.९, ३२, निय.३१) अणण्णभूद तु सत्तादो। (पंचा.९) सामाइयं तु तिविहं । (निय १०३)

तुम्ह स [युष्मद्] युष्मद्, तुम। युष्मद् शब्द को तुम्ह आदेश हो जाता है। तुम्ह एयं मुणंतस्स। (स.३४१) तुम्हं (च./ष.ए.) तुमं (प्र ए.स ३७४, भा ४१, मो.३५) तुहं (च/ष ए स.२५२,२५५,२५६) तुमे (प्र.ए.भा.२३,२४) पीयं तिण्हाए पीडिएण तुमे।तुमे यह रूप वैसे द्वितीया एकवचन मे बनता है, परन्तु यहा प्रथमा एकवचन मे भी इसका प्रयोग हुआ है।(हि.त तु तुम तुव तुह तुमे तुए अमा।३/९२)तुज्झ (च /ष ए स १२१) तुह (स ए भा १९) दे. (च./ष.ए.स.२५९) ते (च./ष ए भा.६,६९) ते (तृ ए. स. २४८, २४९, २५२, २५४) तए (तृ.ए स.२५१)

तुरिय वि [तुर्य] चतुर्थ,चौथा।तुरियं अबभविरई। (चा.३०) -व्वद-पु न [व्रत] चतुर्थव्रत,चौथा नियम,ब्रम्हचर्यव्रत।जो स्त्रियों के रूप को देखकर उनमें वाञ्छाभाव नही रखता एव मैथुन संज्ञा के परिणाम से रहित होकर परिणमन करता है, उसी को ब्रह्मचर्यव्रत होता है। (निय ५९)

तुस पु [तुष] धान्य का छिलका, भूसी। (शी.२४) -धम्मंत वि [धमत्] तुष को उड़ा देने वाला,सूप। तुसधम्मतबलेण। -मास पुं

[माष] छिलका सहित उडद दाल। तुममास घोसतो। (भा ५३)

तूस अक [तुष्] सतुष्ट होना, खुश होना, प्रसन्न होना। (स ३७३) तूसदि (व प्र ए स ३७३)

ते त्रि [त्रि] तीन। -इदिय न [इन्द्रिय] त्रीन्द्रिय, तीन इन्द्रिय। (पचा ११५) -काल पु [काल] तीन काल। भूत, भविष्यत् एव वर्तमान। तेकालणिच्चविसम। (प्रव ५१) -कालिक वि [कालिक] तीन काल सबधी। (प्रव ४८) ते चेव अत्थिकाया, तेकालियाभावपरिणदा णिच्चा। (पचा ६) -याला स्त्री न [चत्वारिंशत्] तेतालीस। (भा ३६) -रस/रह स्त्री न [दश] तेरह, त्रयोदश। (स ११०, बो ३१) तेरसकिरियाउ भावतिविहेण। (भा ८०) -लोक्क पु [लोक्य] तीन लोक। (पचा ७६) यहाँ पर लोक शब्द का लोक्क नहीं बना, अपितु जनप्रचलित लोक को लोक्य, जो बोलने मे आता है, वही है।

तेउ पु [तेजस्] आग, अग्नि, तेज,अग्निकाय विशेष। (प्रव ज्ञे ७५)

तेज पु [तेजस्] तेज, ताप, प्रकाश। सयमेव जधादिच्चो, तेजो उण्हो य देवदा णभसि। (प्रव ६८)

तेजयिअ वि [तेजयिक] तैजस शरीर विशेष। शरीर के भेदों मे तैजस भी एक भेद है। (प्रव ज्ञे ७९)

तेल न [तैल] तेल।मूगफली, विनोला, सोयाबीन या तिल से निकाला गया तरल पदार्थ। (निय २२)

तो अ [तदा] तब,तो,फिर भी, क्योंकि। (स १७, २२४, भा २२, द २६) तो सत्तो वत्तु जे। (स २५)

तोय न [तोय] जल, पानी। (शी.२८)

त्ति अ [इति] इस प्रकार, ऐसा। (पचा ५७, स १७०, प्रव.७)

थ

थण पु [स्तन] स्तन, कुच, पयोधर। (भा १८) -अंतर वि [अन्तर] स्तनों के मध्य। (सू.२४, प्रव चा ज वृ.२४) -च्छीर न [क्षीर] स्तन दुग्ध। पीयो सि थणच्छीरं। (भा.१८)

थल न [स्थल] भूमि, जमीन। (भा २१) -चर वि [चर] थलचर, भूमिपर चलने वाला। (पंचा.११७)

थावर पु [स्थावर] एकेन्द्रिय प्राणी, पृथिवी, जल,अग्नि, वायु और वनस्पति। (प्रव.ज्ञे ९०,द ३५) आचार्य कुन्दकुन्द ने चलनात्मक विवक्षा को आधार कर अग्नि और वायु को त्रस भी कहा है। (पचा १११) दर्शन पाहुड मे एक हजार आठलक्षणों और चौंतीस अतिशयों सहित जिनेन्द्र (अरहन्त) जब तक बिहार करते है, तब तक उन्हें स्थावर प्रतिमा कहा है। (द ३५) -काय पु [काय] स्थावर काय, एकेन्द्रिय जीव, स्थावर जीव। ये पाच है-पृथिवी, जल,तेज, वायु और वनस्पति। थावरकाया तसा हि कज्जजुद। (पचा ३९)-तणु स्त्री [तनु] स्थावर शरीर। (पचा १११)

थिर वि [स्थिर] स्थिर, निश्चल, दृढ। (स २०३, बो २२) -भाव पु [भाव] स्थिर भाव,दृढ़भाव। (निय.८५,८६) जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभाव।

थी स्त्री [स्त्री] महिला, नारी, स्त्री। (निय ४५,६७)

थुण सक [स्तु] स्तुति करना, पजना गणगान करना। केवलिगणे

थुणदि जो, सो तच्च केवलि थुणदि। (स २९) थुणदि (व.प्र ए) थुणित्तु (स कृ स २८) थुणिज्जइ (व कृ प्र ए मो १०३) थोस्सामि (भवि उ ए ती भ १)

थुद वि [स्तुत] पूजित, प्रशसित, जिसका गुणगान किया गया हो। केवलिगुणा थुदा होंति। (स ३०)

थुव्व सक [स्तु] स्तुति करना, अर्चना करना। थुव्वते (व कृ स ए स ३०) थुव्वतेहिं (व कृ तृ मो १०३)

थूल वि [स्थूल] मोटा, तगड़ा। (चा २३,२४, निय २१)अइथूल-थूल-थूल। (निय २१) पर्वत, पत्थर,लकड़ी आदि अतिस्थूल है। घी, तेल, जल आदि स्थूल है। धूप, प्रकाश आदि स्थूलसूक्ष्म है।शब्द और गन्ध आदि सूक्ष्मस्थूल है।इन्द्रिय अग्राह्य स्कन्ध सूक्ष्म है तथा परमाणु अतिसूक्ष्म है। इस तरह पुद्गल के छह भेद किये गये है।(निय २२)

थेय वि [स्तेय] चोरी, अपहरण। थेयाई अवराहे कुव्वदि। (स ३०१)

थोव वि [स्तोक] अल्प, थोड़ा, स्तोक। थोवो वि महाफलो होइ। (शी ६)

द

दडअ पु [दण्डक] दण्डक नामविशेष। -णयर न [नगर] दण्डक नगर। (भा ४९) दडअणयर सयल, डहिओ अब्भतरेण दोसेण। (भा ४९)

दत वि [दान्त] वश मे किया हुआ, दमन करने वाला।

(निय १०५) णिक्कसायस्स दतस्स, सूरस्स ववसायिणो। (निय १०५)

दति पु [दन्तिन्] हस्ति,हाथी।(निय ७३)पचिदियदतिप्पणिद्दलणा।

दस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दसेइ मोक्खमग्ग। (बो १३)

दसण पु न [दर्शन] 1 तत्त्व श्रद्धा, तत्त्वावलोकन, तत्त्वरुचि। 2 देखना, पहिचाना, पदार्थ का सामान्यावलोक। 3 जिनलिङ्ग, जिनमुद्रा। 4 रत्नत्रय।आचार्य कुन्दकुन्द ने दसण शब्द का प्रयोग अपने सभी ग्रन्थों मे किया है, किन्तु दर्शनपाहुड और बोधपाहुड मे यह विशेष पारिभाषिक शब्द के रूप मे प्रयुक्त हुआ है- जो सम्यक्त्वरूप, सयमरूप, उत्तमधर्मरूप, निर्ग्रन्थरूप एव ज्ञानमय मोक्षमार्ग को दिखलाता है, वह दर्शन है। दसेइ मोक्खमग्ग, सम्मत्त सजम सुधम्म च। णिग्गथ णाणमय, जिणमग्गे दसण भणिय।(बो १३)जो अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग---दोनों प्रकार के परिग्रह को छोड़,मन-वचन-काय से सयम मे स्थित हो,ज्ञान से एव कृत-कारित-अनुमोदना से शुद्ध रहता है तथा खडे होकर भोजन करता है वह दर्शन है। दुविहपि गथचाय,तीसुवि जोगेसु सजम ठादि। णाणम्मि करणसुद्धे,उब्भसणे दसण होई।। (द १४) दर्शनपाहुड मे ऐसा दर्शन ही धर्म का मूल,प्रधान कहा गया है।दसणमूलो धम्मो। (द २) जिस प्रकार वृक्ष,जड़ से शाखा आदि परिवार से युक्त कई गुणा स्कन्ध

उत्पन्न होता है, उसीप्रकार मोक्षमार्ग की वृद्धि दर्शन से होती है। (द ११) दर्शन से रहित की वदना नही करना चाहिए। दसणहीणो ण वदिव्वो। (द २) -उवओग पु [उपयोग] दर्शनोपयोग, पदार्थ का सामान्यावलोकन,निर्विकल्प ज्ञान।इसके दो भेद किये गये है। स्वभाव दर्शनोपयोग और विभावदर्शनोपयोग। जो इन्द्रियादि साधनो तथा पर पदार्थों की सहायता से निरपेक्ष मात्र दर्शन है, वह स्वभाव दर्शन है। (निय १४) और चक्षुर्दर्शन,अचक्षुर्दर्शन तथा अवधिदर्शन विभावदर्शन है।(निय १५)-धर पु [धर] दर्शन को धारण करने वाला,सम्यग्दृष्टि।(द १२)-भट्ट वि [भ्रष्ट] दर्शन से भ्रष्ट, दर्शन से च्युत।(द ३)दसणभट्टा भट्टा।यहा दर्शन का अर्थ सम्यग्दर्शन न कर ऊपर कहे विशेष पारिभाषिक शब्द के रूप में ग्रहण करना युक्ति सगत प्रतीत होता है। -भूद वि [भूत] दर्शनरूप। (प्रव ज्ञे १००) -मूल पु न [मूल]दर्शन का प्रधान, दर्शन का मुख्य,दर्शन का आधार। (द २)-मग्ग पु [मार्ग]दर्शनमार्ग। (द १) -मुक्क वि [मुक्त] दर्शन से मुक्त, दर्शन से रहित। दसणमुक्को य होइ चलसवओ। (भा ४२) -मुह न [मुख] दर्शन सहित।(प्रव चा १४)-मोह पु [मोह] दर्शनमोह,मोहनीय कर्म का अवान्तर भेद। (निय ५३) सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति मे अन्तरङ्गबाधक कारण दर्शनमोह है। -रयण पु न [रत्न] दर्शन रूपी रत्न।(द २१,भा १४६)-विसुद्ध वि[विशुद्ध] दर्शन से विशुद्ध षोडशकारण भावनाओं मे प्रथम भावना। (भा १४

-विहूण वि [विहीन] दर्शन से रहित।(शी.५) -सुद्ध वि[शुद्ध] दर्शन से शुद्ध, निर्मल दर्शन वाला।(शी १२) -सुद्धि वि [शुद्धि] दर्शन की शुद्धि, निर्दोष दर्शन, दर्शनविशुद्धि, सोलह कारण भावनाओं मे प्रथम। दसणसुद्धी य णाणसुद्धीय। (शी.२०) -हीण वि [हीन] दर्शन हीन, दर्शन से रहित। दंसणहीणो ण वंदिव्वो। (द २) जिस प्रकार स्वच्छ आकाश मण्डल मे ताराओं के समूह सहित चन्द्रमा का बिम्ब सुशोभित होता है, उसी प्रकार तप और व्रत से पवित्र दर्शन मय विशुद्ध जिनाकृति शोभित होती है। (भा १४५) दर्शन गुणरूपी रत्नों मे श्रेष्ठ तथा मोक्ष की पहली सीढ़ी है। (द.२१)

दट्ठ वि [दृष्ट] देखता हुआ, देखा हुआ। (भा.१५)

दट्ठ सक [दृश] देखना, अवलोकन करना। दट्ठु (हे कृ द २४) दट्ठूण (स कृ पचा.१३०, निय.५९, द.२५)

दड्ढ वि [दग्ध] जला हुआ। (भा १२५)

दढ वि [दृढ] मजबूत, कठोर। -करणणिमित्त न [करणनिमित्त] मजबूत करने मे कारण। (निय ८२) -सजम पु [सजम] दृढ़सयम। (बो.१८)

दत्त वि [दत्त] 1. दिया हुआ। (प्रव चा ५७) 2 न [दत्त] अचौर्य (स.२६४)

दप्प पु [दर्प] अहङ्कार, अभिमान, घमण्ड, गर्व। (निय.७३, भा १०२)

दम पु [दम] दमन, निग्रह, इन्द्रियजय। (शी १९) -जुत्त वि

[युक्त] दमनयुक्त, इन्द्रियनिग्रह से युक्त। (बो ५१)
दया स्त्री [दया] करुणा, दया, अनुकम्पा। (बो २४, भा १३२) कुरु दयपरिहरमुणिवर। यहा दय शब्द द्वितीया एकवचन मे है। -विसुद्ध वि [विशुद्ध] दया से विशुद्ध,दया से निर्मल।धम्मो दया-विसुद्धो। (बो २४)
दव सक [द्रव] प्राप्त होना। (पचा ९) दवियदि (व प्र ए)
दविण पु न [द्रविण] धन, पैसा, वैभव, सम्पत्ति। (प्रव ज्ञे १०१) देहा वा दविणा वा।
दविय न [द्रव्य]द्रव्य।जो भाव वस्तु के अपने-अपने गुण-पर्यायरूप स्वभाव को प्राप्त होता है तथा एक रूप मे ही व्याप्त होता है,वह द्रव्य है।(पचा ९)द्रव्य के तीन लक्षण दिये गये है-दव्व सल्लक्खणिय(सत्लक्षण)। उप्पादव्वयधुवत्तसजुत्त (उत्पाद, व्यय और ध्रौव्ययुक्त)।गुणपज्जायसय(गुण और पर्यायस्वरूप)। (पचा १०) समयसार मे कहा है-जैसे सोना अपने कगन आदि पर्याय से अभिन्न/एक रूप है वैसे ही द्रव्य अपने गुणों से तथा पर्यायों से अभिन्न है। (स ३०८) -भाव पु [भाव] द्रव्यभाव। (पचा ६)
दव्व न [द्रव्य] द्रव्य। (पचा ८५, स १०८, प्रव ३६, निय २६, बो २७, भा ३३, चा १८) -उवभोग पु [उपभोग] द्रव्य कर्म के उपभोग। (स १९६) -कालसभूद वि [कालसंभूत] द्रव्यकाल से उत्पन्न। (पचा १००) -जादि स्त्री [जाति] द्रव्यसमूह। (प्रव ३७) -ट्ठिअ वि [आर्थिक] द्रव्यार्थिकनय विशेष।

(प्रव ज्ञे २२) -णिग्गंथ वि [निर्ग्रन्थ] बाह्य परिग्रह का त्यागी। (भा.७२) -त्त वि [त्व] द्रव्यत्व, द्रव्यपना। (प्रव ८९) -त्थिअ वि [आर्थिक] द्रव्यार्थिक, नयविशेष। (निय १९) -भाव पुं [भाव] द्रव्य भाव, द्रव्य स्वभाव, द्रव्य की प्रकृति। (स.२०३) -मअ वि [मय] द्रव्यात्मक, द्रव्यमय, द्रव्यस्वरूप। (प्रव.ज्ञे १) -मित्त न [मात्र] द्रव्यमात्र, द्रव्यकर्म की सम्पूर्णता। (भा ४८) ण हु लिगी होइ दव्वमित्तेण। -लिग न [लिङ्ग] द्रव्यलिङ्ग, बाह्य चिह्न। (भा.४८) -लिगि वि [लिङ्गिन्] द्रव्यलिङ्गी, बाह्यवेष धारण करने वाला मुनि। (भा १३)-विजुत्त वि [वियुक्त] द्रव्य से रहित।(पचा १२)-सण्णा स्त्री [सज्ञा] द्रव्यसज्ञा, द्रव्यनाम। (पचा १०२)-सवण पु [श्रमण]द्रव्यश्रमण,द्रव्यमुनि, बाह्यवेषधारी मुनि।(भा ३३,१२१)द्रव्य के छह भेद हैं-जीव, पुद्गल,धर्म,अधर्म,आकाश और काल।इन छह द्रव्यों के आधार पर ही विश्व की रचना सभव है। छह द्रव्यों के समूह का नाम विश्व है। विस्तार के लिए पचास्तिकाय देखे।

दरि स्त्री [दरि] गुफा, कन्दरा, घाटी।(भा २१)

दरिसण न [दर्शन] मत, विचारधारा। (स ३५३)

दरीसण न [दर्शन] मत,दर्शन।(स ४६)ववहारस्स दरीसण-मुवएसो।

दस त्रि [दशन्] दश, सख्या विशेष। (पचा ७२, भा ३९, बो ३७) दस पाणा। (बो ३७) ड्डाणग वि [स्थानक] दश प्रकार दशभेद। (पचा.७२) पृथ्वी,जल,तेज,वायु,प्रत्येक वनस्पति, साधारण

वनस्पति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रय और पञ्चेन्द्रिय ये दश स्थान है। -पुव्वि क्रि वि [पूर्वम्] दशपूर्व। दसपुव्वीओ वि कि गदो णरय। (शी ३०) वियप्प पु [विकल्प] दश प्रकार,दशभेद। (भा १०५) विज्जवच्च दसवियप्प। -विह वि [विघ] दश प्रकार का।अबभ दसविह पमोत्तूण। (भा ९८)

दह त्रि [दश] दश सख्या विशेष। (बो० ३४)-प्राण पु [पाण] दश प्राण। पाँच इन्द्रिय, तीन बल, आयु और श्वासोच्छवास।

दा सक [दर्शय्] दिखलाना, दर्शन कराना। (स ५) जदि दाएज्ज पमाण। दाए (वि /आ.प्र ए) दाएज्ज (वि /आ उ ए)

दाण पु न [दान] दान, त्याग। (प्रव ६९,द्वा ३१) -रद वि [रत] दान मे तत्पर, दान मे सलग्न। (प्रव चा ६९)

दारा स्त्री [दारा] स्त्री,औरत। (मो १०)

दारिद्द न [दारिद्र] निर्धनता, दीनता। (बो ४७)

दारुण वि [दारुण] विषम, भयकर, भीषण। (भा ९)

दि सक [दा] देना। (पचा ६७,स २५२,२५५) दिंति (व.प्र ए द ९) दिंता (व कृ पचा ७) दिंतु (वि /आ प्र ब भा १६२)

दिक्खा स्त्री [दीक्षा] प्रब्रज्या, दीक्षा,सन्यास। (बो १५,१७,२५, भा ११०) ज देइ दिक्खसिक्खा। (बो १५)

दिट्ठ वि [दृष्ट] देखा हुआ,अवलोकित। (द ३०)

दिट्ठा स कृ [दृष्ट्वा] देखकर। (प्रव चा ५२,६१)

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] 1 नजर, दृष्टि। लोगालोगेसु वित्थडा दिट्ठी। (प्रव ६१,६७)2 सम्यग्दृष्टि, सम्यग्दर्शन। दिट्ठी अप्पप्पासया चेव।

(निय १६१)

दिढ वि [दृढ] मजबूत, स्थिर। (मो.४९,७०)

दिण पु न [दिन] दिवस। -यर पु [कर] सूर्य। (निय १६०) दिणयरपयासताव।

दिण्ण वि [दत्त] दिया हुआ। (सू.१७) दिण्णा परेण भत्त। (निय.६३)

दिय पु [द्विज] दन्त, दात। (भा ४०) दियसगट्ठियमसण।

दियह पु न [दिवस] दिन, दिवस। (मो.२१)

दिव न [दिव्] स्वर्ग, देवलोक। (भा.६५) पहीणदेवो दिवो जाओ।

दिवा अ [दिवा] दिन,दिवस। (प्रव ज्ञे २९,निय ६१) -रत्ति [रात्रि] दिनरात। तीस मुहूर्त के बीतने का नाम। (पचा.२५)

दिविज पु [दिविज] देव, देवता। (द्वा ४२)

दिव्व अक/सक [दिव्] क्रीड़ा करना। जत्तेण दिव्वमाणो। (लि १०)

दिव्व वि [दिव्य] स्वर्ग सम्बन्धी, स्वर्गिक। (भा ७४)

दिसि स्त्री [दिश्] दिशा।पूर्व, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण। (चा २५)

दिस्स सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। (मो.२९) दिस्सदे (व.प्र ए)

दीव पु [दीप]1 प्रदीप, दीपक, दिआ। (प्रव ६७, भा १२२) 2 पु [द्वीप] द्वीप, जिसके चारो ओर पानी भरा हो ऐसा भूभाग। (द्वा.४०) -अबुरासि वि [अम्बुराशि] द्वीप का जल समूह, द्वीप समुद्र। (द्वा.४०)

दीवायण पु [द्वीपायन] द्वीपायन नामक मुनि। (भा ५०)

दीस सक [दृश्] देखा जाना, अवलोकित किया जाना। (स ३११, ३२२) दीसइ/दीसए (कर्म व प्र ए) कर्मणि प्रयोग मे दृश् का दीस आदेश हो जाता है।

दीह वि [दीर्घ] लम्बा,अधिक,विस्तार। (भा ९९) -काल पु [काल] दीर्घसमय, अधिकसमय। (भा ९५) -ससार पु [ससार], दीर्घससार, जन्मजन्मातर। (भा ९९) जो जीव, यह मेरा पुत्र है, यह मेरी स्त्री है, यह मेरा धन-धान्य है, ऐसी तीव्र आकाक्षा करता है, वह दीर्घ ससार मे परिभ्रमण करता है। (द्व २४-३८)

दु अ [तु] और, तथा, किन्तु,परन्तु, लेकिन, ऐसा, तो, इसलिए, कि, फिर भी। (पचा ८९, स २५३,२१०,भा १८, मो ४) कालो दु पडुच्चभवो। (पचा २६) सो तेण दु अण्णाणी। (मो ५६)

दु अ [दुर्] खराब, बुरा, दुष्ट, अशुभ। (प्रव ज्ञे ६६,निय १०३, बो ३६,मो १६)

दुइय वि [द्वितीय] द्वितीय, दूसरा। (सू २१)

दुक्ख पु न [दु ख] पीडा, क्षोभ, व्यथा। (पचा १२२, स ७४, प्रव २०, निय १७८) जीव के साथ बधे हुए आस्रव अनित्य, अशरण और दु ख। (स ७४) आस्रवों की अशुचिता, और विपरीतता ही दु ख का कारण है।(स ७२)-क्खय वि [क्षय] दु खक्षय, दुख का नाश, दु ख रहित।(चा २०) -परिमोक्ख पु [परिमोक्ष] दु खों से पूर्ण मुक्ति, दु खों से अत्यन्त छुटकारा। (पचा १०३, प्रव चा १) -फल पु न [फल] दु खफल दु ख का

परिणाम,दु ख का प्रयोजन।दुक्खा दुक्खाफलाणि य।(स ७४) -मोक्ख पु [मोक्ष] दु.ख से मुक्ति। (पंचा १६५) -रहिय वि [रहित] दु.ख से रहित, दु ख से परे। (बो ३६) -संतत्त वि [सतप्त] दु ख से सतप्त,दुःख से पीड़ित । (प्रव ७५) आमरण दुक्खसतत्ता। -सहिस्स वि [सहस्र] हजारों दु ख। (प्रव.१२) दुक्खसहिस्सेहिं सदा।दुक्खा (प्र.ब स ७४)दुक्खाइ (द्वि ब भा.११) दुक्खेण (तृ ए भा १९)दुक्खस्स (च./ष ए स ७२) दुक्खादो (प ए पंचा १२२)

दुक्ख सक [दु खय्] दु'ख होना, दर्द होना। दुक्खाविज्जइ तहेव कम्मेहिं। (स ३३३) दुक्खाविज्जइ (प्रे व प्र.ए)

दुक्खिद वि [दु खित] दु.खयुक्त, दु'खी, पीड़ित, व्यथित। (स २५३-२५९) दुक्खिदसुहिदा हवति जदि जीवे। (स २५४)

दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल। (प्रव.ज्ञे ४९)

दुगइ स्त्री [दुर्गति] खोटी पर्याय, अशुभ पर्याय। (मो १६)

दुगंछा/दुगुंछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निंदा। जो दुगछा भय वेद। (निय १३२) णत्थि दुगुछा य दोसो य। (बो ३६)

दुगुण पु न [द्विगुण] दुगुना, स्निग्धता के दो अशों को धारण करने वाला। (प्रव ज्ञे ७४)

दुग्ग पु न [दुर्ग] किला, गढ़,कोट। (द्वा ९)

दुग्गध पु [दुर्गन्ध] दुर्गन्ध, खराब गन्ध, बदबू। (भा ४२)

दुच्चरित्त न [दुश्चरित्र] दुराचरण, दुष्ट प्रवर्तन, खराब आचरण। (निय १०३)

दुच्चित्त न [दुश्चित्त] अशुभमन, आर्तरौद्र ध्यानरूप मन। (प्रव ज्ञे ६६)

दुज्जण पु [दुर्जन] दुष्ट, खल। (भा १०७)

दुज्जय वि [दुर्जय] कठिनता से जीता जाने वाला, दुर्जेय। (भा १५५)

दुट्ठ वि [द्विष्ट] द्वेष युक्त, कुत्सित, दूषित, दुष्ट। (प्रव ज्ञे ६६)

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर। (स ३१७) -ज्झसिय वि [अध्युषित] दूध मे डुबाया हुआ। (प्रव ३०) दुद्धज्झसिय जहा सभासाए।

दुद्धी स्त्री [दुर्+धी] दुष्ट बुद्धि, दुर्बुद्धि। (भा १३८)

दुपदेस वि [द्विप्रदेश] दो प्रदेश वाला, दो अवयव वाला। जो परमाणु द्वितीयादि प्रदेशों से रहित, एक प्रदेश मात्र है, स्वय शब्द से रहित स्निग्ध और रूक्ष गुण धारक द्विप्रदेशादिपने का अनुभव करता है। (प्रव ज्ञे ७१)

दुप्पउत्त वि [दुष्प्रयुक्त] दुरुपयोग वाला, असत् क्रियाओं मे आसक्ति रखने वाला, असत् क्रियाओं मे लीन। (पचा १४०)

दुब्भाव पु [दुर्भाव] असत्भाव, खोटे परिणाम। (द्वा ८०)

दुम पु [द्रुम] वृक्ष, पेड। (द १०) जह मूलम्मि विणट्ठे, दुमस्स परिवार णत्थि परिवड्ढी।

दुम्मअ वि [दुर्मत] मिथ्यामत, आगम या आप्त से विपरीत मान्यता। दुम्मएहिं दोसेहिं। (भा १३८)

दुम्मेह वि [दुर्मेधस्] दुर्बुद्धि, दुर्मति, मिथ्यामति वाला। (स ४३) परमप्पाण वदति दुम्मेहा।

दुराधिग/दुराधिय वि [द्वि+अधिक] दो से अधिक, दो अधिक। (प्रव ज्ञे ७३) समदो दुराधिगा जदि वज्झंति हि आदि परिहीणा।

दुल्लह वि [दुर्लभ] कठिनाई से प्राप्त होने वाला, दु ख से प्राप्त होने वाला। (द १२) बोही पुण दुल्लहा तेसि।

दुविध वि [द्विविध] दो प्रकार का। (पचा ४७)

दुवियप्प पु [द्विविकल्प] दो भेद, दो प्रकार। (निय १४,१६,२०, पचा.७१)

दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का, दो रूप वाला। (पचा ४०, स ८७, द १४) उवओगो खलु दुविहो। (पचा ४०) -धम्म पु न [धर्म] दो प्रकार का धर्म दो प्रकार का स्वभाव। (भा १४३) -पयार पु [प्रकार] दो प्रकार। दुविहपयार बधइ। (भा ११८) -पि अ [अपि] दोनो ही। दुविह पि गथचाय। (द १४) -सुत्त न [सूत्र] दो प्रकार के सूत्र, दो प्रकार के श्रुत, दो प्रकार के आगम। अर्थ और शब्द की अपेक्षा सूत्र, आगम या श्रुत दो प्रकार का है। (सू ३)

दुस्स सक [द्विष्] द्वेष करना। (प्रव चा ४३) दुस्सदि (व प्र.ए)

दुस्सुदि स्त्री [दु श्रुति] मिथ्याश्रुति, मिथ्याशास्त्र का श्रवण, आप्त कथित अर्थयुक्त शास्त्र को न सुनना। (प्रव ज्ञे ६६)

दुस्सील वि [दुश्शील] दु शील, शील से रहित। (द १६,१७)

दुह पु न [दु ख] कष्ट, पीड़ा,क्लेश। (भा.१४,१२६,मो ६२) दुहाइ (द्वि ब भा १२६) दुहे ज्जादे विणस्सदि। (मो.६२)

दुह सक [दु खय्] दु.खी करना, पीड़ित करना। (स २५७,२५८)

तम्हा दु मारिदो दे दुहाविदो।

दुहि वि [दु खिन्] दु खी,पीड़ित। (स ३५५)

दुहिद वि [दु खित] दु खी, पीड़ित। (पचा १३७, स ३८९, प्रव ७५)

दूर न [दूर] अनिकट, असमीप। -तर वि [तर]अत्यन्त दूर, बहुत दूर। दूरतर णिव्वाण। (पचा १७०)

दूस सक [दूषय्] दोष लगाना, दूषित करना। (लि १७) महिलावग्ग पर च दूसेदि। दूसेदि (व प्र ए)

दूसिय वि [दूषित] दूषणयुक्त, कलङ्कयुक्त। (भा १०१)

दे सक [दा] देना, प्रदान करना। (स २२५, बो १५) देऊ (वि /आ प्र ए भा १५१) देऊ मम उत्तम बोहिं। देदु (हे कृ.प्रव ज्ञे ४८) देदि (व प्र ए पचा ६३, स २२४) देंति (व प्र ब पचा ११०)

देव पु न [दिव], अमर, सुर। (पचा ११८,स २६८,प्रव ६,मो १, भा १३) 2 देवपर्याय,देवगति। (पचा १८,१९)

देवद न [दैवत] देव, देवता। (प्रव ६९,७४) देवदजदिगुरुपूजासु

देवदा स्त्री [दिवता] देवता, देव। तेजो उण्हो य देवदा णभसि। (प्रव ६८)

देस पु [दिश] 1 देश, जनपद। (प्रव चा ४३) 2 प्रदेश, स्थान, क्षेत्र। (निय ३६) अणतय हवे देसा।

देसय वि [दिशक] उपदेशक, प्ररुपक। (निय ७४) जिणकहियपयत्थदेसया सूरा।

देशविरद वि [देशविरत] श्रावक, उपासक, पञ्चमगुणस्थानवर्ती। देशविरत श्रावक के ग्यारह भेद है- दर्शन, व्रत, सामायिक, प्रोषध, सचित्तत्याग, रात्रिभुक्तित्याग, ब्रह्मचर्य, आरम्भत्याग, परिग्रहत्याग, अनुमतित्याग और उद्दिष्टत्याग। (चा २२)

देसिद वि [दर्शित] बताए गए, दिखलाए गये। (स.३०९) जे परिणामा दु देसिदा सुत्ते।

देसिय वि [देशित] उपदिष्ट, उपदेशित, कथित, प्रतिपादित। सव्वं बुद्धेहि देसिय धम्म। (लि.२२)

देह पु न [देह] शरीर, काय। (पचा.१२९,स २६,प्रव.७१, मो १२) **-अंतरसंकम** वि [अन्तरसक्रम] अन्यपर्याय का सम्बन्ध। (प्रव ज्ञे ७८)**-उब्भव** वि [उद्भव] शरीर से उत्पन्न। (प्रव ७८) **-उड** पु न [पुट] शरीर रूपी पात्र। चितेहि देहउड। (भा.४२) **-उडी** स्त्री [कुटि] शरीररूपी कुटिया। (भा १३१) रोयग्गी जा ण डहइ देहउडिं। **-गद** वि [गत] शरीरगत्त, शरीर को प्राप्त। (प्रव २०) **-गुण** पु न [गुण]शरीर गुण, शरीर के गुण। देहगुणे थुव्वते। (स ३०) **-णिम्मम** वि [निर्मम] शरीर के प्रति ममत्व न होना , शरीर के प्रति अनुराग न होना, देह प्रेम न होना। देहणिम्ममा अरिहा। (स ४०९)**-त्थ** वि [स्थ] शरीरस्थ, शरीर मे रहता हुआ। देहत्थ कि पि त मुणह। (मो १०३) तह देही देहत्थो **-दविण** न [द्रविण] शरीर और धन। (प्रव ज्ञे ९८) **-पधाण** वि [प्रधान] शरीर की मुख्यता, जिसमे शरीर की प्रधानता है। (प्रव ज्ञे ५८) देहपधाणेसु विसयेसु। **-प्पवियारमस्सिद** वि

[प्रवीचारमाश्रित] शरीर के परिवर्तन को प्राप्त, एक के बाद एक शरीर को प्राप्त। (पचा १२०) देहप्पविचारमस्सिदा भणिदा। -मत्त न [मात्र] शरीर मात्र, शरीर प्रमाण, स्वदेह प्रमाण। (पचा २७) -विहूण वि [विहीन] शरीर रहित। देहविहूणा सिद्धा। (पचा १२०)

देहि पु [देहिन्] आत्मा, जीव। (पचा १७,३३,प्रव ६६) तह देहि देहत्यो। (पचा ३३)

दो त्रि [द्वि] दो, सख्या विशेष। (पचा ८१, स १८७) दो किरियावादिणो होइ। (स ८६) दोण्णि (द्वि ब स ६५) दोण्ह (च /ष ब स ८१, पचा १२) -वि अ [अपि]दोनो ही (पचा ८७, १३७,१३९) दो वि य मया विभत्ता। (पचा ८७)

दोस पु [दोष] 1 दोष, दूषण, दुर्गुण। पुग्गलदव्वस्स जे इमे दोसा। (स २८६) 2 पु [द्वेष] द्वेष, कलह। रायम्हि य दोसम्हि य। (स २८१) -आवास पु [आवास] दोषो का घर। (भा ७१) दोसावासो य इच्छुफुल्लसमो। -कम्म पु न [कर्मन्] दोषकर्म, राग द्वेष, मोहकर्म। (बो २९) हतूण दोसकम्मे। -विरहिय वि [विरहित] दोषो से रहित,पूर्वापर दोष से रहित।पुव्वापरदोस-विरिहिय सुद्ध। (निय ८)

दोहग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, मन्दभाग्य, दुर्भाग्य। (शी २३)

ध

धण न [धन] सम्पत्ति, धन, वैभव। (पचा ४७, बो ४५, द्वा ३१) धणधण्णवत्थदाण।

घणुह पुं न [धनुष्] धनुष, चाप। (बो.२२)

धण्ण न [धान्य] 1. धान, अनाज। (बो.४५, द्वा.३१) 2. वि [धन्य] भाग्यशाली, भाग्यवान्, प्रशसनीय। ते धण्णा ताण णमो। (भा १२८)

धम्म पु न [धर्म] 1.धर्म, शुभाचरण, शुभप्रवृत्ति। आत्मा की निर्मल परिणति का नाम धर्म है। धर्म समता है, जो राग, द्वेष और मोह से रहित है। (प्रव. ६,७) धर्मरूप परिणत आत्मा धर्म है। धम्मपरिणदो आदा धम्मो। (प्रव.८) दर्शनपाहुड में दर्शन धर्म का मूल कहा गया है। (द.२) बोधपाहुड मे धम्मो दयाविसुद्धो कहा गया है। इसका अभिप्राय यह है कि, प्राणीमात्र के प्रति समभाव, प्राणीमात्र को आत्मवत् समझना, करुणाधर्म है। (बो.२४) मोक्षपाहुड मे प्रवचनसार की तरह चारित्र को धर्म कहा गया है, वह धर्म आत्मा का समभाव है और यह समभाव जीव का अभिन्न परिणाम है। (मो ५०) -उवदेस पुं [उपदेश] धर्म उपदेश, सिद्धान्तबोध, आत्मज्ञान। (प्रव ४४)-उवदेसि वि [उपदेशिक] धर्मोपदेशिक। (चा.भ १) -कहा स्त्री [कथा] धर्मकथा। (श्रु.भ.अ.) -ज्झाण न [ध्यान] धर्मध्यान। (निय.१२३, मो.७६) -णिम्ममत्त वि [निर्ममत्व] धर्म से निर्ममत्व। (स.३७) -परिणद वि [परिणत] धर्म परिणत। (प्रव.८) -संग पुं न [सङ्ग] धर्मसम्बन्ध। (स.ज वृ १२५) -संपत्ति स्त्री [सम्पत्ति] धर्मरूपी सम्पत्ति, धर्मवैभव। -सील न [शील] धर्मशील, धार्मिक। (द.९) 2 पुं न [धर्म] एक अरूपीपदार्थ, जो जीव एवं

पुद्गल को गति करते हुए मे सहायक है। रस, वर्ण, गन्ध, शब्द एव स्पर्शरहित, समस्त लोक मे व्याप्त,अखण्डप्रदेशी, परस्पर व्यवधान रहित, विस्तृत और असख्यातप्रदेशी है। स्वय गति क्रिया से युक्त जीव एव पुद्गलों को गति करने मे जो सहकारी होता है, किन्तु स्वय निष्क्रिय ही है। जिस प्रकार लोक मे जल मछलियों के गमन करने मे अनुग्रह करता है उसी तरह धर्मद्रव्य जीव और पुद्गल द्रव्य के गमन मे अनुग्रह करता है। (पचा ८४, ८५) -अत्थिकाय पु [अस्तिकाय] धर्मास्तिकाय। (पचा ८३, प्रव ज्ञे २६, निय १८३) -च्छि पु [अस्ति] धर्मास्तिकाय। (स ज वृ २११) -दव्व पु न [द्रव्य] धर्मद्रव्य। (प्रव ज्ञे ४१)
3 पु [धर्म] धर्मनाथ, पद्रहवे तीर्थङ्कर का नाम। (ती भ ४)

धम्मिग वि [धार्मिक] धर्मतत्पर, धर्मपरायण, धर्मवत्सल। (प्रव चा ५९) समभावो धम्मिगेसु सव्वेसु।

धर सक [धृ] धारण करना। धरइ (व प्र ए निय ११६) धरहि (वि /आ म ए भा ८०) धरवि (अप स कृ मो ४४) तिहि तिण्णि धरवि णिच्च। धरेह (वि /आ म ए भा १४६, द २१) धरु (वि /आ म ए निय १४०) धरिदु (हि कृ पचा १६८,निय १०६, द्वा ८०) धरिदु जस्स ण सक्क। (पचा १६८)

धर वि [धर] धारण करने वाला। (भा १४४)

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि। (निय २१)

धरिय वि [धरित] धारण किए हुए, पकड़े हुए। (प भ १)

धवल वि [धवल] सफेद, श्वेत, सित। गोखीरसखधवल। (बो ३७)

धाउ पु [धातु] धातु। पृथ्वी,जल, तेज, और वायु ये चार धातु/महाभूत है।धाउचउक्कस्स पुणो। (निय.२५)

धादा वि [ध्याता] ध्यान करने वाला। मोहजन्य कलुषता से रहित, पञ्चेन्द्रिय विषयों से विरत, मन को स्थिर कर निज स्वभाव में सम्यक् प्रकार से स्थित व्यक्ति ध्याता कहलाता है। (प्रव ज्ञे.१०४) जो खविदमोहकलुसो, विसयविरत्तो मणो णिरुभित्ता। समवट्ठिदो सहावे, सो अप्पाण हवइ धादा।।

धादु पु [धातु] देखो धाउ। (पचा.७८, द्वा ३५)

धार सक [धारय्] धारण करना, रखना। (स.१५३, प्रव.ज्ञे.५८, लि.१४) धारदि (व.प्र ए.प्रव.ज्ञे ५८) (व.प्र.ए.स.१५२) धारता (व कृ स १५३) धारतो (व.कृ.लि १५)

धारण न [धारण] ग्रहण, अवलम्बन, प्रयोग। (स.३०६, भा.२६)

धारणा स्त्री [धारणा] धारणा,मति ज्ञान का एक भेद। (आ.भ.९)

धाव सक [धाव्] दौड़ना। उप्पडदि पडदि धावदि। (लि.१५)

धीर वि [धीर] धीर, धैर्यवान्, सहिष्णु, ज्ञानी। (पंचा.७०, निय ७३, भा २४, चा.२०) ते धीर-वीरपुरिसा, खमदमखग्गेण विप्फुरतेण। (भा.१५५)

धुद वि [धुत] त्यक्त, परित्यक्त, त्याज्य। (नि.भ.२) -किलेस पुं [क्लेश] दु.ख रहित, बाधा रहित। (नि.भ.२)

धुव वि [ध्रुव] निश्चल, स्थिर, नित्य, शाश्वत्, स्थायी। (प्रव.२४, मो ६०,बो.१२)धुवमचलमणोवमं पत्ते।(स.१)-त्त वि [त्व]

ध्रुवत्व, नित्यपना। (प्रव ज्ञे.४)

धूव पु [धूप] धूप, सुगन्धित पदार्थ, देवपूजा के योग्य सुगन्धित पदार्थ। (नि भ अ ,न भ अ)

धोद वि [धौत] धो देने वाला, नष्ट करने वाला। (प्रव १)

धोव्व वि [ध्रुव] नित्य, शाश्वत्। (प्रव ८)

प

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] धारणा, स्थापना, प्रतिष्ठा मान,गरिमा, एक समिति का नाम । (निय ६५)

पइण्ण न [प्रकीर्ण] प्रकीर्णक, आगम ग्रन्थ। (श्रु भ अ)

पईव पु [प्रदीप] दीपक, दिया। (भा.१२२)

पउम न [पद्म] कमल, अरविन्द। (पचा ३३) -रायरयण पु न [रागरत्न] पद्मरागमणि। (पचा ३३) -प्पह पु [प्रभ] पद्मप्रभ, छटवे तीर्थङ्कर का नाम। (ती भ ३)

पउर वि [प्रचुर] बहुत, अधिक, प्रचुर। (मो ९५)

पएस पु [प्रदेश] प्रदेश, स्थान। (भा ३६, ४७)

पच त्रि [पञ्चन्] पाच, सख्या विशेष। -आचार पु [आचार] पचाचार। दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तप आचार और वीर्याचार।(निय ७३)-इदिय/एदिय न [इन्द्रिय] पाच इन्द्रिया। स्पर्शन,रस,घ्राण,चक्षु और कर्ण। (बो ४३,२५,निय ७३, भा २९) -चेल न [चेल] पाच वस्त्र, पाच प्रकार के वस्त्र। जे

पचचेलसत्ता। (मो.७९) कोशा, सूती, ऊनी, सन या जूट से निर्मित तथा चमड़े से बने। -त्थी अ [अस्ति] पञ्चास्ति, पचास्तिकाय। (द.१९) -पयार वि [प्रकार] पांच भेद। (भा.१०४) परमेट्ठी वि [परमेष्ठिन्] परमेष्ठी, अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। (पं.भ ७)-महव्वयजुत्त वि [महाव्रतयुक्त] पाच महाव्रतों से युक्त। (सू.२०,बो.४३)-महव्वयधारि वि [महाव्रतधारिन्]पाच महाव्रत को धारण करने वाला, मुनि। (बो.५) -महव्वयसुद्ध वि [महाव्रतशुद्ध] पांच महाव्रतों से शुद्ध। (वो.७) -वय पुं न [व्रत] पांचव्रत। (चा:२८)विंसकिरिया स्त्री [विंशत्क्रिया] पच्चीस क्रियायें। (चा.२८) -विह वि [विध] पाच प्रकार।(भा.८१, बो.३०) -समिदि स्त्री [समिति] पाच समितिया। (चा २८) ईर्या,भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापन। (चा.३७)

पचम वि [पञ्चम] पांचवा। -य वि [क] पञ्चमक, पाचवा। (चा.३०)-वद पु न [व्रत] पाचवाव्रत,परिग्रहत्यागव्रत। निरपेक्ष भावना पूर्वक मान-सम्मान की इच्छा न रखते हुए समस्त परिग्रहों का त्याग करना परिग्रहत्यागमहाव्रत है। (निय.६०)

पंचाणण पु [पञ्चानन] सिंह, शेर। (पं.भ.४)

पचिंदिय/पंचेंदिय वि [पञ्चेन्द्रिय] पाच इन्द्रियों से युक्त जीव,जाति नाम कर्म का एक भेद। -संवर पु [सवर] पंचेन्द्रिय सम्बधी कर्म निरोध। (चा.२९) -संवरण न [सवरण] पञ्चेन्द्रिय निरोध।

(चा २८)-सजद वि [सयत] पचेन्द्रिय विजयी, पाच इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला। (बो.२५) -सवुड वि [सवृत] पाच इन्द्रियों को रोकने वाला। (प्रव चा ४०)

पडु पु [पाण्डु] पाण्डु, पाण्डव। -सुअ पु [सुत] पाण्डुसुत, पाण्डवपुत्र—युधिष्ठिर,भीम,अर्जुन।(नि भ ७)

पथ पु [पन्थन्] मार्ग, पथ, रास्ता। पथे मुस्सत। (स ५८)

पथिय पु [पन्थिक] पथिक, राहगीर। (भा ६)

पुवेद पु [पुवेद] पुलिङ्ग। (सि भ ६)

पकुव्व सक [प्र+कृ] करना। उप्पादवए पकुव्वति। (पचा १५, ४४)

पक्क वि [पक्व] पका हुआ, परिपक्व। (स १६८) पक्के फलम्हि पडिए।

पक्ख पु [पक्ष] 1 तर्कशास्त्र मे प्रसिद्ध अनुमान प्रमाण का एक अवयव, नय पक्ष। (स १४२) अतिक्कत वि [अतिक्रान्त] पक्ष से अतिक्रान्त, पक्ष से दूरवर्ती। (स १४२) पक्खातिक्कतो पुण। 2 पख। 3 पक्ष, पन्द्रह दिन का एक पक्ष होता है। (पचा २५)

-खवण न [क्षपण] पक्षोपवास, व्रत विशेष। (यो भ अ)

पक्ख सक [प्र+वद्] कहना। (निय ५४)

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण, सर्वथा नष्ट, अतीन्द्रिय, घातिया कर्मो से रहित। पक्खीणघादिकम्मो। (प्रव १९)

पगद वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिकृत, उत्तमवस्तु। (प्रव चा ६१) दिट्ठा पगद वत्थु।

पगरण न [प्रकरण] अधिकार, प्रासगिक, प्रासगिक कार्य।

(स १९७) परगणचेट्ठा कस्सवि।

ागासग वि [प्रकाशक] प्रकाश करने वाला, प्रकाशक। (पचा.५१)

चोदिद वि [प्रचोदित] प्रेरित,प्रेरणा को प्राप्त।पवयण-भत्तिप्पचोदिदेण मया। (पचा १७३)

च्चक्ख न [प्रत्यक्ष] इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना उत्पन्न होने वाला ज्ञान, विशद, निर्मल। (प्रव.२१, ३८, सू ४) मूर्त, अमूर्त, चेतन, अचेतन, स्व एव पर द्रव्य को देखने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष है, अतीन्द्रिय है। मुत्तममुत्त दव्व, चेदणमियर सग च सव्व च। पेच्छतस्स दु णाण,पच्चक्खमणिदिय होइ।।(निय १६७)

च्चक्खा सक [प्रत्या+ख्या] त्यागना, छोड़ना, निराकरण करना। (स ३४) पच्चक्खाई परे त्ति णादूण। पच्चक्खाइ (व प्र ए)

पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान]1 प्रत्याख्यान, त्याग करने की प्रतिज्ञा। (स ३४,निय १००,भा ५८)2 आगम ग्रन्थ, नवम पूर्व। (श्रु.भ.६)

पच्चय पु [प्रत्यय] 1. प्रत्यय, कारण, प्रतीति, ज्ञान, बोध, निर्णय। (स ११५)पच्चयणोकम्मकम्माण।(स ११४) 2 व्याकरण प्रसिद्ध प्रकृति मे लगने वाला शब्द विशेष।(स ११२) 3 बन्ध का कारण, हेतु,निमित्त। (स.१०९)

पच्चूस पु [प्रत्यूष] प्रात काल, प्रभात। (नि भ अ)

पच्छण्ण वि [प्रच्छन्न] गुप्त, अप्रकट, आच्छादित, ढका हुआ। (प्रव ५४)

पच्छा अ [पश्चात्] पीछे, अनन्तर। (भा ७३)

पजपिय वि [प्रजम्पित] कथित। (मो ३८)

पजह सक [प्र+हा] त्याग करना,छोड़ना। (प्रव ज्ञे २०) पजहे (वि /आ प्र ए स २२२) पजहिदूण (स कृ स २२३)

पज्जअ/पज्जय पु [पर्यय] पर्यय, क्रम, परिपाटी। (पचा ५, १६, स ३०८, प्रव ४१) देव, मनुष्य, नारकी और तिर्यञ्च ये जीव की पर्यायें है। (पचा १६) **-ट्ठिअ** वि [आर्थिक] पर्यायार्थिक, नय विशेष। पर्यायार्थिकनय से वस्तु या द्रव्य अन्य-अन्य रूप होता है। (प्रव ज्ञे २२) **-त्त** वि [त्व] पर्यायत्व। (प्रव ८०) **-त्थ** वि [अर्थ] पर्यायार्थिक। (प्रव ज्ञे १९) **-मूढ** वि [मूढ] पर्यायमूढ़, पर्याय मे मुग्ध। **-विजुद** वि [वियुक्त] पर्याय रहित। (पचा १२) पज्जयविजुद दव्व।

पज्जत्त न [पर्याप्त] कर्म विशेष, नाम कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव छहों पर्याप्तियों से युक्त होता है। (स ६७)

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] पर्याप्ति, कर्मविशेष। (बो ३३,३६) आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छवास, भाषा और मन, ये छह पर्याप्तिया है।

पज्जल अक [प्र+ज्वल्] जलना, दग्ध होना। (भा १२२)

पज्जाअ/पज्जाय पु [पर्याय] पर्याय, परिणमन, पदार्थस्वभाव। (पचा ११)देव की उत्पत्ति एव मनुष्य का मरण होना, यही पर्याय-परिणमन है। (पचा १८) प्रवचनसार मे इसी बात को इस तरह कहा गया है---उप्पादो य विणासो, विज्जदि सव्वस्स अत्थजादस्स। पज्जाएण दु केण वि, अत्थो खलु होदि सब्भूदो।

(प्रव १८)

पज्जालण वि [प्रज्वालन] जलाने वाला, जलाने योग्य। (प भ ६)

पज्जुण्ण पुं [प्रद्युम्न] प्रद्युम्न,एक मुनि विशेष। (नि भ ५)

पढमाणुओग पु [प्रथमानुयोग] ग्रन्थ विशेष, प्रथमानुयोग। (श्रु भ ४,श्रु भ.अ)

पड पु [पट] वस्त्र, कपडा। (स ९८, १००) जीवो ण करेदि घड, णेव पड।

पड अक [पत्] पडना, गिरना। जे वि पडति च तेसिं। (द १३)

पडि अ [प्रति] 1 निषेध, उपसर्ग विशेष। पडिवज्जदु (प्रव चा ५२) 2 निकटता, समीपता। पडिसरण (स ३०६)

पडिअ वि [पतित] गिरा हुआ, च्युत।(भा ४९)पक्के फलम्हि पडिए। (स १६८)

पडिकमण/पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] प्रमाद से किये हुए पाप का पश्चात्ताप, छह आवश्यकों मे एक भेद, जैन मुनि एव गृहस्थों द्वारा सुबह एव शाम को किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान। (निय ९४) जो उन्मार्ग को छोडकर जिनमार्ग मे स्थिर भाव करता है, उसे प्रतिक्रमण होता है। (निय.८६)

पडिक्कम अक [प्रति+क्रम्] पीछे की ओर चलना, प्रतिक्रमण करना, पापों का पश्चात्ताप करना। (स ३८६) णिच्च य पडिक्कमदि जो।

पडिच्छ सक [प्रति+इष्] ग्रहण करना, मानना, चाहना। (प्रव ६२) भव्वा वा त पडिच्छति। पडिच्छति (व प्र ब) पडिच्छ

(वि /आ म ए प्रव चा ३) पडिच्छ म चेदि अणुगहिदो।

पडिच्छग वि [प्रत्येषक] वाञ्छक, चाहनेवाला, इच्छुक। (प्रव चा २७) त पि तवो पडिच्छगो समणो।

पडिणिबद्ध वि [प्रतिनिबद्ध] रोकनेवाला, रुका हुआ। (स १६२)

पडिदेस पु [प्रतिदेश] प्रत्येक देश, प्रत्येक क्षेत्र। (भा ३५)

पडिपुण्ण वि [परिपूर्ण] परिपूर्ण, सम्पूर्ण। (प्रव चा १४)

पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] व्याप्त, नियत, बधा हुआ। (स २८८)

पडिमट्ठायी स्त्री [प्रतिमास्थायी] प्रतिमा योगो मे स्थित। (यो भ ११)

पडिमा स्त्री [प्रतिमा] मूर्ति, प्रतिमा, प्रतिबिम्ब, आकार। (बो ३, द ३५) दर्शन और ज्ञान से पवित्र चारित्रवाले, निष्परिग्रह, वीतराग मुनियों का अपना तथा दूसरों का चलता-फिरता शरीर, जिनमार्ग मे प्रतिमा कहा गया है। (बो ९) बोधपाहुड मे प्रतिमा के निम्न भेद किये है-जगमप्रतिमा, स्थावर प्रतिमा, जिनबिम्ब, अर्हन्मुद्रा, जिनमुद्रा। (बो १०-१९)

पडिवज्ज सक [प्रति+पद्] स्वीकार करना, अङ्गीकार करना, प्राप्त करना। पडिवज्जदि त किवया। (पचा १३७) पडिवज्जदि (व.प्र ए) पडिवज्जदु (वि /आ प्र ए प्रव चा १,५२)

पडिवण्ण वि [प्रतिपन्न] स्वीकृत, अङ्गीकृत, प्राप्त। (प्रव ज्ञे ९८) पडिवण्णो होदि उम्मग्ग।

पडिवत्ति स्त्री [प्रतिपत्ति] प्रवृत्ति, प्राप्ति, जानकारी। (प्रव चा ४७)

पडिसरण न [प्रतिसरण] प्रतिमरण, उल्टा चलना। (स ३०६, स ज वृ ३०७)

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित। (स २७२)

पडिहार पु [प्रतिहार] 1 प्रतिहार, पर्दा। (स ३०६) 2 दरवाजा, फाटक।

पाडिहार पु [प्रातिहार/प्रतिहार्य] 1 दरबान, द्वारपाल। 2 प्रातिहार्य, अष्ट प्रातिहार्य। (बो ३१)

पडुच्च अ [प्रतीत्य] आश्रय करके, अवलम्बन करके, अपेक्षा करके। (पचा २६, स २६५, प्रव ५०) कम्म पडुच्च कत्ता। (स ३११)

पढ सक [पठ्] पढ़ना,अभ्यास करना।(स ४१५)जो समय-पाहुडमिण पढिदूण अत्थ तच्चदो णाउ। पढइ (व प्र.ए मो. १०६)

पढम वि [प्रथमा] पहला, आद्य। (भा-११४, चा ८) पढम सम्मतचरणचारित्त (चा ८)

पढिअ/पढिद वि [पठित] पढ़ा गया,कहा गया,कथित, प्रतिपादित। (पचा ५७, भा ५२)

पण त्रि [पञ्चन्] पाच, सख्या विशेष। ववगदपणवण्णरसो। (पचा २४)

पणट्ठ वि [प्रनष्ट] नष्ट हुआ। (बो ५२, भा १२८, प्रव ज्ञे ११)

पणद वि [प्रणत] नमस्कार करता हुआ।(प्रव चा ३)समणेहि त पि पणदो।

पणम सक [प्र+नम्] नमन करना, नमस्कार, प्रणाम करना।

पणमामि वड्ढमाण। (प्रव १) पणमिय (स कृ पचा २, प्रव चा १)

पणिवद सक [प्रणि+पत्] नमन करना, वन्दन करना। (प्रव चा.६३) पणिवदणीया हि समणेहिं। पणिवदणीया मे अणीय प्रत्यय का प्रयोग हुआ है।

पण्णत्त वि [प्रज्ञप्त] कथित, उपदिष्ट, निरूपित। (पचा १२१, स २४८, प्रव ८) कालो णियमेण पण्णत्तो। (पचा २३)

पण्णय पु [पन्नग] सर्प, साप। (स ३१७) ण पण्णया णिव्विसा हुति।

पण्णसवण न [प्रज्ञश्रवण] प्रज्ञाश्रवण, एक ऋद्धि विशेष। (यो भ २०)

पण्हवायरण न [प्रश्नव्याकरण] प्रश्नव्याकरण, ग्यारहवाँ अङ्ग आगम। (श्रु भ ३)

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] बुद्धि, ज्ञान, मति। (स २९४) पण्णाए सो घिप्पए अप्पा। पण्णाए (तृ ए स २९७) पण्णाइ (तृ ए स २९६)

पत्तग पु [पतङ्ग] पतङ्ग, चार इन्द्रिय जीव की सज्ञा। (पचा ११६)

पत्त वि [प्राप्त] 1 प्राप्त हुआ। (स १, ६४) 2 न [पात्र] पात्र, भाजन। (सू २१) 3 न [पत्र] पत्ती, पत्ता। (भा १०३)

पत्त सक [प्रति+इ] प्रतीति करना, विश्वास करना। (स २७५) पत्तेदि (व प्र ए)

पत्तेग न [प्रति+एक] प्रत्येक, हर एक। (प्रव ३)

पत्तेग/पत्तेय अ [प्रत्येकम्] एक-एक करके, एक वार मे एक,

अलग-अलग। समग पत्तेगमेव पत्तेय। (प्रव २)

पत्थर पु [प्रस्तर] पाषाण, पत्थर। (भा.९५)

पद पु न [पद] 1 शब्द समूह, वाक्य। त होदि एक्कमेव पदं। (स २०४) 2 स्थान, आस्पद, उपाधि।

पदत्थ पु [पदार्थ] वस्तु, तत्त्व, पदार्थ। (प्र.१४) सुविदिदपयत्थसुत्तो। पदार्थ के नौ भेद है-जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, सवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष। (पचा.१०८)

पदाणुसारी स्त्री [पदानुसारी] पदानुसारी, एक ऋद्धि विशेष। (यो भ.१८)

पदुस्स सक [प्र+द्विष्] द्वेष करना, वैर करना। (प्रव.ज्ञे ८२) पदुस्सेदि (व प्र ए)

पदेस पु [प्रदेश] 1 जिसका विभाग न हो सके ऐसा अवयव। (स २९०) 2 परिमाण विशेष, निरश। (प्रव ज्ञे.४३) 3 आधे का आधा। खधपदेसा य होंति परमाणू। (पचा.७४) -त्त वि [त्व] प्रदेशत्व, प्रदेशपना। (प्रव ज्ञे १४) -बध पु [बन्ध] प्रदेश बन्ध, बन्ध का एक भेद। (पचा ७३) -मेत्त न [मात्र] प्रदेशमात्र। पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स। (प्रव ज्ञे ४६)

पदोस पु [प्रद्वेष] प्रद्वेष, द्वेषभाव, प्रकृष्ट द्वेष। (प्रव चा ६५) पदोसदो (प ए)

पद्धस पु [प्रध्वन्स] ध्वस, नाश। (प्रव.ज्ञे ५०)

पप्प सक [प्र+आप्] प्राप्त करना। (प्रव चा ७५) पप्पोदि सुहमणत। (पचा २९) पप्पा (स.कृ प्रव ६५, ८३)

पप्प वि [प्राप्त] मिला हुआ, पाया हुआ, प्राप्त। (शी २५)

पप्फोडिय वि [प्रस्फोटित] गिराया हुआ, उड़ाया हुआ, निर्झटित। (शी ३९) प्पफोडिय कम्मरया।

पबल वि [प्रबल] बलिष्ट, प्रचण्ड, शक्तिशाली। (भा १५५)

पब्भट्ठ वि [प्रभ्रष्ट] परिभ्रष्ट, अत्यन्तच्युत। (प्रव चा ६७)

पब्भस्स अक [प्र+भ्रश्] अलग होना, छूटना, टूटना। (पचा १५५)

पभास सक [प्र+भास्] प्रकाशित करना, चमकना। पभासदि (पचा ३३)

पभुत्त सक [प्र+भुज्] भोग करना, ग्रहण करना। पभुत्तूण (स कृ भा १०२)

पभेद पु न [प्रभेद] प्रकार, विधान, भेद। (प्रव ज्ञे ६०)

पमत्त वि [पमत्त] प्रमादी, प्रमादयुक्त। (स ६, प्रव चा ९)

पमदा स्त्री [प्रमदा] नारी, महिला। पमदापमादबहुलो त्ति णिद्दिट्ठो। (प्रव चा ज वृ २४)

पमाण न [प्रमाण] 1 यथार्थज्ञान, जिससे वस्तुतत्त्व की सत्य जानकारी हो। (निय ३१, स ५, भा ३३) जदि दाएज्ज पमाण। 2 सीमा, मर्यादा, प्रमाण। णाण णेयप्पमाणमुद्दिट्ठ। (प्रव २३)

पमाद पु [प्रमाद] आलस्य, प्रमाद, आस्रवों के कारणों मे एक भेद। (पचा १३९)

पमुत्त/पमोत्त सक [प्र+मुञ्च्] छोड़ना, त्याग करना। (भा ९४) सजमघाद पमुत्तूण। अब्बभ दसविह पमोत्तूण। (भा ९८) पमुत्तूण/पमोत्तूण (स कृ)

पय पुं न [पद] स्थान, अधिकार, पदवी। (स.२०५)

पयट्ट वि [प्रवृत्त] संयुक्त, लगा हुआ, तल्लीन, तत्पर। (चा.१६) पयट्ट सुतवे सजमे भावे।

पयड सक [प्र+कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना। (भा.७३) पयडदि (व.प्र.ए.) पयडमि (व उ.ए.भा.११९) पयडहि (वि./आ.म.ए.भा.९८)

पयड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला हुआ, स्पष्ट। (शी.३९) - त्थ वि [अर्थ] प्रकटार्थ, स्पष्ट प्रयोजन। (भा.१६)

पयडि स्त्री [प्रकृति] 1. स्वभाव, शील। ण मुयइ पयडि अभव्वो। (भा.१३७) 2. कर्मप्रकृत्ति। (पंचा.५५, स.३१२,३१३) देवा इदि णामसंजुदा पयडी। 3. पुद्गल प्रकृति। पयडीहिं पुग्गलमइहिं। (स ६६) 4 बन्ध का एक भेद, कर्मभेद। (निय.९८, पंचा.७३) - यट्ठ वि [अर्थ] प्रकृति के निमित्त। (स.३१३) -सहावट्ठिअ वि [स्वभावस्थित] प्रकृति के स्वभाव मे ठहरा हुआ। (स.३१६) पयडीए (च./ष ए स ३१६) पयडीओ (प्र.ब.स ६५)

पयत वि [प्रयत] प्रयत्नशील, सतत् प्रयत्न करने वाला। (निय ६४) -परिणाम पु [परिणाम] प्रयत्न, प्रमाद रहित (निय ६४)

पयत्त पु [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग। (स.१७, भा.८७, मो ९, सू १६)

पयत्थ पु न [पदार्थ] अर्थ, पदार्थ, वस्तु। (निय ७४,भा.९७,द.१५) णव य पयत्थाइं (भा.९७) पयत्थाइं (द्वि ब) -देसय वि [देशक]

पदार्थों का उपदेश करने वाले। (निय ७४) -भंग पु [भङ्ग] पदार्थ भेद। तेसि पयत्थभगा। (पचा १०५)

पयद वि [प्रयत] प्रयत्नशील, उद्यमी। पयदो मूलगुणेसु। (प्रव चा १४) पयदम्हि समारद्धे। (प्रव चा ११)

पयलिय वि [प्रगलित] नष्ट हुआ, क्षय हुआ, गला हुआ। (भा ७८) पयलियमाणकसाओ।

पयास सक [प्र+काशय्] चमकना, प्रकाशित करना। (भा १४९) लोयालोय पयासेदि। पयासेदि (व प्र ए)

पयासत्त वि [प्रकाशत्व] प्रकाशमान, प्रकाशत्व, प्रकाशशील। (ती भ ८)

पर वि [पर] 1 भिन्न, अन्य, इतर, दूसरा। (पचा १३९, स ९९, प्रव ८७, चा ४३) 2 उत्कृष्ट, उत्तम, प्रधान। (प्रव ज्ञे १०२) 3 तत्पर, उद्यत। (भा १०५) **-किय** वि [कृत] परकृत, दूसरे के द्वारा किया गया। (बो ५०) **-चरिय** न [चरित] पराचरण, अन्यरूप आचरण। (पचा १५६) **-णिदा** स्त्री [निंदा] दूसरे की निंदा। (निय ६२, लि १४) **-तति** स्त्री [तति] अन्य समूह। (निय १५७) **-दव्व** पु न [द्रव्य] अन्य द्रव्य। (पचा १५९, स २०, प्रव ५७,निय १६२)**-दो** वि [तस्] अन्य से। (निय १८३) **-पयास/प्पयास** पु [प्रकाश] पर प्रकाश, परदीप्ति। (निय १६१) **-प्पवादि** पु [प्रवादिन्] अन्य दार्शनिक। (स ३९) **-भाव** पु [भाव] परभाव,अन्य परिणाम,अन्य स्वभाव। (निय ९७, स ३५) **-भितर** वि [अभ्यन्तर] दूसरे के भीतर, भीतरी भाग। (मो ४)

-लोअ पु [लोक] परलोक। (मो २३) परलोयसुहंकरो। (सू.१४) -वड्ढि स्त्री [वृद्धि] परवृद्धि, दूसरे की वृद्धि। (द.१०) -विग्गह पुं न [विग्रह] परशरीर। (मो.९) –विभवजुद वि [विभवयुक्त] अन्य वैभव से युक्त, उत्कृष्ट वैभव से युक्त। (निय.७) -वस वि [वश] दूसरे के अधीन। (भा.३८) -समय पु [समय] अन्य समय, अन्यमत, मिथ्याविचार। (स २, प्रव.ज्ञे ६) -समयिग पु [सामयिक] पर समय मे अनुरक्त। (प्रव.ज्ञे.२) -सहाव पुं [स्वभाव] पर स्वभाव, अन्यरूपभाव, अन्य परिणाम। (निय ५०)

परंपर/परंपरय पु न [परम्पर] परम्परा, अविच्छिन्न धारा। (भा.१२७, द.३३)

परंपरा स्त्री [परम्परा] अविच्छिन्न धारा। (भा १३५) परपराभाव-रहिएण। (भा.३४)

परंमुह वि [पराङ्मुख] विमुख, विपरीत। (भा ११७)

परम वि [परम] उत्कृष्ट, सर्वोत्तम। (प्रव.६२, निय.४, सू.१०) -गुणसहिअ वि [गुणसहित] परमगुणों से सहित। (निय.७१) -जिण पुं [जिन] परम जिन, परमात्मा। (मो.६) -जिणिंद पु [जिनेन्द्र] परमजिनेन्द्र। (निय १०९) -जिणवरिंद पु [जिनवरेन्द्र] जिनश्रेष्ठ, प्रधानगणधर। (सू १०) -जोइ पु [योगिन्] परमयोगी, वीतरागी। (मो.२) -ट्ठ वि [अर्थ] परमार्थ, आत्मस्वरूप, आत्मज्ञानस्वरूप। (स १५१, १५४, निय.३२) परमट्ठवियाणया विंति (स ज.वृ १२५) -ट्ठबाहिर वि [अर्थबाह्य] परमार्थ से बाह्य, परमार्थ से रहित। (स.१५३) णाणग वि [ज्ञायक] परम ज्ञायक,

श्रेष्ठ ज्ञाता। (नि भ ४) -णिव्वाण न [निर्वाण] परमनिर्वाण, परमुक्ति,परमशक्ति।(निय ४)-त्थवि [अर्थ] परमार्थ। (निय ५८,सू ५७,स ८,भा २,बो २२)-प्प पु [पद] परमपद, मोक्षपद।(मो २)प्पा पु [आत्मन्] परमात्मा। (निय ७, भा १५०) -प्पअ/प्पय वि [आत्मक] परमात्मा। (मो २४,४८) -प्पाण पु[आत्मन्] परमात्मा।(मो २)-भत्ति स्त्री [भक्ति] उत्कृष्ट सेवा,उत्तम विनय।(भा १५२,निय १३५)-भाग पु [भाग] सर्वोत्तम स्थान,दूसरा स्थान।(मो ९)-भाव पु [भाव] उत्कृष्ट भाव,उत्तम भाव।(स १२,निय १४६)-सद्धा स्त्री [श्रद्धा] परमश्रद्धा,उत्तमश्रद्धान।(चा ४२)-समाहि पु स्त्री [समाधि] उत्तम समाधि,श्रेष्ठ समताभाव। (निय १२२,१२३)

परमाणु पु [परमाणु] 1 सर्वसूक्ष्म, अणु, समस्त स्कन्धों का अन्तिम भेद। जो नित्य, शब्द रहित, एक अविभागी, मूर्त स्कन्ध से उत्पन्न होता है। जो पृथिवी, जल, वायु, तेज, और वायु का समान कारण है, परिणमनशील है। (पचा ७७,७८) सव्वेसि खधाण, जो अतो त वियाण परमाणू। परमाणु एक प्रदेशी है अपदेसो परमाणू। (प्रव ज्ञे ४५) यद्यपि परमाणु एक प्रदेशी है, फिर भी वह स्निग्ध और रूक्ष गुणो के कारण एक दूसरे परमाणुओ के साथ मिलकर स्कन्ध बन जाता है। (प्रव ज्ञे ७१) 2 अल्प, लघु, अणु। (स ३८) -पमाण पु [प्रमाण] परमाणु प्रमाण। (प्रव चा ३९)मित्त न [मात्र] परमाणु मात्र, थोड़ा भी। (स ३८) अण्ण परमाणुमित्त पि। -मित्तय वि[मात्रक]परमाणुमात्र,लेशमात्र,कुछ

भी। (स २०१) परमाणुमित्तय पि हु। -संगसंघाद वि [सङ्गसङ्घात] परमाणुओं का समूह। (पचा ७९)

परमेट्ठि पु [परमेष्ठिन्] परमेष्ठी, जो परमपद मे स्थित है। अर्हन्त, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय और साधु। (चा १, भा १५०, मो.६ प्रव ४ निय ७१-७५)

पराइ पु [परकीय] पर, अन्य।

परायत्त वि [परायत्त] पराधीन, दूसरे के अधीन, परतन्त्र। (पचा २५)

परावेक्ख वि [परापेक्ष] दूसरे की अपेक्षा रखने वाला। (प्रव चा ६)

परिकम्म पु न [परिकर्म] क्रिया, गुण विशेष (प्रव चा २८)

परिकहिद/परिकहिय वि [परिकथित] प्ररूपित, आख्यात, विशेष व्याख्यान। (स.९७) जिणवरेहिं परिकहिय । (स १६१)

परिकित्तिद वि [परिकीर्त्तित] वर्णित। (द्वा ४७)

परिगह/परिग्गह पु [परिग्रह] आसक्ति, ममत्व, मूर्छा, सग्रह। अप्पाणमप्पणो परिगह। (स २०७) मज्झ परिग्गहो जइ। (स २०८)

परिचत्त वि [परित्यक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ, अलग किया गया। (निय १४६, बो २४)

परिचाग पु [परित्याग] छोड़ना। (निय ९३)

परिचिद वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, परखा हुआ। (स ४) सुदपरिचिदाणुभूदा।

परिच्चय सक [परि+त्यज्] परित्याग करना, छोड़ना, अलग

करना। (स १८४) कणयसहाव ण त परिच्चयइ।

परिट्ठिअ/परिट्ठिय वि [परिस्थित] सम्पूर्ण रूप से स्थित। (भा ९५, १६३)

परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम, स्थिति, स्वभाव। (प्रव ज्ञे ७७)

परिणद/परिणय वि [परिणत] परिणमन करने वाला, परिणमन करता हुआ, एक रूप से दूसरे रूप को प्राप्त होता हुआ। (पचा ८४, स २२३, ३७४, प्रव ११) दोसेण व परिणदस्स जीवस्स। (प्रव ८४)

परिणम/परिणाम सक [परि+नम्] परिणमन करना, प्राप्त होना। (प्रव ज्ञे २६, स ११६) परिणममाणा (व कृ) ण सय परिणमइ रायमाईहिं। परिणमदे (व प्र ए स ९१) परिणमतो (व कृ स २८२) परिणमति (व.प्र ब स ८०) णवि परिणमदि (स ७७) परिणामया दि (स १२३) परिणामए (स १०३)

परिणम न [परिणम] परिणाम। त सोक्ख परिणम च सो चेव। (प्रव ६०)

परिणमिद वि [परिणमित] परिणमन कराये जाते हुए। (प्रव ज्ञे ७७)

परिणाम पु [परिणाम] 1 स्वभाव। (पचा १२८, स १०१, १३८) कम्मस्स य परिणामो। (स १४०) **-गुण** पु न [गुण] परिणामस्वभाव। (पचा ७८) **-भव** वि [भव] परिणाम से उत्पन्न। (पचा १००) 2 परिणमन। (प्रव ७, १०, ३६) णत्थि विणा परिणाम। **-सबद्ध** वि [सम्बद्ध] परिणमन से बधे हुए। (प्रव ३६)

परिणिव्वाणभत्ति स्त्री [परिनिर्वाणभक्ति] परिनिर्वाणभक्ति, मुक्ति भक्ति। (नि.भ.अ)

परिपड अक [परि+पत्] गिरना, झड़ना। (द्वा.३१)

परिफुड अक [परि+स्फुट्] चलना। (स.ज.वृ.१७०)

परिभम सक [परि+भ्रम्] घूमना, चक्कर काटना, पर्यटन करना, भटकना। (द्वा.२४)

परिभाव सक [परि+भावय्] पर्यालोचन करना, उन्नतकरना, विचार करना। परिभाविऊण (स.कृ.मो.९६)

परिमंडिअ वि [परिमडित] सुशोभित। (भा.१०८)

परिमाण न [परिमाण] नाप, माप, प्रमाण। (भा.३६)

परियंत पु [पर्यन्त] अन्त, सीमा, प्रान्त। (प्रव ज्ञे. ४०)

परियट्टण न [परिवर्तन] आवर्त,आवृत्ति,परिणमन। (पचा ६,२३) परियट्टणसभूदो।

परियत्थण वि [प्रार्थित] प्रार्थना करने वाला। (सि.भ ११)

परियम्म पु न [परिकर्म] सस्कार, सहायक साधन,दृष्टिवाद आगम का एक भेद। (मो.६१,श्रु.भ.४)

परियरिअ वि [परिकरित] सहित, युक्त। (भा.१२३)

परिवज्ज सक [परिवर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना, छोड़ना। (प्रव.ज्ञे. १०८, भा ५७) परिवज्जामि (व.उ ए भा ५७,निय.९९)

परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति। (निय.३३)

परिवार पु [परिवार] कुटुम्ब, घर के लोग। (द.१०)

परिस न [स्पर्श] स्पर्श, छूना। (चा ३६)

परिसह/परीसह पु [परिषह] उपसर्ग, बाधा, व्यवधान। (भा ९४) परिसहेहिंतो (प ब भा ९५)

परिहर सक [परि+हृ] त्याग करना, छोड़ना। परिहरति (व प्र ब) परिहरदि (व प्र ए मो ३६) परिहरत्तु (स कृ नियं १२१) परिहर/परिहरि (वि /आ म ए भा १३२,चा १६)

परिहार पु [परिहार] त्याग, विरक्त। (निय ६६, चा २४, मो ४२) **-विसुद्धि** वि [विशुद्धि] परिहारविशुद्धि, चारित्र का एक भेद। (चा भ ३)

परिहीण [परिहीन] कम, हीन, रहित, निम्न। (निय १४९, शी १८) सव्वे वि परिहीणा। (शी १८)

परीक्ख सक [परि+ईक्ष्] परीक्षा करना। परीक्खऊण (स कृ निय १५५)

परूव सक [प्र+रूपय्] निरूपण करना, कथन करना, कहना। (पचा १२, स ३९) परूवति (व प्र ब पचा १२१, १५७) परूविंति (व प्र ब पचा १२, स ३९) परूवेति (व प्र ब निय २४, प्रव ३९)

परूवण न [प्ररूपण] निरूपण, कथन। (निय ४)

परूविद वि [प्ररूपित] प्रतिपादित, कथित, निरूपित। (पचा ५१,प्रव ज्ञे ९६)

परोक्ख न [परोक्ष] 1 अप्रत्यक्ष, इन्द्रियादि साधनो के द्वारा होने वाले ज्ञान को परोक्ष कहा जाता है। (निय १६८) -भूद वि [भूत]

परोक्षभूत, जो जीव इन्द्रियगोचर पदार्थ को ईहा, अवाय, धारणादि पूर्वक जानते है, वे पदार्थ उनके लिए परोक्षभूत है। (प्रव ४०) तेसि परोक्खभूदं। 2. अतीत, सामने न होना। -दूसण न [दूषण] परोक्षदूषण। (लिं.१४)

परोध पु [परोध्र] परोपरोधकरण, अचौर्य व्रत की भावना। (चा.३४, निय ६५)

परोवेक्खा स्त्री [परापेक्षा] दूसरे की अपेक्षा, दूसरे की परवाह, पराधीन। (मो ९१)

पलयिद वि [प्रलयित] अतीतपर्याय, युगान्त लोप को प्राप्त। (पव ३९)

पलविद वि [प्रलवित] प्रलापित, कथित, प्रतिपादित। (द्वा.९०)

पलग्ग पु न [दि] फाटक, दरवाजा, द्वार।

पलियक न [पल्यङ्क] पल्याङ्कासन। (सि.भ ५)

पवक्ख सक [प्र+वच्] बोलना, कहना। (निय ७६) पडिक्कमणादी पवक्खामि। (निय.८२) पवक्खामि (भवि.उ ए.)

पवट्ट अक [प्र+वृत्] प्रवृत्ति करना, प्रवाहित होना। (मो ६६,द ७) ववहारेण विदुसा पवट्टंति। (स १५६)

पवड्ढ अक [प्र+वृध्] बढ़ना, वृद्धि को प्राप्त होना। (पचा ११३) पवड्ढंता (व कृ.)

पवण पु [पवन] हवा, वायु। (भा.२१) -पह [पथिन्] वायुमार्ग, आकाशमार्ग। (भा १५९) पुण्णिमइदुव्व पवणपहे। -सहिद वि [सहित] हवा सहित। (शी.३४)

पवयण न [प्रवचन] जिनसिद्धान्त, जिनागम। (पचा १६६, नियं १८४, भा ९१) जिणभत्ती पवयणे जीवो। (भा १४४) -अभिजुत्त वि [अभियुक्त] प्रवचन मे प्रवीण,परमागम मे कुशल। (प्रव चा ४६) -भत्ति स्त्री [भक्ति] प्रवचनभक्ति, परमागम की विनय, सोलह कारण भावनाओ मे एक भेद। (पचा १७३) -सार पु न [सार] प्रवचनसार,परमागमसार,सिद्धान्त रहस्य, द्वादशाङ्ग वाणी का रहस्य। (पचा १०३,प्रव चा ७५) जो पुरुष गृहस्थ या मुनिचर्या से युक्त होता हुआ सर्वज्ञ के इस शासन को समझता है, वह अल्पकाल मे प्रवचनसार को/परमागम के रहस्य को प्राप्त हो जाता है। (प्रव ७५)

पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम। (भा ८२) -वर वि [वर] श्रेष्ठतम। (श्रु भ ४)

पवाद पु [प्रवाद] मत,अभिव्यक्ति,परम्परा। (श्रु भ ५)

पविट्ठ वि [प्रविष्ट] घुसा हुआ, प्रवेशित, समाहित। (प्रव २९)

पविभत्त वि [प्रविभक्त] अत्यन्त भिन्न, पृथक्-पृथक्, विभाग युक्त। (प्रव ज्ञे १४)

पविस सक [प्र+विश्] प्रवेश करना, घुसना। (पचा ७, प्रव ज्ञे ८६) पविसदि (व प्र ए प्रव ज्ञे ९५)पविसंति (व प्र ब प्रव ज्ञे ८६) पविसंता (व कृ पचा ७)

पविहत्त वि [प्रविभक्त] भेद युक्त , विभाजित । (पचा ८०) पविहत्ता कालखधाणं।

पवेस सक [प्र+वेशय्] प्रवेश कराना,घुसाना। (स १४५) कह त

होदि सुसील ज संसारं पवेसेदि।

पव्वइद वि [प्रव्रजित] दीक्षित। (प्रव.चा.६७)

पव्वज्ज सक [प्र+व्रज्] दीक्षा लेना, सन्यास लेना। (चा.१६) पव्वज्जा (वि./आ म.ए.)

पव्वज्जा स्त्री [प्रव्रज्या]दीक्षा लेना,संन्यास लेना। (सू.२४,स.४०४) तासिं कह होइ पव्वज्जा। **-दायग** वि [दायक] दीक्षऽ देने वाला, दीक्षित करने वाला, दीक्षा गुरु। (प्रव चा.१०) गुरु त्ति पव्वज्जदायगो होदि। **-हीण** वि [हीन] प्रव्रज्या से रहित, दीक्षा से हीन। (लिं.१८) पव्वज्जहीणगहिणं। सभी परिग्रहों को छोड़ना प्रव्रज्या है। पव्वज्जा सव्वसंगपरिचत्ता। (बो.२४)

पव्वद/पव्वय पु न [पर्वत] गिरि, पहाड़, पर्वत। (निय.२२, भा २६)

पव्वया स्त्री [प्रव्रज्या] दीक्षा। इत्थीसु ण पव्वया भणिया। (सू २५)

पसंग पु न [प्रसङ्ग] ससर्ग, सम्बन्ध, सन्दर्भ, प्रकरण। (प्रव ८५,भा.२६) विसएसु य प्पसगो। (प्रव.८५)

पसंत वि [प्रशान्त] प्रकृष्ट शान्त, सगता युक्त, मोह-राग-द्वेष रहित। (प्रव.चा.७२)

पसंसा स्त्री [प्रशसा] प्रशंसा, स्तुति, प्रशस्ति, गुणगान। (प्रव.चा.४१, बो ४६)समसुहदुक्खो पससणिदसमो। (प्रव चा ४१) पससाए (स.ए.मो.७२)

पसंसणीअ वि [प्रशसनीय] प्रशसा योग्य, स्तुतियोग्य। (भा.१०८)

पसज/पसज्ज अक [प्र+सज्] ठहरना, स्थित रहना, प्राप्त होना,

रुकना। (पचा ४८, स ८५,११७) पसजदि अलोगहाणी। (पचा ९४)

पसत्थ वि [प्रशस्त] शुभरूप, श्रेष्ठ,उत्तम। (पचा १३५, प्रव चा ६०) **-भूद** वि [भूत] शुभ रूप वाला। (प्रव चा ५४) एसा पसत्थभूदा। (प्रव चा ५४) **-राग** पु [राग] प्रशस्तराग, शुभराग। (पचा १३६) अरहन्त, सिद्ध और साधुओं मे भक्ति होना, शुभराग रूप धर्म मे प्रवृत्ति होना तथा गुरुओं के अनुकूल चलना प्रशस्तराग है। (पचा १३६)

पसमिय वि [प्रशमित] शमन करने वाला, नष्ट करने वाला। (पचा १०४) पसमियरागद्दोसो। (पचा१०४)

पसर पु [प्रसर] प्रवर्तन, विस्तार, फैलाव, आगे जाना, प्रगमन। (पचा ८८) हवदि गदी सप्पसरो।

पसाध सक [प्र+साध्] 1 अलङ्कृत करना,उज्ज्वल करना, सुशोभित करना। (प्रव चा २१) कधमप्पाण पसाधयदि। (प्रव चा २१) 2 वश मे करना, सिद्ध करना। (प्रव चा २१)

पसाधग वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करने वाला, पवित्र करने वाला। (पचा ४९) वयण एगत्तप्पसाधग होदि।

पसारण न [प्रसारण] फैलाव, विस्तार। (निय ६८)

पसु पु [पशु] पशु, जानवर। (बो ५६)

पस्स सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना, दृष्टिगोचर होना। (पचा १२२, स १५, प्रव २९, निय १०९ चा १८) पस्सइ/पस्सदि (व प्र ए म ३६२, पचा ११२) पस्सिदूण

(सं.कृ.स.५८) पस्सिदुं (हे.कृ.स.५९) पस्संतो (व.कृ.निय.१७ भा.१३०)

पहणायक वि [पथनायक] पथदर्शक, पथनायक, मार्ग दिखलाने वाले। (यो.भ.४)

पहदेसिय वि [पथदेशित] मार्गोपदेशक,पथप्रदर्शक। (प.श.४)

पहाण वि [प्रधान] मुख्य, प्रमुख, श्रेष्ठ, उत्तम। (प्रव.५,६) दसणणाणप्पहाणादो। (प्रव.६)

पहावणा स्त्री [प्रभावना] प्रभावना, सम्यग्दर्शन का एक अङ्ग, सोलहकारण भावनाओं का एक भेद। (चा.७) जो विद्या रूपी रथ पर आरूढ़ होता हुआ, मनरूपी रथ के मार्ग मे भ्रमण करता है, वह जिन ज्ञान की प्रभावना करने वाला सम्यग्दृष्टि है। (स.२३६)

पहीण वि [प्रहीन] नीच, हीन। (भा.१३) पहीणदेवो दिवे जाओ।

पहु पुं[प्रभु] समर्थता युक्त, सम्पन्नता युक्त। (पंचा.२७)

पहुदि वि [प्रभृति] इत्यादि, वगैरह। (निय. ११४, १२४) अपमत्तपहुदिठाणं। (निय १५८)

पा सक [पा] पीना, पान करना। (चा.४१, भा ९३) पाऊण भवियभावेण। (भा.१२४) पाऊण (स.कृ.)

पाअ/पाय पु न [पाप] 1.पाप अशुभ कर्म, बुराकर्म। (स.२२९, लि.६)जो चत्तारि वि पाए। (स २२९) पाए (द्वि.ब) वच्चदि णारयं पाओ। (लि.९) 2.पु [पाद] चरण, पैर, पॉव। पाए पाडंति दसणधराणं। (द १२)

पाउगिअ वि [प्रायोगिक] प्रायोगिक, पर के निमित्त से उत्पन्न हुआ

(स ४०६) पाउगिओ विस्ससो वावि।

पाओग्ग वि [प्रायोग्य] योग्य, उचित, लायक, उपयुक्त, सक्षम। (प्रव ज्ञे ७७) पाओग्गा कम्मवग्गणस्स पुणो। (निय २४)

पाठ पु [पाठ] अध्ययन, वाचन, पठन, आवृत्ति। (स २७४) पाठो ण करेदि गुण।

पाड सक [पातय्] गिराना, डालना, फेंकना। (द १२) पाए पाडंति दसणधराण।

पाडिहेर न [प्रातिहार्य]देवताकृत प्रतिहारकर्म,देवकृत पूजा विशेष, अष्ट प्रातिहार्य।

पाडुब्भव अक [प्रादुर्+भू] उत्पन्न होना। (प्रव.ज्ञे ११)

पाडुब्भाव पु [प्रादुर्भाव] उत्पाद, उत्पत्ति। (प्रव ज्ञे १९)

पाण पु न [प्राण], जीवन के आधारभूत तत्त्व,जीवन शक्ति। (पचा ३०, प्रव ज्ञे ५८, बो ३०) जीवों के प्राणों की सख्या क्रमश.- एकेन्द्रिय के चार (स्पर्शन, काय बल, आयु और श्वासोच्छवास), द्वीन्द्रिय के छह (स्पर्शन, रसना, काय बल, वचनबल,आयु और श्वासोच्छ्वास) त्रीन्द्रिय के सात, (स्पर्शन, रसना,घ्राण,वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास) चुतरिन्द्रिय के आठ(स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, वचनबल, कायबल, आयु, और श्वासोच्छवास), पञ्चेन्द्रिय असज्ञी के नौ (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास) तथा सज्ञी पञ्चेन्द्रिय के दश (स्पर्शन, रसना,घ्राण,चक्षु,कर्ण,मनबल,वचनबल,कायबल,आयु,और

श्वासोच्छ्वास) (बो.३५)जीव प्राणों से युक्त होकर मोहादि परिणामों से कर्मो के फल भोगता है तथा अन्य नवीन कर्मो को बाधता है। (प्रव ज्ञे ५६) -णिबद्ध वि [निबद्ध] प्राणों से युक्त, प्राणों से सबद्ध।(प्रव ज्ञे ५६) -बाध पु [बाध] प्राणों की बाधा, प्राणों का घात।(प्रव ज्ञे ५६) पाणाबाध जीवो।

पाण न [पान] पान, पीने की क्रिया। (स २१३)

पाणि पु [प्राणिन्] 1. प्राणी, जीव, आत्मा, चेतन। (भा.१३४) -त्त वि [त्व] प्राणों से युक्त, प्राणों वाला। (पचा ३९) -वह पु स्त्री [वध] जीव हत्या, जीवघात। (भा.१३४) 2 पु [पाणि] हाथ, कर, भुजा। -पत्त/प्पत्त न [पात्र] हाथरूपी पात्र, कर-पात्र। (सू ७) पाणिपत्तं सचेलस्स। (सू ७)

पापुण्ण सक [प्र+आप्] प्राप्त होना। (पचा.११९) पापुण्णति य अण्ण। (पचा.११९)

पायछित्त/पायच्छित्त पु न [प्रायश्चित्त] पाप नाशक कर्म, परिशोध, पापनिष्कृति, दण्ड,तप का एक भेद। (निय.११३) व्रत, समिति, शील और सजम रूप परिणाम तथा इन्द्रिय निग्रह भाव प्रायश्चित्त है। (निय.११३) क्रोधादि स्वकीय भावों का क्षमादि भावना से निग्रह करना एव निज गुणो का चितन करना प्रायश्चित्त है।(निय.११४)आत्मा का उत्कृष्ट बोध,ज्ञान,एव चित्त जो मुनि नित्य धारण करता है,वह प्रायश्चित्त है। (निय ११६)अनेक कर्मो के क्षय का हेतु जो तपश्चरण है, वह प्रायश्चित्त है। (निय ११७)

पायड वि [प्रकट] व्यक्त, स्पष्ट। (भा १४९)

पायरण वि [प्राकरण] कार्य करने का अधिकारी, कार्यकर्त्ता। (स १९७)

पारमपार पु न [पारमपार] जिसका अन्त नहीं, अनन्त। (पचा ६९)

पाल सक [पालय्] पालन करना, रक्षण करना। (भा १०४) पालहि/पालेहिं (वि /आ म ए भा १०४, लि ११३)

पाव सक [प्र+आप्] प्राप्त करना, ग्रहण करना। (पचा १५१, स २८९, प्रव ११, निय १३६, सू १५, भा ११५) पावइ/पावदि (व प्र ए मो १०६, निय १३६, पचा १५१) पावए (व प्र ए मो २३) पावति (व प्र ब पचा १३२, स १५१)

पाव पु न [पाप] अशुभकर्म, पाप। (पचा १४३, प्रव ७९, स २६८, द ६) -आरभ पु [आरम्भ] पापकर्म। (प्रव ७९) पावारभविमुक्का। (बो ४४) -आसव पु [आस्रव] पापास्रव, पापकर्मो का प्रवेश द्वार। (पचा १४१) प्रमाद सहित क्रिया, चित्त की मलिनता, इन्द्रियविषयों मे आसक्ति, दु ख देना, निन्दा करना, बुरा बोलना इत्यादि आचरण से पाप कर्मो का आस्रव होता है। (पचा १३९) -प्पद पु न [प्रद] पाप के कारण, पापरूप कर्म के कारण, अशुभकर्मो के कारण। (पचा १४०) चार सज्ञा (आहार, भय, मैथुन, परिग्रह) तीन लेश्या (कृष्ण, नील, कापोत), इन्द्रियों की अधीनता, आर्त-रौद्र परिणाम एव मोहकर्म के भाव पापप्रद है। (पचा १४०) -मलिण वि [मलिन] पाप से मैला। (भा ६९) -मोहिदमदी वि [मोहितमति] पाप से मुग्ध

बुद्धिवाला, पाप के वशीभूत, पापासक्तबुद्धि। (लि.५) -रहिद वि [रहित] पाप रहित। (द ६) -हर वि [हर] पाप को हरण करने वाला। (मो ८४) -हेतु पुं [हेतु] पाप के कारण। (निय.६७)

पास पुं [पार्श्व] पार्श्वनाथ, तेइसवें तीर्थङ्कर का नाम। (ती.भ.५)

पासंडि वि [पाखण्डिन्] पाखण्डी, ढोंगी, लोकप्रतिष्ठा के लिए धर्माचरण करने वाला। (स.४०८, ४१०, भा.१४१)

पासअ वि [दर्शक] देखने वाला, दृष्टा, दर्शक। (स ३१५)

पासत्थ वि [पार्श्वस्थ] छल-कपट करने वाला, अपने वेश के अनुकूल न चलने वाला, शिथिलाचारी। (भा.१४, लि.२०)

पासुग वि [प्रासुक] परिशोधित, परिमार्जित, जन्तुरहित, हरितपने से रहित।(निय.६१,६३,६५)-भूमि स्त्री [भूमि] प्रासुक भूमि, प्रासुक क्षेत्र। (निय.६५) -मग्ग पु [मार्ग] प्रासुक मार्ग, जो रास्ता चलना आरम्भ हो चुका हो। (निय.६१)

पाहुड न [प्राभृत] 1. अध्याय विशेष, प्रकरण विशेष। (चा.२, मो १०६, लि.१) 2. भेंट, उपहार।

पि अ [अपि] भी, निश्चय, ही। (स.१६९, प्रव ज्ञे.११, निय.१३५) अट्ठविहं पि। (स.४५)

पिंड पु [पिण्ड] 1. समूह, सघात, स्कन्ध रूप। (प्रव ज्ञे ६९) पिंडो परमाणुदव्वाणं।(प्रव.ज्ञे.६९)2 आहार,भोजन।(सू.२२) भुजइ पिंडं सुएयकालम्मि।

पिंडी स्त्री [पिण्डी] गोलाकार वस्तु, ताड वृक्ष, बास आदि। (स.२३८)।

पिच्छ सक [दृश्/प्र+ईक्ष्] 1 देखना, अवलोकन करना। (पचा १६८,चा ३,बो १७)पिच्छइ(व.प्र ए चा ३)पिच्छेइ (व.प्र ए बो १०)पिच्छिऊण(स कृ मो ९)पिच्छ(वि /आ म ए स ३७६) 2 सक [पृच्छ्] पूछना। (प्रव चा २)

पिच्छिय न [दर्शन] दर्शन।(चा ३) णाणस्स पिच्छियस्स य।

पिज्जुत्त वि [प्ररूपित] कथित, निरूपित। णिव्वुदिमग्गो त्ति पिज्जुत्तो। (निय १४१)

पित्त पु न [पित्त] शरीर सम्बन्धी विकार, पित्त। (भा ३९, ४२)

पिदर पु [पितृ] पिता, जनक। मादापिदरसहोदर। (द्वा २१)

पिदि अ [पृथक्] अलग, पृथक्, भिन्न। (द्वा ३)

पिदु पु [पितृ] पिता,जनक।मादुपिदुसजण। (द्वा ३)

पिपीलिय पु [पिपीलक] कीट विशेष, चींटी। (पचा ११५)

पिव सक [पा] पीना। (स ३१७) पिबता (व कृ भा १३७) पिवमाणो (व कृ स १९६)

पिहिद/पिहिय वि [पिहित] आच्छादित, निरुद्ध, रोका गया, ढका हुआ। (पचा १४१, निय.१२५)

पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण, विस्तृत, विशाल। (पचा ८३)

पीअ वि [पीत] पिया गया, पान किया। (भा १८)

पीड सक [पीडय्] पीड़ित करना, दु खित करना। (लि ११)

पीडा स्त्री [पीड़ा] वेदना, पीड़ा। (निय १७८)

पीडिद वि [पीड़ित] पीड़ित, दु खित। (भा २३)

पुज सक [पुञ्ज्] इकट्ठा करना। (भा २०)

पुंस [पुंस्] पुरुष। (निय.४५)

पुंस्चली स्त्री [पुंश्चली] कुलटा, व्यभिचारिणी।(लिं.२१) -घर न [गृह] व्यभिचारिणी के घर। (लि.२१)

पुग्गल पुं न [पुद्गल] मूर्त द्रव्य, रूपी पदार्थ, द्रव्य का एक भेद। जिसमे रूप, रस, गन्ध एवं वर्ण पाये जाते है वह पुद्गल है। (पचा.७६, स.८०, प्रव.५६, निय.३२) -कम्म पु न [कर्मन्] पुद्गलकर्म। मिथ्यात्व, अविरति, योग, अजीव और अज्ञान पुद्गल कर्म हैं।(स.८८) -कम्मफल पुं न [कर्मफल] पुद्गल कर्म फल। (स.७८) -करण न [करण] पुद्गल का निमित्त। (पचा.९८) -काय पुं [काय] पुद्गल समूह, स्कन्ध। (पचा.९८) -दव्व पुं न [द्रव्य] पुद्गल द्रव्य। (पंचा.६६,स.३२९) -दव्वीभूद वि [द्रव्यीभूत] पुद्गलद्रव्यरूप, पुद्गलद्रव्यमय। (स.२४, २५) जदि सो पुग्गलदव्वीभूदो। -भाव पु [भाव] पुद्गलभाव। (स.८६) -मइ/मय पु [मय] पुद्गलमय, पुद्गलात्मक, पुद्गलरूप। (स.६६, २८७)

पुज्ज वि [पूज्य] पूजनीय। (बो.१६)

पुढवी स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती, पांच स्थावरों का एक भेद। (पचा ११०, प्रव. ज्ञे.४०, लि.१५)

पुट्ठ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ। (स.१४१, पचा.८३)

पुट्ठिय वि [पुष्टित] पुष्टीकर, ताकतवर। (चा.३५)

पुण/पुणो अ [पुनः] फिर,और,इसके अनन्तर,चूंकि,इस तरह, जो कि,तथा,किन्तु।(पचा.६०,स १४२,प्रव.२,२०,६१) -आगमण

न [आगमन] फिर से आगमन। (निय १७७) -वि अ [अपि] फिर भी। (स ११०)

पुण्ण पु न [पुण्य] शुभकर्म,पुण्य। (पचा १०८,स १३,प्रव ७७)

पुण्णिमा स्त्री [पूर्णिमा] पूर्णिमा, पूर्णचन्द्रमा वाली रात्रि। (भा १५९)

पुत्त पु [पुत्र] लड़का। (प्रव चा २)

पुधग वि [पृथक्] अलग, भिन्न-भिन्न। (पचा ९६)

पुधत्त वि [पृथक्त्व] पृथक्पना, भिन्नता, तीन से अधिक और नौ से कम सख्या का सकेत विशेष। (पचा ४७, प्रव ज्ञे १४)

पुप्फ न [पुष्प] फूल,पुष्प,कुसुम। (भा १०३, १५७)

पुराइय वि [पुरातन] पुराना, पूर्व के, प्राचीन। (शी ४)

पुराण वि [पुराण] पुराना, प्राचीन। (निय १५८)

पुरिस पु [पुरुष] पुरुष, आदमी, मनुष्य। (स ३५, प्रव चा ५९, निय ५३, निय ५३, सू ४) -आयार वि [आकार] पुरुषाकार, पुरुष की आकृति वाला। (मो ८४)

पुव्व वि [पूर्व] 1 पहले,पूर्व,आदि।(पचा ३०, स १७३) -णिबद्ध वि [निबद्ध] पूर्वनिबद्ध, पहले से बधे। (स १६६) 2 पु न [पूर्व] काल विशेष। (स २१, भा ३८) -भव पु [भव] पिछलाभव। (भा ३८) ३ दिशावाची, चार दिशाओं मे एक।

पूजा/पूया स्त्री [पूजा] पूजन,अर्चा।(प्रव ६९,भा ८३)

पूय न [पूय] पीब, दुर्गन्धितरक्त, रक्तविकार। (द्वा ४५, भा ४२)

पूर सक [पूरय्] पूर्ति करना, भरना, तृप्त करना, प्रसन्न करना।

(नियं.१८४) पूरयंतु (वि./आ.प्र ए.)

पेच्छ सक [प्र+ईक्ष्/दृश्] देखना,अवलोकन करना।(पंचा.१६३, प्रव.३२, नियं.१६५) पेच्छदि/पेच्छइ (व.प्र.ए.नियं.१६६, १६८) पेच्छित्ता (सं.कृ प्रव.चा.३५) पेच्छिऊण (सं.कृ.नियं.५८) पेच्छंत (व.कृ)

पेसुण्ण न [पैशून्य] चुगली, दोगलापन। (नियं.६२, भा.६९)

पोग्गल पु न [पुद्गल] देखो पुग्गल। (पंचा.६५,स.२.प्रव.३४, नियं.९) -कम्म पु न [कर्मन्] पुद्गल कर्म। (पंचा.६१,नियं.१८,स.१९५) -काय पुं न [काय] पुद्गल समूह। (पंचा ६४, नियं.९, प्रव.ज्ञे.७८) -दव्व पुं न [द्रव्य] पुद्गलद्रव्य। (पंचा.१२६, प्रव ज्ञे.५५, नियं.२०) -मइ पुं [मय] पुद्गलमय। (प्र ज्ञे ७०) -मेत्त पुं [मात्र] पुद्गलमात्र। (पंचा १३२)

पोत्थ पुं न [पुस्तक] किताब, पुस्तक, ग्रन्थ। पोत्थइकमंडलाई। (नियं ६४)

पोराणय वि [पौराणिक] पुरातन, प्राचीन काल सम्बन्धी। (शी ३४)

पोस सक [पोषय्]पालन करना। (लि २१)

पोसण न [पोषण] पालना, पुष्टि, समाधान, आश्रय। (प्रव.चा.४८)

पोसह पु [प्रोषध] प्रोषध,अष्टमी और चतुर्दशी को किया जाने वाला व्रत विशेष,देश विरत श्रावक की एक प्रतिमा,शिक्षाव्रत

का एक भेद। (चा २२, २६)

फ

फड्ड पु न [स्पर्ध] अश, भाग, हिस्सा। (स ५२) -य पु न [क] स्पर्धक, अनुभाग का समूह।

फण पु [फन]साप का फणा।(भा १४४)-मणि पु स्त्री [मणि] फणामणि, फणा मे स्थित मणि, नागमणि। (भा १४४)

फणि पु [फणिन्] सर्प,नाग।(भा.१४४)-राअ पु [राजन्] नागेन्द्र, सर्पराज, शेषनाग। जह फणिराओ सोहइ। (भा १४४)

फरिस पु न [स्पर्श] स्पर्श, छूना।

फरुस वि [परुष] कर्कश, कठोर।

फल अक [फल] फलना,पल्लवित होना।(प्रव चा ५७)फलदि कुदेवेसु मणुजेसु।(प्रव चा ५७) फलदि (व प्र ए)

फल पु न [फल] 1 वृक्ष का फल। (स १६८) पक्के फलम्हि पडिए। 2 कारण। (स ३१९,पचा १३३, मो ३४) जाणइ पुण कम्मफल। 3 लाभ। (प्रव ४५) पुण्णफला अरहता। 4 कार्य। (स ७४, निय २) दुक्खा दुक्खफला।

फलिह पु [स्फटिक] स्फटिक, मणिविशेष। (मो ५१) -मणि पु स्त्री [मणि] स्फटिकमणि। (मो ५१) जह फलिहमणिविसुद्धो।

फास सक [स्पृश्]स्पर्श करना,छूना।(पचा १३४)मुत्तो फासदि मुत्त।

फास पुं न [स्पर्श] स्पर्श,पुद्गल का एक गुण,एक इन्द्रिय का नाम। (पंचा ८१, स.६०, प्रव. ज्ञे.४०, निय.२७) जाणंति रसं फासं। (पंचा.११४, ११५)

फुडु वि [स्पष्ट] व्यक्त, स्पष्ट, विशद। (भा.१११) फुडु रइयं चरणपाहुड चेव। (चा.४५)

फुर अक [स्फुर्] चमकना, प्रकाशित होना। (भा.१५५) खमदमखग्गेण विप्फुरतेण। विप्फुरंतेण (व.कृ.तृ.ए.)

फुरिय वि [स्फुरित] स्फुरित, प्रकाशित, चमकदार। (मो.८)

फुल्ल न [फुल्ल] फूल, पुष्प। (बो.१४) जह फुल्लं गंधमयं।

फुल्लित वि [फुल्लित] फूली हुई। (भा.१५७)

फेफस न [फुप्फुस] फेंफड़ा। (भा.३९)

ब

बंध सक [बन्ध्] 1. बाधना, नियन्त्रण करना। (पंचा.१६६, स.२८१, निय.९८, भा.७९) बंधइ (व.प्र.ए.भा.७८) बंधदि (व.प्र.ए.स.१७४) बधए (व.ए.स.२५९) बधंते (व प्र.ब स १७३) बंधेमि (व.उ.ए.स.२६६)

बंध पु [बन्ध] जीवकर्म संयोग, कर्म पुद्गलों का जीव प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना। (पंचा.१३४, स.१३, बो.८, भा ११६) जब आत्मा अशुभ-शुभ परिणामों रूप परिणमन करता है तब वह अनेक प्रकार के पौद्गलिक कर्मों के साथ बंध को प्राप्त होता है। (पंचा.१४७) कर्मों का बन्ध भाव के निमित्त से होता है। (पंचा.१४८) बन्ध के चार भेद हैं-प्रकतिबन्ध

, अनुभागबन्ध और प्रदेश बन्ध। -कत्तार पु [कर्तृ] बन्ध के कर्त्ता। (स १०९) -कहा स्त्री [कथा] बन्धकथा। (स ४) कथा के भेदों मे काम,भोग और बन्ध कथा,इन तीन कथाओं का वर्णन किया गया है।(स ३)-कारण न [कारण] बन्ध का कारण,बन्ध का निमित्त।(प्रव ७६,निय १७३)जीवस्स य बधकारण होई।(निय १७४)-ग वि [क] बन्धक, बाधने वाला। (स १७६,प्रव चा १८)-ठाण न [स्थान] बन्धस्थान। (स ५३) -समास पु [समास] बन्ध समास,बन्धसकोच,बन्ध का सक्षेप। (स २६२,प्रव ज्ञे ८७)

बधण न [बन्धन] कर्म बन्ध का कारण। (स २९०, निय ६८) -बद्ध वि [बद्ध] बन्धनयुक्त।(स २९१)-य वि [क] बन्धन करने वाला।(स २८८)-वस वि [वश] बन्धनवश,बधन के अधीन। (स २८९)

बधव पु [बान्धव] भाई, भ्राता, मित्र। (भा ४३)

बधु पु [बन्धु] भाई, मित्र। (प्रव चा २, द ७, मो ७२) -वग्ग पु [वर्ग] बन्धुसमूह। (प्रव चा २)

बभ पु न [ब्रह्म] ब्रह्म, ब्रह्मचर्य। (स २६४, चा २२) -चेर न [चर्य] ब्रह्मचर्य, मैथुन विरति, व्रतों का एक भेद। (द २८, शी १९)

बज्झ सक [बन्ध्] बाधना, कसना, जकडना। (स १७८, मो १५, द १७) णाणी तेण दु बज्झदि। (स १७२)

बद्ध वि [बद्ध] बधा हुआ, जकड़ा हुआ। (स.२३, १४१, १८०) जे

बद्धा पच्चया बहुवियप्पं। (स.१८०)

बल पु [बल] 1. बलदेव, वासुदेव का बड़ा भाई। (द्वा.५) -देव पुं [देव]बलदेव। 2. न [बल] पराक्रम, शक्ति। मन, वचन, और काय के भेद से बल के तीन भेद है। (भा.१५५, पंचा.३०) -पाण पु न [प्राण] बलप्राण। (प्रव.ज्ञे.५४)

बलि वि [बलिन्] बलवान् बलिष्ठ, पराक्रमी। (पंचा.११७)

बहि अ [बहिस्] बाहर,बाह्य।(निय.३८,प्रव.चा.७३) -तच्च पुं न [तत्त्व] बाह्य तत्त्व। (निय.३८) -त्थ वि [स्थ] बाह्यरत, बहिर्मुख। (प्रव.चा ७३)

बहिर वि [बाह्य] बाहर का,बहिर्भूत।(मो.८,निय.१४९) -त्थ वि [स्थ] बाह्यरत।(मो ८)प्प पु [आत्मन्] बहिरात्मा। समणो सो होदि बहिरप्पा।(निय.१४९)

बहु वि [बहु] बहुत, अनेक, प्रभूत, प्रचुर, अनल्प। (पंचा.५६, स.४३, निय.३४, सू.९,भा.१४१,लि.५)-गुण पुं न [गुण] बहुत, गुण, अनेकगुण, नाना गुण। (द.११) -पयत्त पुं [प्रयत्न] बहुत प्रयत्न, अधिक उद्यम। (लि.५) -परियम्म पु न [परिकर्म] अनेक क्रियायें, बहुत से तपश्चरण सम्बन्धी कार्य। (सू.९) -प्पदेसत्त वि [प्रदेशत्व] बहुप्रदेशीपना। (निय.३४) प्पयार पु [प्रकार] अनेक प्रकार, बहुभेद। (पचा.११८) -भाव पुं [भाव] अनेक भाव। (स.२३) -माण पु न [मान] बहुमान, अधिक अहङ्कार। (लि.६) -माणस वि [मानस] अधिक मानसिक, अनेक प्रकार के मन सबधी। (भा १५) -वार पुं [वार] अनेकसमय,

अनेक बार। (भा २७) **-वियप्प** पु [विकल्प] अनेक विकल्प, बहुत विचार। (स १८०) **-विह** [विध] बहुविध, नाना प्रकार। (स ३१८, सू ५, भा १५, द ४) **-सत्त** पु न [भाव] अनेक जीव। (द २९) **-सत्थ** पु न [शास्त्र] अनेक शास्त्र। (बो १)

बहुअ/बहुग वि [बहुक] अनेक, बहुत। (पचा १२३, स २८९, प्रव ज्ञे ४९, भा ३८)

बहुल वि [बहुत] प्रचुरता, अनेक, अधिकता। (स २४२, भा ६९)

बहुस वि [बहुश] अनेक बार, बहुत समय तक। (भा ४) गहिउज्झियाइ बहुसो। (भा ४)

बाण पु [बाण] शर, बाण, तीर। (बो २२)

बादर वि [बादर] स्थूल, मोटा, जो दूसरों को बाधा दे एव स्वय बाधित हो, नाम कर्म का एक भेद। (स ६७, प्रव ज्ञे ७५)

बारस वि [द्वादश] बारह, सख्या विशेष। (भा ८०) **-अग** स्त्री न [अङ्ग] बारह अङ्ग। (बो ६१) **-विह** वि [विध] बारह प्रकार का। (भा ८०)

बाल पु [बाल] 1 बाल, केश। (स १७) बालग्गकोडिमत्त। (सू १७) **-अग्ग** न [अग्र] बालाग्र, बाल के अग्रभाग। 2 बालक, शिशु। (प्रव चा ३०) **-त्तण** वि [त्व] बाल्यकाल, बालपना। (भा ४१) 3 अज्ञानी, अल्पज्ञ। **-तव** पु न [तपस्] बाल तप। (स १५२) **-वद** पु न [व्रत] बालव्रत, अज्ञानी के व्रत। (स १५२) **-सहाव** पु [स्वभाव] अज्ञानी का स्वभाव। (लि २१) **-सुद** न [श्रुत] अज्ञानी का श्रुत, अल्पश्रुत। (मो १००)

बाला स्त्री [बाला] बाला,कुमारी,लड़की। (स.१७४)

बाहा स्त्री [बाधा] विरोध, पीड़ा, व्यवधान, कष्ट। (निय.१७८)

बाहिर वि [बाह्य] बाहर, बाह्य। (निय.१०२, भा.११३, मो.४)
-कम्म पुं न [कर्मन्] बाह्यकर्म।(मो.९८)-गंथ पुं [ग्रन्थ] बाह्य परिग्रह,धन-धान्यादि परिग्रह।(भा.३)-चाअ/चाग पुं [त्याग] बाह्य-त्याग। (भा.३) -लिंग न [लिङ्ग] बाह्यलिङ्ग, बाह्यवेश। (भा.१११) -वय पु न [व्रत] बाह्यव्रत, बाह्यनियम। (भा ९०) -संग पु न [सङ्ग] बाह्यसम्बन्ध, बाह्यपरिग्रह। (भा.७०) संगचा पु [सङ्गत्याग] बाह्य परिग्रह का त्याग। (भा.८९)

बाहु पुं [बाहु] भुजा, ऋषभदेव के पुत्र बाहुबलि। (भा.४९) -बलि पु [बलि] शक्तिशाली, बाहुबली। (भा.४४)

बीचि पु स्त्री [वीचि] तरङ्ग, लहर। (द्वा.५६)

बीभच्छ वि [वीभत्स] घृणाजनक, घृणित, कुत्सित। (द्वा.४४)

बीय न [बीज] बीज, अङ्कुरहोने योग्य। (भा.१०३)

बीया स्त्री [द्वितीया] दूसरा। (द १८)

बुज्झ सक [बुध्] जानना, समझना, ज्ञान करना। (स ३६, ३७, ३८१)

बुड्ढ वि [वृद्ध] वृद्ध, अधिक उम्र वाला, बूढ़ा। (निय.७९, प्रव.चा.३०)

बुद्ध वि [बुद्ध] तत्त्वज्ञाता, पण्डित, एक दार्शनिक का नाम। (भा.१५०)

बुद्धि स्त्री [बुद्धि] मति, मेधा, प्रज्ञा। (पंचा.१७०, स.१९)

बुध/बुह वि [बुध] ज्ञानी, ज्ञाता, पण्डित। (स २०७, शी २, पचा १३८)

बुभुक्खिद वि [बुभुक्षित] क्षुधातुर, भूखा। (पचा १३७)

बूड अक [दे] डूबना, अस्त होना। (द्वा ५७)

बेइंदिय वि [द्वीन्द्रिय] दो इन्द्रिय, जीवविशेष, ज[illegible]कर्म का एक भेद। (पचा ११४)

वेढिय वि [वेष्टित] घिरा हुआ, ढका हुआ। (भा ११९)

बोध/बोह सक [बोधय्] समझाना, ज्ञान कराना। (निय १४२, स १०९)

बोह पु [बोध] ज्ञान, समझ, जानकारी। (निय १०६)

बोहि स्त्री [बोधि] रत्नत्रय, आत्मज्ञान। (द ५, भा ६८, द्वा २) -लाह पु [लाभ] रत्नत्रय की प्राप्ति, आत्मज्ञान की प्राप्ति। (द ५)

भ

भग पु [भङ्ग] खण्डन, व्यय, नाश। (पचा ८, प्रव १७, भा २६) भगविहीणो य भवो। (प्रव. १७)

भज सक [भञ्ज्] विनाश करना, भङ्ग करना। (भा ९०)

भगव पु [भगवन्] भगवान्। (प्रव ३२, निय १५९)

भग्ग वि [भग्न] खण्डित, भ्रष्ट, टूटा हुआ। (द ९) -त्तण वि [त्व] भ्रष्टता, खण्डितपना। भग्गा भग्गत्तण। दिंति। (द ९)

भज सक [भज्] भोगना, ग्रहण करना, प्राप्त करना, भाग करना। (प्रव ७२)

भट्ठ वि [भ्रष्ट] च्युत, गिरा हुआ, स्खलित। जे दसणेसु भट्टा। (द.८)

भण सक [भण्] कहना, बोलना। (स २३, भा.१५४) भणइ/भणदि (व.प्र ए स.२७३, ३२५) भणति (प्र व.प्रव ३३) भणसि (व.म.ए स.२४) भणामि (व उ.ए भा १५४) भण (वि./आ म ए ३७)भणिज्ज (भवि प्र ए.स.२७०, ३००) यह रूप भविष्यकाल के तीनों पुरुषों के दोनों वचनों मे एक-सा बनता है।

भणिअ/भणिद/भणिय वि [भणित] कथित, कहा गया, प्रतिपादित। (पचा १२०, स १७६, प्रव चा.४०, निय ९, बो २, शी.४०, मो.१७)

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। (पचा ४७, स ६६, मो ५) भण्णदि/भण्णदे (व प्र ए स ३३,६६) भण्णए (व.प्र ए मो ५) भण्णति/भण्णंते (व प्र व पचा ४७)

भत्त पुं न [भक्त] 1. भोजन, आहार। (निय.६३, प्रव चा.१४, मो.५२) -कहा स्त्री [कथा] आहार कथा, भोजनसम्बन्धी कथा। (निय ६७) -पाण न [पान] भोजन-पान। (भा १०२) 2. वि [भक्त] भक्ति करने वाला। (प्रव.चा.६०)

भत्ति स्त्री [भक्ति] विनय, एकाग्र-चिंतन, सेवाभाव। (पचा १३६, प्रव चा.४६) -जुत्त वि [युक्त] भक्तियुक्त, विनयसम्पन्न। सो जोगभत्तिजुत्तो। (निय १३८) -राअ पु [राग] भक्ति मे लीन। (भा १०५) -संजुत्त वि [सयुक्त] भक्ति मे रत। (भा १३९)

भद्द [भद्र] सरल, साधु, सज्जन। (शी.२५) -बाहु पु [बाहु]

भद्रबाहु, एक मुनि का नाम। (बो ६१)

भम सक [भ्रम्] घूमना, परिभ्रमण करना, चक्कर लगाना। (स २३६,प्रव १२,भा ६८,सू २१,शी ३६)भमइ/भमदि/भमेइ (व.प्र ए प्रव १२, स ३०१, सू २१) भमति (व.प्र ब द ४) भमिदव्व (वि कृ शी २६) भमाडिज्जइ (प्रे व प्र ए स ३३४)

भमर पु [भ्रमर] भौंरा, मधुकर। (पचा ११६)

भमिअ वि [भ्रमित] घूमता हुआ, परिभ्रमण करता हुआ, भ्रमण शील(भा ३०,१०३)

भय न [भय] डर, त्रास, भीति। (निय १३२, भा २५, द १३)

भयव/भयवअ पु [भगवन्] भगवान्। (स २८, बो ६१)

भयवत पु [भगवन्त्] भगवान्। (भा १५६)

भर सक [भृ] भरना, पालना। (भा ४२)

भरह पु [भरत] भरत क्षेत्र, आदिनाथ के प्रथम पुत्र का नाम। (मो ७६)

भरिय वि [भरित] भरा हुआ, रक्षित, पोषित। (भा ४२)

भव अक [भू] होना। (प्रव १२, स ३८४, भा २९) भवदि (व प्र ए प्रव ज्ञे १४) भविस्सदि (भवि प्र ए प्रव ज्ञे २०) भविस्स (भवि उ ए स ३८४) भवतो (व कृ २९) भवीय (स कृ प्रव ज्ञे ५९)

भव पु [भव] 1 ससार, जगत्। (स ६१, निय ४७) **-कोडि** स्त्री [कोटि]करोड़ों भव। (सू ८) **-गहण** न [ग्रहण] 1 ससार ग्रहण। 2 न [गहन] ससार रूपी वन। (मो ४७) **-ण्णव** पु [आर्णव]

ससार समुद्र, ससारसागर। (भा.९८) **-णासण** न [नाशन] ससार नाश। (सू.३) **-णिंदा** स्त्री [निंदा] ससार की निन्दा। (भा १) **-महण** न[मथन]ससार का नाश।(भा ८२)-**रुक्ख** पुं [वृक्ष] ससाररूपी वृक्ष। (भा १२१) **-सायर** पु [सागर] ससारसागर। (पचा १७२, भा २०) 2 उत्पत्ति, उत्पन्न। (प्रव ज्ञे ८) ण भवो भगविहीणो। 3 योनि, पर्याय। (मो ५३)

भविअ/भविय वि [भव्य] 1 मुक्तिगामी, मोक्ष जाने योग्य। (पचा १६३, भा ४५) **-जीव** पु [जीव] भव्य-जीव। (भा १४८) 2 वि [भक्ति] होता हुआ। (पचा १७२)

भव्व वि [भव्य] मुक्तिगामी। (पचा ३७, निय.११२, प्रव.६२) **-जण** पु [जन] भव्य जन। (बो ५९) **-जीव** पु [जीव] भव्य जीव, निकट भविष्य मे मुक्त होने वाला। (बो २४,चा.१) **-पुरिस** पु [पुरुष] भव्य पुरुष। (बो ५३)

भा सक [भावय्] चितन करना। (भा १३, १४) भाऊण दुह पत्तो। (भा १४)

भागि वि [भागिन्] भागीदार, हिस्सेदार। (प्रव चा ५९)

भायण पु न [भाजन] पात्र,बर्तन। (भा.६५, ६९)

भार पु [भार] बोझा, भार वाली वस्तु।

भाव सक [भावय्] गुणगान् करना, चितन करना, भावना करना। (निय ९१, भा ११५, मो १०६) भावइ (व.प्र ए.मो १०६, भा १६४) भावति (व प्र.ब बो.५३) भावतो (व कृ भा ६१) भावेह (वि/आ.म.ब.निय.१११) भावेज्ज (वि /आ द्वा ८७)

भाविज्जहि (वि.आ /म ए भा ५५) भाविऊण (स कृ भा.४३) भावि (वि./आ म ए भा ९६)

भाव पु [भाव] 1 अभिप्राय, आशय, मानसिक विकार। (पचा १४८, स ९१, प्रव ८३, भा ६०, चा ४५) -कारण न [कारण] भाव कारण, भाव का निमित्त। (पचा ६०) -ठाण न [स्थान] भावस्थान। (निय ३९) -णिमित्त न [निमित्त] भाव का हेतु।(पचा १४८) -तिविह वि [त्रिविध] तीन प्रकार के भाव। (भा ८०) -धम्म पु न [धर्मन्] भावधर्म। (लि २) -पाहुड न [प्राभृत] भाव पाहुड,एक ग्रन्थ का नाम,भावो का उपहार। (भा १,१६४) -मल पु न [मल] भावरुपी मल,अन्तरङ्ग मैल (भा ७०) -रहिअ/रहिय वि [रहित] भाव रहित, परिणाम रहित। (भा ४, १०) -वज्जिअ वि [वर्जित] भाव विरहित। (भा ७४) -विणट्ठ वि [विनष्ट] भाव रहित, भावों से हीन। (लि १९, २०) -विमुत्त वि [विमुक्त] भावों से मुक्त। (भा ४३) -विरअ वि [विरत] भावों से विरत। (भा ४७) -बीअ पु न [बीज] भाव बीज। (भा १४) -विसुद्ध वि [विशुद्ध] भाव विशुद्ध। (भा ३) -विहूण वि [विहीन] भाव विहीन। (भा ५) -समण/सवण पु [श्रमण] भाव श्रमण, विशुद्ध आत्मा की ओर अग्रसर मुनि। पावति भावसमणा। (भा.१००) -सवणत्तण वि [श्रमणत्व] भाव श्रमणपना।(भा ६७) -सहिअ/सहिद/सहिय वि [सहित] भाव सहित। (भा १२७, निय ७४) -सुद्ध वि [शुद्ध] भावों से शुद्ध। (चा ४५, भा ६०)

-सुद्धि स्त्री [शुद्धि] भावों की शुद्धता, भावों की निर्दोषता। (भा.११८, निय.११२, चा.४५) भावो (प्र.ए.पंचा ५९) भावा (प्र.ब.बो.२७) भावं (द्वि.ए स.१०२) भावे (द्वि.ब.बो.२७) भावेण (तृ.ए.भा.४८) भावेहि (तृ ब.चा १२) भावस्स (च./ष.ए स.९१) भावाण/भावाणं (च./ष.ब स २८०) भावादो (पं.ए.स.१३०) भावाओ (प.ए.स.१२८) भावम्मि (स.ए.पचा १३१)

भावणा स्त्री [भावना] अनुप्रेक्षा, चितन। (चा १३, भा १४)

भावि वि [भाविन्] भविष्य मे होने वाला, भव्य। (निय ३२)

भाविअ/भाविद/भाविय वि [भावित] 1. सुशोभित, शोभायुक्त। (निय.९०, भा.१४५, मो.११) 2. विचारित, चितित। (भा ८१) पुव्व वि [पूर्व] चिंतनपूर्वक। (भा.८१) -मइ स्त्री [मति] चितन युक्त बुद्धि। (शी.३)

भास सक [भाष्] कहना, बोलना। भासदि (व प्र ए स.२७) ववहारणयो भासदि।

भासा पु [भाषा] बोली, वचन, वाणी, समिति का एक भेद। (बो.३३, निय ६२) -समिदि स्त्री [समिति] भाषा समिति। (निय.६२) -सुत्त न [सूत्र] भाषासूत्र, आगमिक वचन। (बो.६०)

भासिय वि [भाषित] कथित, प्रतिपादित। (स ३६०, मो.३०, भा.९२)

भिंद सक [भिद्] भेदना, तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना। (स २३८)

भिक्ख न [भैक्ष्य] भिक्षा, आहार। (प्रव २७, २९)
भिक्खु पु स्त्री [भिक्षु] मुनि, साधु। (पचा.१४२, सू २१, भा ८१)
भिच्च पु [भृत्य] नौकर, सेवक। (द्वा ३,९)
भिज्ज सक [भिद्] भेदाना,तोड़ना। (स २०९, भा ९५)
भिण्ण वि [भिन्न] खण्डित, विदारित। (पचा ३५, निय १११, भा ६३) -देह पु न [देह] खण्डित शरीर, शरीर रहित। (पचा ३५, भा ६३)
भीम वि [भीम] भयकर, भीषण। (बो ४१, भा ९८) -वण न [वन] घनघोर जगल, भयानक वन। (बो ४१)
भीरु वि [भीरु] डरपोक, भीत, डरा हुआ। (निय ६)
भीसण वि [भीषण] भयकर, भयानक। (भा ८)
भुज सक [भुज्] भोग करना, अनुभव करना। (पचा ६३, स १९५, सू १७) भुजदि/भुजेइ (व प्र ए पचा १२२,सू २२) भुजति (व प्र ब पचा ६७, स ३३०) भुजतस्स (व कृ ष ए स २२०)
भुक्खिद वि [भुक्षित] क्षुधा से पीड़ित, भूखा। (प्रव चा ज वृ २७)
भुत्त वि [भुक्त] खाया हुआ, भक्षित। (भा ९, ४०)
भुय पु स्त्री [भुज्] भुजा, हाथ, बाहु। (बो ५०)
भुवण न [भुवन] लोक, ससार। -यल न [तल] लोक का भाग, लोक की सतह। (मो २१)
भू स्त्री [भू] पृथिवी, धरती, भूमि। (निय २२)
भूद वि [भूत] 1 उत्पन्न हुआ, बना हुआ। (पचा ६०, स २४, प्रव १५) 2 पु [भूत]जीव, प्राणी। 3 सत्य,यथार्थ। -त्थ वि

[अर्थ] सत्य पदार्थ, सत्यार्थ। (स.११,१३,२२) 4. भूत चतुष्टय। (शी.२६)

भूमि स्त्री [भूमि] पृथिवी, धरती। (बो.५५)

भेत्ता वि [भेत्ता] भेद करने वाला। (पचा.८०)

भेद/भेय पुं न [भेद] प्रकार,भेद।(प्रव ज्ञे ३७,स.११०) -ब्भास पु [अभ्यास] नाना प्रकार का ज्ञान,भेद विज्ञान की शिक्षा। (निय ८२)

भोइ वि [भोक्ता] भोगने वाला। (भा.१४७)

भोग पुं न [भोग] विषय सुख,इन्द्रिय सुख।(स.२२४, निय १६) उपभोग पु न [उपभोग] भोगोपभोग, शिक्षाव्रतो मे एक व्रत। उपभोगपरिमा स्त्री [उपभोगपरिमा] वस्तु का परिमाण, सीमा। (चा २५)

-णिमित्त न [निमित्त] भोग का कारण (स.२७५) -भूमि स्त्री [भूमि] भोग-भूमि, स्थान विशेष का नाम। (निय.१६)

भोत्ता वि [भोक्ता] भोगने वाला। (पचा.२७, निय.१८)

भोयण न [भोजन] भोजन , आहार।(लि.११)

म

मअ वि [मृत] मरा हुआ, चैतन्य शून्य। (भा ३३)

मइ स्त्री [मति] 1. बुद्धि, मेधा, ज्ञान। (स.२७१,बो.२२) एसा दु जा मई दे। (स.१५९) 2.मन,हृदय। (मो.४९)

मइलिय वि [मलिनित] मलिन हुआ। सिविणे वि ण मइलिय जेहिं।

(मो ८९) मइलिय मे शब्द विपर्यय हो गया है।
मउण न [मौन] चुपचाप, एकाग्र। (मो ९७)
मगल वि [मङ्गल] सुखकारी,शुभ,कल्याणकारी। (भा १२३)
मत पु न [मन्त्र] जाप, जपने योग्य अक्षरपद्धति। (द्वा ८)
मद वि [मन्द] अल्प, मूर्ख, अज्ञानी।(स ४०, २८८) -त्तण वि [त्व] मदपना, अज्ञानीपन। (स ४१) -बुद्धि स्त्री [बुद्धि] मन्दबुद्धि, अल्पबुद्धि। (स ९६)
मस पु न [मास] मास, गोस्त। (प्रव चा २९)
मसुग पु न [श्मश्रुक] दाडी-मूछ। (प्रव चा.५)
मक्कड पु [मर्कट] बन्दर, वानर, कपि। (भा ९०)
मक्कण न [मत्कुण] खटमल। (पचा ११५)
मक्खिया स्त्री [मक्षिका] मक्खी। (पचा ११६) उद्दसमसयमक्खिय।
मग्ग पु [मार्ग] रास्ता, पथ,मार्ग। (पचा १०५, स २३४, निय २, मो १९) -प्पभावणट्ठ वि [प्रभावनार्थ] मार्ग की प्रभावना के लिए।(पचा १७३)-फल पु न [फल] मार्गफल, इष्ट-अनिष्टकृतकर्म का शुभ-अशुभफल। (निय २)
मग्गण/मग्गणा स्त्री [मार्गणा] विचारणा, पर्यालोचना, अन्वेषण। (स ५३, निय ४२, चा ११, सू १, बो ३०)
मच्छ पु [मत्स्य] मछली। (पचा ८५, भा ८८)
मच्छर न [मात्सर्य] ईर्ष्या, द्वेष। (भा.६९)
मच्छरिअ वि [मत्सरित] ईर्ष्यालु, द्वेषी। (द ४४)

मज्ज अक [माद्य्] उन्मत्त होना, सावधानी खोना। (स १९६)

मज्ज न [मद्य] मदिरा, शराब। (सू.१९६)

मज्झ न [मध्य] 1 बीच, अन्तराल, मध्य। (प्रव.चा ७३) -त्थ वि [स्थ] माध्यस्थ, मध्यवर्ती, अन्तरङ्ग। (निय.८२, प्रव.चा.७३) 2. पु [मम] मुझे, मेरा। (स.३८)

मज्झम/मज्झिम वि [मध्यम] मध्यवर्ती, बीच का। (प्रव चा.४, बो.१७) -पत्त न [पात्र] मध्यमपात्र। (द्वा.१७)

मण पु न [मनस्] 1. मन, अन्त.करण,चित्त। (पंचा.१११, निय.६९, चा ३२) -गुत्ति स्त्री [गुप्ति] मन की प्रवृत्ति को रोकना, मन की स्थिरता। (निय.६६, चा.३२) -पज्ज पु [पर्यय] मन.पर्यय, ज्ञान का एक भेद।(निय.१२) -परिणामविरहिद वि [परिणामविरहित] मनोयोग से रहित। (पंचा.११२) -मत्तदुरिय पु [मत्तदुरित] मनरूपी उन्मत्त हाथी। (भा.८०) 2 मन.पर्यय ज्ञान, ज्ञानविशेष, दूसरे के मनोगत विचारों को जानने वाला ज्ञान। (पचा.४१, स २०४)

मणि पु स्त्री [मणि] मुक्ता, मणि, रत्न विशेष। (भा.१५९) -माला स्त्री [माला] मोतियों की माला। (भा.१५९)

मणु पु [मनु] 1. मनुष्य, नर। (भा.८) गइ स्त्री [गति] मनुष्यगति। (भा ८) 2 मनु, कुलकर, चौथेकाल के आदि मे होने वाले विशेष व्यक्ति।

मणुअ/मणुज/मणुय पु [मनुज] मनुष्य, मानव, मनुज। (पचा ११८, स २६८, प्रव.६३, द.३४, मो.११, बो.३४) -जम्म

पु न [जन्मन्] मनुष्य जन्म, मनुष्य पर्याय। (भा ११) -त्त वि [त्व] मनुष्यत्व। (द ३४) -भव पु [भव] मनुष्यभव, मनुष्य पर्याय। (बो ३५) -राय पु [राजन्] चक्रवर्ती। (प्रव ६)

मणुण्ण वि [मनोज्ञ] मनोहर, अतिरमणीय, सुन्दर। (चा २९)

मणुव पु [मनुज] मनुष्य, मानव। (निय ७७, द्वा ३)

मणुस/मणुस्स पु स्त्री [मनुष्य] मनुष्य। (प्रव १, प्रव ज वृ ७९, पचा १७, निय १६) पणमति जे मणुस्सा। (प्रव ज वृ ७९) -त्तण वि [त्व] मनुष्यत्व। (पचा १७)

मणो पु न [मनस्] मन, पौद्गलिक द्रव्यमन। (पचा ८२, प्रव ज्ञे ६८, भा ९०) -गुत्ति स्त्री [गुप्ति] मनोगुप्ति, मनोनिग्रह। (निय ६९) मन की रागादि परिणामों से निवृत्ति मनोगुप्ति है। जा रायादिणिवत्ती, मणस्स जाणीहि तम्मणोगुत्ती। (निय ६९) -रह पु [रथ] मनोरथ, मन की अभिलाषा, मन की इच्छा। (स २३६)

मण्ण सक [मन्] मानना, समझना। (पचा १६५, स २८, प्रव ज्ञे १००, निय १६१) मण्णइ/मण्णदि (व प्र ए पचा १६५, स २५०, मो ५८) मण्णए (व.प्र ए द २४, मो ११) मण्णसे (व म ए स ६२) मण्णसि (व म ए स ३४१) मण्णे (वि /आ म ए प्रव ज्ञे १००)

मत्त वि [मत्त] 1 उन्मत्त, मदयुक्त। (भा ८०) 2 न [मात्र] मात्र, केवल, अवधारण।

मत्ता स्त्री [मात्रा] मर्यादा, सीमा, परिमाण। (पचा २६) -रहिद वि [रहित] मर्यादारहित, असीम। (पचा २६)

मत्थय पुं न [मस्तक] माथा, सिर। (ती.भ अ.)

मद पु न [मद] 1 अभिमान, गर्व, घमड। (बो ५१, निय.६) 2. भरा हुआ, जीवरहित। (प्रव चा १९) 3 वि [मत] माना हुआ, कहा गया। (प्रव चा १२,१६,२७,४५)छस्सु वि काएसु वध-करो त्ति मदो। (प्रव.चा १६)

मदि स्त्री [मति] बुद्धि, मेधा। (निय.२२,लि ३,४,स २३)

मधु न [मधु] शहद, मधु, पराग। (प्रव चा २९) -कर पु स्त्री [कर] मधुमक्खी, भ्रमर, भौंरा, शहद की मक्खी। (पचा ११६)

मधुर/महुर वि [मधुर] मीठा, मिष्ठ, मधुर। (पचा १)

ममत्त न [ममत्व] ममता, मोह, प्रीति। (स ४१३, प्रव ज्ञे ५८)

ममत्ति न [ममत्व] ममता, मोह, स्नेह। (निय ९९, भा ५७)

मय पु न [मद] 1 मद, गर्व अहङ्कार। (बो ५, मो ४५, भा १६) -मत्त वि [मत्त] मद से उन्मत। (भा १६) 2 पु [मृग] मृग, हरिण,कुरङ्ग। (भा १४३) -उल पु न [कुल] मृगसमूह। (भा १४३) -राअ पु [राजन्] सिह, मृगराज। (भा १४३)

मयर पु [मकर] मगर-मच्छ। (भा १५६) -हर पु न [गृह] समुद्र, सागर। (भा १५६)

मयलिय अक [मलिनित] देखो मइलिय। (भा ७०)

मर अक [मृ] मरना। (स २५८, निय १०१, प्रव चा १७)

मरण पु न [मरण] मौत, मृत्यु। (पंचा १८, स २४८)

मरिअ वि [मृत] मरा हुआ। (भा ३२)

मल पु न [मल] मैल,पाप,कलङ्क।(चा ६)-द वि [द]

मलदायक। (मो ४८) -पुज पु न [पुञ्ज] मलसमूह, मल का ढेर। (सू ६) -मेलणासत्त वि [मेलनासत्व] पापसमूह को नष्ट करने वाला। (स १५७-१५९) -रहिअ वि [रहित] मलरहित, पापरहित। (मो ६)

मलिण वि [मलिन] मैला, पाप युक्त। (पचा ३४, चा १७)

मल्लि पु [मल्लि] उन्नीसवे जिनदेव का नाम, मल्लिनाथ। (ती भ ५)

मसय पु [मशक] मच्छर। (पचा ११६)

मसाण न [श्मशान] मशान, मरघट। (बो ४१) -वास पु [वास] श्मशान मे रहना। (बो ४१)

मह वि [महत्] महान्, श्रेष्ठ। (पचा ७१, प्रव ९२) -त्थ वि [अर्थ] महार्थ, श्रेष्ठ अर्थ। (प्रव ज्ञे १००) -प्प पु [आत्मन्] महात्मा। (प्रव ९२, पचा.७१) -रिसि पु [ऋषि] महर्षि। (बो ५) -व्वय पु न [व्रत] महाव्रत। (चा ३१)

महल्ल वि [दि] महान्, श्रेष्ठ। (चा ३१) साहति ज महल्ला। (चा ३१)

महा वि [महत्] बड़ा, महान। (भा १२, पचा १०५, शी ६) -जस पु [यशस्] महान् यश। (भा १८) -दुक्ख पु न [दु ख] बहुत दु ख, अत्यधिक दु ख। (भा २७) -णरय पु [नरक] महानरक, सातवा नरक। (भा ८८) -णुभाव पु [अनुभाव] महानुभाव। (भा ५३) -फल पु न [फल] महाफल, विशाल फल। (शी ६) -वसण न [व्यसन] बहुत दु ख। (भा १०१) -वीर वि [वीर] अधिक

पराक्रमी,महाशक्तिशाली,भगवान महावीर,चौबीसवे तीर्थङ्कर का एक नाम। (पचा.१०५) -सत्त पु न [सत्त्व] महान् जीव। (भा १३२)

महि स्त्री [मही] पृथिवी, भूमि, धरती। (भा १२५) -रुह पु [रुह] वृक्ष, पेड। (शी ३६) -वीढ पु [पीठ] पृथ्वीतल। (भा १२५)

महिअ वि [महित] पूजित, सम्मानित। (भा १२३)

महिला स्त्री [महिला] स्त्री, नारी। (चा २४, बो ५६) -लोयण न [लोकन] स्त्रियों को देखना। (चा ३५)

महुपिंग पु [मधुपिङ्ग] मधुपिङ्ग, एक मुनि का नाम, जो निदान मात्र के कारण कल्याण नहीं कर सके। (भा ४५)

महेसि पु [महर्षि] महर्षि, महामुनि। (निय ११७)

मा अ [मा] मत, नहीं,निषेधवाचक अव्यय। (पचा १७२, स ३०१)

माइ वि [मायिन्] मायाचारी, छलकपटी। (लि.१२)

माण सक [मानय्] अनुभव करना, जानना। (मो ९३)

माण पु न [मान] अहङ्कार, अभिमान, मानकषाय विशेष। (पचा १३५, निय ८१) -उवजुत्त वि [उपयुक्त] मान से सहित। (स १२५) -कसाअ/कसाय पु न [कषाय] मानकषाय। (भा ४४, ७८) माणकसाएहिं सयलपरिचत्तो। (भा ५६)

माणस न [मनस्] मन, अन्त करण, हृदय। (भा १५)

माणसिय [मानसिक] मनसम्बन्धी,मानसिक। (भा ११)

माणिक्क न [माणिक्य] रत्न विशेष, माणिक। (भा १४४)

माणुस पु न [मानुष] मनुष्य, मानव। (पचा ११३, प्रव ३) देवो माणुसो त्ति पज्जाओ। (पचा १८)

मादु स्त्री [मातृ] माता, माँ। (द्वा ३)

मादुवाह पु स्त्री [मातृवाह] द्वीन्द्रिय जीव विशेष। (पचा ११४)

माय/माया स्त्री [मातृ] माता, माँ। (भा ४०) मायभुत्तमण्णते।

माया स्त्री [माया] छल, कपट, धोखा, एक कषाय विशेष। (पचा १३८, भा १०६, निय ८१) -चार पु [आचार] मायाचार, छल। -वेल्लि स्त्री [वल्ली] मोहरूपी लता। (भा १५७)

मार सक [मारय्] मारना, ताड़ना। (स २६१) मारिमि (व उ ए स २६१) मारेउ (वि /आ प्र ए २६२)

मारण न [मारण] हिंसा, वध, ताड़ना। (निय ६८)

मारिद वि [मारित]मारा गया। (स २५७, २५८)

मारुय पु [मारुत्] हवा,वायु।(भा १२२)-बाहा स्त्री [बाधा] वायु की बाधा, वायु की पीड़ा। (भा १२२)

मास पु [मास] महिना, दो पक्ष का मापक। (पचा २५, भा ३९)

मासा स्त्री [दे] मासिक धर्म। विज्जदि मासा तेसि। (सू ३९)

माहण पु स्त्री [माहन] श्रावक। (सू २७)

माहप्प पु न [माहात्मय] महत्त्व,गौरव,महिमा। (प्रव ५१,भा १५)

मिच्च न [मात्र] मात्र, केवल। (स ३२४)

मिच्चु पु [मृत्यु] मौत, मरण। (निय ६)

मिच्छ वि [मिथ्या] मिथ्या, असत्य, झूठा। (स ३४१, प्रव चा ६७) -उवजुत्त वि [उपयुक्त] मिथ्यात्व से युक्त। (प्रव चा.६७) -त्त न

[त्व] मिथ्यात्व, यथार्थ तत्त्व पर अश्रद्धा। (स १९०, निय ९०, चा ६, मो १५, भा ७३) मिच्छत्त अण्णाण । (स ८९) -दोस पु न [दोष] मिथ्यादोष। (मो ९६) -भाव पु [भाव] मिथ्याभाव। (मो.९७) -वाण वि [वान्] मिथ्यावान् असत्य बोलने वाला। (लि १०) चोराण मिच्छवाण य। (लि १०) -सहाव पु [स्वभाव] मिथ्यास्वभाव, मिथ्याव्यवहार। (स.३४१)

मिच्छा अ [मिथ्या] असत्य, झूठ, मिथ्यात्वकर्म विशेष। (पचा.३२, स.२६,११९,३१४, सू ७, द २४) कम्म कम्मत्तमिदि मिच्छा। (स ११९) **-इट्ठि/दिट्ठि** वि [दृष्टि] मिथ्यादृष्टि, जिनधर्म से भिन्न मत मानने वाला, सत्यार्थ पर श्रद्धा न रखने वाला। (स ८६, ३२८, द २४, सू ७, मो १५) **-णाण** न [ज्ञान] मिथ्याज्ञान, कुज्ञान। (मो ११) **-दसण** पु न [दर्शन] मिथ्यादर्शन। (पचा ३२, निय ९१, चा १७)

मित्त पु न [मित्र] 1 मित्र, दोस्त, सखा। (भा.२७, बो ४६) ण य मुत्तो बधवाई-मित्तेण। (भा.४३) 2 वि [मात्र] मात्र, प्रमाणविशेष, नापविशेष। (भा ४५) णियाणमित्तेण भवियणुय। (भा ४५)

मिस्सिद/मिस्सिय वि [मिश्रित] सयुक्त, मिला हुआ। (पचा ५६, स.२२०, मो १७) दुहिं मिस्सिदेहिं परिणामे। (पचा ५६)

मुअ सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। (स २००,४०९) मुअदि (व प्र ए स २००) मुइत्तु (स कृ स ४०९) मुइत्ता (स कृ स ज वृ.१२५)

मुच देखो मुअ। (स ९७, निय ५८, प्रव ३२) मुचेइ (भा ५) मुचदि (व प्र ए स ९७)

मुक्क वि [मुक्त] छोडा हुआ, परित्यक्त, रहित। (पचा ७३, निय ४७, बो ११, भा १५८)

मुक्ख पु [मोक्ष] 1 मोक्ष, मुक्ति। (भा ११६, चा २) मुक्खो जिणसासणे दिट्ठो। (भा ११६) 2 प्रमुख प्रधान।

मुञ्च सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। (स २८९), निय ९७, मो १३) जोई मुञ्चेइ मलदलोहेण। (मो ४८) मुञ्चति मोक्खमग्गे। (स २६७)

मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] मोहासक्त, गृद्ध, आसक्त, मूर्च्छा, ममता, मोह। (पचा ११३, प्रव चा ६) मुच्छा देहादिएसु जस्स पुणो। (प्रव चा ३९ -गय वि [गत] मूर्च्छा को प्राप्त हुआ। गब्भत्था माणुसा य मुच्छगया। (पचा ११३)

मुज्झ अक [मुह्] मोह करना, मुग्ध होना। (प्रव चा ४३) मुज्झदि वा रज्जदि वा। (प्रव चा ४३) मुज्झदि (व प्र ए.प्रव ज्ञे ८३)

मुण सक [मुण/ज्ञा] जानना, प्रतिज्ञा करना। (पचा १४५, स ३१, प्रव ८) अप्पाण मुणदि जाणयसहाव। (स २००) मुणदि/मुणइ (व प्र ए स १८५) मुणसु (वि /आ म ए स १२०) मुणिऊण (स कृ पचा १४५, भा ११०) मुणेदव्व/मुणेयव्व (वि कृ पचा ७४, स २२९-२३६, प्रव ८, द १९, सू ७, बो ३९, मो ३४) सम्मादिट्ठी मुणेयव्वो। (स २३१) मुणत (व कृ स ३४१)

मुणिद/मुणिय वि [मुणित] जाना हुआ। (बो ६)
मुणि पुं [मुनि] श्रमण,साधु,ऋषि,मुनि। (स २८, निय ११६, बो ४३, भा १७) जो कर्म से रहित ज्ञाता एव दृष्टा है, वह मुनि है। तया विमुत्तो हवइ, जाणओ पासओ मुणी। (स ३१५) -पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ मुनि। (भा १७) खमाअ परिमडिओ य मुणिपवरो। (भा १०८) -वर वि [वर] उत्तम मुनि,श्रेष्ठमुनि। (बो ६, निय ९२, भा २४) मुणिवरवसहा णि इच्छति। (बो ४३)
मुणिद पु [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि, उत्तम साधु। (भा १५९)
मुत्त न [मूत्र] 1 मूत्र, प्रस्रवण, पेशाब। (भा ३९, द्वा ४५) 2 वि [मूर्त] मूर्त्त, रूपवाला, आकारवाला। (पचा ९९, निय ३५, प्रव ज्ञे ३९) मुत्ता इदियगेज्झा। (प्रव ज्ञे ३९) मुत्त पुग्गलदव्व। (पचा ९७) 3 वि [मुक्त] मुक्ति को प्राप्त, बन्धन रहित। (पचा ५९, भा.४३) भावविमुत्तो मुत्तो। (भा ४३)
मुत्त सक [मुच् अपभ्रश] छोड़ना। (भा ३६) मुत्तूणट्ठपएसा। (भा.३६) मुत्तूण (स कृ भा १४१)
मुत्ति स्त्री [मूर्ति] 1 रूप, आकार, बिम्ब, सदैव विद्यमान। (पचा १३४, प्रव ज्ञे ४२, निय ३७) -गद वि [गत] मूर्तिगत, आकारयुक्त। (प्रव ५५) -परिहीण वि [परिहीन] अमूर्तिक, रूप एव आकार रहित। (पचा ९७) -प्पहीण वि [प्रहीन] आकाररहित। (प्रव ज्ञे ४२) -भव वि [भव] मूर्त्तिरूप हुआ, सदैव विद्यमान। (पचा ७७) -विरहिद/विरहिय वि [विरहित] मूर्ति रहित, आकारहीन। (पचा १३४ निय ३७) २ स्त्री

[मुक्ति] मोक्ष, निर्वाण, स्वतत्र। (भा १०४) तत्तो मुत्ति ण पावति।

मुद वि [मृत] मरा। (द्वा २७) जादो मुदो य बहुसो।

मुद्दा स्त्री [मुद्रा] अङ्ग-विन्यास,आकृति,वेश। (बो.१८) मुद्दा इह णाणाए जिणमुद्दा एरिसा भणिया। (बो १८)

मुय सक [मुच्] छोडना, त्याग करना। (पचा.१०३, स ३१७, भा १३७) मुयदि/ मुयइ (व प्र.ए स ३१७, भा १३७) मुयदि भव तेण सो मोक्खो। (पचा १५३)

मुस्स सक [मुष्] लूटना, अपहरण करना, उठा लेना। (स ५८) ण य पथो मुस्सदे कोई। (स ५८) मुस्सदि/मुस्सदे (व.प्र ए स ५८) मुस्सत (व कृ स ५८)

मुह न [मुख] मुँह, वदन, चेहरा,मुख। (निय ८) -उग्गद वि [उद्गत] मुख से निकला हुआ। तस्स मुहुग्गदवयण। (निय ८)

मुह अक [मुह्] मोह करना, मोहित होना, मूढ बनना। (प्रव ज्ञे ६२) ण मुहदि सो अण्णदवियम्हि। (प्रव ज्ञे ६२)

मुहिद वि [मुहित] मोहित, मोही, विमूढ। तेसु हि मुहिदो रत्तो। (प्रव ४३)

मुहुत्त पु न [मुहूर्त्त] दो घड़ी का समय, अड़तालीस मिनिट का वाचक। (भा २९, मो ५३) खवेइ अतोमुहुत्तेण। (मो ५३)

मूअ वि [मूक] गूगा, वाक्शक्ति से रहित। (द १२)

मूढ वि [मूढ] मूर्ख, मुग्ध, ज्ञानहीन, अज्ञानी, नासमझ। (स २५०, प्रव ८३, चा १७, मो ८) सो मूढो अण्णाणी। (स २४७, २५०,

२५३) -जीव पु [जीव] अज्ञानी जीव। (चा १७) बज्झति मूढजीवा। -दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] मूढदृष्टि,मन्द बुद्धि की दृष्टि। (मो.८)अज्झवसिदो मूढदिट्ठीओ।(मो ८)-मइ/मदि स्त्री [मति] ज्ञानरहित बुद्धि,मन्द बुद्धि,भ्रमित बुद्धि।(स.६४, २५९) एसो दे मूढमई। (स २५९)

मूल न [मूल] 1 जड, वृक्ष के नीचे का भाग। (द.१०,११, भा.१०३, ११३) जह मूलम्मि विणट्ठे। 2 आधार, नींव, स्त्रोत, उत्पत्ति स्थान। मूलविणट्ठा ण सिज्झति। (द.१०) तह जिणदसणमूलो। (द ११) 3. मूलगुण, व्रत विशेष। (प्रव.चा ९) -गुण पु न [गुण] मूलगुण। (प्रव चा.९,१४, मो.९८) -च्छेद वि [छेद] मूल का घात। (प्रव चा ३०) मूलच्छेद जधा ण हवदि। (प्रव चा ३०)

मेत्तअ वि [मात्रक] मात्र, परिमाण, मर्यादा विशेष। (भा ३३) परमाणुपमाणमेत्तओ णिलओ।(भा ३३)

मेरु पु [मेरु] मेरु, सुमेरुपर्वत, पर्वत विशेष। (चा २०) -मत्त न [मात्र] मेरुप्रमाण। (चा २०) ससारिमेरुमत्ताण।

मेल सक [मेलय्] मिलाना, मिश्रण करना। (पचा ७) मेलता वि य णिच्च। मेलत (व कृ पचा ७)

मेहुण न [मैथुन] रतिक्रिया, सभोग। (भा ११२) -सण्णा स्त्री [सज्ञा] मैथुन सज्ञा। (भा ९८) मेहुणसण्णासत्तो।

मोक्ख पु [मोक्ष] मुक्ति, निर्वाण। (पचा.१५३, स १८, निय १३६, द २१, सू१०, चा ३९, बो.१९) जो सवर से युक्त हो कर्मों की

निर्जरा करता है तथा वेदनीय एव आयुकर्म को नष्ट कर नाम, गोत्र पर्याय का परित्याग करता है, उसको मोक्ष होता है। (पचा १५३) -उवाअ पु [उपाय] मोक्ष का उपाय, मुक्ति का साधन। (निय २,४) मग्गो मोक्खउवाओ। -काम पु [काम] मोक्ष की अभिलाषा, मोक्ष की आकाक्षा। (स १८) सो चेव दु मोक्खकामेण। (स १८) -गय वि [गत] मोक्ष को प्राप्त हुआ। (निय १३५) -पह पु [पथिन्] मोक्षपथ, मुक्तिमार्ग। (निय १३६, स ४११, ४१४) मोक्खपहे अप्पाण। (निय १३६) -मग्ग पु [मार्ग] मोक्षमार्ग। (पचा १६०, स २६७, द ११, सू २०, बो २०-२२, चा ३९) दसणणाणचरित्ताणि मोक्खमग्गोत्ति। (पचा १६४) जो मुनि पॉच महाव्रतों से युक्त एव तीन गुप्तियों सहित होता है,वही सयत है और वही निर्ग्रन्थ मोक्षमार्ग है। (सू २०) -हेउ पु [हेतु] मोक्ष का कारण। (स १५४) मोक्खहेउ अजाणता। (स १५४)

मोण न [मौन] वाणी का सयम, मूकभाव। (निय १५५, सू २१, मो २८) मोण वा होइ वचिगुत्ति। (निय ६९) -व्वय पु न [व्रत] मौनव्रत, वाणी के सयम की प्रतिज्ञा। (निय १५५, मो २८) मोणव्वएण जोई।(मो २८)

मोत्त वि [मूर्त] रूपवाला, आकारवाला। (निय ३७) पोग्गलदव्व मोत्त। (निय ३७)

मोत्त सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। (स १५६, निय ३४, भा १०६) मोत्तूण अणायार। (निय ८५) मोत्तूण

(स कृ स २०३) मोत्तु (हि.कृ मो २७)

मोस पु न [मृषा] झूठ, असत्य। (निय.५७, चा.२४) -भासा स्त्री [भाषा] असत्यवाणी, मिथ्यावचन। (निय.५७) मोसभासपरिणाम। (निय.५७)

मोह पु [मोह] मूढ़ता, अज्ञानता, अज्ञता, आसक्ति। (पचा.१४८, स ३२, प्रव ७, निय १७९, भा १५७, वो.४४, चा.१५, मो.१०) मणुयाणं वड्ढए मोहो। (मो.१०) -अंधयार पु न [अन्धकार] मोहरूपी अन्धकार। (निय.१४५) -उदय पु [उदय] मोह का उदय। (मो.११) मोहोदएण पुणरवि। (मो ११) -उवचय पु [उपचय] मोह की वृद्धि। (प्रव ८६) खीयदि मोहोवचयो। (प्रव ८६) -क्खय पु [क्षय] मोह का नाश,मोह का क्षय। सो मोहक्खय कुणदि। (प्रव ८९) -क्खोह पु [क्षोभ] मोह और क्षोभ। यहां क्षोभ का अर्थ राग-द्वेष है, जिनसे कि जीव क्षुभित-दु खित होता है। (प्रव ७, भा.८३) मोहक्खोहविहीणो, परिमाणो अप्पणो हु समो। (प्रव.७) -गंठी पु स्त्री [ग्रन्थि] मोह की गाँठ। (प्रव ज्ञे १०३) -जुत्त वि [युक्त] मोह से सयुक्त, मोहासक्त। (स ८९) परिणामा तिण्णि मोहजुत्तस्स। (स.८९) -णिम्ममत्त न [निर्ममत्व] मोह से रहित, मोहासक्ति से रहित। (स ३६) जो ऐसा जानता है कि मोह से मेरा कोई सम्बन्ध नही है, मै तो एक उपयोग रूप ही हू। उसे आगम के जानने वाले मोह से निमर्मत्व कहते है। (स ३६) -दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] मोहयुक्त दृष्टि, दर्शनमोह। (प्रव ९२) जो णिहदमोहदिट्ठी। -दुग्गंठि पु स्त्री

[दुर्ग्रन्थि] मोह की दुष्ट गाँठ,मोह का कठिन बन्धन। (प्रव ज्ञे १०२) खवेदि सो मोहदुग्गठी। (प्रव ज्ञे १०२) -पदेस पु [प्रद्वेष] मोह एव द्वेष। (प्रव ज्ञे ५७) मोहपदोसेहिं कुणदि जीवाण। -बहुल वि [बहुल] मोह की अधिकता,मोह से घिरा। (पचा ११०)देंति खलु मोहबहुल।(पचा ११०)-मयगारव पु न [मदगौरव] मोह,मद और अहकार।(भा १५८)मोहमयगारवेहिं य।(भा १५८)-महातरु पु [महातरु] मोहरूपी महावृक्ष। (भा १५७) मोहमहातरुम्मि आरूढा। (भा १५७) -मुक्क वि [मुक्त] मोह से रहित। (बो ४४) -रअ पु न [रजस्] मोहरूपी रज, मोहरूपी धूल। (प्रव १५) -रहिअ वि [रहित] मोहरहित। (चा १९)-संछण्ण वि [सछन्न] मोह से ढँका। (प्रव ७७, पचा ६९) ससारमोहसछण्णो। (प्रव ७७)

मोहणिय न [मोहनीय] मोहनीय कर्म, कर्मो का एक भेद। (भा १४८)

मोहिअ/मोहिद/मोहिय वि [मोहित] मोहयुक्त, मोह करने वाला। (स २३, भा ४०, मो ७८, शी १३)

य

य अ [च] हेतु सूचक अव्यय, और, तथा, एव, जो, ऐसा, जिसतरह, पादपूर्ति अव्यय। (स १३, प्रव ३, निय २, ९, ३४, द ८,९, बो ४, मो १) बुद्धी ववसाओ वि य। (स २७१) तस्स य कि दूसणं होइ। (निय १६६)

यं अ [यत्] जो, जो कि। (स.२०१) य तु सव्वागमधरो वि।

याण सक [ज्ञा] जानना। (स.३९०-४०१) जम्हा धम्मो ण याणए किंचि। (स.३९९)

र

रअ वि [रत] अनुरक्त, आसक्त, लीन। (मो.११, भा.३१) अप्पा अप्पम्मिरओ। (भा.३१)

रइ स्त्री [रति] कामक्रीड़ा, सुरत, मैथुन, रति, नोकषाय का एक भेद। (निय.६, मो.११) जो दु हस्सं रई। (निय.१३१)

रइय वि [रचित] बनाया हुआ, निर्मित। (चा.४५) रइयं चरणपाहुड चेव। (चा ४५)

रउरव वि [रौरव] भयकर, घोर, रौरव नामक नरक। (भा.४९) पडिओ सो रउरवे णरए। (भा.४९)

रंग सक [रञ्जय्] रंगना, मोहित करना। रंगिज्जदि अण्णेहिं। (स.२७८) रंगिज्जदि (व.प्र.ए)

रंज सक [रञ्जय्] रंग लगना, राग युक्त होना, अनुरक्त होना। (प्रव ज्ञे ५९) कमेहिं सो ण रंजदि ।

रंजण न [रञ्जन] खुश करना,प्रसन्न।(भा.९०)माजणरजन-करणं। (भा.९०)

रक्ख सक [रक्ष् रक्षण करना, पालन करना। (लिं.५, शी.१२) संमूहदि रक्खेदि य। (लि.५) रक्खेदि (व.प्र.ए.लिं.५) रक्खंताणं (व.कृ.ष ब.शी.१२) सीलं रक्खताणं।

रक्खणा स्त्री [रक्षणा] सरक्षण, स्थितीकरण, सम्यक्त्व का एक अङ्ग। (चा ११) उवगूहण रक्खणाए य। (चा ११)

रज पु न [रजस्] धूल, रज, पराग। (पचा ३४) रजमलेहिं।

रयअ वि [रजक] रजयुक्त, धूलधूसरित। (सू २१८) णो लिप्पदि रजएण। (स २१८)

रज्ज अक [रञ्ज्] अनुराग करना, आसक्त होना। (स १५०,प्रव चा ४३,शी १०) रज्जदि/रज्जेदि (व प्र ए प्रव ज्ञे ८३,८४) रज्ज (वि /आ म ए स १५०) रज्जति (व प्र ब शी १०)

रज्जु स्त्री [रज्जु] राजू, लम्बाई नापने का एक माप। (भा ३६) रज्जूण लोयखेत्तपरिमाण।

रट्ठ न [राष्ट्र] देश, जनपद। (स ३२५) गामविसयणयररट्ठ।

रण्ण न [अरण्य] वन, जङ्गल, अटवी। (निय ५८) गामे वा णयरे वा, रण्णे वा। (निय ५८)

रत्त पु [रक्त] 1 लाल, लोहित। (शी १) -उप्पल न [उत्पल] लालकमल। रत्तुप्पलकोमलस्समप्पाय। (शी १) 2 वि [रक्त] रङ्गा हुआ, अनुरक्त, रागयुक्त। (पचा १४७,निय २१९, प्रव ४३) रत्तो बधदि कम्म। (स १५०) उस्सासादिसु रत्तो। (प्रव ६९) 3 पु [रक्त] खून, लहू। -क्खय पु [क्षय] दमा, राजयक्ष्मा, रक्तचाप का कम होना (भा २५) विसवेयणरत्तक्खय। (भा २५)

रत्ति स्त्री [रात्रि] रात, निशा। (द्वा ८८) -दिव न [दिन] रातदिन,

अहर्निश। (द्वा ८८)

रथ/रह पुं न [रथ] रथ, यान विशेष। (स.९८)

रद देखो रअ। (स २०६) एदम्हि रदो णिच्च। (स.२०६)

रदण पुं न [रत्न] रत्न, मणि, बहुमूल्य पत्थर विशेष। (प्रव.३०, शी २८) रदणमिह इदणील। (प्रव.३०) -भरिद वि [भरित] रत्नभरित,रत्नो से भरा हुआ।(शी.२८)उदधी व रदण-भरिदो। (शी २८)

रदि देखो रइ। (पचा.१४८) जेसिं विसएसु रदी। (प्रव.६४)

रम अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना। (प्रव ६३,७१) रमंति विसएसु रम्मेसु। (प्रव.६३)

रम्म वि [रम्य] सुन्दर, मनोहर, रमणीय। (प्रव ६१)

रय पुं न [रजस्]1. रेणु, धूली, रज। (स.२४१,२४६) -बंध पुं [बन्ध] रज का बन्ध, धूल से युक्त। तम्हि णरे तेण तस्स रयबंधो। (स.२४०) 2 वि [रत] देखो रअ। (मो ७९) आधाकम्मम्मि रया।

रयण पुं न [रत्न] रत्न,माणिक्य आदि रत्न, पत्थर विशेष। (निय.७४,द ३३,भा.८२)सम्मद्दसणरयण।(द ३३)-त्त वि [त्व] रत्नत्व, रत्नपना। सदगुणवाणा सुअत्थि रयणत्तं। (बो २२) -त्तय न [त्रय] रत्नत्रय, तीन रत्नो का समुदाय। (निय ७४, भा ३०, मो.३३) सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ये तीन रत्नत्रय है। त रयणत्तय समायरह। (भा ३०) -त्तयजुत्त वि [त्रययुक्त] रत्नत्रय से युक्त। जो

रयणत्तयजुत्तो। (मो ४४) -त्तयसजुत्त वि [त्रयसयुक्त] रत्नत्रय से युक्त, रत्नत्रय से परिपूर्ण।(निय ७४, मो ३३) रयणत्तयसजुत्ता। (निय ७४)

रस पु न [रस] 1 रस, जिह्वा का विषय। (पचा ११४, स ६०, प्रव ५६,निय २७,भा २६,लि १२) एयरसवण्णगध। (पचा ८१) जाणति रस फास। (पचा ११४) -अवेक्खा स्त्री [अपेक्षा] रस की अपेक्षा, रस की चाह। (प्रव चा २९) -गिद्धि स्त्री [गृद्धि] रस की गृद्धि, रस की आसक्ति। (लि १२) भोयणेसु रसगिद्धि। 2 रस, रसायनादि,धातु विशेष। -विज्जजोय पु [विद्यायोग] रस विद्या का योग, रस विद्या का सम्बन्ध। (भा २६) रसविज्जजोयधारण। (भा २६)

रसण न [रसन] जिह्वा, जीभ। (स ३७८)-विसयमागय वि [विषयमागत] रसना इन्द्रिय के विषय को प्राप्त। (स ३७८) रसविसयमागय तु रस।

रहिअ/रहिद/रहिय वि [रहित] परित्यक्त, वर्जित,हीन। (निय ६५,प्रव ५९,बो ४५,भा १२२) समदा रहियस्स समणस्स। (निय १२४) तह रायाणिलरहिओ। (भा १२२) -कसाअ पु [कषाय]कषायरहित। (प्रव चा २६) जुत्ताहारविहारो, रहिदकसाओ हवे समणो। (प्रव चा २६)

रा अक [रञ्ज्] अनुराग करना, आसक्त होना। (स २७९) राइज्जदि अण्णेहिं दु। राइज्जदि (व प्र ए स २७९)

राइ वि [रागिन्] रागयुक्त, रागी। (मो ९३) राई देव असजय वदे

। (मो ९३)

राग पु [राग] राग,आसक्ति,प्रेम (पचा.१६७,स ३७०,प्रव.१४, नियम.६, मो.५०) जस्स ण विज्जदि रागो। (पचा.४६) -प्पजह वि [प्रजह] राग को छोड़ने वाला। (स.२१८) णाणी रागप्पजहो। -रहिद वि [रहित] रागरहित, आसक्ति रहित। (प्रव.ज्ञे.८७) मुच्चदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा।

राज पु [राजन्] राजा, नृप, नरेश। (नियम.६७)

राध पु [राध] इष्ट, उचित, सिद्ध। (स.३०४) ससिद्धि, सिद्ध, साधित और अपराधित ये राध के एकार्थवाची है। (स.३०४) शुद्ध आत्मा की सिद्धि अथवा साधन को राध कहतें है।

राम पु [राम] बलभद्र, बलदेव। (भा.१६०) चक्कहररामकेसव।

राय देखो राज। (स.२२४,२२६) तो सो वि देदि राया। (स २२४)

राय देखो राग। (स १४७,प्रव.चा ४७,चा.२९,भा ७२,नियम.१२०, बो.५) रायम्हि य दोसम्हि। (स.२८२) रायम्हि (स ए.) -करण न [करण] राग की क्रिया, राग का आश्रय। (स.१४८) संसग्ग रायकरण च। -चरिय न [चरित] राग की चेष्टा, राग का आचारण, राग से सेवित। (प्रव.चा ४७) ण णिदया रायचरियम्मि। -संगसंजुत्त वि [सङ्गसंयुक्त] रागरूप, परिग्रह से युक्त। (भा.७२) जे रायसगसजुत्ता। (भा.७२)

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात। (चा २२) -भत्त पुं न [भक्त] रात्रि, भोजन, रात्रि मे आहार। पोसहसच्चित्तरायभत्ते य। (चा.२२)

रासि पुं स्त्री [राशि] समूह, ढेर। (भा.२०) हवदि य गिरिसमधिया

रासी। (भा २०)

रिट्ठणेमि पु [अरिष्टनेमि] बाईसवे तीर्थङ्कर, नेमिनाथ। (ती भ ५)

रिसि पु [ऋषि] मुनि, साधु। (भा १४३) रिसिसावयदुविहधम्माण। (भा १४३)

रुइ स्त्री [रुचि] रुचि, प्रीति। (मो ३८) तच्चरुई सम्मत्त।

रुध सक [रुध्] रोकना, अटकना। (स १८७) अप्पाणमप्पणा रुधिऊण।

रुभ देखो रुध। (भा १४१) रुभहि मणु जिणमग्गे।

रुक्ख पु न [वृक्ष] 1 पेड़, पादप, वृक्ष। (भा १२१) झाणकुठारेहिं भवरुक्ख। 2 वि [रूक्ष] नीरस, सूखा, स्निग्धता रहित। (बो ५१) सरीरसकारवज्जिया रुक्खा।

रुच्च सक [रुच्] पसन्द, अच्छा लगना, प्रिय लगना। (मो ९६) ज ते मणस्स रुच्चइ।

रुजा स्त्री [रुजा] बीमारी, रोग, व्याधि। (निय ६) रागो मोहो चिता जरा रुजा मिच्चू।(निय ६)

रुण्ण न [रुदित] रोदन,रोना। (भा १९) रुण्णाण णयणणीर।

रुद्द वि [रौद्र] दारुण, भयङ्कर, भीषण, ध्यान का एक भेद। (पचा १४०,निय १२९) इदियवसदा य अत्तरुद्दाणि। (पचा १४०) जो दु अट्ठ च रुद्द च । (निय १२९)

रुहिर पु न [रुधिर] रुधिर, रक्त, खून। (बो ३७,भा ३९)

रूढ वि [रूढ] परपरागत, रूढिसिद्ध। (प्रव चा ५२) तण्हाए वा समेण वा रूढ।

रूव पु न [रुप] रूप,आकार,आकृति,पुद्गल का एक गुण। (पंचा ११६,स.३९२,प्रव.२९, नियं.२७,द.१९,चा.३६,भा.२२, बो.१२, शी.१५) रूवाणि य चक्खूणं। (प्रव.२८) -जाद वि [जात] रूप से उत्पन्न,रूप को प्राप्त।(प्रव.चा.५) जधजादरूवजाद। -धर वि [धर] रूपधारी, वेशधारण करने वाला।जादो जधजादरूवधरो।(प्रव.चा.४)-त्थ वि [स्थ] रूपार्थ, रूपस्थ।रूवत्थ सुद्धत्थं।(बो.५९)-विरूव पुं न [विरूप] रूप और विरूप।(शी.१८)-सिरी स्त्री [श्री] रूप की शोभा। रूवसिरिगव्विदाणं।(शी.१५)

रूवि वि [रूपिन्] रूपवाला,रूपी।(स.६३)-त्त वि [त्व] रूपवान्, रूपीपना। जीवा रूवित्तमावण्णा। (स.६३)

रूस अक [रूष्] गुस्सा करना,क्रोध करना,रोष करना। (स.३७३) ताणि सुणिऊण रूसदि। रूसदि (व.प्र.ए.स.३७३) रूससि (व.म.ए.स.३७४)

रेणु पु न [रेणु] रज, धूली। (स.२३७) -बहुल वि [बहुल] अत्यन्त धूलवाला, प्रचुरधूलवाला। रेणुबहुलम्मि ठाणे। (स.२४२)

रोग पुं [रोग] बीमारी, व्याधि। (प्रव.चा.५२) रोगेण वा छुधाए।

रोच सक [रोचय्] रुचना, अच्छा लगना।(स.२७५, भा ८४) सद्दहदि य पत्तेदि य रोचेदि य। (स. २७५)

रोध पु [रोध] रुकावट,रोक,संवर। (पचा १६८) रोधो तस्स ण विज्जदि।

रोय देखो रोग। (निय.४२,भा ३७) मनुष्य के शरीर के एक-एक

अगुल प्रदेश मे छियानवे-छियानवे रोग होते है, शेष समस्त शरीर मे कितने कहे गये , यह कौन कहे? (भा ३७) -ग्गि पु स्त्री [अग्नि] रोग रूपी आग। रोयग्गी जा ण डहइ देहउडिं। (भा १३१)

रोस पु [रोष] गुस्सा, क्रोध, द्वेष। (निय ६) छुहतण्हभीरुरोसो।

रोह अक [रुह्] उत्पन्न होना, उगना। ण वि रोहइ अकुरो य महिवीढे। (भा १२५)

ल

लबिय वि [लम्बित] लटका हुआ। लबियहत्थो गलियवथो। (भा ४)

लक्ख सक [लक्षय्] जानना, पहचानना, देखना। (चा १२,बो २०) तह णवि लक्खदि लक्ख। (बो २०) लखदि (व प्र ए) लक्खिज्जइ (व.प्र ए चा १२) लक्खतो (व कृ प्र ए)

लक्ख बि [लक्ष्य] 1 उद्देश्य, निशाना, देखने योग्य। (बो २०) तह णवि लक्खदि लक्ख। 2 पु न [लक्ष] लाख,सख्या विशेष। (भा १२०) चउरासीगुणगणाण लक्खाइ।

लक्खण पु न [लक्षण] वस्तुस्वरूप, भेदक चिन्ह, सकेत, विशेषता। (स ६४,प्रव ज्ञे ५,चा १२,बो ३७) एव पुग्गलदव्व जीवो तह लक्खेणेण मूढमदी। (स ६४)

लज्जा स्त्री [लज्जा] लज्जा, शरम, अदब। (द १३) लज्जगारवभएण।

लच्छी स्त्री [लक्ष्मी] सम्पत्ति, वैभव। (भा.७५)

लद्ध सक [लभ्] प्राप्त करना। (निय.१५७,द.३४) लद्धूण णिहिं एक्को। (निय १५७)

लद्ध वि [लब्ध] प्राप्त, प्रत्यक्ष किया, उपलब्ध। (प्रव.६१, पंचा.१०६)-बुद्धि स्त्री [बुद्धि] बुद्धि को प्राप्त। भव्वाण लद्धबुद्धीणं। -सहाव पु [स्वभाव] स्वभाव को प्राप्त। (पव.१६, प्रव ज्ञे.२६) तह सो लद्धसहावो। (प्रव.१६)

लद्धि स्त्री [लब्धि] 1 सामर्थ्य, क्षयोपशम, योग आदि से उपलब्ध होने वाली शक्ति। (निय १५६, मो.२४) णाणाविहं हवे लद्धी। (निय.१५६) काल, करण, उपदेश, उपशम और प्रायोग्य ये पाँच लब्धियाँ हैं। कालाईलद्धीए, अप्पा परमप्पओ हवदि। (मो.२४) 2 लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि। पंससणिद्दा अलक्खलद्धि समा। (बो.४६)

लब्भ सक [लभ्] प्राप्त करना, उपलब्ध करना। (पंचा.१०२, भा ७५) लब्भति दव्वसण्ण। (पंचा १०२)

लभ सक [लभ्] प्राप्त करना, उपलब्ध करना। (प्रव.ज्ञे १९, भा ८७) पादुब्भाव सदा लभदि। (प्रव.ज्ञे.१९) लभदि (व.प्र.ए.) लभेह (वि./आ.म व भा ८७)

लय पु [लय] नाश, तिरोभाव, विनाश। (प्रव.८०) मोहो खलु जादि तस्स लयं। (प्रव ८०)

लव सक [लप्] बोलना, कहना। (भा ३८)

लविअ वि [लपित] कथित, उपदिष्ट। (भा.३९)

लवण न [लवण] नमक, लवण। (शी ९) खडियलवणलेवेण।

लह देखो लभ। (पचा २८,स १८६,प्रव ७९,द ५,सू ६,चा ४०, भा ७२, बो १९, मो १२) लहदि (व प्र ए पचा २८) एव लहदि त्ति णवरि ववदेस। (स १४४) लहइ/लहेइ (व प्र ए स १८९,सू १६) लहति/लहते (व प्र ब चा ४०,४२) लहिदु (हि कृ स २०४)

लहु वि [लघु] 1 छोटा, थोडा, अल्प। (प्रव चा ७५,भा ६०) लहुणा कालेण पप्पोदि। (प्रव चा ७५) 2 शीघ्र जल्दी। (चा ४५) लहु चउगइ चइऊण।

लिग न [लिङ्ग] चिन्ह, लक्षण, प्ररूप, प्रतीक, वेश। (पचा ६, स ४०८,प्रव ८५,सू १९,द १८,शी २ भा ६) णाणतरिदेहिं लिगेहिं। (पचा १२३) जिणलिग धारतो। (लि १४)-ग्गहण न [ग्रहण] वेशधारण,चिह्नग्रहण। (प्रव चा १०,शी ५) लिगग्गहण च दसणविसुद्ध। (शी ६)-दसण न [दर्शन] लिङ्ग दर्शन। (द १८) लिगदसण णत्थि। -पाहुड न [प्राभृत] लिङ्गप्राभृत, ग्रन्थविशेष। (लि २२) इय लिगपाहुडमिण। -मत्त पु [मात्र] लिङ्ग मात्र। (लि २) -रूव पु [रूप] लिङ्ग रूप,मुनिवेश। (लि ४,७,१५) पुढवीओ खणदि लिगरूवेण। (लि १५) -विवाई वि [व्यवायी] वेशधारण कर छल करने वाला, मुनिवेश को नष्ट करने वाला। (लि १२) मायी लिगविवाई।

लिगि वि [लिङ्गिन्] धर्म के वेश को धारण करने वाला,साधु। (सू १३,भा ४८,लि ३) पावदि लिगी णरयवास। (लि ११)

-भाव पु [भाव] लिङ्गीभाव। उवहसदि लिगिभावं। (लि ३) -रूव पु [रूप] लिङ्गी का रूप। (लि ६)

लिप्प अक [लिप्] लिप्त होना, आसक्त होना। (सू.२४१, भा १५३) लिप्पदि कम्मरएण दु। (स २१९) लिप्पदि (व प्र ए स २१९) लिप्पति (व प्र ब स २७०)

लुक्ख पु [रूक्ष] रूक्ष, रूखा, स्निग्धता से रहित। (प्रव ज्ञे.७१) णिद्धो वा लुक्खो वा। (प्रव ज्ञे.७१) णिद्धा वा लुक्खा वा। (प्रव ज्ञे ७३) -त्त वि [त्व] रूक्षत्व, रूक्षता। (प्रव ज्ञे ७२)

लुण सक [लू] छेदना, काटना। (भा १५७)

लुद्ध वि [लुब्ध] लोभी, लम्पट, लोलुप। (शी २१) -विस पु [विष] लोभी को विष। (शी २१) जह विसयलुद्धविसदो।

लुल्ल वि [दि] लूला, खञ्ज, लगडा। ते होंति लुल्लमूआ। (द १२)

ले सक [ला] लेना, ग्रहण करना। (सू १८, मो २१) जह लेइ अप्पबहुय। (सू १८) लेवि (अप स कृ मो २१)

लेव पु [लेप] लेपन, उवटन, मालिश, मल्हम। (शी ९, प्रव चा. ५१) कुव्वदु लेवो जदि वियप्प। (प्रव.चा ५१)

लेस्सा स्त्री [लेश्या] आत्मा का परिणाम विशेष। कषाय से अनुरञ्जित योग की प्रवृत्ति को लेश्या कहते हैं। सजमदसणलेस्सा। (बो ३२) कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, और शुक्ल ये छह लेश्यायें है।

लोअ/लोग पु [लोक] 1 लोक, ससार, जगत्। जहा जीव, अजीव, धर्म, अधर्म, आकाश, और काल ये छह द्रव्य पाये जाते है।

(पचा ३,प्रव ६१,द्वा २) सो चेव हवदि लोओ। (पचा.३) **-उत्तम** वि [उत्तम] लोक मे उत्तम। (ती भ ७) **-ओगाढ** वि [अवगाढ] लोक मे व्याप्त। (पचा ८३) लोगोगाढ पुट्ठ। (पचा ८३) **-सहाव** लोकस्वभाव। लोगसहाव सुणताण। (पचा ९५)2 लोग,मनुष्य, जन। (स ५८,१०६) लोगा भणति ववहारी। (स ५८)

लोगिग वि [लौकिक] लोकसम्बन्धी, सासारिक। (प्रव चा ५३,६८,६९) **-जण** पु [जन] लौकिक मनुष्य। (प्रव चा ५३,६८)

लोच पु [लौंच] केशों का निकलना, उखाड़ना। (प्रव चा ८)

लोभ पु [लोभ] लालच, तृष्णा। (पचा १३८) लोभो व चित्तमासेज्ज।

लोय देखो लोअ। (पचा ८७,स ९,प्रव ३३, निय ४८, भा ३६, मो २७) समओ सव्वत्थ सुदरो लोए। (स ३) **-अग्ग** न [अग्र] लोक का अग्रभाग। (निय ७२,१८२) जह लोयग्गे सिद्धा। (निय ४८) **-अलोय** पु [अलोक] लोक और अलोक। (निय १६६,भा १४९) **-आयास** पु न [आकाश] लोकाकाश। (निय ३२,३६) **-प्पदीवयर** वि [प्रदीपकर] लोक को प्रकाशित करने वाले। (स ९,प्रव ३३) भणति लोयप्पदीवयरा। **-ववहारविरद** वि [व्यवहारविरत] लोक के व्यवहार से रहित। लोयववहार विरदो अप्पा। (मो २७) **-विभाग** पु [विभाग] लोक का अश। (निय १७) लोयविभागेसु णादव्वा।

लोयंतिय पु [लौकान्तिक] लौकान्तिक देव,देवो की एक जाति

(मो ७७) -देवत्त वि [दिवत्व] लौकान्तिक देवपना। (गो.७७)

लोल अक [लुठ्] लोटना। (भा ४१)

लोल वि [लोल] लम्पट, लुब्ध, आसक्त, चपल। (पचा.१३९) -दा वि [ता] लोलुपता, चपलता। कालुस्सं लोलदा य विसएसु। (पचा १३९)

लोलित वि [लोलित] लोटता हुआ, लोटने वाला, स्खलित, चलित। असुईमज्झम्मि लोलिओ सि तुम। (भा ४१)

लोह 1 देखो लोभ। (स.१२५, नियं.८१, बो.५, चा ३३) -उवजुत [उपयुक्त] लोभयुक्त। (स १२५) लोहुवजुत्तो हवदि लोहो। 2. पु न [लोह] लोहा, धातु विशेष। कद्दमगज्झे जहा लोहं। (स २१९)

व

व अ [व/वा] 1 अथवा, या, और, तथा, पादपूर्ति अव्यय। (पचा ११, स.१४७, नियं ५७, प्रव ७०) उप्पत्ती व विणासो। (पचा ११) 2 अ [वत्] जैसा, तरह।

वइसेसिय न [वैशेषिक] कणाद-दर्शन, मत विशेष। (शी.१६) वायरणछदवइसेसिय।

वद सक [वन्द] वन्दना करना, प्रमाण करना, नमन करना। (प्रव ३, द २८, मो ९३, भा १, चा.१, स २०, बो.१) वदामि य वट्टते। (प्रव ३) वदए (व प्र ए मो ९२) वदमि/वदामि

(व उ ए प्रव ३, द २७,२८) वदे (व उ ए मो ९३) वदिज्ज (वि /आ प्र ए द ३६) वदिज्जइ (क व प्र ए द २७) वदिव्वो (वि कृ प्र ए द २) वदित्ता (स कृ बो १) वदित्तु (स कृ चा १,स १)

वदण न [वन्दन] प्रणाम, नमन, स्तवन। (प्रव चा ४७) वदणणमसणेहिं। (प्रव चा ४७)

वदणिज्ज वि [वन्दनीय] वन्दना करने योग्य, प्रणाम करने योग्य। (सू २०) सो होदि हु वदणिज्जो य। (सू २०)

वदणीअ/वदणीय वि [वन्दनीय] वन्दनीय, पूजनीय, पूज्य। (सू ११,१२,बो १०,द २३) सो होइ वदणीओ। (सू ११)

वदिअ/वदिद/वदिय वि [वन्दित] अर्चित, पूजित। (स २८, पचा १, प्रव १, भा १) वदिदो मए केवली भयव। (स २८)

वस पु [वश] बाँस, वेणु। (स २३८, २४३) तालीतलकयली वसपिंडीओ (स २३८)

वक्क न [वाक्य] वचन, शब्द, पदावली। वह पदसमूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। (पचा.१) तिहुवणहिदमधुरविसदवक्काण। (पचा १)

वग्ग पु [वर्ग] सजातीय समूह, प्रभाग, दल। (स ५२, प्रव ४) जीवस्स णत्थि वग्गो। (स ५२)

वच न [वचस्] वचन, वाणी,भाषा। (बो ४२, निय ६७) -गुत्ति स्त्री [गुप्ति] वचनगुप्ति। परिहारो वचगुत्ती। (निय ६७)

वचि स्त्री [वाच्] वाणी, वचन। (पचा ३५, भा ६३)

-गोचर/गोयर पु [गोचर] वचन का विषय, वचन के द्वारा ग्रहण करने योग्य। ते होति भिण्णदेहा, सिद्धा वचिगोयरमदीदा। (पचा ३५)

वच्च सक [वच्] 1 कहना, बोलना। कह ते जीवो त्ति वच्चंति। (स ४४) 2 सक [व्रज्] जाना, गमन करना। (लि.६,९) गच्चदि णरय पाओ। (लि ६)

वच्छल्ल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुराग, प्रेम, सम्यक्त्व का एक अङ्ग, सोलह कारण भावना का एक भेद। (स.२३५, ना ११, बो १६) जो जीव आचार्य, उपाध्याय और साधुओं के प्रति तथा मोक्षमार्ग मे वत्सलता करता है, वह वात्सल्य मे युक्त है। (स २३५) -त्त/दा [त्व/ता] वत्सलत्व, वत्सलता, स्नेहपना। (स २३५,प्रव.चा.४६) -भावजुद वि [भावयुत] वात्सल्यभाव से युत, वात्सल्यसहित। (स २३५)

वज सक [व्रज्] जाना, गमन करना। णिव्वाणपुरं वजदि धीरो। (पचा.७०)

वज्ज सक [वर्जय्] त्याग करना, छोड़ना। (स.१४८, १४९, निय १२९, चा० १५) वज्जेदि (व प्र ए स.१४८, निय.१३०) वज्जति (व प्र व स १४९) वज्जहि (वि/आ म.ए चा १५) वज्जहि णाणे विसुद्धसम्मत्ते। (चा १५)

वज्ज पु न [वज्र] हीरा, पत्थर विशेष। जहरयणाण वज्जं। (भा ८२)

वज्जण न [वर्जन] परित्याग, परिहार। अणत्थदंडस्स वज्जण

विदिय। (चा २५)

वज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। (भा ११८)

वज्जरिय [कथित] कहा हुआ, उपदिष्ट, कथित, प्रतिपादित। सखेवेणेव वज्जरिय। (भा ११८)

वज्जिज्ज वि [वर्जित] छोडने योग्य,निषिद्ध। (निय १५६)

वज्जिद/वज्जिय वि [वर्जित] रहित, हीन, परित्यक्त। (निय १५,९ ,बो ३६,५१) सरीरसस्कारवज्जिया रुक्खा। (बो.५१)

वज्झ सक [बन्ध्] बाधना, जकडना, पकडना, नियन्त्रण करना। (पचा १४९, स १६९, ३०१-३०३, प्रव ज्ञे ८४) वज्झदि (व प्र ए स १७२, प्रव ज्ञे ७४) वज्झए (व प्र ए स १६८,१९५) वज्झामि (व उ ए स ३०३) वज्झेज्ज (वि /आ उ ए स ३०१) वज्झिदु (हि कृ स ३०२) वज्झति (व.प्र ब पचा १४९, प्रव ज्ञे ८६) तेसिमभावे ण वज्झति। (पचा १४९)

वट्ट सक [वृत्] 1 वर्तना, होना, प्रवृत्त करना, प्रेरित करना। (स ३०५,प्रव २७,निय ८४,सू २) वट्टदि/वट्टइ/ वट्टेइ (व प्र ए प्रव २७, निय ८४, स ३०५) वट्टदे (व प्र ए स ६९) वट्टदु (वि /आ प्र ए.प्रव चा २१,६१) वट्टत (व कृ स ७०,२४६) वट्टदि तह णाणमत्थेसु। (प्रव ३०) 2 आचरण करना, धारण करना। वट्टतो बहुविहेसु जोगेसु। (स २४६)

वट्ट वि [वृत्त] गोल, वर्तुल। वट्टेसु य खडेसु य। (शी २५)

वट्टण न [वर्तन] विद्यमान, स्थित, अवस्थित। (प्रव चा ९३) वट्टण

वत्थ पुं न [वस्त्र] कपड़ा, परिधान। (स.१५७ द.२६, सू.२२, बो ४५, भा.४) वत्थस्स सेदभावो। (स.१५७) -आवरण न [आवरण] वस्त्र का पर्दा। (सू.२२) वत्थावरणेण भुंजेइ। (सू.२२) -खंड पुं न [खण्ड] वस्त्र का भाग, विना सिला वस्त्र। (प्रव.चा.ज.वृ.२०) -धर वि [धर] वस्त्रधारी। णवि सिज्झइ वत्थधरो। (सू.२३) -विहीण वि [विहीन] वस्त्र रहित। वत्थविहीणो वि तो ण वंदिज्ज। (द.२६)

वत्थु न [वस्तु] पदार्थ, द्रव्य, सामग्री, सम्पत्ति। (स.२६५, प्रव चा.५५) दिट्ठा पगदं वत्थू। (प्रव.चा.६१) -विसेस पुं न [विशेष] पदार्थ विशेष। वत्थुविसेसेण फलदि विवरीदं। (प्रव चा.५५)

वद सक [वद्] कहना, बोलना। (स.४३,निय.६३) परमप्पाणं वदति दुम्मेहा। (स.४३)

वद पु न [व्रत] नियम, धार्मिक प्रतिज्ञा। (स.१५२, प्रव.चा.५६, निय ११३, भा.८३, चा.२२, बो.१७) वदणियमाणि धरंता। (स.१५३)

वदि स्त्री [वाच्] वाणी, वचन। (निय ६९) मोणं वा होइ वदिगुत्ति। -गुत्ति स्त्री [गुप्ति] वचनगुप्ति।असत्यादिक से निवृत्ति अथवा मौन रहना वचनगुप्ति है। (निय.६९)

वदिरित्त वि [व्यतिरिक्त] भिन्न, वियुक्त। (निय.१९,३८, द्वा.७) विहावगुणपज्जएहिं वदिरित्तं। (निय.१०७)

वदिवदद वि [व्यतिपतत] मन्दगति से परिणमन करने वाला, मन्द

वि सव्वकालेसु। (प्रव चा ९३) -लक्ख न [लक्षण] वर्तनालक्षण। वट्टणलक्खो य परमट्ठो। (पचा २४)

वट्टणा स्त्री [वर्तना] वर्तना, परावर्तन, आवृत्ति। (प्रव चा ४२) कालस्स वट्टणा से।

वड्ढमाण पु [वर्धमान] भगवान् महावीर का एक नाम, वर्धमान। पणमामि वड्ढमाण। (प्रव १)

वण न [वन] जङ्गल, अरण्य, वन। (निय १२४, भा २१) -वास पु [वास] वनवास, जङ्गल मे निवास। कि काहदि वणवासो। (निय १२४)

वणप्फदि पु [वनस्पति] वृक्षविशेष, वृक्ष आदि। (पचा ११०)

वणिज्ज न [वाणिज्य] व्यापार। (लि ९) किसिकम्मवणिज्जजीवघाद च।

वण्ण पु [वर्ण] वर्ण, रङ्ग। (पचा २४, स ५०, प्रव ५६) जीवस्स णत्थि वण्णो। (स ५०)

वण्णिअ/वण्णिद/वण्णिय वि [वर्णित] प्रतिपादित, वर्णन किया गया। (स १९८) आकारओ वण्णिओचे या। (स २८३)

वत्त सक [वद्] कहना, बोलना। (स २५) तो सत्तो वत्तु जे। वत्तु (हे कृ स २५)

वत्तव्व न [वक्तव्य] वचन, कथन, वाणी। (स ३५३, ३६०) ववहारणयस्स वत्तव्व। (स १०७)

वत्तीस वि [द्वात्रिशत्] बत्तीस, सख्याविशेष। वेणइया होंति वत्तीसा। (भा १३६)

गति से गमन करने वाला। (प्रव ज्ञे.४६,४७) वदिवददो सो वट्टदि। (प्रव ज्ञे ४६)

वय देखो 1 वद(वचन)।-गुत्ति स्त्री [गुप्ति] वचनगुप्ति। (चा ३२)। 2 देखो वद (व्रत)। (बो २५) वयसम्मत्तविसुद्धे। (बो.२५) -सहिय वि [सहित] व्रत सहित। (भा ८३) 3 पुं [व्यय] क्षय, नाश। (प्रव.ज्ञे ३,४) 4 पु न [वयस्] उम्र, अवस्था, आयु। (प्रव चा ३)

वय अक [व्यय] नष्ट होना, क्षय होना। (प्रव ज्ञे ११) पज्जाओ पज्जओ वयदि अण्णो। (प्रव ज्ञे.११)

वयण पु न [वचन] वचन, कथन, शब्द। (पचा १४८, स ३००, प्रव ३४,निय ३, भा १०७) जोगो मणवयणकायसभूदो। (पचा १४८) -उच्चारण न [उच्चारण] वचन का कथन। (निय १२२) -मय वि [मय] वचनमय। (निय १५३) वयणमय पडिकमण। (निय १५३) -रयणा स्त्री [रचना] वचनों की रचना। (निय ८३) मोत्तूण वयणरयण। (निय ८३) -विवाद पु [विवाद] वचन सम्बन्धी विवाद, जबानी लडाई, वाक्युद्ध। (निय १५६) तम्हा वयणविवाद। (निय १५६)

वर [वर] श्रेष्ठ, उत्तम, उत्कृष्ट। (निय ११७, भा.१०९, मो २५) -कारण न [कारण] श्रेष्ठ कारण। (भा ७९) -खमा स्त्री [क्षमा] उत्तम क्षमा। (भा १०९) वरखमसलिलेण सिचेह। (भा.१०९) -णाणि वि [ज्ञानिन्] उत्कृष्ट ज्ञानी, श्रेष्ठ जानकार। (द ६) वरणाणी होंति अइरेण। (द.६) -तव पु न [तपस्] उत्तमतप,

उत्कृष्ट तपश्चर्या। (निय ११७) वरतवचरण महेसिण सव्व। (निय ११७) **-भवण** न [भवन] उत्तम भवन। (द्वा ३) **-भाव** पु [भाव] उत्कृष्टभाव। (भा १५२, १६२) खणति वरभावसत्थेण। (भा १५२) **-वय** पु न [व्रत] उत्तमव्रत, श्रेष्ठ प्रतिज्ञा। (मो २५) वरवयतवेहि सग्गो। (मो २५) **-सिद्धिसुह** न [सिद्धिसुख] उत्तमसिद्धिरूपी सुख। (भा १६१) पत्ता वरसिद्धिसुह। (भा १६१)

वरिट्ठ पु [वरिष्ठ] अतिश्रेष्ठ, अतिइष्ट। (प्रव ज वृ २२) त सव्वट्ठवरिट्ठ इट्ठ।

वल पु न [बल] सैन्य, सैना, शक्ति। (स ४७) **-समुदय** पु [समुदाय] सेना समूह, शक्ति का भडार। एसो वलसमुदयस्स आदेसो। (स ४७)

वल्लह वि [वल्लभ] प्रिय, स्नेही, पति। देवा भवियाण वल्लहा होंति। (शी १७)

ववगद/ववगय वि [व्यपगत] दूर किया हुआ, विसर्जित, हटाया हुआ, रहित। (पचा २४, निय ५, बो २४) ववगदपणवण्णरसो।

ववदिस सक [व्यप+दिश्] कहना, प्रतिपादन करना। (स ६०) णिच्छयद्दण्हू ववदिसति। (स ६०)

ववदेस पुं [व्यपदेश] कथन, प्रतिपादन। (पचा ५२, स १४४, निय २९) कालो त्ति य ववदेसो। (पचा १०१)

ववसाअ/ववसाय पु [व्यवसाय] उद्यम, प्रयत्न। (स २७१, निय १०५) बुद्धिववसाओ वि।(स २७१)

ववसायि वि [व्यवसायिन्] उद्यमशील, व्यवसायी। (निय.१०५) सूरस्स ववसायिणो।

ववहार पु [व्यवहार] 1. नय विशेष, वस्तुपरिज्ञान का एक दृष्टिकोण। (पंचा ७६,स.४८,प्रव.ज्ञे.९७,निय.१३५,मो ३२, द.२०)व्यवहार अभूतार्थ है। (स.११) **-णअ/णय** पु [नय] व्यवहारनय। (स.२७२, निय.४९) ववहारणयो भासदि। (स.२७) **-देसिद** वि [दिशित] व्यवहार से कथित, व्यवहार से प्रतिपादित।ववहारदेसिदा पुण। (स.१२)**-भासिअ** वि [भाषित] व्यवहार से कथित।ववहारभासिएण उ। (स.३२४) 2 गणित, एक सख्या का मापक (व्यवहारपल्य),जीवों की सख्या का मापक (व्यवहार राशि)। ववहारणायसत्थेसु। (शी १६)

ववहारि पु [व्यवहारिन्] व्यवहारी, व्यापारी, व्यवहार क्रिया मे लीन। लोगा भणति ववहारी। (स ५८)

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार सम्बन्धी, व्यवहार कुशल। (स.४१४) ववहारिओ पुण णओ। (स.४१४)

ववहारिण पु [व्यवहारिन्] व्यवहार क्रिया प्रवर्तक। (प्रव.चा.१२)

वस अक [वस्] रहना, निवास करना। (भा.४०)

वसह पु [वृषभ] उत्तम, श्रेष्ठ, प्रमुख, आदिनाथ का एक नाम। (मुणिवरवसहा णि इच्छति। (बो ४३)

वसिअ वि [वषित] रहा हुआ, स्थित रहा। (भा १७, २१) उयरे वसिओसिचिर। (भा ३९)

वसिट्ठ पु [वशिष्ट] एक मुनि का नाम। (भा.४६) **-मुणि** पु [मुनि]

वशिष्ठ मुनि। अण्ण च वसिट्ठमुणी।

वसिद देखो वसिअ। (बो ४१) भीमवणे अहव वसिदो वा।

वसुहा स्त्री [वसुधा] पृथिवी, धरती, भूमि। (लि १६)

वह सक [वह्] धारण करना, ले जाना, ढोना। (निय ६०) चारित्तभर वहतस्स। (निय ६०) वहत (व कृ)

वह पु स्त्री [वध] घात, हनन। पाणिवहेहि महाजस। (भा १३४)

वा अ [वा] अथवा,या,तथा,और,भी,यदि,पादपूर्ति अव्यय। (पचा ५८, स १९४, प्रव ९, निय ३९,बो ४१) गुणपज्जयासय वा। (पचा १०)

वाअ सक [वाजय्] बजाना। (लि ४) वाय वाएदि लिंगरूवेण।

वाउ पु [वायु] पवन, हवा, वात, वायुकायिक जीव विशेष। (पचा ११०, प्रव ज्ञे ७५) वाउवणप्फदिजीवससिदा काया। (पचा ११०)

वाछा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, आकाक्षा। (निय ५९) -भाव पु [भाव] इच्छा का भाव।(निय ५९)

वाणी स्त्री [वाणी] वचन, वाक्य। देहो य मणो वाणी। (प्रव ज्ञे ६९)

वाद पु [वाद] शास्त्रार्थ, कहना, मत। कलह वाद जूवा। (लि ६)

वादर [बादर] स्थूल, मोटा, नामकर्म का एक भेद। (पचा ६४, स ६५) वादरसुहुमगदाण। (पचा ७६)

वाधा/वाहा स्त्री [बाधा] व्यवधान, व्याघात, रुकावट। (प्रव ७६) -सहिद वि [सहित] बाधासहित।सपर वाधासहिद। (प्रव ७६)

वामोह पु [व्यामोह] मूढ़ता, भ्रान्ति। गारवमयरायदोसवामोह।

(मो.२७)

वाय पु [वाज] शब्द, आवाज, वाद्यविशेष। वाय वाएदि लिगरूवेण। (लि ४)

वायरण न [व्याकरण] व्याकरण, शास्त्र विशेष। (शी.१६)

वायाम पु [व्यायाम] कसरत, शारीरिक श्रम। (स २३७) करेदि सत्थेहिं वायामं। (स.२३७)

वार पु [वार] अवसर, बेला। वार एकम्मि य जम्मे। (शी.२२)

वारण न [वारण] निषेध, रोक, निवारण।सुहमसुहवारण किच्चा। (निय.९५)

वालण न [ज्वालन] जलाना, दग्ध करना। (भा.१०) खणणुत्तावणवालण। (भा १०) वालण मे व्यञ्जन का लोप हो गया है।

वालुअ/वालुय स्त्री [बालुका] बालू, रेज, रज, धूली। (द ७) -वरण पु [वरण] बालू का पुल, रेत का सेतु। कम्म वालुयवरण। (द ७)

वावार पु [व्यापार] नियोजन, संलग्नता, प्रक्रिया। (प्रव ६४, निय ७५,भा ४५)वावारो णत्थि विसयत्थ।(प्रव ६४)-विप्प-मुक्क वि [विप्रमुक्त] इन्द्रियो की प्रवृत्ति से सर्वथा रहित वावारविप्पमुक्का। (निय ७५)

वावीस वि [द्वाविंशति] बाईस, सख्याविशेष। (बो ४४, सू १२) -परिसह/परीसह पु [परीषह]पीडा,बाधा।जे वावीसपरीसह-सहति। (सू. १२)

वास पु न [वर्ष] 1 वर्ष, साल। वाससहस्सकोडीहिं (द ५) 2 पु [वास] निवास, स्थान विशेष, रहने की जगह। (भा ४६) **-ठाण** पु न [स्थान] निवास स्थान। सो ण वि वासठाणो। (भा ४६)

वाहण पु न [वाहन] रथ आदि वाहन। (द्वा ३)

वाहि पु स्त्री [व्याधि] व्याधि,पीड़ा,कष्ट।जरवाहिदुक्खरहिय। (बो ३६)

वाहिर वि [बाह्य] बाहर, बाह्य। (भा ७) **-गथचाअ** वि बाह्यपरिग्रह का त्याग, बाह्य परिग्रह से रहित। (भा ४) **-णिग्गथ** वि [निर्ग्रन्थ] बाह्य निर्ग्रन्थ।(भा ७)

वि अ [अपि] अपि,भी,ही,औरभी,प्रतिपक्षता,पादपूर्ति अव्यय। (पचा ४१,स ४,प्रव चा २४, निय १०४, द १३, सू ४, चा १०, बो २१, भा ९५, मो ९७, शी ६, लि १४) जह णाम को वि पुरिसो। (स १७)

विअ सक [विद्] जानना, कहना।(भा २,स ३९०)गुणदोसाण जिणा विंति। (भा २)

विआण सक [वि+ज्ञा] जानना, मालूम करना। (स २९३) विआणओ अप्पणो सहाव च।

विआणिअ व [विज्ञात] जाना हुआ, विदित, ज्ञात। (स २९३)

विउल वि [विपुल] प्रभूत, प्रचुर, विशाल। (बो ६१, भा ७५) चउदसपुव्वगविउलवित्थरण। (बो ६१)

विउव्विय वि [वैक्रियिक] वैक्रियिक शरीरी,विक्रिया ऋद्धिधारी, शरीर का एक भेद। (भा १२९) इड्ढिमतुल विउव्विय।

(भा १२९)

विओय/वियोग पुं [वियोग] विरह, वियोग। (स.२१५, भा.१२) -काल पु [काल] वियोग का समय। सुरणिलएसु सुरच्छरविओयकाले। (भा.१२) -बुद्धि स्त्री [बुद्धि] वियोगबुद्धि। (स.२१५) विओगबुद्धीए तस्स सो णिच्चं।

विंट न [वृन्त] फल-पत्रादि का बन्धन। (स.१६८) जह ण फल वज्झए विंटे। (स १६८)

विकध न [विकथ] विकथन, बुराकथन। (प्रव चा.१५) णेच्छदि समणम्हि विकधम्हि। (प्रव.चा.१५)

विकहा स्त्री [विकथा] विकथा, प्रमाद का एक भेद। (चा.३५, भा.१६) चउविह विकहासत्तो। (भा.१६) स्त्री कथा, राजकथा, चोरकथा और भोजनकथाये चार विकथाएँ है। (निय.६७)

विगडि स्त्री [विकृति] विकार, विकृति, रागद्वेष आदि विकार। (निय.१२८) विगडिं जणेदि दु।

विगद वि [विगत] रहित, नाश को प्राप्त। (प्रव.१४,१५) -आवरण पु न [आवरण] आवरण रहित। (प्रव १५) -राग पु [राग] रागरहित। (प्रव.१४) संजमतवसजुदो विगदरागो। (प्रव १४)

विगम पु [विगम] विनाश, व्यय। विगमुप्पादधुवत्त। (पचा.११)

विग्गह पु [विग्रह] 1 आकृति, आकार। 2. शरीर, देह। 3. मोड़, टेढ़ा, वक्र। 4. अलग-अलग होना, टूट जाना, बिखर जाना।

विग्घ पु न [विघ्न] अन्तराय, आत्मशक्ति का घातक कर्म, कर्म का

एक भेद।

विचित सक [वि+चिन्तय्] विचार करना, सोचना। (मो ८२, द्वा ३८) विचितत (व कृ मो ८२) विचितेज्जो (वि /आ म ए द्वा ३८) जीवो सो हेयमिति विचितेज्जो। (द्वा ३८)

विचित्त वि [विचित्र] विविध,नाना प्रकार, अनेक तरह का। (प्रव ४७, निय १२४) अत्थ विचित्तविसम। (प्रव ४७) -**उववास** पु न [उपवास] नाना प्रकार के उपवास। (निय १२४) कि काहदि विचित्तउववासो। (निय १२४)

विच्छिण्ण वि [विच्छिंन्न] 1 पृथक् हुआ, अलग हुआ,वियुक्त, नष्ट हुआ। (प्रव ७६) विच्छिण्ण बधकारण विसम। (प्रव ७६) 2 विभक्त,भेदयुक्त। (पचा ५६) बहुसु य अत्थेसु विच्छिण्णा।

विच्छिय पु [वृश्चिक] बिच्छू, जन्तु विशेष। विच्छियादिया कीडा। (पचा ११५)

विच्छेयण न [विच्छेदन] विभाग, पृथक्करण, वियुक्त, अलग। (भा १०)

विजह सक [वि+हा] परित्याग करना, छोड़ना। (पचा ७) सग सभाव ण विजहति। (पचा ७)

विजाण सक [वि+ज्ञा] जानना, मालूम करना, समझना। (निय १५१, स १६०, प्रव २१, पचा १६३) सो ण विजाणदि समय। (पचा १६७) विजाणदि (व प्र ए स १६०, पचा १६७) विजाणति (व प्र ब प्रव ४०, पचा ११६) विजाणीहि (वि /आ म ए निय १५१) बहिरप्पा इदि विजाणीहि।

विजुद वि [वियुत] रहित, हीन। (पचा.३२)

विजुज्ज वि [वियुज्य] खिरते हुए, झड़ते हुए, रहित। (पंचा.६७) काले विजुज्जमाणा।

विज्ज अक [विद्] होना, रहना, अस्तित्व होना। (पचा.१६७, स.२०१, प्रव १७, निय.१७८, सू.२६) रायादीणं तु विज्जदे जस्स। (स.२०१) विज्जदि/विज्जदे (व प्र ए.प्रव.ज्ञे.५०, पचा.१६७) विज्जते (व.प्र.ब.पचा.४६)

विज्जा स्त्री [विद्या] विद्या, शास्त्रज्ञान, यथार्थज्ञान, तपश्चर्या से होने वाली सिद्धि विशेष। (स.२३६) -रह पु न [रथ] विद्यारथ। (स.२३६) विज्जारहमारूढो।

विज्जावच्च न [वैयावृत्य] सेवा, शुश्रूषा, वैयावृत्ति, सोलह कारणभावनाओ का एक भेद। विज्जावच्चं दसवियप्प। (भा.१०५)

विणअ पु [विनय] आदर, सम्मान, शिष्टाचार, विनय, सोलह कारण भावनाओं का एक भेद। (प्रव चा.२५, चा.११) वच्छल्लं विणएण य। (चा.११) विनय का उल्लेख तप के भेदो मे आता है, वहाँ उसके चार भेद किये है-ज्ञानविनय, दर्शनविनय, चारित्रविनय एव उपचार विनय।

विणट्ठ वि [विनष्ट] विनाश को प्राप्त, लुप्त, ध्वस्त, उच्छिन्न। (पचा.१८) उप्पण्णो य विणट्ठो।

विणय देखो विणअ। (प्रव.६६, बो.१६, भा.१०४) -संजुत्त वि [सयुक्त] विनय से युक्त। सुपुरिसो वि विणयसंजुत्तो। (बो.२१)

विणस्स अक [वि+नश्] नष्ट होना, ध्वस्त होना। (स ३४५, ३४६) विणस्सए णेव केहिंचि दु जीवो। (स ३४५)

विणा अ [बिना] बिना, सिवाय, बगैर। (पचा २६, स ८, प्रव १०) दव्वेण विणा ण गुणा (पचा १३) अत्थो अत्थ विणेह परिणामो। (प्रव १०) यहाँ क्रमश दोनों सन्दर्भो मे तृतीया और द्वितीया के योग मे विणा का प्रयोग हुआ है।

विणास सक [वि+नाशय्] ध्वस करना, नष्ट करना, क्षय करना। (सू ४, शी २,२१) ण विणासइ सो गओ वि ससारे। (सू ४) विणासदि (व प्र ए शी २१) विणासति (व.प्र ब शी २)

विणास पु [विनाश] विध्वस, क्षय, नाश। (पचा ११, स १४७, प्रव १७) एव सदो विणासो। (पचा ५४)

विणासग वि [विनाशक] नाश करने वाला, क्षय करने वाला। (मो ६१) मोक्खपहविणासगो साहू। (मो ६१)

विणिग्गह सक [विनि+ग्रह] निग्रह करना, रोकना, वश करना। (स ३७५-३८१) ण य एइ विणिग्गहिदु। (स ३७५) विणिग्गहिदु (हे कृ स ३७५)

विणिच्छय पु [विनिश्चय] निश्चय, निर्णय, परिज्ञान। (स ३६५) विणिच्छओ णाणदसणचरित्ते। (स ३६५)

विण्णाण न [विज्ञात] ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ। (पचा ३७, स.२७१) अज्झवसाण मई य विण्णाण। (स २७१)

विण्णाद वि [विज्ञात] जाना गया, समझा हुआ। जीवमजीव च हवदि विण्णाद। (प्रव ज्ञे ३८)

विण्हु पु [विष्णु] 1 विष्णु। (स ३२१) लोयस्स कुणइ विण्हु। (स ३,२१,३२२) 2 परमात्मा का एक नाम। (भा १५०) जो ज्ञान के द्वारा समस्त लोक-अलोक मे व्यापक है, वह विष्णु है। (भा १५०)

विण्णेय विकृ[वि+ज्ञा] जानने योग्य, समझने योग्य। (स २४०, नियं १११) णिच्छयदो विण्णेय। (स.२४५)

वित्ति स्त्री [वृत्ति] जीविका, जीवन निर्वाह का साधन, चारित्र। वित्तिणिमित्त तु सेवए राय। (स २२४) **-णिमित्त** न [निमित्त] आजीविका हेतु, जीविका के कारण। (स.२२४)

वित्थड वि [विस्तृत] विस्तारयुक्त, विशाल। (प्रव.६१) लोगालोगेसु वित्थडा दिट्ठी। (प्रव ६१)

वित्थार पु [विस्तार] फैलाव, प्रसारण, विस्तार। (प्रव ज्ञे १५, नियं १७) सच्चेव य पज्जओ त्ति वित्थारो। (प्रव ज्ञे १५)

विदिद वि [विदित] ज्ञात, जाना हुआ, सीखा। (प्रव ७८, प्रव चा ७३) **-अत्थ** पु न [अर्थ] ज्ञात हुए पदार्थ। एव विदिदत्थो जो। (प्रव ७८) **-पयत्थ** पु न [पदार्थ] जाने गए पदार्थ। सम्म विदिदपयत्था। (प्रव.चा.७३)

विदिय वि [द्वितीय] दूसरा, सख्यावाची शब्द। (नियं ५७, चा ५,२५,२६, भा ११४) विदियस्स भावणाए। (चा ३३) **-वद** पुं न [व्रत] द्वितीयव्रत, सत्यव्रत। (नियं ५७) जो साधु राग, द्वेष और मोह से युक्त असत्य भाषा के परिणाम को छोडता है, उसके दूसरा सत्यव्रत होता है। (नियं ५७)

विदिसा स्त्री [विदिशा] विदिशा, दिशाओं के बीच के कोण की दिशाएँ। (पचा ७३) विदिसावज्ज गदिं जति। -वज्ज वि [वर्ज्य] विदिशाओं को छोड़कर। (पचा ७३)

विदुस वि [विद्वस्] विद्वान्, वेत्ता, बुद्धिमान, ज्ञानी। (स १५६) ववहारेण विदुसा पवट्टति। (स १५६)

विधाण/विहाण न [विधान] 1 शास्त्रोक्त नियम, रीति, अनुष्ठान। (प्रव ८२) तेण विधाणेण खविदकम्मसा। (प्रव ८२) 2 प्रकार, भेद।

विड्ढि स्त्री [वृद्धि] वृद्धि, विकास, बढ़ोत्तरी। (प्रव ७३) देहादीण विड्ढि।

विपच्च सक [वि+पच्] पकना, उदय मे आना। (स ४५) दुक्ख ति विपच्चमाणस्स। विपच्चमाणस्स (व कृ ष ए स ४५)

विप्पजोग पु [विप्रयोग] वियोग,विरह,जुदापन। सजोगविप्पजोग। (द्वा ३६)

विप्पमुक्क वि [विप्रमुक्त] विमुक्त, रहित। दो-दोसविप्पमुक्को। (मो ४४)

विप्पलय पु [विप्रलय] विनाश,क्षय,अभाव।(स २०९) णिज्जदु वा अहव जादु विप्पलय।

विप्फुर अक [वि+स्फुर] विकसना, देदीप्यमान होना, चमकना। (भा १४४) फणमणिमाणिक्ककिरणविप्फुरिओ। (भा १४४) विप्फुरत (व.कृ भा १५५)

विप्फुरिअ वि [विस्फुरित] देदीप्यमान, चमकने वाला। (भा १४४)

विब्भम पु [विभ्रम] अस्थिरता, अनध्यवसाय, अव्यक्तज्ञान, अतिसामान्यज्ञान।(निय ५१) ससयविमोहविब्भम। (निय.५१)

विभग पु [विभङ्ग] मिथ्यात्वयुक्त अवधिज्ञान। (पचा ४१) कुमदिसुदविभगाणि। (पचा ४१)

विभ अक [विभ्] डरना, भयभीत होना। (पचा १२२) इच्छदि सुक्ख विभेदि दुक्खादो। (पचा १२२)

विभत्त वि [विभक्त] विभाग, भेद, बाँटा हुआ, विभाजित। (पचा ४५, र ४) दो वि य मया विभत्ता। (पंचा ८७)

विभत्ति स्त्री [विभक्ति] विभाग, भेद, व्याकरण मे प्रयुक्त विभक्ति विशेष। (चा३९) जीवाजीवविभत्ती। (चा ३९)

विभाग पु [विभाग] अश, भेद। (निय १७)

विभाव पु [विभाव] औपाधिक अवस्था, विकारी दशा।णरणारय-तिरियसुरा पजाया ते विभावमिदि भणिदा। (निय १५) -णाण न [ज्ञान] विभावज्ञान। विभावणाण हवे दुविह। (निय ११) -दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] विभाव दृष्टि, मिथ्यादर्शन, विकारमयदृष्टि। (निय १४) तिण्णि वि भणिद विभावदिट्ठि त्ति। (निय १४)

विमल वि [विमल विशुद्ध, पवित्र, निर्मल। (प्रव.५९, निय.१११, भा.७२, बो ३१ णाणमयविमलसीयलसलिल। (भा १२४) -गुण पु न [गुण निर्मलगुण, विशुद्धगुण। (निय.१११) भिण्ण भावेह विमलगुणालय। (भा १११) -दसण न [दर्शन] निर्मल सम्यक्त्व। (भा.१४) तह विमलदसणधरो।

विमुंच सक [वि+मुच्] छोडना, परित्याग करना, बन्धनमुक्त

होना। (स ३५) णाऊण विमुचदे णाणी। विमुचदि/विमुचदे/विमुचए (व प्र ए स ४०७,३५)

विमुक्क वि [विमुक्त] छूटा हुआ,बंधनमुक्त। (भा १२४) वाहिजरमरणवेयणडाहविमुक्का सिवा होंति। (भा १२४)

विमुच्च सक [वि+मुच्] छोड़ना, त्याग करना। (प्रव ज्ञे ९४) विमुच्चदे कम्मधूलीहिं।

विमुत्त वि [विमुक्त] छूटा हुआ, बंधन मुक्त। तया विमुत्तो हवइ। (स ३१५)

विमोइद वि [विमोचित] छुड़ाया हुआ,मुक्त हुआ,छोड़ा गया। विमोइदो गुरुकलत्तपुत्तेहिं। (प्रव चा २)

विमोक्ख पु [विमोक्ष] मुक्ति, छुटकारा। (स २८९, सू २३) जीवोवि ण पावइ विमोक्खं।(स २९१) -मग्ग पु [मार्ग] मुक्तिपथ, मोक्षमार्ग। णग्गो विमोक्खमग्गो। (सू २३)

विमोच सक [वि+मुच्] परित्याग करना, छोड़ना। करेमि बंधेमि तह विमोचेमि। (सू २६६)

विमोचित देखो विमोइद। (चा ३४) -आवास पु [आवास] विमोचितावास, छोड़े हुए आवास, अचौर्यव्रत की एक भावना। विमोचितावास ज परोध च। (चा ३४)

विमोह वि [विमोह] विपर्यय, उल्टाज्ञान विपरीत ज्ञान। ससयविमोहविब्भमविवज्जिय। (निय ५१)

विमोहिय वि [विमोहित] मोह को प्राप्त, मोहासक्त। (मो ६७) विसएसु विमोहिया मूढा। (मो.६७)

विम्हिय पु [विस्मय] आश्चर्य, अठारह दोषों मे एक। विम्हियणिद्दा जणुब्बेगो। (निय ६)

विय अ [इव] तरह, इस प्रकार, जैसा। ते रोया वि य सयला। (भा.३८)

वियलिदिर पु न [विकलेन्द्रिय] द्वीन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक के जीव। (ग.२९) वियलिदिए असीदी। (भा २९)

वियप्प सक [वि+कल्पय्] भेदभाव को प्राप्त होना, संशय करना, विचार करना। ण वियप्पदि णाणादो। (पचा ४३)

वियप्प पु [विकल्प] भेद, प्रकार। (स.११०, प्रव ज्ञे ३२, प्रव चा ३, निय २०) भणिदो भेदो दु तेरहवियप्पो। (स ११०)

वियल सक [वि+गल्] टपकना, गलना, घटना। इंदियबलं ण वियलइ। (भा १३१)

वियर सक [वि+चर्] विचरना, घूमना, परिभ्रमण करना। चोरो त्ति जर्णाम वियरतो। (स.३०१) वियरत (व.कृ स.३०१)

वियाण सक [वि+ज्ञा] जानना, समझना, अनुभव करना। (पचा ७१,स.३७,प्रव ६४,द्वा.३) णाणी कम्मफल वियाणेदि। (स ३१८) वियाणादि/वियाणेदि/वियाणाए (व.प्र ए प्रव.चा.३३, स ३१८ ,२८८) वियाणीहि/वियाणेहि/वियाण/वियाणाहि (वि /आम ए पचा ४०,८१,७७,६६) वियाणत (व कृ.स १८६) वियाणित्त (स कृ स.१४८) कुच्छियसील जण वियाणित्ता। (स १४८) वियाणत्ता/वियाणिच्चा (स कृ प्रव चा.२२,द्वा.३)

विरअ वि [विरत] निवृत्त, राग से मुक्त, वृत्ति परिवर्तन,

वैराग्ययुक्त। (मो १३, चा ३५, सू ११) विरओ मुच्चेइ विविहकम्मेहिं। (मो १३)

विरइ स्त्री [विरति] निवृत्ति, विश्राम, सासारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता। (मो १६) कुणह रई विरइ इयरम्मि। (मो १६)

विरज्ज अक [वि+रञ्ज्] विरक्त होना, उदासीन होना, रागरहित होना। (स २९३, शी ३) विसएसु विरज्जए दुक्ख। (शी ३)

विरत्त वि [विरक्त] उदासीन, विरागी। (शी) विसए विरत्तमेत्तो। -**चित्त** पु न [चित्त] विरागमन, रागरहित चित्त। विसएसु विरत्तचित्ताण। (मो ७०)

विरद देखो विरअ। (निय १२५, पचा १४३) विरदो सव्वसावज्जे। (निय १२५)

विरदि देखो विरइ। (स १३४) सोहणमसोहण व कादव्वो विरदिभावो वा। -**भाव** पु [भाव] विरागभाव, निवृत्ति भाव। (स १३४)

विरह पु [विरह] वियोग, विछोह, व्यवधान। कुद्दाण रहिया। (बो ४५)

विरहिद वि [विरहित] रहित, मुक्त। मोहादीहिं विरहिदा। (प्रव ४५)

विराग पु [विराग] राग का अभाव, वैराग्य। (स १५० प्रव ९२, निय १५२) -**चरिय** न [चरित] वीतराग चारित्र, विरागी का आचरण। (प्रव ९२, निय १५२) आगमकुसलो विरागचरियम्मि। (प्रव ९२) -**सपत्त** वि [सप्राप्त] विराग को प्राप्त। (स १५०)

मुचदि जीवो विरागसंपत्तो। (स.१५०)

विराधग वि [विराधक] तोड़ने वाला, खण्डन करने वाला। (मो.९८) जिणलिंगविराधगो णिच्चं। (मो.९८)

विराहण न [विराधन] खण्डन, भङ्ग। (निय.८४) मोत्तूण विराहणं विसेसेण। (निय.८४)

विरुद्ध वि [विरुद्ध] विपरीत, प्रतिकूल, उल्टा। (पंचा.५४) अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं। (पचा.५४)

विलअ/विलय पु [विलय] विनाश, व्यय, प्रलय, विलय। जो हि भवो सो विलओ। (प्रव.ज्ञे.२७)

विवज्जिअ/विवज्जिय वि [विवर्जित] रहित, वर्जित, निषेध। (निय ५९, भा.१२२, मो.४५) मेहुणसण्णविवज्जिय। (निय ५९) -भाव पुं [भाव] भावरहित। (निय.११२) मदमाणमायलोहविवज्जियभावो। (निय ११२)

विवर न [विवर] अन्त स्थान, अन्तराल, गड्ढा, छेद। जं देदि विवरमखिलं। (पचा ९०)

विवरीअ/विवरीद/विवरीय वि [विपरीत] विरोधी, नियमविरुद्ध, मिथ्या। (स २५०, प्रव.चा ५५,निय.३, चा.३३, मो.५४) णाणी सत्तो दु विवरीदो। (स.२५३) -अभिणिवेस पुं [अभिनिवेश] विपरीत आग्रह। (निय.१३९) विवरीयाभिणिवेसं। -परिहरत्थ पुं न [परिहरार्थ] विपरीत का परिहार करने के लिए। विवरीयपरिहरत्थ। (निय ३) -भासण न [भाषण] विपरीत कथन, मिथ्याप्रतिपादन। (चा.३३)

कोहभयहासलोहापोहाविवरीयभासणा। (चा ३३)

विवाग पु [विपाक] कर्म परिणाम, कर्मोदय, सुख-दुखादि भोगरूपकर्मफल। (स १९९)-**उदअ** पु [उदय] विपाक उदय। (स १९९) तस्स विवागोदओ हवदि एसो। (स १९९)

विवास पु [विवास] देशनिर्वासन, निष्कासन, दूसरी ओर निवास। *(प्रव चा १३) अधिवासे य विवासे।*

विव्वाह पु [विवाह] व्याह, परिणय, जीवनबधन। जो जोडदि विव्वाह। (लि ९)

विविह वि [विविध] नाना प्रकार का, अनेक प्रकार, बहुरूपी, भाति-भाति का। (पचा ६४, स १९८, प्रव ७०, भा २६, मो १३) उदयविवागो विविहो। (स १९८) -**कम्म** पु न [कर्मन्] विविध कर्म, नाना प्रकार के कर्म। (मो १३) विरओ मुच्चेइ विविहकम्मेहिं। (मो १३) -**लक्खण** पु न [लक्षण] नाना प्रकार के लक्षण, विविधलक्षण, अनेक स्वरूप। (प्रव ज्ञे ५) इह विविहलक्खणाण। (प्रव ज्ञे ५) विविहो (प्र ए स १९८) विविहाणि (प्र ब प्रव.७४) विविह (द्वि ए प्रव ७०) विविहे/विविहाणि। (द्वि ब स ९८) विविहेण (तृ ए पचा १४७) विविहेहिं (तृ ब पचा ६४)

विस पु न [विष] जहर, गरल, हलाहल। (स ३०६, भा २५, *शी २२) विसयविसपुप्फफुल्लिय। (भा १५७) -**कुंभ** पु [कुम्भ]* विषकलश, विषघट। (स ३०६) आचार्य कुन्दकुन्द ने प्रतिक्रमण, प्रतिसरण, परिहार, धारणा, निवृत्ति, निन्दा, गर्हा और शुद्धि,

इन आठ को विषकुम्भ कहा है। (स.३०६) -परिहय वि [परिहृत] विष से पीड़ित, विष से दुःखित। विसयविसपरिहयाणं। (शी.२२) -पुप्फ न [पुष्प] विषपुष्प।(भा.१५७) -वेयणाहद स्त्री [वेदनाहत] विष वेदना से पीडित। मरिज्ज विसवेयणाहदो जीवो। (शी.२२)

विसंवादिणि वि [विसंवादिन्] असत्य, अप्रमाणिक, मिथ्या। (स.३)

विसद वि [विशद्] निर्मल, स्वच्छ, प्रत्यक्ष। (पंचा.१) तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं। (पंचा.१)

विसम वि [विषम] विषमता लिए हुए, असमान, एक-सा नहीं। तेकालणिच्चविसमं। (प्रव.५१)

-विसय पु [विषय] 1 इन्द्रिय द्वारा गृहीत होने योग्य पदार्थ, कामभोग, सासारिक विषय,भोगविलास। (पचा.१२९, स.२२७, प्रव २६ भा १५, द १७, शी.२) विसयादो तस्स ते भणिदा। (प्रव २६)-अतीद वि [अतीत]विषयों से रहित, विषयों से परे। विसयातीद अणोवममणत।(प्रव १३) -अत्थ पु [अर्थ] विषयार्थ, विषय का प्रयोजन। विसयत्थ सेवए ण कम्मरय। (स २२७) -आसत्त वि [आसक्त] विषयों मे तत्पर, विषयों मे लीन। (शी २३) -कसाय पुं [कषाय] विषय कषाय। जदि ते विसयकसाया। (प्रव चा.५८)

-ग्गह न [ग्रहण] विषयग्रहण, इन्द्रिय जन्य विषयों को स्वीकारना। तेहिं दु विसयग्गहणं। (पचा.१२९) -तण्हा स्त्री[तृष्णा] विषयों की अभिलाषा, इन्द्रिय सम्बन्धी सुखों की

इच्छा। (प्रव ७४) जणयति विसयतण्हा। **-बल** न [बल] विषयों की शक्ति, विषयों का पराक्रम। विसयबलो जाव वट्टए जीवो। (शी ४) **-राग** पु [राग] विषयों के प्रति अनुराग। जावद्धा विसय-रायमोहेहिं। (शी २७) **-लोल** वि [लोल] विषयों के प्रति लम्पटता। जइ विसयलोलएहिं (शी २६) **-वस** वि [वश] विषयों के आधीन। विसयवसेण दु सोक्खं। (प्रव ६६) **-विरत्त** वि [विरक्त] विषयों से विरक्त, विषयों से उदासीन। (प्रव ज्ञे १०४,मो ६८,शी ३२) जाए विसयविरत्तो। (शी ३२) **-विराग** वि [विराग] विषयों से विरक्त। सील विसयरागो। (शी ४०) **-विस** पु न [विष] विषयरूपी विष, इन्द्रियों सम्बन्धी विषय-विष। विसयविसपरिहया। (शी २२) **-सुह** न [सुख] विषयसुख। विसयसुहविरेयण अमिदभूय।(द १७) **-सोक्ख** न [सौख्य] विषयसुख। दुहिदा तण्हादि विसयसोक्खाणि (प्रव ७५)2 देश, क्षेत्र।अम्ह गामविसयणयरट्ठ। (स ३२५)

विसाल वि [विशाल] विस्तृत, बड़ा। वीर विसालणयण। (शी १)

विसिट्ठ वि [विशिष्ट]1 सयुक्त, सहित, युक्त। अज्झवसाणविसिट्ठो। (पचा ३४) 2 विशेषयुक्त, सुसभ्य, शिष्ट। (प्रव चा ३) कुलरूववयोविसिट्ठमिट्ठदर। (प्रव चा ३)

विसुद्ध वि [विशुद्ध] निर्मल, निर्दोष, पवित्र, विशद। (प्रव २, निय ४८, भा ९२, मो ६, चा १५ बो ५२) उवओगो विसुद्धो जो। (प्रव १५)**-झाण** न [ध्यान] विशुद्ध ध्यान, शुक्ल ध्यान। विसुद्धझाणस्स णाणजुत्तस्स। (बो ६) **-प्पा** पु [आत्मन्] विशुद्ध

आत्मा। (निय.४८, प्रव.ज्ञे.१०२, मो.६) अणिंदिओ केवलो विसुद्धप्पा। (मो.६) -भाव पुं [भाव] विशुद्धभाव, निर्मल परिणाम। (भा.१६०) विसुद्धभावेण सुयणाणं। (भा.९२) -मइ स्त्री [मति] विशुद्धमति, निर्मलवुद्धि। जुवईजणवेढ्ढिओ विसुद्धमई। (भा.५१) -सम्मत्त न [सम्यक्त्व] विशुद्ध सम्यक्त्व,सम्यग्दर्शन की निर्मलता। (चा.१५,द.३३) कहंति जीवा विसुद्धसम्मत्तं। (द.३३)

विसेस सक [वि+शेषय्] विशेषयुक्त करना, विशेषण से युक्त करना, व्यवच्छेद करना। (प्रव.चा.६१) विसेसिदव्वो त्ति उवदेसो। विसेसिदव्वो (वि.कृ.प्रव.चा.६१)

विसेस पुं न [विशेष] पर्याय, धर्म, गुण, अतिशय, भिन्नता। (पंचा ५१, स.६२, प्रव.७७, निय.८४) सिद्धंतं जइ ण दीसइ विसेसो। (स.३२२) -अंतर न [अन्तर] विशेष अन्तर, विशेष भेद। (स.७१) णादं होदि विसेसतर। -द वि [ता] भिन्नता, विशेषता। विसेसदो दव्वजादीणं। (प्रव.३७)

विसेसिद वि [विशेषित] विशेषण युक्त, अतिशय युक्त, गुणयुक्त। (प्रव ९२) धम्मो त्ति विसेसिदो समणो। (प्रव.९२)

विसोहि स्त्री [विशोधि] विशुद्धि, निर्मलता, पवित्रता। (स.५४) -ट्ठाण न [स्थान] पवित्र स्थान, विशुद्धि स्थान। णेव विसोहिट्ठाणा। (स.५४)

विस्स वि [विश्व] अनेक,लोक,छह द्रव्यों का समूह। (पंचा.४३) -रूव पु न [रूप] अनेक रूप, अनेक प्रकार का। तम्हा दु

विस्सरूव। (पचा ४३)

विस्सस पु [वैस्रस] स्वाभाविक गुण। (स ४०६) पाउगिओ विस्ससो वा वि। (स ४०६)

विह पु स्त्री [विध] भेद, प्रकार। (सू ५)

विहत्त देखो, विभत्त। (स २९६) जह पण्णाइ विहत्तो। (स २९६)

विहत्ति देखो विभत्ति। (मो ४१) जीवाजीवविहत्ती।

विहर सक [वि+हृ] विहार करना, गमन करना, जाना। (स ४१२, सू ९) तत्थेव विहर णिच्च। (स ४१२) विहरइ/विहरदि (व प्र ए सू ९द ३५) विहर (वि /आ म ए स ४१२)

विहल वि [विफल] निष्फल, निरर्थक, अनुपयोगी, व्यर्थ, फलरहित। बाहिरचागो विहलो। (भा ३)

विहव पु [विभव] समृद्धि, ऐश्वर्य, वैभव, सम्पत्ति, धन दौलत। (प्रव ६) देवासुरमणुयरायविहवेहिं। (प्रव ६)

विहार पु [विहार] विचरण, गमन, गति, भ्रमण। (प्रव ४४, प्रव चा १५) आवसधे वा पुणो विहारे वा। (प्रव चा १५)

विहाव देखो विभाव। (निय १०७) विहावगुणपज्जएहिं वदिरित्त। (निय १०७) **-गुण** पु न [गुण] विभावगुण। विहावगुणमिदि भणिद। (निय २७) **-णाण** न [ज्ञान] विभावज्ञान। (निय ११) विकल्पयुक्त ज्ञान विभावज्ञान है। इसके दो भेद है--सम्यग्ज्ञान और मिथ्याज्ञान। मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यय ये

सम्यग्विभाव ज्ञान है तथा कुमति, कुश्रुत और विभङ्गावधि, तीन मिथ्याविभावज्ञान है। (निय ११,१२) -पज्जाय पु [पर्याय] विभावपर्याय, विभावक्रम, विभावपरिपाटी। (निय २८) खघसरूवेण पुणो परिणामो सो विहावपज्जयो। (निय २८)

विहि पु [विधि] प्रणाली, रीति, पद्धति, साधन, नियम, शास्त्रोक्त विधान। (द ३६) -बल/वल न [बल] विधिपूर्वक, विधि के योग से। कम्म खविऊण विहिवलेणस्स। (द ३६)

विहिअ वि [विहित] कृत, निर्मित, कथित, स्वीकृत। (स.१५६) जदीण कम्मक्खओ विहिओ।

विहिद वि [विहित] चेष्टित, कथित। (प्रव चा.५६) छदुमत्थविहिदवत्थुसु।

विहीण वि [विहीन] वर्जित, रहित। (स.२०५, प्रव.७,चा.४२) णाणगुणेण विहीणा। (स २०५)

विहुय वि [विधुत] व्यक्त, नष्ट। (ती.भ.६) -रयमल पु न [रजोमल] मैल से रहित। विहुयरयमला पहीणजरमरणा। (ती भ ६)

विहूइ स्त्री [विभूति] ऐश्वर्य, वैभव। देवाण गुणविहूई। (भा.१५)

वीदराग वि [वीतराग] रागरहित, वीतराग। सो तेण वीदरागो। (पचा १७२)

वीय न [बीज] बीज, अङ्कुरित होने योग्य धान्य। (स.३८७, प्रव चा ५५, भा १२५) वीय दुक्खस्स अट्ठविह। (स.३८८)

वीयराग/वीयराय देखो वीदराग। (बो.९,निय १२२,चा.१६)

णिम्मोहा वीयरायपरमेट्ठी। (चा १) -भाव पु [भाव] वीतराग। भाव परिचत्ता वीयरायभावेण। (निय १२२)

वीर पु [वीर] 1 भगवान महावीर, अन्तिम तीर्थङ्कर। (प्रव ज्ञे १४, शी १, निय १) णमिऊण जिण वीर। 2 वि [वीर] पराक्रमी, शूरवीर। आराहणणायग वीरे। (भा १२३)

वीरिय पु न [वीर्य] शक्ति, सामर्थ्य। (प्रव २ शी ३७) णाणदसणचरित्ततववीरियायारे। (प्रव २)-आचार पु [आचार] वीर्य का आचार, शक्तिमय आचार। (प्रव चा २) -आवत्त पु [आवर्त] वीर्य के आधीन, शक्ति विशेष। (शी ३७) दसणसुद्धी य वीरियावत्त।(शी ३७)

वीसट्ठ पु [विश्वस्त] विश्वास, आस्था। महिलावग्गम्मि देदि वीसट्ठो। (लि २०)

वीहत्थ वि [वीभत्स] घृणित,क्रूर,भयावह।असुहीवीहत्थेहिं य। (भा १७)

वुच्च सक [वच्] बोलना, कहना। (स ४५, पचा १३६, प्रव ज्ञे.३) जस्स फल त वुच्चइ। (स ४५)

वुज्झ सक [बुध्] जानना, ज्ञान करना, समझना। (बो २) बुज्झामि समासेण। (बो २)

वुज्झद वि [बुध्यमान] जानने वाला, समझने वाला। पच्चक्खादीहिं वुज्झदो णियमा। (प्रव ८६)

वुत्त वि [उक्त] कथित, प्रतिपादित। वचचइदालत्तय च वुत्तेहिं। (बो ४२)

वेअ पु [वेद] कर्म विशेष, मोहनीय कर्म का एक भेद। (बो.३२)

वेउव्विअ वि [वैक्रियिक] अनेक प्रकार की प्रक्रिया करने वाला, शरीर विशेष। (प्रव.ज्ञे ७९) देहो वेउव्विओय तेजयिओ।

वेज्ज पु [वैद्य] चिकित्सक, भिषक्, वैद्य। वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि। (स.१९५)

वेज्जावच्च देखो विज्जावच्च। वेज्जावच्चणिमित्त। (पव.चा.५३)

वेज्झ वि [वेद्य] जानने योग्य , अनुभव करने योग्य। जिणभवण अ वेज्झ। (बो ४२)

वेज्झय वि [वेद्यक] अभ्यास करने योग्य , अनुभव करने योग्य। (बो २०) -विहीण वि [विहीन] अभ्यास से रहित,अनुभव से रहित। रहिओ कडस्स वेज्झयविहीणो। (बो २०)

वेणइय न [वैनयिक] मिथ्यात्व विशेष, सभी धर्मों एव सभी देवों पर विश्वास करना। (भा ३२) वेणइया होंति वत्तीसा। (भा.१३६)

वेद पु [विद] वेदनीय, कर्म का एक भेद। (पचा १५३)

वेद/वेय सक [वेदय] अनुभव करना, भोगना। (पचा ५७, स ३८७, शी १६) जो वेददि वेदिज्जदि। (स २१६) वेददि/वेदेदि/वेदयदि (व प्र ए स २१६,३१६,८५) वेदिज्जदि (व प्र ए स.२१६) वेदत/वेदयमाण (व कृ स.३८८, पंचा.५७) वेदेऊण (स कृ शी १६) त चेव पुणो वेयइ। (स ८४)

वेदग वि [वेदक] भोगने वाला, अनुभव करने वाला। ण वि तेसि वेदगो आदा। (स १११)

वेदणा/वेयणा स्त्री [वेदना] पीड़ा, कष्ट, वेदना। (प्रव.७१,

भा १२४) ते देहवेदणट्ठा। (प्रव ७१)

वेयण पु न [व्यजन] 1 बेना, पखा। (भा १०) 2 न [वेदन] जानना, ज्ञान, अनुभव।

वेर न [वैर] विरोध, शत्रुता, वैमनस्य, द्रोह। (निय १०४) वेर मज्झ ण केणवि।

वेरग्ग न [वैराग्य] विरागभाव, सासारिक, विषय वासनाओं के प्रति उदासीनता,विरक्ति। वेरग्गपरो साहू। (मो १०१)

वोच्छ सक [वच्] कहना, बोलना। (स १, पचा १०५, निय १, चा २, मो २, भा १, लि १, द्वा १) वोच्छामि णियमसार। (निय १)

वोसट्ठ वि [दे] व्युत्सर्ग, त्यक्त, छोडा हुआ, खाली। वोसट्ठचत्तदेहा। (द ३६)

वोसर सक [व्युत्+सृज्] परित्याग करना, छोडना। (निय ९९) सव्व तिविहेण वोसरे। (निय १०३) वोसरे (व उ ए निय १०३) वोसरित्ता (स कृ निय १०४)

वोसर वि [व्युत्सर्ग] कायरहित, शरीर के ममत्व का त्याग। (बो १२) **-पडिमा** स्त्री [प्रतिमा] कायरहित मूर्ति, कायोत्सर्ग की मुद्रा। वोसरपडिमा ध्रुवा सिद्धा। (बो १२)

स

स पु [स्व] 1 खुद, निज, अपनी। (प्रव ३०, मो ३१,स २) दुद्धज्झसिय जहा सभासाए। (प्रव ३०)**-विहव** पु [विभव] निज

अनुभव,निज ज्ञान।(स ५)-**समय** पु [समय] स्वसमय। (स २)
2 वि [स] सहित,युक्त,सलग्न।(पचा २,प्रव ४१,सू ११) स-सव्वसिद्धे विसुद्धसब्भावे। (प्रव २) -**उत्त** वि [उक्त] सवाद सहित। एसणसुद्धिसउत्त। (चा ३४) -**कम्म** पु न [कर्मन्] कर्मसहित। (प्रव ज्ञे २७) -**गुण** पु न [गुण] गुणसहित। (बो २७) दव्वे भावे हि सगुणपज्जाया। -**णिव्वाण** न [निर्वाण] मुक्ति सहित। चदुगदिणिवारण सणिव्वाण। (पचा २) -**पज्जाय** पु [पर्याय] पर्याय सहित। (प्रव ज्ञे ३) गुणव च सपज्जाय -**पदेस** पु [प्रदेश] पदेश सहित। अपदेस सपदेस। (प्रव ४१) -**वियप्प** पु [विकल्प] विकल्पसहित। जाणदि सो सवियप्प। (प्रव ज्ञे ६२) -**सुरासुरमाणुस** पु[सुरासुरमानुष]सुर,असुर और मनुष्य सहित। स-सुरासुरमाणुसे लोए। (सू ११)

सं अ [सम्] योग्यता। णामे ठवणे हि य स। (बो २७)

सकम सक [स+क्रम्] प्रवेश करना, गति करना, बदलना। सो अण्णम्हि दु ण सकमदि। (स १०३)

सका स्त्री [शङ्का] सशय, सदेह। इत्थीसु ण सकया झाणं। (सू २६)

सकिद वि [शङ्कित] शङ्कित होता हुआ, शङ्का वाला। वज्झामि अह तु सकिदो चेया। (स ३०३)

सकिलेस पु [सक्लेश] दुख, कष्ट। जीवस्स ण सकिलेसठाणा। (स ५४) -**ठाण** न [स्थान] सक्लेश स्थान। (स ५४)

सक्कार पु [सस्कार] शारीरिक सस्कार। तेल, इत्र, साबुन, मञ्जन आदि का प्रयोगकरना। सरीरसक्कार वज्जिआ रुक्खा। (बो ५१)

सख पु न [शङ्ख] 1 शङ्ख, वाद्य विशेष, द्वीन्द्रिय जीव विशेष। (पचा.११४, स २२०, बो ३७) जइया स एव सखो। (स.२२२) 2 न [साख्य] दर्शन विशेष, कपिलमुनि प्रणीत दर्शन, साख्यमत। (स ११७, १२२) -उवदेस पु [उपदेश] साख्य शिक्षा, साख्य विचार। एव सखुवएस। (स ३४०) -समअ पु [समय] साख्यमत। पसज्जदे सखसमओ वा। (स १२२)

सखव सक [स+क्षपय्] विनाश करना, क्षय करना। तम्हा ते सखइदव्वा। (प्रव ८४) सखइदव्व (वि कृ)

सखा स्त्री [सख्या] गिनती, गणना। (पचा ४६, प्रव ज्ञे ४९) सखा विसया य होंति ते बहुगा। (पचा ४६) -अतीद वि [अतीत] असख्य, असख्यात, गिनती से परे। सखातीदा तदो अणता य। (प्रव ज्ञे ४९)

संखिज्ज/ खेज्ज वि [सख्यात] सख्यात,गिनने योग्य सख्या। (निय ३१,चा २०) सखेज्जासखेज्जाणतपदेसा। (निय ३५)

सखेव पु [सक्षेप] सक्षेप, स्वल्प, कम,थोड़ा। (प्रव ज्ञे ४२, चा ४४, भा ११८) सखेवेणेव वज्जरिय। (भा ११८) सखेवेण (तृ ए चा ४४,भा ११८) सखेवादो (प ए प्रव ज्ञे ४२) सखेवि (अप स ए भा १२७)

सग पु न [सङ्ग] 1 आसक्ति, परिग्रह, विषयादिक के प्रति राग। (प्रव चा २४, चा ३०) पचमसगम्मि विरई य। (चा ३०) -चाअ पु [त्याग] परिग्रह का त्याग। पव्वज्ज सगचाए। (चा १६) 2 ससर्ग, साथ,सङ्गति, सम्पर्क, सम्बन्ध।

(बो ५६,भा ४०,स ज वृ.१२५) जो सगं तु मुइत्ता। (स ज वृ १२५)

संगाम पु [सग्राम] युद्ध,लडाई। सुहडो सगाम एहिं सव्वेहिं । (मो २२)

संघाद पु [सघात] 1. समूह, समुदाय, सघ। (प्रव.ज्ञे. ३७) सघादादो य भेदादो। (प्रव.ज्ञे ३७) 2 सहनन का पूरक कर्म, नामकर्म का एक भेद। सठाणा सघादा। (पचा १२६)

संचअ/संचय पु [सचय] समूह,सग्रह। (स ७०, प्रव.ज्ञे.६४) तस्स कम्मस्स सचओ होदि। (स.७०)

सचिद वि [सचित] सगृहीत, एकत्रित, सकलित। कम्म खवदि सचिद।(मो ३०)

संछण्ण वि [सछन्न] ढका हुआ, आच्छादित। (पचा ६९)

सजअ/संजद वि [सयत] साधु, मुनि, व्रती, संयमी। (स ३५८,प्रव चा ४०, निय १४४, द २६,सू २०, बो १०, भा १, मो ५२) जो पाच महाव्रतों से युक्त तथा तीन गुप्तियों से सहित है, वह सयत है। पचमहव्वयजुत्तो तिहिं गुत्तिहिं जो स सजदो होई। (सू २०)

संजम पु [सयम] व्रत की एकाग्रता, व्रत , विरति। (स.४०४, पचा १७०, प्रव १४, निय ११३, द ९, सू.११, बो १,चा.५,भा.९४, शी ६) ज्ञान ही सम्यग्दृष्टि और सयम है। णाण सम्मादिट्ठिं दु सजमं। (स ४०४) -गुण न [गुण] सयमगुण। (द ३०)तवेण चरिएण संजमगुणेण।ज्ञान,दर्शन,तप और चारित्र

सयम होता है। (द ३०) -घाद पु [घात] सयम का विनाश। सजमघाद पमुत्तूण। (भा ९४) -चरण न [चरण] सयम का आचारण, सयम का एक भेद। (चा २१) पाच इन्द्रियों का दमन, पाचव्रत, इनकी पच्चीस भावनाये, पाच समितिया और तीन गुप्तिया यह निरागार सयमचरणचारित्र है। (चा २७) -पडिवण्ण वि [प्रतिपन्न] संयम को प्राप्त, सयम को अङ्गीकार करने वाला। सो सजमपडिवण्णो। (द २४) मुद्दा स्त्री [मुद्रा] सयममुद्रा। (बो १८) -लद्धिठाण न [लब्धिस्थान] सयम लब्धिस्थान। (स ५४) -संजुत्त वि [सयुक्त] सयमसहित, सयम से युक्त। सजमसजुत्तस्स य। (बो १९) -सहिद वि [सहित] सयम सहित, सयम से युक्त। सयमसहिदो य तवो। (शी ६) -सुद्ध वि [शुद्ध] सयम से शुद्ध, सयम से पवित्र। सजमसुद्ध सुवीयराय च। (बो १५) -सोहि स्त्री [शोधि] सयम की शुद्धता। सजमसोहिणिमित्त। (चा ३७) -हीण वि [हीन] सजम से हीन। सजमहीणो य तवो। (शी ५)

सजाद/सजाय वि [सजात] उत्पन्न, पैदा हुआ। (प्रव ३८, निय १६) कम्ममहीभोगभूमिसजादा। (निय १६)

सजाय अक [स+जन्] उत्पन्न होना। (प्रव ज्ञे ७८) सजायते देहा। सजायते (व प्र ब प्रव ज्ञे ७८)

सजुत्त वि [सयुक्त] मिला हुआ, सम्मिलित। (पचा ६, निय ९, द ३५, सू १२) णाणेण य दसणेण सजुत्तो। (पचा ४०)

सजुद वि [सयुत] सहित, सयुक्त। (पचा ६८, प्रव १४)

सजमतवसजुदो विगदरागो। (प्रव.१४)

सजोग पु [संयोग] सबंध,मेल मिलाप-मिश्रण। (निय.१०२, भा.५९, स.४२) अवरे संजोगेण दु । (स.४२) -लक्खण पुं न [लक्षण] संयोग लक्षण । (निय.१०२, भा.५९) सव्वे सजोगलक्खणा। (निय.१०२)

सठव सक [स+स्थापय्] स्थापना करना। समभावे संठवित्तु परिणामं। (निय.१०९) संठवित्तु (स.कृ.)

संठाण न [संस्थान] नाम कर्म विशेष, जिसके उदय से शरीर का आकार होता है, आकार, आकृति। (स.६०, पंचा.४६, प्रव.ज्ञे ६०,निय.४५, भा ६४) ववदेसा संठाणा। (पंचा.४६)

संढ पु [शण्ढ] नपुसक,हिजड़ा। पसुमहिलसढसगं। (बो.५६)

संत वि [शान्त]1.शमयुक्त, क्रोध रहित। (बो २६,५०,प्रव.चा ७२) अवलंबियभुयणिराउहा संता। (बो.५०) -भाव पुं [भाव] शान्तभाव हवेइ जदि संतभावेण। (बो २६) 2. पु [सान्त] अन्त सहित। (पंचा.५३)

संतत्त वि [सतत] अविच्छिन्न, अखण्डित। हिंसा सा संतत्तिय त्ति मदा। (प्रव.चा १६)

संति पुं [शान्ति] शान्तिनाथ, सोलहवें तीर्थङ्कर। (ती.भ.४)

संतुट्ठ वि [सतुष्ट] सतोषयुक्त, सतोष को प्राप्त। (स.२०६) संतुट्ठो होहिणिच्चमेदम्हि।

संतोस पु [सन्तोष] तृप्ति, लोभ का अभाव, शान्ति, हर्ष। (निय ११५, शी.१९) सतोसेण य लोह जयदि।

सथुण सक [स+स्तु] स्तुति करना,प्रार्थना करना। (लि २१) णिच्च सथुणदि पोसए पिंड। (लि २१)

सथुद/सथुय वि [सस्तुत] प्रशस्त, जिसकी स्तुति की गई हो, पूजनीय। (स २८, ३७३, भा ७५) मण्णदि हु सथुदो। (स २८)

सथुदि स्त्री [सस्तुति] स्तुति, श्लाघा, प्रशसा। (स २६) तित्थयरायरियसथुदी चेव। (स २६)

सदेह पु [सदेह] सशय, शङ्का, अनिश्चितता। (निय १७१, मो ३६) परिहरदि पर ण सदेहो। (मो.३६)

सधुण सक [स+धुन्] नष्ट करना, उड़ा देना। (पचा १४५) णाण सो सधुणोदि कम्मरय। (पचा १४५)

सपओग पु [सप्रयोग] सम्बन्ध, सयोग। (पचा १७०) सजमतवसपओगस्स।

सपज्ज पु [स+पद्] सम्पन्न होना, प्राप्त होना, सिद्ध होना। (प्रव ६)

सपडि अ [सम्प्रति] इस समय,अब।(स ३८५)सपडि य अणेयवित्थरविसेस। -काल पु [काले] वर्तमानकाल। सपडिकाले भणिज्ज रूवमिण। (स ज वृ १८६)

सपण्ण वि [सपन्न] युक्त, सम्बद्ध, पूर्णता को प्राप्त। णाणभत्तिसपण्णो। (पचा १६६)

सपद अ [साम्प्रतम्] अधुना, अब, इस समय। (निय ३२) भावि सपदा समया।

सपदि देखो सपडि (बो २७) चउणा गदि सपदि मे।

सपरिक्ख सक [सपरि+ईक्ष्] सम्यक्परीक्षा करना, अच्छी तरह से

जाँचना। (द्वा.१८) अपत्तमिदि सपरिखेज्जो। सपरिखेज्जो (वि /आ प्र ए द्वा १८)

संपसंस वि [सप्रशस] प्रशसायोग्य। (चा.१३) उच्छाहभावणासपससससेवा। (चा.१४)

सपुण्ण वि [सपूर्ण] पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण। (प्र चा.७२, निय १४७) **-सामण्ण** न [श्रामण्य] सम्पूर्ण श्रमणता, सम्पूर्ण साधुपन। इह सो सपुण्णसामण्णो। (प्रव.चा.७२)

संबंध पु [सम्बन्ध] ससर्ग, सग, सगति, सयोग। (स ५७) एएहि य सबधो।

संबंधि वि [सम्बन्धिन्] सम्बन्ध रखने वाला। मादुपिदुसजणभिच्चसबधिणो। (द्वा ३)

सबद्ध वि [सम्बद्ध] सहित, युक्त। (प्रव.९१,८९) दव्वत्तणाहिसबद्ध। (प्रव.८९)

सभव अक [स+भू] सभावना होना, उत्पन्न होना। आदेसवसेण सभवदि। (पचा १४) सभवदि (व प्र ए पचा १४)

सभव पु [सभव] उत्पन्न, उत्पत्ति। (प्रव १७,५१) ठिदिसभवणाससबद्धो। (प्रव ज्ञे ७) **-परिवज्जिद** वि [परिवर्जित] उत्पत्ति रहित। (प्रव १७) **-विहीण** वि [विहीन] उत्पत्ति से रहित। भगो वा णत्थि सभवविहीणो। (प्रव ज्ञे ८)

संभास पु [सभाष] सभाषण, वार्तालाप, समालाप। (प्रव चा ५३) लोगिगजणसभासा।

सभूद वि [संभूत] उत्पन्न, सजात, पैदा हुआ। (पचा १४८,

प्रव ज्ञे ६०) जोगो मणवयणकायसभूदो। (पचा १४८)

समूढ वि [समूढ] जड, विमूढ, मुग्ध। आदवियप्प करेदि समूढो। (स २२)

सवच्छर पु [सवत्सर] वर्ष, साल। (पचा २५) मासोदुअयणसवच्छरो त्ति। (पचा २५)

सवर पु [सवर] कर्मनिरोध, नूतन कर्मास्रव का अभाव, सात तत्त्व एव नव पदार्थों का एक भेद। (पचा १०८, स १३, निय १००, द्वा २, भा ५८) आदा मे सवरो जोगो। (स २७७) चल, मलिन और अगाढ दोषों को छोड़कर सम्यक्त्वरूपी दृढ़कपाटों के द्वारा मिथ्यात्वरूपी आस्रवद्वार का निरोध होना सवर है। (द्वा ६१) -जोगपु[योग]सवर का योग।(पचा १४४) -भावविमुक्क वि [भावविमुक्त] सवर के भाव से रहित। (द्वा ६५)-हेदु पु [हेतु] सवर का कारण। (द्वा ६४) सवर का हेतु ध्यान है। शुद्धोपयोग से जीव के धर्मध्यान और शुक्लध्यान होते है।

सवरण न [सवरण] निरोध, आवरण, आच्छादन। (पचा १४३, द्वा ६३) समस्त परद्रव्यों का त्याग करने वाले व्रती पुरुष के जब पुण्य और पाप दोनों प्रकार के योगों का अभाव हो जाता है। तब उसके शुभ और अशुभ कर्मो का सवरण होता है। (पचा १४३) शुभयोग की प्रवृत्ति, अशुभयोग का सवरण करती है। (द्वा ६३)

सवुक्क पु [शम्बूक] क्षुद्र श । सवुक्कमादुवाहा। (पचा १४४)

ससग्ग पु स्त्री [ससर्ग] सम्बन्ध, सम्मिश्रण, सपर्क, सगति। ससग्ग

रायकरण च। (स १४८)

संसण न [शसन] प्रशसा। (चा ११) मग्गणगुणससणाए।

संसत्त वि [संसक्त] ससर्ग, अनुरक्त। (चा ३५) **-वसहि** स्त्री [वसति] अनुराग पूर्ण निवास स्थान, निवास स्थान से राग। (चा ३५)

संसय पु [सशय] सन्देह, शङ्का। ससयविमोहविब्भम। (निय ५१)

ससर सक [स+सृ] चक्कर काटना, परिभ्रमण करना। (पचा २१ प्रव ज्ञे २८, मो ९५) ससारे ससरेइ सुहरहिओ। (मो ९५) ससरेइ (व प्र ए) ससरमाण (व कृ पचा २१)

संसार पु [ससार] नरक आदि गति मे परिभ्रमण, एक जन्म से जन्मान्तर में गमन, ससार, लोक, जगत्। (पचा १२८, स ११७, प्रव ज्ञे २८, मो ८५, निय १०५, भा ८५, शी २२, द्वा २) जीव अपने ही शुभाशुभ कर्मों से मोह के द्वारा आच्छन्न हो कर्त्ता-भोक्ता होता हुआ , सान्त एव अनन्त ससार मे परिभ्रमण करता है। (पंचा ६९) जीव जिनमार्ग को न जानता हुआ चिरकाल से जन्म, जरा, मृत्यु, रोग और भय से परिपूर्ण पाच प्रकार के ससार मे परिभ्रमण करता है। (द्वा २४) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव ये पाँच परिवर्तन ही ससार है। (विस्तार के लिए देखे- द्वा २५ से ३८) **-कंतार** पु न [कान्तार] ससार रूपी जङ्गल। (शी २२) **-गमण** न [गमन] ससार गमन। (स १५४) **-चक्क** न [चक्र] ससार चक्र। (पचा १३०) **-णिरोह** पु [निरोह] ससार निरोध ससारणिरोहण होइ। (स १९२) **-त्थ** पु न [अर्थ] 1 ससार का

प्रयोजन। 2 पु [स्थ] ससारी,ससारस्थ। जो खलु ससारत्थो। (पचा १२८) जो मनुष्य सूत्र के अर्थ से रहित है, वह हरिहर के सदृश होने पर भी स्वर्ग को ही प्राप्त होता है। करोडों पर्यायों को धारण करता हुआ भी मुक्ति को प्राप्त नहीं होता वही ससारी है। (सू ८) -देह पु न [दिह] ससार और शरीर। (स २१७) ससारदेहविसएसु।-पम्मुक वि [प्रमुक्त] ससार से रहित । ससारपमुक्काण। (स ६१) -भयभीद ससार से भयभीत। ससारभयभीदस्स।(निय १०५)-महण्णव पु न [महार्णव] ससाररूपी महासागर। (मो २६) -वण न [वन] ससाररूपी जङ्गल। भमिओ ससारवणे। (भा ११२) -विणास पु [विनाश] ससार का नाश। (मो ८५) ससारविणासयर। -समावण्ण वि [समापन्न] ससार को प्राप्त।(स १६०)ससारसमावण्णो। -सायर पु [सागर] ससारसमुद्र। णग्गो ससारसायरे भमई। (भा ६८)

ससारि/ससारिण वि [ससारिन्] ससारी,नरक- तिर्यञ्च-मनुष्य-देव गति मे परिभ्रमण करने वाला। (पचा १२०, चा २०, भा ५१) भव्वा ससारिणो अभव्वा य। (पचा १२०) पचास्तिकाय मे मिथ्यादर्शन, कषाय और योग से युक्त जीव को ससारी कहा है। (पचा ३२)

ससिद वि [सश्रित] आश्रित,शरणगत।मिच्छत्तससिदेण दु। (द्वा २८)

ससिदि वि [ससृति] ससार, जन्मन्। सुद्धणया ससिदी जीवा।

(निय.४९)

संसिद्धि वि [ससिद्धि] ससिद्धि, शुद्ध आत्मा की सिद्धि, आत्मसाधना। ससिद्धिराधसिद्धं। (स ३०४)

संहणण न [सहनन] शरीर रचना, अस्थि रचना, नामकर्म का एक भेद। (बो ४५, निय ४५) सठाणा सहणणा। (निय ४५)

सकल वि [सकल] सम्पूर्ण, पूर्ण, पूरा , सब । सकल सग च इदर। (प्रव ५४)

सकीय वि [स्वकीय] अपने, निज। सकीयपरिणामो। (निय.११०)

सक्क पु [शुक्र] 1.सौधर्म नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र, इन्द्र विशेष।(द्वा ५)-**धणु** पु [धनुष्] इन्द्रधनुष।(द्वा ५) 2 त्रि [शक्य] सभव,होने योग्य,अभिहित।(पचा.१६८,स ८,प्रव.४८) जह णवि सक्कमणज्जो। (स.८)

सक्क अक [शक्] सकना, समर्थ होना, योग्य होना, शक्तिशाली होना। (स २२०) निय १५४, द.२२ मो.२१) णवि सो सक्कइ तत्तो। (स.३४२) सक्कइ/सक्केइ/सक्कदि (व प्र ए निय १०६, द २२) सक्कए (व.प्र ए मो.२१)

सक्कार पु [सत्कार] सम्मान, आदर। (प्रव चा ६२)

सक्किरिया स्त्री [सक्रिया] क्रिया सहित, सक्रिय। सह सक्किरिया हवति ण य सेसा। (पचा.९८)

सक्खादं अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, प्रकट, आँखो के सामने। बहिरग जदि हवेदि सक्खाद। (द्वा ७१)

सग वि [स्वक] आत्मीय, निजी, अपनी। (पचा १६७, स २३४,

प्रव ५४, नियं १६७, मो ६१) सग सभाव ण विजहति। (पचा ७) -चरित्त/चरिय न [चरित्र] स्वचरित्र। (पचा १५६, १५८,) सो सगचरिय चरदि जीवो। (पचा १५८) -चारित्त न [चारित्र] निज आचरण, आत्मचारित्र। (मो ६१) -दव्व पु न [द्रव्य] स्वद्रव्य, निजद्रव्य। (नियं ५०) सगदव्वमुवादेय। -पज्जय पु [पर्याय] स्वपर्याय, निजपर्याय। (प्रव ज्ञे ४) गुणेहिं सगपज्जएहिं चितेहिं। -परिणाम पु [परिणाम] स्वपरिणाम, निजस्वभाव। (पचा ८९, स ७७, प्रव ज्ञे ७५) सगपरिणामेहिं जायते। (प्रव ज्ञे ७५) -ब्भाव पु [भाव] निजभाव। कोहादिसगब्भाव। (नियं ११४) -समय पु [समय] स्वसमय, स्वसिद्धान्त। ते सगसमया मुणेदव्वा। (प्रव ज्ञे २) जो आत्मस्वरूप मे स्थित है, वह स्वसमय है। (प्रव ज्ञे २)

सग्ग पु न [स्वर्ग] देवों के निवास स्थान, देवलोक। (सू ८, मो २३, प्रव ६६) सग्ग तवेण सव्वो वि। (मो २३) -सुह न [सुख] स्वर्ग सुख। शुभपयोग से युक्त स्वर्ग सुख को प्राप्त करता है। सुहोवजुत्तो व सग्गसुह। (प्रव ११)

सग्गथ वि [सग्रन्थ] परिग्रह सहित।सायार सग्गथे। (चा २१)

सचित्त वि [सचित्त] सजीव, चेतना सहित। (स २०, चा २२) सचित्ताचित्तमिस्स वा। (स २०)

सचेल वि [सचेल] वस्त्रसहित। (सू २७) -अत्थ पु [अर्थ] वस्त्र के निमित्त। समुद्दसलिले सचेलअत्थेण। (सू २७)

सच्च न [सत्य] 1 यथार्थ कथन, धर्म का एक भेद, व्रत का एक

भेद, सत्य। (स २६४, शी १९) जीवदया दमसच्च।(शी १९) 2 न [सत्त्व] सत्ता, अस्तित्व, सत्त्व। सच्चेव य पज्जओ त्ति वित्थारो। (प्रव.ज्ञे १५)

सच्चित्त वि [सचित्त] सजीव,चेतना,गुणवाला।(स २२०), भा.१०२, मो.१७) सच्चित्ताचित्ताण। (स २४३)

सच्चेयण वि [सचेतन] सजीव,चेतना सहित। सच्चेयणपच्चक्ख। (सू ४)

सच्छंद वि [स्वच्छन्द] स्वेच्छानुसार चलने वाला, उन्मार्गी। जो विहरइ सच्छद। (सू.९)

सजण पु [स्वजन] सगा, कुटुम्बी। मादुपिदुसजण। (द्वा ३)

सजीव वि [सजीव] सचेतन, जीव सहित। (चा २९) **-दव्व** पु न [द्रव्य] सजीव द्रव्य।सजीवदव्वे अजीवदव्वे य। (चा २९)

सजोइ/सजोगि पु न [सयोगिन्] अर्हन्त, सयोगी, तेरहवा गुणस्थान वालों की सज्ञा विशेष। **-केवलि** वि [केवलिन्] सयोगकेवली। (बो ३१) सजोइकेवलि य होइ अरहतो। (बो.३१) चौंतीस अतिशय रूप गुण एव आठ प्रातिहार्य तेरहवें गुणस्थान मे रहने वाले सयोगकेवली के होते है।

सजोग्ग वि [स्वयोग्य] अपने योग्य, अपने लायक। चरिय चरउ सजोग्ग। (प्रव चा ३०)

सज्झाय पु [स्वाध्याय] शस्त्र पठन, आवर्तन। (निय १५३, वो ४३) वचनमय प्रतिक्रमण वचनमयप्रत्याख्यान, वचनमय नियम और वचनमय आलोचना स्वाध्याय है। (निय १५३) स्वाध्याय के

वाचना, पृच्छना, आम्नाय, अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेश ये पाँच भेद भी कहे गये है।

सट्ठि स्त्री [षष्ठि] साठ, सख्या विशेष। सट्ठी चालीसमेव जाणेह। (भा २९)

सड वि [षट्] छह, सख्या विशेष । छज्जीव सडायदण णिच्च। (भा १३२)

सडण वि [शटन] सड़ना, गिरना, विशरण। (द्वा ४४, भा २६) सडणप्पडणसहाव। (भा २६)

सणिधण न [सनिधन] अनादिसान्त। अणादिणिधणो सणिधणो वा (पचा १३०)

सण्णा स्त्री [सञ्ज्ञा] चेतना, होश, आसक्ति। (पचा १४१, प्रव ज्ञे ४८, निय ६६, भा ११२) सण्णाओ य तिलेस्सा। (पचा १४०) आहारसञ्ज्ञा, भयसञ्ज्ञा और परिग्रह सञ्ज्ञा ये चार सञ्ज्ञाएँ है।

सण्णाण न [सद्ज्ञान] सम्यग्ज्ञान। (निय १२, चा ४२, भा ३१, मो ३८)तत्त्वज्ञान का ग्रहण करना सम्यग्ज्ञान है। तच्चग्गहण हवइ सण्णाण।(चा ३८)जीव और अजीव के भेद की जानना सम्यग्ज्ञान है। (चा ४१)सशय,विपर्यय और अनध्यवसाय से रहित ज्ञान सम्यग्ज्ञान है।(निय ५१)हेयोपादेय तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त होना सम्यग्ज्ञान है।(निय ५२)सम्यग्ज्ञान के चार भेद हैं-- मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यय। (निय १२)

सण्णाणी वि [सद्ज्ञानी] सम्यग्ज्ञानी। (चा ३९) जो मनुष्य जीवादि

का विभाग जानता है, वह सम्यग्ज्ञान है। जो जाणइ सो हवेइ सण्णाणी। (चा ३९)

सण्णि वि [सञ्ज्ञिन्] सञ्ज्ञायुक्त, सञ्ज्ञी। (बो ३२) भवियासम्मत्तसण्णिआहारे। (बो ३२)

सण्णिद वि [सञ्ज्ञित] स्वरूपयुक्त, सम्वेत, युक्त। सभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं। (प्रव ज्ञे १०)

सण्णिहित वि [सन्निहित] उद्यत, तत्पर, लगा हुआ, समीपस्थ। (नियं १२७) जस्स सण्णिहिदो अप्पा। (निय १२७)

सत्त पु न [सत्त्व] 1 प्राणी, जीव, चेतन। (स २४७,२५३,२५९,२६०,२६१,भा १३५) णाणी सत्तो दु विवरीदो। (स २५३) 2 वि [सप्तन्] सात, सख्या विशेष। (स १७५, निय १६, भा ९) सत्तसु णरयावासे। (भा.९) **-भंग** पु [भङ्ग] सात विकल्प, स्याद्वाद से कथन करने मे प्रयुक्त पद्धति के भेद। (पचा ७२) **-विह** वि [विध] सात प्रकार। सत्तविहा णेरइया। (निय १६) 3 वि [दि] गत, गया हुआ, झरता हुआ। पित्ततसत्तकुणिमदुग्गध। (भा ४२)

सत्ता स्त्री [सत्ता] सद्‌भाव, अस्तित्व, विद्यमानता। (पचा ८,प्रव.ज्ञे.१३) सत्ता सव्वपयत्था। (पचा ८)

सत्ति स्त्री [शक्ति] सामर्थ, बल, विद्याविशेष। (प्रव चा ५३, सू १२) सत्तीसएहिं सजुत्ता। (सू १२) **-विहीण** वि [विहीन] शक्तिहीन। (निय.१५४)

सत्तु पु [शत्रु] रिपु, दुश्मन, वैरी। (बो ४६, मो ७२, प्रव ज्ञे १०१)

सत्तुमित्ते य समा। (बो ४६)

सत्थ पु न [शास्त्र] 1 ग्रन्थ, आगमग्रन्थ, सिद्धात ग्रन्थ। (स ३१७, ३९०, प्रव ८६) सत्थ णाण ण हवइ। (स ३९०) 2 न [शस्त्र] हथियार, आयुध। (स २३७,२४२,भा.२५) करेदि सत्थेहिं वायाम। (स २४२) -गहण न [ग्रहण] शस्त्रग्रहण। (भा २५)

सद वि [सद्] 1 विद्यमान, अस्तित्व। (पचा ५४, प्रव ३७,स ३२३) कुव्वदि सदो विणास। (पचा ५५) 2 वि [सत्] अच्छा, सुन्दर। 3 वि [सत्] स्वाभाविक भाव। 4 पु न [शत्] सौ सख्या विशेष। इदसदवदियाण। (पंचा १)

सदा अ [सदा] हमेशा, निरन्तर, सदैव। (पचा ४८,स ८,प्रव ८) अक्खातीदस्स सदा। (प्रव २२)

सदेहमत्त न [स्वदेहमात्र] अपने शरीर प्रमाण, शरीर के बराबर। सदेहमत्त पभासयदि। (पचा ३३)

सद्द पु न [शब्द] ध्वनि, आवाज। (पचा ७९,स ३७१,प्रव ५६) सद्दो खधप्पभवो। (पचा ७९) -कारण न [कारण] शब्द का कारण सद्दकारणमसद्द। (पचा ८१) -ण्हु वि [ज्ञ] शब्द का ज्ञाता। (पचा ११७) -त्त वि [त्व] शब्दत्व, ध्वनिपना। पोग्गलदव्व सद्दत्तपरिणय। (स ३७४) -वियार पु [विकार] शब्द विकार। (बो ६०)

सद्दव्व वि [स्वद्रव्य] निजद्रव्य, उत्तम द्रव्य। (प्रव ज्ञे ३,१५,मो १६) सद्दव्वरओ सवणो। (मो १४)

सद्दह सक [श्रद्+धा] श्रद्धान करना, विश्वास करना।

(पचा १६३,प्रव ६२, स २७५,भा ८४,चा.१८) सद्दहदि ण सो समणो। (प्रव ९१) सद्दहदि (व प्र ए स.१७) सद्दहमाणो (व कृ.प्रव.चा ३७) सद्देह (वि./आ.म व भा.८७,सू.१६) सद्दहेदव्व (वि कृ स १८)

सद्दहण न [श्रद्धान] श्रद्धा, विश्वास। (पचा.१०७, प्रव.चा.३७, निय ५१, मो ९१) सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं। (निय ५)

सद्दिट्ठि स्त्री [सद्दृष्टि] सम्यग्दृष्टि। (स २३२, सू.५) जो मनुष्य जिनेन्द्र द्वारा कथित सूत्र के अर्थ को जीव,अजीव आदि बहुत प्रकार के पदार्थों को तथा हेय-उपादेय तत्त्व को जानता है, वह वास्तव मे सम्यग्दृष्टि है। (सू ५)

सद्धा स्त्री [श्रद्धा] आदर, सम्मान। सुदंसणे सद्धा। (चा.१४)

सपज्जय वि [सपर्याय] पर्याय सहित। सपज्जयं दव्वमेक वा। (प्रव ४८)

सपदेसत्त वि [सप्रदेशत्व] प्रदेशपने से सहित। अत्थित्तं सपदेसत्त। (निय १८१)

सपयत्थ वि [सपदार्थ] पदार्थ सहित। (पचा १७०)

सपर पु [स्व-पर]1 अपना और दूसरा। (निय.१७१, बो.९) 2.पु [सपर] पराधीन। सपरं बाधासहिद। (प्रव.७६)

सपरावेक्ख [सपरापेक्ष] दूसरे की अपेक्षा से सहित । (निय १५, मो ९३)

सप्पडिवक्ख वि [सप्रतिपक्ष] प्रतिपक्ष से युक्त, विरुद्ध सहित। सप्पडिवक्खा हवदि एक्का। (पचा.८)

सप्पि न [सर्पिस्] घृत, घी। (निय २२)

सप्पुरिस पु [सत्पुरुष] सज्जन मनुष्य। णिट्ठुर कडुय सहति सप्पुरिसा। (भा १०७)

सब्भाव/सभाव पु[स्वभाव] 1 प्रकृति, निसर्ग, स्वभाव, यथार्थदशा। (पचा ५२, ६५, प्रव ज्ञे ५०) दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो। (पचा ११) **-समवट्ठिद** वि [समवस्थित] स्वभाव मे स्थित। (प्रव ज्ञे ५०) सभावसमवट्ठिदो हवदि। (प्रव ज्ञे ५०) 2 पु [सद्भाव] अस्तित्व भाव, सत्तास्वरूप। (पचा ५३, प्रव २) सब्भावपरूवगो हवदि णिच्चं। (पचा १०१)

सभावणा स्त्री [सभावना] भावना सहित, चिन्तन सहित। (मो ७१)

सब्भूद वि [सद्भूत] सत्तास्वरूप, अस्तित्वमय। अत्थो खलु होदि सब्भूदो। (प्रव १८)

सम पु [शम] 1 समता, समभाव। (प्रव ७, पचा १०७, निय १०९, बो ४६, मो ७२) परिणामो अप्पणो हु समो। (प्रव ७) राग, द्वेष और मोह से रहित आत्मा का परिणाम ही सम है। (प्रव ७) **-भाव** पु [भाव] समताभाव, शान्तभाव। •चारित्त समभावो। (पचा १०७) 2 पु [श्रम] परिश्रम, खेद, थकावट। तण्हया वा समेण वा रूढ ।(प्रव चा ३१) 3 वि [सम] समान, तुल्य, सदृश्य, उदासीन। (प्रव ज्ञे १०४, निय ११०, शी १) साहीणो समभावो। (निय ११०) **-लोट्ठकाचण** पु न [लोष्ट-कान्चन] पत्थर और स्वर्ण मे समानता। (प्रव चा ४१) **-सुहदुक्ख** पु न [सुख दुख]

सुख-दु ख मे समानता। (पचा १४२, प्रव १४)

समअ पु [समय] 1 समय, काल, अवसर, काल विशेष। (स २१६, प्रव ज्ञे ४७, पचा २५) सभए समए विणस्सदे उहय। (स २१६) समय अप्रदेश है । जब एक प्रदेशात्मक पुद्गलजातिरूप परमाणु मन्द गति से आकाश द्रव्य के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश के प्रति गमन करता है तब समय होता है। (प्रव ज्ञे ४६)2 लोक,विश्व। समवाओ पचण्हं समउत्ति जिणुत्तमेहिं पण्णत्त।(पचा.३)जीव,पुद्गल,धर्म,अधर्म और आकाश इन पाचो का समुदाय भी समय है। (पचा ३) 3 देखो समय।

समत वि [समन्त] विश्वव्यापी,पूर्ण,समस्त।(प्रव २२,४७) समतसव्वक्खयगुणसमिद्धस्स। (प्रव २२)

समक्खाद वि [समाख्यात] उक्त, कथित,अभिव्यक्त। (प्रव ३६, प्रव ज्ञे ६, निय २) णेय दव्व तिहा समक्खाद। (प्रव ३६)

समग अ [समकम्] युगपत्, एक साथ। ते ते सव्वे समग समग। (प्रव ३)

समग्ग वि [समग्र] पूर्ण, समस्त। सपदेसेहिं समग्गो।(प्रव ज्ञे ५३)

समज्जिअ वि [समर्जित] उपार्जित, एकत्रित, सकलित। (निय.११८)

समण पु स्त्री [श्रमण] निर्ग्रन्थ, मुनि,साधु, यति, भिक्षु। (पचा २, प्रव १४,लि ४,भा ५१) समणो समसुहदुक्खो। (प्रव १४) जिसे शत्रु और मित्रों का समूह समान हो, सुख एव दु ख समान हो,

प्रशसा एव निंदा समान हो, पत्थर और स्वर्ण एक समान हो तथा जो जीवन और मरण मे समभाव वाला हो, वह श्रमण है। -मुहुग्गदमट्ठ पु [मुखोद्गतार्थ] श्रमण के मुख से उत्पन्न अर्थ। (पचा २) -लिग न [लिङ्ग] श्रमणलिङ्ग, श्रमणचिह्न। वोच्छामि समणलिग। (लि १)

समणी स्त्री [श्रमणी] श्रमणी, आर्यिका, साध्वी। (प्रव चा ज वृ २५) समणीओ तस्समाचारा।

समत्त वि [समस्त] परिपूर्ण, सम्पूर्ण। जाद सय समत्त। (प्रव ५९)

समद वि [समत] समानता, सदृशता। समदो दुराधिगा जदि। (प्रव ज्ञे ७३)

समदा वि [समता] साम्यभाव,रागद्वेष का अभाव समदारहियस्स। समणस्स। (निय १२४)

समद्दव वि [स्वमार्दव] निजमृदुता, स्वकीय मार्दव। (निय ११५) समद्दवेणज्जवेण माय च। (निय ११५)

समधि सक [सम्+अधि] अध्ययन करना, ज्ञान करना। (प्रव ८६) तम्हा सत्थ समधिदव्व। (प्रव ८६) समधिदव्व (विकृ प्रव ८६)

समभिहद वि [श्रमाभिहत] श्रम से खिन्न। (प्रव चा ३०)

समभुत्ति स्त्री [समभुक्ति] सम्यक् आहार, अच्छा भोजन। समभुत्ती एसणासमिदी। (निय ६३)

समय पु [समय] 1 काल, अवसर। (पचा १६७,स १७०, प्रव ज्ञे ४९, भा ३५, निय ३१) समयस्स सो वि समयो। (प्रव ज्ञे ५०) 2 आत्मा। समयमिण सुणह वोच्छामि। (पचा २)

3 आगम, सिद्धान्त, मत। समयस्स वियाणया विंति। (स.३७)
-सार पु न [सार] समयसार, ग्रन्थ विशेष, परमार्थग्रन्थ। (स.१४२) जो सब नयपक्षों से रहित है वह समयसार है। (स १४४)

समवत्ति पु [समवर्त्तिन्] तादात्म्य सम्बन्ध, धारावाही। (पंचा.५०)

समवाअ/समवाय पु [समवाय] सम्बन्धविशेष,सम्मिलन, संपर्क, अविच्छेद्यसयोग। (पचा.४९, प्रव.१७) गुण एवं गुणी के बीच अनादि काल से जो समवर्तित्व तादात्म्य सम्बन्ध पाया जाता है, वह समवाय है। (पंचा.५०) समवत्ती समवाओ।

समवेद वि [समवेत] समुदित, एकमेक। समवेदं खलु दव्वं। (प्रव ज्ञे १०)

समवण्ण वि [समापन्न] सयोग, सप्राप्त। समवण्णा होइ चारित्तं। (चा.३)

समस्सिद वि [समाश्रित] आश्रय मे स्थित, आश्रित। फासेहिं समस्सिदे सहावेण। (प्रव ६५)

समाण वि [समान] सदृश, तुल्य। (पंचा.९६, द.२६) दोण्णि वि होंति समाणा। (द २६) -परिणाम न [परिणाम] समान परिणाम, सदृशमाप। अपुणब्भूदा समाणपरिणामा। (पंचा ९६)

समादद सक [समा+दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना, अङ्गीकार करना। (पचा.९९,१७१) चित्त उभय समादियदि। (पंचा.९९)

समावणअ पुं [श्रमापनक] थकावट दूर करने वाला। समणेसु समावणओ। (प्रव.चा.४७)

समावण्ण देखो समवण्ण। विव्वेयसमावण्णो। (स ३१८)

समायर सक [समा+चर्] आचरण करना। (भा ३०,७७) त रयणत्तय समायरह। समायरह (वि /आ म ब भा ३०)

समारद्ध वि [समारद्ध] प्रारम्भ, आरम्भ, शुरुआत्। (प्रव ज्ञे ३२, प्रव चा ११) कम्म जीवेण ज समारद्ध। (प्रव ज्ञे ३२)

समास पु [समास] सक्षेप, सकोच, सम्मिश्रण, समाहार। (स ३५३,३६०,बो २,द १,मो १३) वत्तव्व से समासेण। (स ३६०)

समास अक [सम्+आस्] रहना,बैठना,प्राप्त होना। (प्रव ५) पहाणासम समासेज्ज। समासेज्ज (वि उ ए प्रव ५)

समाहि पु स्त्री [समाधि] चित्त की स्वस्थता, समभाव। (निय १०४, भा ७२) समाहिं पडिवज्जए। (निय १०४)

समाहिद वि [समाहित] सयुक्त, तन्मय, तत्पर। तिहिं तेहिं समाहिदो हु जो अप्पा। (पचा १६१)

समित वि [शमित] शान्त किया हुआ, शान्त। (प्रव चा ६८) **-कसाय** पु [कषाय] कषायों से शान्त, जिसकी कषायें शान्त हो गई हो। समिदकसायो तवोधिगो चावि। (प्रव चा ६८)

समिदि स्त्री [समिति] सम्यक्प्रवृत्ति, उपयोगपूर्वक की जाने वाली प्रवृति। (स २७३, प्रव चा ८, निय ११३, सू २१) नियमसार मे पाच समितियों का विवेचन पृथक्-पृथक् रूप में किया गया है। (देखो-६१ से ६५)

समिद्ध वि [समृद्ध] अतिशय सम्पत्तिवाला, धनवान्। (प्रव २२)

समिद्धि स्त्री [समृद्धि] वृद्धि, अतिशयवृद्धि।

समुग्गद वि [समुद्गत] समुत्पन्न, समुद्भूत।

समुट्ठिद वि [समुत्थित] सम्यक् प्रयत्नशील, उद्यमी, एक साथ उत्पन्न। (प्रव.७९, प्रव.ज्ञे.१०७) तीसु जुगवं समुट्ठिदो जो दु। (प्रव चा ४२)

समुद्द पु [समुद्र] समुद्र, सागर। (सू.२७) -सलिल न [सलिल] समुद्र जल, सागर का पानी। समुद्दसलिले अचेलअत्थेण। (स २७)

समुद्दिट्ठ वि [समुदिष्ट] कथित, प्रतिपादित। (निय.११०,१८२) सिद्धा णिव्वाणमिदि समुद्दिट्ठा। (निय.१८२)

समुब्भव पुं [समुद्भव] उत्पन्न, उत्पत्ति, जन्म। (प्रव.७४, निय.३८) परिणामसमुब्भवाणि विविहाणि। (प्रव.७४)

समुवगद वि [समुपगत] प्राप्त हुआ, समीप आया। मग्गं जिण भासिदेण समुवगदो। (पचा.७०)

समूह पुं न [समूह] समुदाय, राशि, समूह।

सम्म वि [सम्यन्च्] 1 सत्य, सच्चा, यथार्थ, समीचीन। सम्मादिट्ठी जीवो। (स २२८) -दिट्ठि/दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] सम्यक् दृष्टि। (स २०२) -दंसण न [दर्शन] सम्यग्दर्शन।(स.१४४, द.३३, चा १८) सम्यग्दृष्टि जीव अपने आपको ज्ञायक स्वभाव जानता है और तत्त्व के यथार्थ स्वरूप को जानता हुआ, उदयागत रागादिभाव को कर्मविपाक जानकर छोड़ता है। (स.२००) 2 न [साम्य] समता, समानता, निष्पक्षता, सामञ्जस्य। (प्रव.५,

नियं १०४) उवसपयामि सम्म। (प्रव.५)

सम्म अ [सम्यक्] अच्छी तरह, यथार्थरूप मे, वास्तव मे, भलीभाँति। (पचा ४८, प्रव ८१, सू १, चा २, भा १४८, बो १४) सम्म जिणभावणाजुत्तो। (भा १४८)

सम्मत्त पु न [सम्यक्त्व] समकित, सम्यग्दर्शन, यथार्थश्रद्धान। (पचा १०७, स १३, नियं ५, चा ६, बो ५७, भा १४३, सू १४, द २०, मो ४०) धर्म आदि द्रव्यों का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। (पचा १६०)जीवादि सात तत्त्वों पर श्रद्धान व्यवहार सम्यक्त्व है और शुद्ध आत्मा का श्रद्धान निश्चय सम्यक्त्व है। (द २०) **-गुण वसुद्ध** वि [गुणविशुद्ध] सम्यक्त्व गुण से विशुद्ध। (बो ५२) सम्मत्तगुणविसुद्धो। **-चरणचरित्त** न [चरणचरित्र] सम्यक्त्व के आचरण रूप चारित्र।(चा ८)**-चरणभट्ट** वि [चरणभ्रष्ट] सम्यक्त्व आचरण से भ्रष्ट। (चा १०) **-चरणसुद्ध** वि [चरणशुद्ध] सम्यक्त्वाचरण से शुद्ध। (चा ९) **-णाणचरण** न [ज्ञानचरण] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र। (नियं ९१) सम्मत्तणाणचरणे। (नियं १३४) **-णाणजुत्त** वि [ज्ञानयुक्त] सम्यक्त्व और ज्ञान से युक्त।(पचा १०६) **-णाणरहिअ** वि [ज्ञानरहित] सम्यक्त्व और ज्ञान से रहित। (मो ७४) **-पडिणिबद्ध** वि [प्रतिनिबद्ध] सम्यक्त्व को रोकने वाला। सम्मत्तपडिणिबद्ध। (स १६१) **-परिणद** वि [परिणत] सम्यक्त्वरूप परिणत। सम्मत्तपरिणदो उण। (मो ८७) **-पहुदिभाव** पु [प्रभृतिभाव] सम्यक्त्वादि भाव।

सम्मत्तपहुदिभावा। (निय.९०) -रयणभट्ठ वि [रत्नभ्रष्ट] सम्यक्त्वरूपी रत्न से भ्रष्ट। सम्मत्तरयणभट्ठा। (द.४) -विरहिय वि [विरहित] सम्यक्त्व से रहित। (द ५) सम्मत्तविरहियाणं। (द ५) -विसुद्ध वि [विसुद्ध] सम्यक्त्व से विशुद्ध। वयसम्मत्त विसुद्धे। (बो.२५) -सलिलपवह वि [सलिल-प्रवह] सम्यक्त्व जल से प्रवाहित। सम्मत्तसलिलपवहे। (द.७)

सम्मद्दसण न [सम्यग्दर्शन] सम्यग्दर्शन। (द.३३, बो.४०)

सम्माइट्ठि/सम्मादिट्ठि स्त्री [सम्यग्दृष्टि] सम्यग्दृष्टि। (स.२३०, मो १४, भा ३१) सम्माइट्ठी हवइ जीवो। (स ११)

सम्मूह सक [समा+इ] इकट्ठा करना, एकत्रित करना। सम्मूहदि रक्खेदि य। (लि ५)

सय अक [शी/स्वप्] सोना, शयन करना। (भा ११३)

सय वि [स्वक] निजी, आत्मीय। (स.३६१-३६३) जीवो वि सयेण भावेण। (स ३६२)

सयं अ [स्वय] आप, निज। (पचा.७८, स.९१, प्रव.५५) -अप्पा पुं [आत्मन्] स्वय आत्मा, स्वयं अपना। अह सयमप्पा परिणमदि। (स १२४) -एव अ [एव] स्वयं ही, अपने आप ही। भूदो सयमेवादा। (प्रव १६) -भु पु [भू] ब्रह्मा, स्वयं उत्पन्न। (प्रव १६) हवदि सयभुत्ति णिद्दिट्ठो।

सयण न [शयन] शय्या, विस्तर। (प्रव चा.१६, बो ४५, द्दा.३) हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइ। (बो.४५)

सयल वि [सकल] सम्पूर्ण, पूरा, सब, समस्त। (पचा.७५, निय.५,

बो.२,भा १३३)ते रोया वि मयला।(भा ३८)-**काल** पु [काल] सभी समय,प्रत्येक समय।(भा ९४)सहदि मुणि सयलकालकाएण।-**गुण** पु न [गुण] समस्तगुण। सयलगुणप्पा हवे अत्ता। (निय.५)-**जण** पु [जन] सभी लोग। सयलजणबोहणत्थ। (बो २) -**जीव** पु [जीव] समस्त जीव। खमेहि तिविहेण सयलजीवाण। (भा १०९) -**णग्ग** वि[नग्न]सभी वस्त्र रहित।दव्वेण सयलणग्गा। (भा ६७) -**दोसणिम्मुक्क** वि [दोषनिर्मुक्त] समस्त दोषों से रहित। (निय ४४) -**दोसपरिचत्त** वि [दोषपरित्यक्त] समस्त दोषों को छोड़ने वाला। रायादिसु सयलदोसपरिचत्तो। (भा ८५) -**परिचत्त** वि [परित्यक्त] सभी से रहित। माणकसाएहि सयलपरिचत्तो। (भा ५६) -**भाव** पु [भाव] सम्पूर्ण भाव। पुव्वुत्तसयलभावा। (निय ५०) -**संघ** पु [सघ] समस्त सघ। णारयतिरिया य सयलसघाण। (भा ६७) -**समत्थ** वि [समर्थ] पूर्ण शक्तिमान। खध सयलसमत्थ। (पचा ७५) -**सुयणाण** न [श्रुतज्ञान] सम्पूर्ण श्रुतुज्ञान। चउदसपुव्वाइ सयलसुयणाण। (भा ५२)

सया देखो सदा। सया विदियवय होइ तस्सेव। (निय ५७)

सयास न [सयास] पास, निकट, समीप। त गरहि गुरुसयासे। (भा.१०६)

सरण पु न [शरण] 1. आश्रय, स्थान। (मो १०४,१०५, भा १२३) तम्हा आदा हु मे सरण। (मो.१०५) 2 न [स्मरण] स्मृति, याद। (चा ३५)

सराग वि [सराग] रागसहित। चरिया हि सरागाण। (प्रव.चा.४८) -प्पधाण वि [प्रधान] सराग की मुख्यता, सरागमय। सो वि सरागप्पधाणो से। (प्रव.चा ४९)

सरि स्त्री [सरित्] सरिता, नदी। सरिदरितरुवणाइ सव्वंतो। (भा.२१)

सरिस/सरिस्स वि [सदृश] समान, तुल्य। णियदेहसरिस्स पिच्छिऊण। (मो.९)

सरीर पु न [शरीर] देह, काय, तनु। (स ५०, निय.७०, भा ३७, बो ५१) आहारो य सरीरो। (बो.३३) -ग वि [क] शरीरसम्बन्धी। (निय ७०) काउस्सग्गो सरीरगे गुत्ती। (निय.७०) -गुण पुं न [गुण] शरीर के गुण। (स.३९) -गुत्ति स्त्री [गुप्ति] कायगुप्ति। (निय.७०) शरीर सम्बन्धी क्रियाओं को रोकना कायोत्सर्ग या कायगुप्ति है। (निय.७०) -मित्त पुं [मात्र] शरीरप्रमाण, शरीरमात्र। सरीरमित्तो अणाइणिहणो य। (भा १४७)

सलक्खण वि [सलक्षण] लक्षणसहित। छिज्जति सलक्खेहिं णियएहिं। (स २९५)

सलक्खणिय वि [सलक्षणिक] लक्षणसहित। (पचा.१०)

सलिल पुं न [सलिल] जल, पानी। (द.७, भा १२४, १५३) सम्मत्तसलिलपवहे। (द ७)

सल्ल पुं न [शल्य] पीड़ा, दु:ख। (निय ८७) -भाव पु [भाव] शल्यभाव। मोत्तूण सल्लभाव। (निय.८७)

सल्लेहणा स्त्री [सल्लेखना] कषाय और शरीर के शमन करने की क्रिया, अनशन व्रत से शरीरत्याग का अनुष्ठान, शिक्षाव्रत का एक भेद। चउत्थ सल्लेहणा अते। (चा २६)

सव न [शव] मृत शरीर, शव। जीवविमुक्को सवओ। (भा १४२)

सवण देखो समण। (सू १, द २७, भा १०७, मो १४) सवयाण सावयाण पुण सुणसु।(मो ८५) **-त्तण** वि [त्व] श्रमणपना, साधुता। सवणत्तण ण पत्तो। (भा ४५)

सवद वि [सव्रत] व्रतसहित। सोच्चासवद किरिय। (प्रव चा ७)

सवसासत्त वि [स्ववशासक्त] स्वाधीन मुनियों मे आसक्त। सवसासत्त तित्थ। (बो ४२)

सविसेस वि [स्वविशेष] अपनी विशेषता सहित। सविसेसो जो हि णेव सामण्णे। (प्रव ९१)

सविस्सरूव वि [सविश्वरूप] नाना प्रकार के स्वरूपों से युक्त। (पचा ८)

सविहव वि [स्ववैभव] निज वैभव, निजअनुभव। (स ५) दाएह अप्पणो सविहवेण।

सव्व स [सर्व] सब, समस्त, सम्पूर्ण। (पचा ८२, स १५, प्रव ८८, निय २७, द १५, सू १०, बो २४, मो १७, भा १४३, द्वा १) णाण अप्पा सव्व। (स १०) **-अग** पु न [अङ्ग] समस्त शरीर, शरीर के सभी अवयव। (बो ३७) **-अदिचार** पु [अतिचार] सभी अतिचार। (निय ९३) **-आगमधर** वि [आगमधर] समस्त आगमों का ज्ञाता। सगस्स सव्वागमधरो वि। (पचा १६७)

-आबाधविजुत्त वि [आबाधवियुक्त] सब पीड़ाओं से रहित। सव्वाबाधाविजुत्तो। (प्रव.ज्ञे.१०६) -कत्तित वि [कर्तृत्व] सभी प्रकार का कर्त्तापन। सो मुंचदि सव्वकत्तितं। (स.९०) -कम्म पुं न [कर्मन्] समस्त कर्म, सकल कर्म। णिज्जरमाणोध सव्वकम्माणि। (पचा.१५३) -काल पु [काल] सम्पूर्ण समय, सभी समय। (पंचा.४०, प्रव.ज्ञे.४) लोगो सो सव्वकाले दु। (प्रव.ज्ञे.३६) -क्खगुणसमिद्धा वि [अक्षगुणसमृद्ध] समस्त इन्द्रियों के गुणों से सम्पन्न। (प्रव.२२) -क्खसोक्खणाणड्ढ वि [अक्षसुखज्ञानाढ्य] समस्त इन्द्रिय सुख और ज्ञान का भण्डार। (प्रव.ज्ञे.१०६) -गद वि [गत] सर्वगत, व्यापक। (प्रव.२३,२६,५०) ण खाइयं णेव सव्वगद। (प्रव ५०) -णयपक्खरहिद वि [नयपक्षरहित] सब नय पक्षों से रहित। सव्वणयपक्खरहिदो। (स.१४४) -णाणदरिसी वि [ज्ञानदर्शिन्] सबको देखने जानने वाला, सर्वज्ञ। (पंचा.२८, स १६०) सो सव्वणाणदरिसी। (पंचा.२८)-ण्हु पुं [ज्ञ] सर्वज्ञ, परमेश्वर। (प्रव.१६) -त्तो अ [तस्] सब ओर से। (भा.२१) -त्थ अ [त्र] सर्वत्र, सभी जगह। (पचा १७२,स.३, प्रव.५१, बो ४७,५५) सव्वत्थ अत्थि जीवो। (पचा.३४) -दंसि वि [दर्शिन्] सर्वदर्शी, सर्वज्ञ। (चा.१) सव्वण्हु सव्वदसी। (चा.१) -दव्व पु न [द्रव्य] सभी द्रव्य,समस्तद्रव्य। (पचा.१४२, स २१८, प्रव २१) सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो। (स २१९) -दुक्ख पुं न [दु.ख] सभी दु ख। (प्रव ८८,सू २७,व.१७) ताह णियत्ताइ सव्वदुक्खाइ। (सू.२७)-दो अ [तस्] सभी ओर से। (पचा.७३,

स १६०, प्रव ज्ञे ७६) पोग्गलकाएहिं सव्वदो लोगो। (स ६४) -दोस पु [दोष] समस्त दोष। (निय ९३) -धम्म पु न [धर्मन्] समस्त धर्म, सबधर्म। उवगूहणगो दु सव्वधम्माण। (स २३३) -पयडत्त वि [प्रकटत्व] सर्वरूप से प्रकटपना। जिणसमए सव्वपयडत्त। (निय २७) -पयत्थ पु [पदार्थ] समस्त पदार्थ। सत्ता सव्वपयत्था।(पचा ८)-भाव पु [भाव] सभी भाव। (स २३२,निय ११९,द १५,प्रव ज्ञे १०५,पचा ९) ण दु कत्ता सव्वभावाण। (स ८२) -भूद वि [भूत] समस्तप्राणी। इदियचक्खूणि सव्वभूदाणि। (प्रव चा ३४) -लोगदरिसि वि [लोकदर्शिन्] समस्त लोक को देखने वाला। (पचा १५१, मो ३५) सव्वण्हू सव्वलोगदरिसी। (पचा २९) -लोगपदिमहिद वि [लोकपतिमहित] समस्त लोक के अधिपतियों से पूजित। सव्वण्हू सव्वलोगपदिमहिदो। (प्रव १६)-विअप्पाभाव वि [विकल्पाभाव] समस्त विकल्पों का अभाव।सव्वविअप्पाभावे। (निय १३८)-विरअ वि [विरत] सभी तरह से रहित,पूर्ण विरत।सव्वविरओ वि भावहि। (भा ९७) -सगपरिचत्त वि [सङ्गपरित्यक्त] समस्त परिग्रह से रहित। पव्वज्जा सव्वसगपरिचत्ता। (बो २४) -सगमुक्क वि [सङ्गमुक्त] सभी परिग्रह से मुक्त। (पचा १५८, स १८८) जो सव्वसगमुक्को। (पचा १५८) -सावज्ज वि [सावद्य] समस्त पापों से युक्त। विरदो सव्वसावज्जे। (निय १२५) -सिद्ध वि [सिद्ध] सभी सिद्ध। (स १, द्वा १) वदित्तु सव्वसिद्धे। (स १) -हा अ [था] सर्वथा,

सब प्रकार से । (पचा ३५, मो.२९, भा ६३) ववहार चयइ सव्वहा सव्व। (मो.३२)सव्वो (प्र.ए भा.३३) सव्वे (प्र ब स १२८) सव्व (द्वि ए स १६०) सव्वे (द्वि.ब पचा.३९) सव्वेहि (तृ ब मो २२) सव्वस्स (च./ष ए.स ४) सव्वेसिं/सव्वाण (च /ष ब.स २३१ भा.१४३) सव्वम्हि (स ए.स.२४२) सव्वेसु (स.ब.प्रव चा ५९) सव्वा (प्र ए.स.२६) सव्वाणि/सव्वाइ (द्वि ब.प्रव.४९, भा २२)

सव्वण्हु पुं [सर्वज्ञ] सर्वज्ञ, प्रभु। (पचा १५१, स १५२, प्रव १६, चा.१) सव्वण्हू सव्वलोगपदिमहिदो। (प्रव १६)

ससक्ति वि [स्वशक्ति] अपनी शक्ति, निजबल। कुणइ तव सजुदो ससत्तीए। (मो ४३)

ससहर पु [शशहर] चन्द्रमा, चाँद। (भा १४५) **-बिंब** वि [बिम्ब] चन्द्रमण्डल। ससहरबिंब ख मडले विमले। (भा १४५)

सस्स न [शस्य] धान्य, चावल। (प्रव चा ५५, लि.१६) **-काल** पु [काल] धान्य का समय। वीयाणि व सस्सकालम्मि। (प्रव चा ५५)

सस्सद/सस्सय वि [शाश्वत्] नित्य, अविनाशी,अविनश्वर। (पचा ३७, द्वा ४८) सो सस्सदो असद्दो। (पचा ७७)

सह अक [सह्] सहन करना, झेलना। (भा ३८, सू.१२, बो ५५) दस दस दो सुपरीसह सहदि। (भा ९४)

सह वि [सह] 1 सहिष्णु, सहन करने वाला। उवसग्गपरिसहसहा। (बो ५५) 2 अ [सह] साथ, सग, सहित। जइ जीवेण सहच्चिय।

(स १३९)

सहज वि [सहज] स्वाभाविक, नैसर्गिक। (प्रव ६३, भा ११, द २४) आगतुअमाणसिय सहज। (भा ११) **-उप्पण्ण** वि [उत्पन्न] स्वाभाविक रूप से उत्पन्न। सहजुप्पण्ण रूव। (द २४)

सहस/सहस्स पु न [सहस्र] हजार, सख्याविशेष। (द ३५, भा २८) **-कोडि** स्त्री [कोटि] हजारों करोड़। (द ५) **-ट्ठ** वि [अष्ट] एक हजार आठ। सहसट्ठ सुलक्खणेहिं सजुत्तो। (द ३५) **-वार** पु [बार] हजारों बार, हजारों समय। छावट्ठिसहस्सवारमरणाणि। (भा २८)

सहाव पु [स्वभाव] प्रकृति, निसर्ग। (पचा १५८, स १९८, प्रव० ३३, नियं १०, भा १५३) कम्मसहावेण भावेण। (पचा ६२) **-गुण** पु न [गुण] स्वभाव गुण। त हवे सहावगुण। (निय २७)**-ठाण** न [स्थान] स्वभावस्थान। (निय ३९) उवसमणे सहावठाणा वा।(निय ४१)**-णाण** न[ज्ञान]स्वभाव ज्ञान। (निय १०,११) असहाय त सहावणाण त्ति। (निय ११) **-णियद** वि [नियत]अपने स्वभाव मे स्थित। जीवो सहावणियदो। (पचा १५५) **-पज्जाय** पु [पर्याय] स्वभाव पर्याय। परिणामो सो सहावपज्जायो। (निय २८) **-पयडि** स्त्री [प्रकृति] स्वभाव प्रकृति। कमलिणिपत्त सहावपयडीए। (भा १५३) **-समयट्ठिद** वि [समवस्थित] स्वभाव मे स्थिर रूप। सहावसमयट्ठिदो त्ति ससारे। (प्रव ज्ञे २८) **-सिद्ध** वि [सिद्ध] स्वभाव से निष्पन्न, स्वभाव मे प्रतिष्ठित। सोक्ख सहावसिद्ध। (प्रव ७१)

सहिअ/सहिद/सहिय वि [सहित] युक्त, समन्वित, सहित। (पचा ४२, भा १४५, द ३४, सू ११) गुणपज्जएहिं सहिदो। (पचा २१)

सागार वि [सागार] गृहयुक्त, गृहस्थ। (स ४११, प्रव.ज्ञे.१०२) सागारणगारचरियया जुत्तो। (प्रव चा.७५)

साणुकंप वि [सानुकम्प] दयाभावयुक्त, दयाभाव से पूर्ण। जीवो य साणुकपो। (प्रव ज्ञे.६५)

साद न [सात] सुख, आनन्द। (प्रव.चा.५६) **-अप्पग** वि [आत्मक] सुखस्वरूप, आनन्दात्मक। भावं सादप्पग दि। (प्रव.चा.५६)

साधिय वि [साधित] सिद्ध किया गया, निष्पादित। साधियमाराधिय च एयट्ठ। (स.३०४)

साधीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्वतंत्र, स्वाधीन। साधीणो हि विणासो। (स १४७)

साधु पु [साधु] मुनि, यति। साधूहि इद भणिद। (पचा.१६४)

सामग्ग न [सामग्र्य] सामग्री, परिग्रह। सामग्गिदियरूवं। (द्वा.४)

सामण्ण न[श्रामण्य]1.श्रसणता,साधुपन।(प्रव.९१,निय १४७) सो सामण्ण चत्ता।(प्रव.ज्ञे. ९८)**-गुण** पु न[गुण]श्रमणता के गुण। तेण दु सामण्णगुण। (निय १४७) 2 वि [सामान्य] साधारण,सामान्य। (स.१०९) **-पच्चय** पु [प्रत्यय] सामान्य प्रत्यय,सामान्य कारण। सामण्णपच्चया खलु। (स १०९)

सामाइय न [सामायिक] सयमविशेष, समभाव, राग-द्वेष का अभाव, शिक्षाव्रत का एक भेद, प्रतिमाओं मे तीसरी प्रतिमा।

(निय १०३, चा २३) जो समस्त सावद्य---पाप सहित कार्यों से विरत है, तीन गुप्तियों का धारक है तथा जिसने इन्द्रियों को जी‍ लिया है उसके सामायिक होती है। (निय १२५)

सायर पु [सागर] समुद्र, रत्नाकर। सायरसलिला दु अहिययर। (भा १८,१९)

सायार देखो सागार। (चा २१, २३, भा ६६) सायार सग्गथे। (चा २१)

सार पु न [सार] 1 परमार्थ। (निय ३) भणिद खलु सारमि‍ वयण। 2 वि [सार] उत्तम, रहस्य, श्रेष्ठ।(द २१,मो ४०)इय उवएस सार। (मो ४०)

सारभ पु [सारम्भ] पाप कार्य। अह मोह सारभ। (चा १५)

सारीरिय वि [शारीरिक] शरीर का, शरीर सम्बन्धी। सारीरिय च चत्तारि। (भा ११)

सालिसिक्थ पु [शालिसिक्थ] मच्छ विशेष, मत्स्य की एक जाति, तन्दुलमत्स्य। मच्छो वि सालिसिक्थ। (भा ८८)

सावअ/सावग/सावय पु न [श्रावक] उपासक, अर्हद्भक्त गृहस्थ, विरताविरत सयम वाला। (निय १३४, द २७, चा २७, प्रव चा ५०, भा १४३) वीय उक्किट्ठसावयाण तु। (द १८)

-धम्म पु न [धर्म] श्रावक धर्म।एव सावयधम्म। (चा २७)

-सम वि [सम] श्रावक के समान। सुमलिणचित्तो ण सावयसमो सो। (भा १५४)

सासअ/सासद/सासय वि [शाश्वत] नित्य, अविनश्वर। (मो ६,

नियं.१०२, बो.११) पावंति हु सासयं मोक्खं। (मो.८१)

सासण न [शासन] 1. जिन शासन, आगम। (प्रव.चा.७५, पचा.५७, भा.८३) बुज्झदि सासणमेय। (प्रव. चा.७५) 2. आज्ञा, शासन।

साह सक [साध्] सिद्ध करना, बनाना, वश मे करना। (नियं १५५, सू.१, चा.३१) साहति जं महल्ला। (चा.३१)

साहम्मि वि [साधर्मिन्] समान धर्म वाला, एक जाति के। साहम्मि य संजदेसु अणुरत्तो। (मो.५२)

साहा स्त्री [शाखा] वृक्ष की डाल। (द.११) -परिवार [परिवार] शाखापरिवार। साहापरिवारबहुगुणो होई। (द.११)

साहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्वतन्त्र। साहीणो समभावो। (नियं.११०)

साहु पुं [साधु] मुनि,श्रमण,यति। (पचा.१३६,स.३३,प्रव.४, नियं.५७, सू.१२, भा.५६, मो.१५) गुण- गणविहूसियगो हेयोवादेयणिच्छदो साहू। (मो.१०२) साहू (प्र.ए.मो.१०२) साहू (प्र.ब.सू.१२, स.३१) साहु (द्वि.ए.स.३२) साहुणा (तृ ए.स.१६) साहुस्स (च /ष.ए.स.३३) साहूण (च./ष ब.प्रव.४, सू १७) साहुसु (स ब पंचा.१३६)

सिंच सक [सिच्] सींचना, छिड़कना। वरखमसलिलेण सिंचेह। सिंचेह (वि./आ. म.ब.भा.१०९)

सिक्खा स्त्री [शिक्षा] उपदेश, अभ्यास, शिक्षण। दायारी दिक्खसिक्खा। (बो १७) -वय पु न [व्रत] शिक्षाव्रत।

सिक्खावय चत्तारि। (चा २३)

सिग्घ न [शीघ्र] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त। पच्छा पावइ सिग्घ। (निय १७५)

सिज्झ अक [सिध्] सिद्ध होना, निष्पन्न, बनना, मुक्त होना। (प्रव चा ३७, सू २३, निय १०१, द ३, मो ८८, द्वा ९०) मूलविणट्ठा ण सिज्झति। (द १०) सिज्झदि। सिज्झइ (व प्र ए भा ४, निय ४, निय १०१) सिज्झति (व प्र ब द ३) सिज्झिहदि (भवि प्र ए द्वा ९०) सिज्झिहहि (भवि वि /आ म ए मो ८८)

सिद्ध वि [सिद्ध] 1 मुक्त, कृतकृत्य, निर्वाण प्राप्त। (पचा १३६, स २३३, प्रव ४, नि ७२, बो १२, भा १)शरीर से रहित सिद्ध है। देहविहूणा सिद्धा। (पचा १२०) -अत पु [अन्त] आगम, शास्त्र, सिद्धान्त। (स ३२२,३४७) जस्स एस सिद्धतो। (स ३४८) -आयदण न [आयतन] सिद्धायतन,जो विशुद्ध ध्यान तथा केवलज्ञान से युक्त है ऐसे जिस मुनिश्रेष्ठ के शुद्ध आत्मा की सिद्धि हो गई है,उस समस्त पदार्थों को जानने वाले केवलज्ञानी को सिद्धायतन कहा है। (बो ६) -आलय स्त्री न [आलय] सिद्धस्थान,सिद्धशिला। ते सिद्धालयसुह जति। (शी ३८)। -ठाण न [स्थान] सिद्धस्थान, मुक्तिस्थान। सिद्धठाणम्मि (बो १२) -प्पा पु[आत्मन्] सिद्ध आत्मा, मुक्त आत्मा। जारिसिया सिद्धप्पा। (निय ४७) भत्ति स्त्री [भक्ति] सिद्धभक्ति। [स २३३] -सहाव पु [स्वभाव] सिद्ध स्वभाव। सव्वे सिद्धसहावो। (निय ४९) 2

आराधक, निष्पन्न, बना हुआ। संसिद्धिराधसिद्धं। (स.३०४)

सिद्धि स्त्री [सिद्धि] 1. मुक्ति, निर्वाण। (प्रव.चा.३९, द.२८, सू.८,भा.८६,मो.८५)तह वि ण पावइ सिद्धिं।(सू.१५) **-गमण** न [गमन] सिद्धि को प्राप्त,मुक्ति को प्राप्त। सिद्धिगमणं च तेसिं। (द.२८) **-यर** वि [कर] सिद्ध को प्राप्त करने वाला। सम्मत्तं सिद्धियरं। (मो.८९) **-सुह** न [सुख] सिद्धि सुख,मोक्षसुख। जिणमुद्दं सिद्धिसुहं हवेइ। (मो.४७) 2. सिद्धि निष्पति। अजुदा सिद्धि त्ति णिद्दिट्ठा। (पंचा.५०)

सिप्पि स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा। सिप्पी अपादगा य किमी। (पंचा.१४४)

सिप्पिअ वि [शिल्पिक] शिल्पी, कारीगर, मूर्तिकार। जह सिप्पिओ उ चिट्ठं। (स.३५४)

सिर न [शिरस्] मस्तक, माथा, सिर। (पचा.२, भा १) अभिवदिऊण सिरसा। (पचा.१०५) सिरसा (तृ.ए.)

सिल/सिला स्त्री [शिला] चट्टान, पत्थर, शिला। सिलकट्ठे भूमितले। (बो.५५)

सिलिट्ठ वि [श्लिष्ठ] बधा हुआ, सम्बन्धित।

सिव पु [शिव] 1 जिनदेव, तीर्थङ्कर, सिद्ध। (भा २,१२४,१५०) णाणी सिवपरमेट्ठी। 2. न [शिव] कल्याण, शुभ। सय च बुद्धि-सिवमपत्तो। (स.३८२) 3 पु न [शिव] मुक्ति, मोक्ष। (सू.२, चा.४१, भा.९३) भावो वि दिव्वसिवसुक्खभायणो। (भा.७४) **-आलय** न [आलय] मोक्षमहल। (चा ४१, भा.९३) **-कर** पु

[कर] शकर, महादेव, शिवकर। (मो ६) -कुमार पु [कुमार] शिवकुमार, एक मुनि का नाम। (भा ५१) -पुरि स्त्री [पुरी] शिवपुरी, मुक्तिधाम। पथिय सिवपुरिपथ।(भा ६) -भूइ पु [भूति] शिवभूति, एक मुनि विशेष। णामेण य सिवभूई। (भा ५३) -मग्ग पु न [मार्ग] शिवमार्ग, मुक्तिपथ। वट्टइ सिवमग्ग जो भव्वो। (सू २) -सुह न [सुख] मोक्ष सुख, मुक्ति सुख। दिव्वसिवसुहभायणो होइ। (भा ६५)

सिवण/सिविण पु न [स्वप्न] स्वप्न। सिविणे वि ण रुच्चइ। (मो ४७)

सिसु पु न [शिशु] बालक, पुत्र। (भा ४१) -काल पु [काल] बाल्यकाल, बचपन। सिसुकाले य अमाणे।(भा ४१)

सिस्सपु स्त्री [शिष्य] विद्यार्थी, शिष्य। (प्रव चा ४८,द २) उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साण। (द २) -ग्गहण न [ग्रहण] शिष्यों को स्वीकारना, शिष्य बनाना। सिस्सग्गहण च पोसण तेसि। (प्रव चा ४८)

सिंहाण पु न [दि] श्लेष्म, नाक का मल, कफ। सिहाण खेलसेओ। (बो ३६)

सिहि पु [शिखिन्] अग्नि, आग। चिरसच्चियकोहसिहिं। (भा १०९)

सीयल पु [शीतल] 1 शीतलनाथ, दसवे तीर्थङ्कर। (ती भ ४) 2 वि [शीतल] ठण्डा, शीतल। णाणमय विमलसीयलसलिल। (भा १२४)

सील पु [शील] सदाचार, सच्चरित्र। (स २७३, निय ११३,

द १६, भा.१२०, शी.१) विषयों से विरक्त होना शील है। शीलं विसयविरागो। (शी.४०) -कुसल वि [कुशल] शील, सम्पन्न, शील मे निपुण। लावण्णसीलकुसलो। (शी ३६) -गुण पु न [गुण] शीलगुण। सीलगुणमडिदाणं। (शी.१७) -फल न [फल] शीलफल। (द १६) -मंत वि [मन्त] शीलवान्। (शी २४) -वत वि [वन्त] शीलवान्। (द.१६) -वद न [व्रत] शीलव्रत। सीलवदणाणरहिदा। (शी.१४) -सलिल पु न [सलिल] शीलरूप जल। (शी.३८) -सहाव पुं [स्वभाव] शीलस्वभाव। सीलसहावं हि कुच्छिदं णाउं। (स.१४९) -सहिय वि [सहित] शीलसहित। तवविणयसीलसहिदा। (शी.३५)

सीस देखो सिस्स। (बो.६०,लिं.१८) णेहं सीसम्मि वट्टदे बहुसो। (लि.१८)

सीह पुं [सिंह] केशरी, मृगराज, शेर। उक्किट्ठसीहचरियं। (सू ९)

सु अ [सु] अतिशय, योग्यता, समीचीनता, अनुपम। (बो.१३, चा.४१,भा १५४,मो.८६)-इच्छिय वि[इच्छित]अच्छी तरह चाहा गया। लहंते ते सुइच्छियं लाह।(चा.४२)-कयत्थ वि [कृतार्थ]कृतकृत्य।ते धण्णा सुकयत्था।(मो.८६)-गइ स्त्री [गति] अच्छी गति। सद्दव्वादो हु सुगई हवइ। (मो.१६) -चरित्त/च्चारित्त न [चरित्र/चारित्र] निर्मल चारित्र। झाणरया सुचरित्ता। (मो.८२) -णिम्मल वि [निर्मल] अत्यन्त निर्मल। सुणिम्मलं सुरगिरीव। (मो.८६) -तव पुं न [तपस्] श्रेष्ठतप। सुतवे सुसजमे सद्धा। (चा.१६) -दंसण न [दर्शन] सम्यक्

श्रद्धान, समीचीनमत। सुदसणे सद्धा। (चा १४) -दाण न [दान] अच्छादान ।सुदाणदच्छाए। (चा ११) -धम्म पु न [धर्म] श्रेष्ठ धर्म, उत्तम धर्म। सजम सुधम्म च। (बो १३) -परिमल पु [परिमल] श्रेष्ठ सुगन्ध। अइसयवत सुपरिमलामोय। (बो ३८) -पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] अधिक विख्यात। सजमचरणस्स जइ व सुपसिद्धा। (चा ९) -भाव पु [भाव] अच्छाभाव। लब्भइ बोही सुभावेण । (भा ७४) -मरण न [मरण] सम्यक् मरण। भावहि सुमरणमरण। (भा ३२) -मलिण न [मलिन] अत्यन्त मलिन। सुमलिणचित्तो। (भा १५४) -मुक्ख पु [मोक्ष] श्रेष्ठ मुक्ति। जिणसम्मत्त सुमुक्खठाणा य। (चा ८)-लक्खण न [लक्षण] अतिशय लक्षण। सहसट्ठ सुलक्खणेहिं सजुत्तो। (द ३५) -विसुद्ध वि [विशुद्ध] अत्यन्त पवित्र। (चा ४१, बो ३९, भा ६०) कसायमलवज्जिओ य सुविसुद्धो। (बो ३९) -विहिअ [विहित] अच्छी तरह कहा गया। अविणयणरा सुविहिय। (भा १०४) -वीयराय वि [वीतराग] राग रहित, क्षीण राग। सजमसुद्ध सुवीयराय च। (बो १५) -सजम पु [सयम] उत्तमव्रत। सुतवे सुसजमे भावे। (चा १६) -हाव पु [भाव] अच्छा भाव। सुहावसजुत्तो। (भा ६१)

सुअ न [श्रुत] 1 शास्त्र विशेष, आगम, सिद्धान्त। सुअगुण सुअत्थि रयणत्त। (बो २२) 2 श्रुतज्ञान, ज्ञान का एक भेद। -णाणि वि [ज्ञानिन्] श्रुतज्ञानी, शास्त्रों का जानकार। सुअणाणि भद्दबाहू। (बो ६१)

सुइर वि [सुचिर] पवित्र, निर्मल। जीवेण भाविया सुइर। (नियं.९०) -काल पुं न [काल] बहुत समय तक। भुत्ताइ सुदूरकाल। (भा.९)

सुंदर वि [सुन्दर] मनोहर, अच्छा। णिदति सुदर मग्ग। (निय.१८५)

सुक्क न [शुक्ल] 1. शुभध्यान, ध्यान का एक भेद। (निय १२३) -झाण न [ध्यान] शुक्ल ध्यान। धम्मझाणेण सुक्कझाणेण। (निय १२३) 2 पु [शुक्ल] सफेद, श्वेत। तइया सुक्कत्तण पजहे। (स २२२) -त्तण वि [त्व] शुक्लपना, सफेदी। (स.२२२) 3. पुं [शुक्र] वीर्य, धातु विशेष। मंसट्ठिसुक्कसोणिय। (भा.४२)

सुक्ख न [सौख्य] सुख, आनन्द। (पंचा.१२२, निय.१७८, भा.६०) सुक्खाइ दुहाइ दव्वसवणो य। (भा १२६) -भायण पुं न [भाजन] सुख का पात्र। दिव्वसिवसुक्खभायणो। (भा.७४)

सुजणत्त वि [सुजनत्व] मनुष्यत्व। फलं अणुहवेइ सुजणत्ते। (निय १५७)

सुट्ठु अ [सुष्ठु] अच्छा, भली प्रकार, सुन्दर। (पंचा.२०, १४१, द.५, स.३१७, भा.१३७)जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा। (पचा.२०)

सुण सक [श्रु] सुनना। (पंचा.९५, स.३६०, प्रव.६२, निय.५४, बो.२, भा.६६, मो.१०६) समयमिमं सुणह वोच्छामि। (पचा.२) सुणइ (व.प्र.ए.मो.१०६) सुण/सुणसु (वि./आ. म.ए.स.३६०, ३७५) सुणिदूण (स.कृ.प्रव.६२) सुणंत (व.कृ.पचा ९५)

सुणह पुं स्त्री [शुनक] कुक्कुर, कुत्ता। सुणहाण गद्दहाण य।

(शी २९)

सुण्ण वि [शून्य] 1 व्यर्थ, निष्फल। सुण्णमिदर च। (पचा ३७) 2 रिक्त, खाली, अभाव। सुण्ण जाण तमत्थ। (प्रव ज्ञे ५२) **-आयारणिवास** पु [आगारनिवास] शून्यागार निवास, अचौर्यव्रत की एक भावना। (चा ३४) **-हर** न [गृह] खालीघर, निर्जनघर। सुण्णहरे तरुहिट्ठे। (बो ४१)

सुत्त वि [सुप्त] 1 सोया हुआ, शयित। जो सुत्तो ववहारे। (मो ३१) 2 न [सूत्र] आगम, सिद्धान्त, शास्त्र विशेष। (पचा १७३, स ६७, प्रव १४, निय.९४, सू.१, भा ९४) सुत्त जिणोवदिट्ठ। (प्रव ३४) **-ज्झयण** न [अध्ययन] सूत्र का अध्ययन। (प्रव चा २५, प्रव.चा ज वृ २५) सुत्तज्झयण च पण्णत्त। (प्रव चा २५) **-ठिअ** वि [स्थित] सूत्र मे स्थित। सुत्तठिओ जो हु छडए कम्म। (सू १४) **-त्थ** वि [अर्थ] सूत्रार्थ, सूत्र का प्रयोजन। सुत्तत्थ जिणभणिय। (सू ५) **-त्थपद** पु न [अर्थपद] सिद्धान्त पद, आगम के पद। णिच्छिदसुत्तत्थपदो। (प्रव.चा ६८) **-त्थविसारद** वि [अर्थविशारद] परमागम के अर्थ मे प्रवीण, सिद्धान्त मे निपुण। सुत्तत्थविसारदा उवासेया। (प्रव.चा ६३) **-मज्झ** न [मध्य] बीच, अन्तराल। अपदेससुत्तमज्झ। (स १५) **-रोइ** स्त्री [रुचि] आगम की प्रतीति, शास्त्ररुचि। अभिगदबुद्धिस्स सुत्तरोइस्स। (पचा १७०) **-संपजुत्त** वि [सप्रयुक्त] आगम से युक्त, शास्त्राभ्यास मे तत्पर। सजमतवसुत्तसपजुत्तो। (प्रव चा ६४) 3 न [सूत्र] धागा, डोरा, गुण। सुई जहा ससुत्ता। (सू ३)

सुद देखो सुअ (पचा ४१,स ४,प्रव ३२,निय.१२,बो २२,शी.१६) केवलिसुदकेवली भणिद। (निय.१) **-केवलि/केवली** वि [केवलिन्] श्रुतकेवली, द्वादशागपाठी। (निय.१) **-गुण** पुं न [गुण] श्रुतज्ञानरूपी धागा। सुदगुणवाणा। (बो.२२) **-पारयपउर** वि [पारकप्रचुर] श्रुत के पारगामी। सदुपारयपउराण। (शी १७)

सुदिट्ठ वि [सुदृष्टि] अच्छी तरह से देखा गया। (सू.२,बो ४) सुत्तम्मि ज सुदिट्ठ। (सू.२)

सुदि स्त्री [श्रुति] परम्परागत ज्ञान। एरिसी दु सुंदी। (स ३३६)

सुद्ध वि [शुद्ध] पवित्र, निर्दोष, विमल, विशुद्ध, निष्कलङ्क। (पंचा १६५,स ९०,प्रव.९,निय.४९,द.२८,बो १७,भा ७७, मो ९३) सुद्धेण तदा सुद्धो। (प्रव.९) **-आदेस** पु [आदेश] शुद्ध तत्त्व का उपदेश, शुद्ध शिक्षा। सुद्धो सुद्धादेसो। (स १२) **-उवओग** पु [उपयोग] शुद्धोपयोग। भणिदो सुद्धोवओगो त्ति। (प्रव.१४) **-चरण** न [चरण] निर्दोष चारित्र। जं चरदि सुद्धचरण। (बो १०) **-णअ/णय** पु [नय] शुद्धनय। (स ११, १४,१४१,निय.४९) भूयत्थो देसिदो दु सुद्धणओ। (स ११) **-तव** पु न [तपस्] शुद्धतप। सजमसम्मत्तसुतवयरणे। (बो १) **-त्थ** वि [अर्थ] शुद्धार्थ। रूवत्थ सुद्धत्थ। (बो ५९) **-भाव** पु [भाव] विशुद्धभाव। सम्मत्तेण सुद्धभावेण। (द २८) **-संपओग** पु [सप्रयोग] शुद्ध सप्रयोग,शुद्ध सम्बन्ध।मण्णदि सुद्धसपओगादो। (पचा १६५) **-सम्मत्त** पुं न [सम्यक्त्व] शुद्ध श्रद्धान। (मो ९३, बो १७) **-सहाव** पुं [स्वभाव] शुद्ध स्वभाव। सुद्ध सुद्धसहावं।

(भा ७७) -सुद्धि स्त्री [शुद्धि] शुद्धता, निर्मलता। तिविहसुद्धीए। (भा १३५)

सुपास पु [सुपार्श्व] सातवे तीर्थङ्कर, सुपार्श्वनाथ। (ती भ ३)

सुभ न [शुभ] शुभ, मङ्गल, कल्याण। -जोग पु [योग] शुभयोग। सुभजोगेण सुभाव। (मो ५४)

सुमइ पु [सुमति] सुमतिनाथ, पाँचवें तीर्थङ्कर। (ती भ ३)

सुय 1 देखो सुअ/सुद। 2 पु [सुत] पुत्र, लड़का। सुयदाराईविसए। (मो १०)

सुयकेवलि पु [श्रुतकेवलिन्] श्रुतकेवली, द्वादशाङ्ग का ज्ञाता। (स ९, प्रव ३३) जम्हा सुयकेवली तम्हा। (स १०)

सुयणाण न [श्रुतज्ञान] शास्त्रज्ञान, सिद्धान्तज्ञान, श्रुतज्ञान, ज्ञान का एक भेद। (स १०, भा ९२) विसुद्धभावेण सुयणाण। (भा ९२)

सुर पु [सुर] देव, देवता, अमर। (पचा ११७, प्रव १, निय १७, द ३३, सू ११, भा १) णरणारयतिरियसुरा। (प्रव ७२) -गण पु [गण] देवसमूह। (निय १७) -गिरि पु [गिरि] सुमेरु पर्वत। सुगिरीव णिक्कप। (मो ८६) -च्छरा स्त्री [अप्सरा] स्वर्गदेवी। सुरच्छरविओयकाले। (भा १२) -णिलय पु [निलय] स्वर्गलोक, देवों का आवास। सुरणिलयेसु सुरच्छअविओयकाले। (भा १२) -धणु न [धनुष्] इन्द्र धनुष। सुरधणुमिव सस्सय ण हवे। (द्वा ४) -लोग/लोय पु [लोक] स्वर्गलोक। सो सुरलोग समादियदि। (पचा १७१) -वर पु [वर] सुरेन्द्र, देवेन्द्र। सुरवरजिणगणहराइ सोक्खाइ। (भा १६०)

सुरअ वि [सुरत] अच्छी तरह से लीन, सलग्न, तत्पर। आदसहावे सुरओ। (मो.१२)

सुरत्तपुत्त पु [सुरक्तपुत्र] रुद्र, दशपूर्वो का पाठी। तो सो सुरत्तपुत्तो। (शी.३०)

सुलभ वि [सुलभ] सुखपूर्वक प्राप्त, सुप्राप्त। णवरि ण सुलभो विहत्तस्स। (स.४)

सुविदिद वि [सुविदित] अच्छी तरह ज्ञात, जाना हुआ। (प्रव १४)

सुविहि पु [सुविधि] सुविधिनाथ, नवम तीर्थङ्कर। (ती.भ ४)

सुव्वय पु [सुव्रत] सुव्रतनाथ, बीसवे तीर्थङ्कर। (ती.भ.५)

सुसील न [सुशील] उत्तम स्वभाव, श्रेष्ठ आचरण। (स १४५, प्रव.६९) शुभकर्म सुशील है। सुहकम्म चावि जाणह सुसील। (स १४५)

सुह न [सुख] 1. सुख, आनन्द, शान्ति। (पचा १२५, प्रव.१३, नियं १०५,स.१९४,भा १३३,चा ४३)सुह दुक्ख दिाते भुजति। (पचा ६७)-कारणट्ठ। वि [कारणार्थ] सुखकारणार्थ, सुख के कारण भूत। भोयसुहकारणट्ठ (भा १३३) 2 पु न [शुभ] शुभ, गङ्गल, कल्याण, नामकर्म का एक भेद। (पचा.१३२, स ३७५, प्रव ९, नियं.१४४, भा.१३५) असुहो सुहो व गघो। (स.३७७) जिस जीव के मोह, राग, द्वेष, और चित्त की प्रसन्नता रहती है, उसके शुभ परिणाम होता है। (पचा १३१) -उप्पाअ पु [उत्पाद] शुभ की उत्पत्ति, शुभ का प्रादुर्भाव। (स २२४-२२७) विविहे भोए सुहुप्पाए। (स.२२५) -उवओगप्पग वि [उपयोगात्मक] शुभ

उपभोग से उत्पन्न होने वाला। सुहोवओगप्पगेहिं भोगेहिं। (प्रव ७३) -उवजुत्त वि [उपयुक्त] शुभ से सहित, अच्छे परिणामों से युक्त। सुहोवजुत्ता य होंति समयम्मि। (प्रव चा ४५) -कम्म पु न [कर्मन्] शुभकर्म, अच्छे कर्म। (स १४५, भा. ११८) सुहकम्म भावसुद्धिमावण्णो। (भा ११८) -णिमित्त न [निमित्त] शुभकारण, शुभनिमित्त। कल्लाणसुहणिमित्त। (भा १३५) -धम्म पु न [धर्म] शुभ धर्म, ध्यान विशेष। सुहधम्म जिणवरिंदेहिं। (भा ७६) -परिणाम पु [परिणाम] शुभपरिणाम। सुहपरिणामो पुण्ण। (पचा १३२) -भत्ति स्त्री [भक्ति] शुभभक्ति, पूजा। अरहते सुहभत्ती सम्मत्त। (शी ४०) -भाव पु [भाव] शुभभाव, अच्छे विचार। सुहभावे सो हवेइ अण्णवसो। (निय १४४) -भावणा स्त्री [भावना] शुभ चितन, शुभभावना। सुहभावणारहिओ। (भा १२)

सुह सक [सुखय्] सुखी करना। कम्मेहिं सुहाविज्जइ। (स ३३२)

सुहड पु [सुभट] योद्धा, वीर। सुहडो सगाम एहिं सव्वेहिं। (मो २२)

सुहिद वि [सुखित] सुखी, सुखयुक्त। (स २५४-२५६, प्रव ७३) सुहिदो दुहिदो य हवदि जो चेदा। (स ३८९)

सुहुम वि [सूक्ष्म] सूक्ष्म, अत्यन्तछोटा, नामकर्म का एक भेद। (पचा. ७६, स ६७, प्रव ज्ञे ४०, निय २१, सू २४) सुहुमा हवंति खधा। (निय २४)

सूई स्त्री [सूची] सूई, सूचिका। सूई जहा असुत्ता। (सू ३)

सूर वि [शूर] पराक्रमी, वीर, शूरवीर। (नियं ७४, मो ८९) सूरस्स ववसायिणो। (निय.१०५)

सेअ पु [स्वेद] पसीना, स्वेद। सिंहाणखेलसेंओ। (बो.३६)

सेड सक [सेट] सफेदी करना, पोतना। जह परदव्व सेडिदि। (स.३६२)

सेडिया स्त्री [दि] खडिया, सफेदी, कलई, चूना। जह सेडिया दु ण। (स.३५६)

सेद 1. देखो सेअ। सेद खेद मदो। (निय.६) 2 वि [श्वित] शुक्ल, सफेद। (स.१५७-१५९) वत्थस्स सेदभावो। (स १५८) -भाव पु [भाव] श्वेतभाव, सफेदरूप। सखस्स सेदभावो। (स २२०)

सेय न [श्रेयस्] शुभ, कल्याण। (द १५,१६,भा ७७) सेयासेय वियाणेदि। (द १५)

सेव सक [सेव्] सेवा करना, आराधना करना, आश्रय करना, उपभोग करना। (पचा.१६४, स.१९७, प्रव.चा २२, भा १११, लि ७) विसयत्थं सेवए ण कम्मरय। (स २२७) सेवइ/सेवए/सेवदि/सेवदे (व प्र.ए स.१९७, २२४, २२७, लि ७) सेवति (व.प्र ब स ४०९) सेवमाण (व कृ प्रव चा २२) सेवत (व कृ स १९७) सेवहि (वि /आ म ए भा १११) सेविदव्व (वि कृ पचा.१६४)

सेवग वि [सेवक] सेवा कर्त्ता, सेवक, नौकर। असेवमाणो वि सेवगो कोई। (स १९७)

सेवा स्त्री [सेवा] सेवा, भक्ति, शुश्रूषा। उच्छाहभावणासपससेवा।

(चा १४)

सेस वि [शेष] अवशिष्ट, बाकी, अन्य, समाप्ति, उपसहार। (पचा २२, प्रव २, निय ३७, स २४०, सू १०, द ८) सेसा मे बहिरा भावा। (निय १०२) -ग वि [क] अन्य। णेव पड णेव सेसगे दव्वे। (स १००)

सोक्ख न [सौख्य] सुख, आनन्द। (पचा १६३, स २०६, प्रव १९, भा १००) सोक्ख वा पुण दुक्ख। (प्रव २)

सोग पु [शोक] सताप, दु ख, नोकषाय का एक भेद। जरामरणरोयसोगा य। (निय ४२)

सोच्च न [शौच] शुद्धि, पवित्रता, निर्मलता, धर्म का एक लक्षण। जो उत्तम मुनि आकाक्षा से निवृत्त होकर वैराग्य युक्त रहता है, उसके शौच धर्म होता है। (द्वा ७५)

सोणिय न [शोणित] रुधिर, खून, शोणित। (भा ४२)

सोध सक [शुध्] सशोधन करना, साधना। जे सोधति चउत्थ। (शी २९)

सोय देखो सोग। (स ३७५)

सोवण्णिय वि [सौवर्णिक] सुवर्ण से निर्मित, स्वर्ग से बने। सोवण्णियम्हि णियल। (स १४६)

सोवाण न [सोपान] सीढ़ी, सोपान, श्रेणी। (द २१, भा १४६, शी २०) सोवाण पढममोक्खस्स। (भा १४६)

सोस पु [शोष] शोषण। सोसउम्मुक्का। (भा ९३)

सोह अक [शोधय्] चमकना, देदीप्यमान होना। जह फणिराओ

सोहइ। (भा १४४) सोहे (व प्र ए शी २८)

सोहण वि [शोभन] शोभायुक्त। तिण्ह पि सोहणत्थे। (चा ४)

सोहि स्त्री [शुद्धि/शोधि] शुद्धि, पवित्रता। (स ३०६, चा २, सू २६) चारित्त सोहिकारण तेसिं। (चा २) -कारण न [कारण] शुद्धि का कारण, शुद्धि का प्रयोजन। (चा २)

ह

हन सक [हन्] वध करना, मारना। हतूण दोसकम्मे। (बो २९)

हण सक [हन्] वध करना, मारना, काटना। (निय ९२, भा.२३) हणति चारित्तखग्गेण। (भा १५८) हणदि (व प्र ए निय ९२) हणति (व.प्र ब भा.१५८)

हत्थ पु न [हस्त] हाथ, कर। (सू १८, भा ४) तिलतुसमित्त ण गिहदि हत्थेसु। (सू १८)

हद वि [हत] रहित, विनाशित, विहीन। (पचा १०४, निय ३१) -परावर वि [परापर] पूर्वापर से रहित। हवदि हदपरावरो जीवो। (पचा १०४) -संठाण न [सस्थान] सस्थान से रहित, आकारहीन। हदसठाणपमाण तु। (निय ३१)

हर सक [हृ] हरण करना, छीनना। आउ ण हरेसि तुम। (स २४८)

हरिस पु [हर्ष] हर्ष, आनन्द। (निय ३९) -भाव पु [भाव] आनन्दभाव। णो हरसिभावठाणा। (निय ३९)

हरिहर पु [हरिहर] ब्रह्मा। -तुल्ल वि [तुल्य] ब्रह्मा के समान। हरिहरतुल्लो वि णरो। (सू ८)

हव अक [भू] 1 होना। (पचा ८८, ९३,स ११,१९,१००, प्रव ३९,४६, प्रव ज्ञे २३, निय २०) हवइ/हवेइ/हवदि/हवेदि (व.प्र ए पंचा १७,१०४, स.१४१, निय ५,२०,मो १४) भवदि (व प्र ए मो ८३) हवति (व प्र ब स ६८) हविज्ज/हवे (वि./आ म ए स ३३,निय ११,१७) हविय (स कृ पचा १६९) 2 सक [भू] प्राप्त करना। (पचा १३, ८५, ८६)

हस्स न [हास्य] हँसी, नोकषाय का एक भेद। जो दु हस्स रई। (निय १३१)

हास पु [हास] हँसी, हास्य। (निय.६१, चा ३३, भा ६९) पेसुण्णहासमच्छर। (भा ६९)

हि अ [हि] क्योंकि, ही, भी, जो, कुछ भी, कि, परन्तु, इसप्रकार, ऐसा, वही, निश्चय से, तथापि, पादपूर्ति अव्यय। (पचा २७, ४५,स ९,१८१,२६७,प्रव ७४,प्रव ज्ञे ७,१४,४२,६१,बो २७, भा १७,८३) णामे ठवणे हि य। (बो २७) जीवा वज्झति कम्मणा जदि हि। (स.२६७)

हिअ/हिद न [हित] मङ्गल, कल्याण, शुभ। (पचा १२२, १२५,द २९) कुव्वदि हिदमहिद। (पचा १२२) -परियम्म पु न [परिकर्म] हित की प्रवृत्ति, हित के कारण कलाप। हिदपरियम्म च अहिदभीरुत्त। (पचा १२५)

हिंड सक [हिण्ड्] भ्रमण करना, घूमना, चक्कर लगाना, भटकना। (प्रव ७७, मो ६७, शी ७, लि ७) हिंडदि घोरमपारं। (प्रव ७७)

हिंस सक [हिंस्] हिंसा करना, पीड़ा पहुँचाना। हिंसिज्जामि य

परेहिं सत्तेहिं। (स.२४७)

हिंसा स्त्री [हिंसा] वध, घात, पीड़ा। (प्रव.चा.१६, १७, निय.७०, चा ३०, मो.९०) सोने, बैठने, खड़े होने तथा बिहार आदि क्रियाओं मे साधु की प्रयत्नरहित—स्वच्छन्द प्रवृत्ति, निरतर चलने वाली हिंसा ही है। (प्रव चा १६) दूसरा जीव मरे या न मरे परन्तु अयत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति करने वाले के हिंसा निश्चित है। मरदु व जीवदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा। (प्रव.चा.१७) **-मेत्त** पु [मात्र] हिंसामात्र। वंधो हिंसामेत्तेण समिदीसु। (प्रव चा.१७) **-विरइ** वि [विरति] हिंसा से विरति।हिंसाविरइ अहिंसा। (चा.३०)-**रहिअ** वि [रहित] हिंसा रहित।हिंसारहिए धम्मे। (मो ९०)

हिम न [हिम] तुषार, बर्फ। हिमजलणसलिल। (भा २६)

हियअ न [हृदय] अन्त.करण, मन,हृदय। (पंचा १६७, द.७) णिच्च हियए पवट्टए जस्स। (द.७)

हिरण्ण न [हिरण्य] सुवर्ण, सोना। हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइ। (बो.४५)

हीण वि [हीन] कम, अपूर्ण, थोड़ा, रहित। (स ३४२, प्रव.२४, निय.१४८, भा.१५) हीणो जदि सो आदा। (प्रव २५) **-देव** पु [देव] नीच देव, निम्न देव। होऊण हीणदेवो। (भा १५)

हु अ [हु/खलु] इस प्रकार, ऐसा, निश्चय, कि, इसलिए, भी, क्योंकि, और, ही, पादपूर्ति अव्यय। (पचा३०, स.२८, २४४, २७३, निय.२०, मो.७३, ७६) ज परदव्व सेडिदि हु। (स २६१)

हु देखो हव। (स ५७,बो २९, चा ४१,भा ९३) हुति (व.प्र ब स ८६,३१७) हुअ (वि /आ प्र ए बो २९) हुअ णाणमये च अरहते। (बो २९)

हूअ वि [भूत] उत्पन्न हुआ। सद्दवियारो हूओ। (बो ६०)

हेअ सक [हा+यत्] छोड़ना, त्यागना। परभितरबाहिरो दु हेऊण। (मो ४)

हेउ पु [हेतु] कारण, निमित्त, प्रयोजन। (स १९१, निय २५) तेंि हेऊ भणिदा। (स १९०)

हेट्ठ स्त्री [अघस्] नीचे,निम्न। णिरया हवंति हेट्ठा।(द्वा ४०)

हेदु देखो हेउ। (पचा १५०, स १७७) तइया दु होदि हेदू। (स.१३६) -भूद वि [भूत] निमित्तभूत, कारणभूत। एदेसु हेदुभूदेसु। (स १३५)

हेम न [हिम] स्वर्ण, सोना। हेम हवेइ जह तह य। (मो २४)

हेय वि [हिय] छोड़ने योग्य, त्याज्य। (निय ५०,सू ५)

हेयोवादेयतच्चाण। (निय ५२)

हो देखे हव। (पचा १२८, स १०२, १२६, प्रव १८,३१, निय २,३१, भा १५,१६, मो ४९,शी १०,सू ९, द १२, चा १३,बो १०) सा होइ वदणीया। (बो १०) होइ/होदि (व.प्र ए,बो,१०,स,९४,२११) होंति (व प्र ब स १३१,प्रव ३८) होमि (व उ ए स २०,निय ८१) होहदि/होहिदि (भवि प्र ए स २१ शी ११) होस्सामि (भवि उ ए स २१) होही

(भू स ४१५) होहि/होह (वि /आ.म.ए /ब भा १२६,स.२०६) होज्ज (व उ ए स ९९, पचा ६९) होऊण/होदूण (स कृ.भा १५,१६, मो ४९,शी.१०)
